इस्बाते रफउल यदैन

अहादीस की रोशनी में

जमा व तरतीब

मौलाना अब्दुल रशीद अन्सारी

अनुवाद

रज़िया आलम

सलफी बुक सेन्टर

शाहीन बाग, जामिया नगर, ओखला दिल्ली-25

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

नाम किताब : इस्बाते रफ़उल यदैन अहादीस की रोशनी में

मुअल्लिफ़ : मौलाना अब्दुर्रशीद अंसारी

नाशिर : सलफ़ी बुक सेन्टर

प्रथम हिन्दी संस्करण : 2013

संख्या : 1100

क़ीमत :

मिलने के पते

दारुल कुतुब अल इस्लामिया

मटिया महल जामा मस्जिद देहली

मकतबा तर्जुमान

उर्दू बाजार, जामा मस्जिद देहली

रज़िया एकेडमी

गाँव ऊपरडिहा, पोस्ट मुकन्दपुर, जिला मुर्शिदाबाद, पश्चिम बंगाल

मोबाइल: 09136505582

Published by :

Salafi Book Centre

C-187/A-G.F., Shaheen Bagh, Jamia Nagar,
Okhla, New Delhi -25

विषय सूची

क्या ?	कहाँ ?
१. तक़दीम	०५
२. तक़दीम	०६
३. अर्ज़े नाशिर	०८
४. मुख़्तसर हालाते ज़िन्दगी इमाम अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी रह०............	१०
५. मुख़्तसर हालाते ज़िन्दगी इमाम मुस्लिम रह०	१२
६. मुख़्तसर हालाते ज़िन्दगी इमाम मालिक रह०	१२
७. मुख़्तसर हालाते ज़िन्दगी इमाम मुहम्मद बिन ईसा तिर्मिज़ी रह०	१३
८. मुख़्तसर हालाते ज़िन्दगी इमाम अहमद बिन शुऐब नसाई रह०	१४
९. मुख़्तसर हालाते ज़िन्दगी इमाम इब्ने माजह रह०	१४
१०. मुख़्तसर हालाते ज़िन्दगी इमाम अबू दाऊद रह०	१५
११. मुख़्तसर हालाते ज़िन्दगी इमाम अहमद बिन हंबल रह०	१६
१२. मरातिब कुतुबे हदीस अज़ हुज्जतुल्लाहिल-बालिग़ा	१८
१३. रफ़ा यदैन अहादीस की रोशनी में	२१
१४. (१) सही बुख़ारी	२१
१५. (२) सही मुस्लिम	२४
१६. (३) तिर्मिज़ी शरीफ़	२६
१७. (४) अबू दाऊद शरीफ़	२७
१८. (५) सुनन नसाई शरीफ़	३३
१९. (६) सुनन इब्ने माजह शरीफ़	४३
२०. (७) मुअत्ता इमाम मालिक रह०	४८
२१. तीसरी रकअत के लिए खड़े होने के बाद भी रफ़ा यदैन का सुबूत	५०
२२. (८) सही इब्ने ख़ुज़ैमह	५५

२३. (९) अस्सुननुल कुबरा ९९
२४. (१०) मुसनद अल हुमैदी १०२
२५. (११) मुसनद अबी अवाना १०३
२६. (१२) शरहुस्सुन्नह १०७
२७. (१३) मुसन्नफ अब्दुर्रज्जाक ११३
२८. (१४) सुनन अद्दारमी ११५
२९. (१५) सुनन दार कुतनी ११९
३०. (१६) अल-मुन्तका लेइब्निल-जारूद १३०
३१. (१७) जुजओ रफइल यदैन इमाम बुखारी रह० १३५
३२. (१८) इब्ने अबी शैबा १५३
३३. (१९) मुसनद इमाम अहमद १५७
३४. (२०) सही इब्ने हिब्बान १७१
३५. (२१) मुस्नद अबू दाऊद त्यालसी १७५
३६. (२२) मुसनद शाफई १७७
३७. (२३) मुअत्ता इमाम मुहम्मद १७७
३८. सहाबा किराम रज़ि० में से कुछ रावियाने अहादीस....... १७८
३९. रफ़ा यदैन पर सहाबा का इज्मा १८०
४०. रफ़ा यदैन करने वाले ताबेईन व तबअ़ ताबेईन और अइम्म-ए-मुज्तहेदीन १८१
४१. इमाम तिर्मिज़ी की शहादत १८२
४२. मक्का, मदीना, हिजाज़, इराक़, शाम, बसरा, यमन और खुरासान के अइम्म-ए-दीन १८३
४३. इमाम ज़ुहरी और हसन बसरी रह० का फरमान १८४
४४. अली बिन मदीनी का इरशाद १८४
४५. शाह वलीउल्लाह साहब मुहद्दिस देहलवी रह० का फतवा १८४
४६. पीराने पीर शैख अब्दुल-कादिर जीलानी का फरमान १८४
४७. मौलाना अब्दुल-हई रह० हन्फ़ी का फतवा १८५
४८. रफ़ा यदैन को बिदअत कहने वाला रिसालत मआब (स०), सहाबा और दीगर अइम्मा का गुस्ताख है १८५
४९. रफ़ा यदैन न करने वाले उलमा से बाज़ सहाबा की औरतों को ज्यादा इल्म है १८६

❖ ❖ ❖

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम

तक़्दीम

अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन, वस्सलातु वस्सलामु अला खैरे ख़ल्केही मुहम्मद व आलेही व सहबेही अज्मईन व मन तबेअ़हुम बेएहसानिन इला यौमिद्दीन। अम्मा बाद :

ज़ेरे नज़र किताब एक पाकिस्तानी आलिम मौलाना अब्दुर्रशीद अन्सारी की तालीफ़ है जो एक देवबन्दी हन्फी आलिम के जवाब में लिखी गई है यह किताब दो हिस्सों पर मु तमिल है और मुतअ़दिद बार शाए हो चुकी है।

पहले हिस्सा में मुअल्लिफ़ ने अहादीस की तेईस बुलन्द पाया किताबों से (जिन में सही बुख़ारी, सही मुस्लिम, सुनने अबी दाऊद, सुनने नसाई, सनने तिर्मिज़ी, सुनने इब्ने माजा, मुअत्ता इमाम मालिक, सही इब्ने ख़ुज़ैमा जैसी आला तरीन सही और मो'तबर किताबें शामिल हैं) ऐसी दो सौ पैंतालीस अहादीस मअ़ अस्नाद जमा की हैं जिन से नमाज़ में रुकूअ़ जाते वक़्त, रुकूअ़ से सर उठाते वक़्त और दो रकअ़त के बाद तशह्हुद पढ़ कर तीसरी रकअ़त के लिए खड़े होते वक़्त रफ़ा यदैन करना साबित है मुअल्लिफ ने दलाइल से वाज़ेह किया है कि रफ़ा यदैन पर सहाबा किराम का इज्मा था किसी भी सहाबी से इसका तर्क साबित नहीं और पैंतालीस सहाबा किराम के अस्माए गिरामी मअ़ हवाला कुतुब नकल किए हैं जिन से रफ़ा यदैन की अहादीस मरवी हैं जिन में ऐसे सहाब–ए–किराम के नाम भी शामिल हैं जिन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़िन्दगी के आख़िरी सालों में इस्लाम कुबूल किया है जिस से रफ़ा यदैन के नस्ख़ के दावा की क़लई खुल जाती है। ताबेईन तबअ़ ताबेईन, अइम्म–ए–मुज्तहेदीन की अक्सरीयत और मक्का, मदीना, हिजाज़, यमन, शाम, इराक़, बसरा व खुरासान और तमाम बड़े बड़े इस्लामी शहरों के तमाम बड़े बड़े उलमा न सिर्फ़ रफ़ा यदैन के क़ाइल बल्कि उस पर बराबर अमल पैरा थे। यही वजह है कि ख़ुद अहनाफ़ के इंसाफ़ पसन्द उलमा व मुहक्केक़ीन मसलन शाह वलीयुल्लाह मुहद्दिस देहलवी, मौलाना अब्दुल हई हन्फी और अल्लामा सिन्धी वग़ैरहुम ने उसके मसनून होने का एतराफ़ किया है।

दूसरे हिस्सा में रफ़ा यदैन के तर्क पर जो हदीसें पेश की जाती हैं उनका तफ़सीली जायज़ा लिया है और उन्हें नक़ल करके तरतीब वार उनका भरपूर मुदल्लल और मुस्कित जवाब दिया है इस तरह इस किताब

को एक दस्तावेज़ी हैसियत हासिल हो गई है। किताब की इसी अहमीयत के पेशे नजर मोहतरमा रज़िया सुल्ताना ने उसे हिन्दी का जामा पहना दिया है जिसे सलफी बुक सेन्टर पहली बार शाए करने की सआदत हासिल कर रहा है ताकि इस बने इफादीयत आम हो और इस से हिन्दी दान तबका भर पूर मुस्तफीद हो सके। दुआ है कि अल्लाह तआला इसे शर्फ कुबूलियत अता फरमाए और मुअल्लिफ, मुतर्जिम और नाशिर सभी को अजरे जज़ील से नवाजे और आम मुसलमानों को इससे ज्यादा से ज्यादा इस्तिफादा की तौफीक बख्शे। वस्सलाम

रफ़ीक़ अहमद सलफ़ी दारुद्दावा, दिल्ली–२५

तक़दीम

नमाज में दाख़िल होते वक्त रफा यदैन मस्नून है इस पर इत्तिफाक़ के बाद कदीम जमाना से इस मसअला में इख्तिलाफ है कि रुकूअ् को जाते और रुकूअ् से सर उठाते वक्त रफा यदैन करना मस्नून है या मम्नूअ्, अहले कूफा के अलावा तमाम फुक्हा–ए–उम्मत इस बात पर मुत्तफ़िक़ हैं कि यह मस्नून है और नमाज की सुन्नतों में कोई सुन्नत ऐसी नहीं जो सुबूत व तवातुर में इस सुन्नत का मुकाबला कर सके। मुतअ्दिद उलमाए–किराम ने रुकूअ् से पहले और रुकूअ् के बाद रफा यदैन की अहादीस को अहादीसे मुतवातिरा में शुमार किया है।

बुलन्द पाया मुहद्देसीने किराम ने ख़ास इस मसअला पर मुस्तकिल किताबें तहरीर फरमाई हैं।

जिन में मुन्दरिजा जैल हजरात क़ाबिले ज़िक्र हैं :–मुहम्मद बिन नश्र अल मर्वजी, साहिबे क्यामुल लैल। इमाम अबू बकर अल–बज़्ज़ार, साहिबे मुसनद अल बज्जार। इमाम अबू नुऐम अल अस्बहानी, साहिबुल मुस्तखरज।

इमाम तकीयुद्दीन अस्सुबकी, साहिबुतबकात। इमाम बुखारी रहेमहुमुल्लाहु रहमातन वासेअह।

इन हजरात के अलावा भी बाज हजरात ने मुफस्सल तहरीरात छोड़ी है। तकरीबन पचास से जायद सहाबए किराम ने इस मसअला पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अहादीस रिवायत की हैं।

इन तमाम मज्बूत व मुस्तहकम बुनियादों के बावजूद बाज हज़रात महज मसलकी तअस्सुब में इस सुन्नत के अजली दुश्मन बने हुए हैं और सिर्फ इस लिए क्योंकि उनके मज्हब में उसका हुक्म नहीं –

बाज हजरात तो इस को सुन्नते मन्सूखा बताने पर उधार खाए बैठे हैं

और धड़ल्ले से कहते हैं इब्तिदा–ए–इस्लाम में रफा यदैन थी फिर मन्सूख हो गई और दलील में हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रजि अल्लाहु अन्हु की हदीस पेश कर देते हैं। हालांकि इस हदीस में सिरे से रफा यदैन जो मुतनाज़े फीह है उसका कोई ज़िक्र ही नहीं। इसमें तो सिर्फ इब्तिदाए सलात में रफा यदैन का जिक्र है और उस के बाद वह फरमाते हैं कि हम ने फिर रफा यदैन करते नहीं देखा। इसका सीधा सा मतलब तो यही है कि पहली रकअ्त शुरू करते वक्त रफा यदैन करते, दूसरी रकअत शुरू करते वक्त नहीं करते थे। लेकिन पता नहीं किस तरह इस रिवायत को रुकूअ को जाते और उस से उठते वक्त रफ़ा यदैन से किस तरह जोड दिया गया – इस से ज़्यादा तअज्जुब इस बात पर है कि एक कदीमुल–इस्लाम सहाबी की रिवायत को नासिख और मुतअख़्ख़िरुल इस्लाम सहाबा की अहादीस को बिला दलील मन्सूख करार दिया जा रहा है जो सरासर इंसाफ़ से बईद और फ़िरका बन्दी की रविश को बाकी रखने की कोशिश के अलावा कुछ नही। मसअला हमेशा से वाज़ेह और बेगुबार था और है पहले भी रफा यदैन के मज़बूत दलाइल ने बावजूद नुक्त–ए–नज़र के इख़्तिलाफ के इंसाफ़ पसन्दों को इस बात का एतराफ़ करने पर उभारा है कि रफा यदैन की अहादीस बहुत ज्यादा हैं और उनके रिवायत करने वाले सहाबा किराम की एक बडी जमाअत है और इस सुन्नत को मन्सूख़ बताने वालों के पास कोई यकीनी दलील मौजूद नही है।

यह किताब जो आपके हाथमें है हर तरह के तअस्सुब की ऐनक को उतार कर मुताला फ़रमाएं, हमें उम्मीद है कि आपका दिल भी यह एतराफ किये बग़ैर नहीं रहेगा कि यह अल्लाह के रसूल की मुबारक, महबूब और ऐसी सुन्नत है जिस पर आप आख़िर तक अमल पैरा रहे।

अल्लाह तआला से दुआ है कि वह मुरत्तिब, मुतर्जिम और नाशिर को वह सवाब अता फरमाए जो वह अपने नबी की सुन्नतों पर अमल करने वालों और उनको मिटने से बचाने वालों को अता फरमाता है।

व सल्लल्लाहु अला नबीयेना मुहम्मदिन व आलेही व सहबेही व सल्लम।

कतबहू!

रज़ाउल्लाह अब्दुल करीम अल मदनी
खादिम जामिया सैय्यद नजीर हुसैन
मुहद्दिस देहलवी रहेमहुल्लाह
फाटक हबश ख़ॉ, दिल्ली – ६

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम

अरज़े नाशिर

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलेहिल करीम। व बअ्द

शरई इस्तेलाह में रफा यदैन नमाज में दोनों हाथ उठाने को कहते है। नमाज़ शुरू करते वक्त, रुकूअ् में जाते वक्त, रुकूअ से सर उठाने के बाद और दो रकअ्त का तशह्हुद पढ कर उठने के बाद रफा यदैन करना अहादीसे सहीहा मुतवातिरह से साबित है।

मसअला रफा यदैन कदीम जमाना से अहले हदीस और अहलुर्राए (अहनाफ) के दर्मियान इख्तिलाफी चला आ रहा है। उम्मत का सुवादे आज़म जिस में सहाबा–ए–किराम की ग़ालिब अक्सरीयत, ताबेईन, तबअ् ताबेईन, मुहद्देसीन और अइम्म–ए–सलासा यानी इमाम मालिक, इमाम शाफई और इमाम अहमद बिन हम्बल रफा यदैन करते थे। और बकौल इमाम बुखारी रहमतुल्लाह अलैह 'किसी भी एक सहाबी से रफा यदैन का तर्क साबित नही इमाम बुखारी रहमतुल्लाह अलैह ने इस मसअला पर 'जुजओ रफइल यदैन के नाम से एक मुस्तकिल रिसाला तस्नीफ फरमाया है।

अहलुर्राए यानी अहनाफ़ नमाज़ में तक्बीर तहरीमा के अलावा बकिय मकामात पर रफा यदैन के कायल नहीं है उनके बाज उलमा इस अम को मन्सूख कहते हैं और बाज उलमा तर्क को अफज़ल बताते हैं यानी मन्सूख होने के खिलाफ़ हैं। अहनाफ की तरफ से भी इस मसअला प बहुत सी किताबें शाए की गई हैं मगर यह हज़रात अपने मौकिफ़ की ताई मे सही हदीस पेश करने से कासिर हैं जबकि इस्बात मे कसीर तादाद अहादीसे सहीहा मौजूद हैं।

ज़ेरे इशाअत किताब मौलाना अब्दुर्रशीद अन्सारी की मुरत्तब करदह जिसके दो हिस्से हैं पहला हिस्सा "इस्बाते रफउल यदैन अहादीस की रोशनी में" है, जिस में दो सौ पैंतालीस अहादीस सनदों के एतबार से जम की गई है। इस मौज़ूअ् पर यह अपनी तरज का पहला निहायत कीमत मज्मूआ है। दूसरे हिस्से में अहनाफ के अड़तीस दलाइल के मुदल्लल मुस्कित जवाब निहायत सन्जीदगी से तहरीर किए है।

इस किताब की जमा व तरतीब का पस मन्जर यह है कि पाकिस्ता के एक हन्फी मौलवी अबू मुआविया सफ्दर साहब ने अहले हदीस हजरा का तरीका नमाज और रुकूअ् से पहले और रुकूअ् के बाद रफा यदैन कर एक गैर इस्लामी अमल बताया। मौलवी साहब ने यह भी चेलन्ज किया कि जो शख्स इस फतवा के बरअक्स साबित करेगा उसे एक हज़ार रुप इन्आम दिया जाएगा। मौलाना अब्दुर्रशीद अन्सारी साहब ने मज्कूरा मौल

का चेलन्ज कुबूल करते हुए सिविल जज सियालकोट की अदालत में मुकदमा दायर कर दिया और फाजिले अदालत से दर्ख्वास्त की कि उन से एक हजार रुपया दिलवाया जाए। सिविल जज ने यह मुकदमा इस बिना पर खारिज कर दिया कि चूंकि फरीकैन मे कोई मुआहदा अमल में नहीं लाया गया लिहाजा उसकी समाअत नहीं हो सकती। सिविल जज के इस फैसले के खिलाफ मौलाना अब्दुर्रशीद साहब ने डिस्ट्रिक जज सियालकोट की अदालत में अपील कर दी। जो मन्जूर कर ली गई। डिस्ट्रिक जज सियालकोट ने जो फैसला सुनाया वह इस तरह है :–

"यह बात काबिले जिक्र है कि अपील कुनिन्दह अपने एतकादात का ऐसा पक्का है कि उस ने अपना मकान रफा यदैन पर तहकीक और मुकदमा बाजी की खातिर बेच डाला उसका कहना है कि वह पचास हजार रुपये तहकीक और मुकदमा बाजी पर खर्च कर चुका है और चार साल से ज़ायद अरसा से मुकदमा बाजी की तकालीफ़ बर्दाश्त कर रहा है जबकि रिस्पान्डेन्ट (मुदआ अलैह) ने इस मुआमला में शुरू ही से कोई दिल्चस्पी नहीं ली। मैं महसूस करता हूं कि रिस्पाडेन्ट ने अपील कुनिन्दह के जज्बात को मज्रूह किया है और उसकी खातिर अपील कुनिन्दह ने इतनी तकालीफ बर्दाश्त की। मेरे ख़्याल में इंसाफ़ का तकाज़ा यह है कि अपील करने वाला को रिस्पांडेन्ट (मुदआ अलैह) से एक हजार रुपये दिलाया जाए, मैं अपील मन्जूर करता हू अदालते मातहत का फैसला और डिग्री मन्सूख करता हूं, अपील करने वाला का दावा डिग्री करता हूँ मअ् खरचा तमाम। (माहनामा अल इस्लाम लाहौर, २८ सितम्बर १६८४ ई)

चूंकि इस मौज़ूअ् पर हिन्दी जानने वाले भाईयो और बहनों के लिए कोई जामेअ् व मुदल्लल किताब नहीं है इसलिए सलफी बुक सेन्टर नई दिल्ली ने सुन्नते नबवी की इशाअत व तरवीज के जज्बा से इस किताब के दोनों हिस्सों को मेअ्यारी अन्दाज़ में हिन्दी जबान में शाए करने का फैसला किया जो अल्हम्दुलिल्लाह आपके हाथ में है।

अल्लाह तआला हम सबको किताब व सुन्नत के मुताबिक अमल करने की तौफीक इनायत फरमाए नीज़ इस किताब के मुरत्तिब, मुतर्जिम, नाशिर व दीगर अहबाब जिन्होंने इस की इशाअत के लिए हमें उभारा और हर तरीका से मदद की बिल खुसूस शैख़ रफीक़ अहमद सलफी साहब (रुक्न मज्लिसे इलमी दारुद्दावह दिल्ली) और मोहम्मद जुबैर खाँ ने रहनुमाई फरमाई जिन्होंने ...इस काम में भरपूर तआवुन दिया, इन सारे हजरात को अल्लाह तआला अजरे अज़ीम से नवाजे। आमीन[1]

मुहम्मद आलम सलफी,
दिल्ली – 25

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मुख़्तसर हालाते ज़िन्दगी

इमाम अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी रहमतुल्लाह अलैहि

मुहम्मद बिन इस्माईल बुखारी रह०, उनका नाम मुहम्मद है। और उनकी कुन्नियत अबू अब्दुल्लाह है इस्माईल बिन इब्राहीम बिन मुग़ीरह के बेटे है, जो फी व बुखारी हैं। इमाम बुखारी की पैदाइश जुमा के दिन १३ शौव्वाल १९४ हिज० को हुई और शौव्वाल की पहली शब में २५६ हिज० में इतिकाल फरमाया, आपकी उम्र १३ दिन कम ६२ साल हुई।

इमाम बुखारी रहमतुल्लाहि अलैहि फरमाते है कि मैंने अपनी किताब बुखारी छै लाख से ज्यादा अहादीस से इंतिखाब करके मुरत्तब की, मैंने इसमे जो हदीस दर्ज की उससे पहले दो रकअत नमाज पढ़ी और उन्होंने यह भी फरमाया कि मुझे एक लाख सही और दो लाख गैर सही हदीसें याद हैं। उनकी किताब सही बुखारी मे मुकर्ररात के साथ सात हजार दो सौ पचहत्तर हदीसें हैं। कहा जाता है कि मुकर्रर हदीसों को खत्म करने के बाद उसमें चार हजार हदीसे हैं।

इमाम अबू सईद इब्ने मुनीर का कौल है कि अमीर ख़ालिद बिन अहमद जहली हाकिम बुखारा ने इमाम बुखारी रह० के पास पैगाम भेजा कि मेरे पास किताब जामे और तारीख ले आइए ताकि मैं उनको आप से सुन लूं। इमाम बुखारी रह० ने कासिद से फरमाया कि मैं इल्म को जलील नहीं करता और न उसको लोगो के दरवाजो पर लिए फिरता हूँ अगर आपको कोई जरूरत है तो मेरी मस्जिद या मकान में तशरीफ ले आइए और अगर आप को यह सब नापसन्द हो तो आप बादशाह हैं मुझे इज्तिमा से मना कर दीजिए ताकि खुदा के सामने कयामत मे मेरा उज्र वाजेह हो जाए इसलिए कि मैं तो इल्म को नहीं छुपाऊंगा क्योंकि आंहजरत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इरशाद है कि जिस शख्स से कोई इल्मी बात दरयाफ्त की जाए और वह उसको न

बताए तो उसको आग की लगाम दी जाएगी। दूसरे लोग बयान करते है कि बुखारी रह० के बुखारा से चले जाने का यह सबब हुआ कि खालिद ने उन से दरख्वास्त की थी कि इमाम उनके मकान पर हाजिर हो और जामे और तारीख उनके बच्चों को पढाए तो उन्होंने उस के पास जाने से माना कर दिया और उनके पास पैगाम भेजा कि आप इतना करें कि बच्चों के लिए एक खास वक्त मुकर्रर कर दें जिसमे उनके अलावा दूसरे हाजिर न हो उन्होंने यह भी नही किया बल्कि यह फरमाया कि मुझ से यह नहीं हो सकता कि मैं अपनी नशिस्त को एक जमाअत के साथ इस तरह खास कर दूं कि दूसरे लोगों को यह खुसूसियत न हो, उस पर खालिद ने उनके खिलाफ उलमाए बुखारा से मदद मांगी तो उन उलमा ने उन के मजहब पर एतराज किए और खालिद ने उनको बुखारा से जला वतन कर दिया। इमाम बुखारी रह० ने उन सबके खिलाफ बदुआ की और वह बदुआ मक्बूल हुई और थोडी ही मुद्दत में वह सब मसाइब में गिरफ्तार हुए। (बहवाला इकमाल फी अस्माइर्रिजाल स० ६३०, मुअल्लिफ साहिबे मिश्कात अश्शैख वलीयुद्दीन अबी अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह अल खतीब रहमहुमुल्लाहु तआला)

ख़ुलास-ए-कलाम

इमाम बुखारी रह० ने छै लाख से ज्यादा अहादीस से इंतिखाब करके अपनी सही मुरत्तब की और फरमाया कि

मैंने इसमें जो हदीस दर्ज की उससे पहले दो रकअत नमाज पढी, जिस का नाम **"अल-जामे-उल-मुस्नदुस्सहीहुल-मुख्तसरु मिन उमूरे रसूलिल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम व सुननेही व अय्यामिही"**। यानी यह किताब जामे है, सनद के साथ है और सही है और आंहजरत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के काम और तरीके और आपके दिन यानी हालात मुख्तसर तौर पर बयान किए गए। इमाम बुखारी रह० और बादशाह के दर्मियान इल्म के मुतअल्लिक कुछ गुफ्तगू हुई। इस पर खालिद ने उनके खिलाफ उलमा-ए-बुखारा से मदद मांगी तो उन उलमा ने उनके मजहब पर एतराज़ किए और खालिद ने उनको बुखारा से जलावतन कर दिया। इमाम बुखारी रह० ने उन सबके खिलाफ बदुआ की और वह बदुआ मकबूल हुई। और थोडी ही मुद्दत मे वह सब मसाइब में गिरफ्तार हुए। बहरहाल इमाम बुखारी रह० अपना वतन छोड कर चले गये। उसके बाद

थोड़ी ही मुद्दत में वह सब मसाइब में गिरफ्तार हुए। यह भी एक करामत है जो हक़ और नाहक़ की पहचान करवाती है। बुखारी शरीफ की हमने पाँच हदीसे दर्ज की है जो कि सनद के साथ हैं। इमाम बुखारी रह० ने फरमाया। "मा अदख़ल्तु फी किताबिल-जामे इल्ला मा सहहा" यानी मैंने अपनी इस किताब में सिर्फ सही अहादीस को ही दाखिल किया है।

मुख़्तसर हालाते ज़िन्दगी इमाम मुस्लिम रहमतुल्लाहि अलैहि

नाम मुस्लिम बिन हज्जाज, उनकी कुन्नियत अबुल हुसैन है, हज्जाज बिन मुस्लिम के बेटे है. कुशैरी व नीशापुरी हैं हदीस के हुफ्फाज और अइम्मा में से एक हैं। २०४ हिज० में पैदा हुए और एक शबा की शाम के वक़्त माह रजब मे खत्मे माह से छै रोज पहले २६१ हिज० में वफ़ात पाई. इराक हिजाज़. शाम और मिस्र का सफर किया और यह्या बिन यह्या नीशापुरी कुतैबा बिन सईद. इस्हाक बिन राहवैह, अहमद बिन हंबल, अब्दुल्लाह बिन मस्लिमा कअ़नबी और उनके अलावा अइम्मा व उलमाए हदीस से हदीस हासिल की। बगदाद कई बार आए और वहाँ हदीस बयान की उन से बहुत से लोग जिन मे इब्राहीम बिन मुहम्मद बिन सुफियान, इमाम तिर्मिज़ी और इब्ने खुज़ैमा शामिल हैं और रिवायत करते है। आखिरी बार २५७ हिज० में बगदाद आए इमाम मुस्लिम रह० फरमाते हैं कि मैंने मुसनद सही को तीन लाख खुद अपनी सुनी हुई अहादीस से इंतिखाब करके लिखा है।

(बहवाला इक्माल फी अस्माइर्रिजाल स० ६३१)

इमाम मुस्लिम रह० ने सही मुस्लिम का तीन लाख अहादीस से इंतिखाब किया है। जिनकी तादाद चार हजार है जो मुकर्रर हदीसों के अलावा है रफ़ा यदैन के मुतअल्लिक इमाम मुस्लिम रह० अपनी किताब में अहादीस लाए हैं।

मुख़्तसर हालाते ज़िन्दगी इमाम मालिक रहमतुल्लाहि अलैहि

इमाम मालिक बिन अनस रह० उनकी किताब मुअत्ता के नाम से मशहूर

है जिसको इमाम मालिक रह० ने सालहा साल हर कसौटी पर परख कर जमा करदा अहादीसे नबवी से इंतिखाब फरमा कर मुसलमानाने आलम के लिए मुरत्तब किया हज़रत इमाम मालिक रह० का मुहद्देसीन में जो आला मरतबा है उससे कोई इल्म वाला नावाकिफ़ नही. आप मदीनतुर्रसूल के मक़्बूल और मुसल्लम उस्ताजुल हदीस थे और साठ साल तक हरमे मदीना में रिवायते हदीस में मशगूल रहे। इमाम मालिक रह० की किताब मुअत्ता से हम ने रफा यदैन की तीन अहादीस को अपने इस रिसाले में दाखिल किया है।

मुख़्तसर हालाते ज़िन्दगी इमाम मुहम्मद बिन ईसा तिर्मिज़ी रहमतुल्लाहि अलैहि

मुहम्मद बिन ईसा तिर्मिज़ी, उनकी कुन्नियत अबू ईसा है और नाम मुहम्मद है तिर्मिज के रहने वाले हैं, तिर्मिज मे बतारीख १३ रजब २७७ हिज० में इंतिकाल फरमाया। एक शोहरत याफ्ता हाफिजे हदीस और आलिम हैं। उनको फिक्ह मे अच्छी महारत है, अइम्म–ए–हदीस की एक जमाअत से हदीस हासिल की, मशाइख के सदरे अव्वल से उनकी मुलाकात हुई जैसे कुतैबा बिन सईद. महमूद बिन गैलान, मुहम्मद बिन बश्शार, अहमद बिन मनी, मुहम्मद बिन मुसन्ना, सुफियान बिन वकी, मुहम्मद बिन इस्माईल बुखारी वगैरहुम, और बहुत से लोगों से जिनकी कसरत का शुमार नहीं उन्होंने हदीस हासिल की। उन की इल्मे हदीस मे बहुत सी तस्नीफात हैं और उनकी किताब सही जो कि जामे तिर्मिज़ी से मशहूर है। सिहाहे सित्ता में शामिल है। तिर्मिज़ी फरमाते है कि मैंने इस किताब को मुरत्तब किया और उलमाए हिजाज के सामने पेश किया उन्होंने इस पर अपनी पसन्दीदगी का इज़्हार किया। फिर उलमाए खुरासान के सामने रखा उन्होंने भी पसन्द किया। जिस शख्स के मकान मे यह किताब (तिर्मिज़ी) मौजूद हो पस यह समझना चाहिए कि उसके यहा एक नबी मौजूद हैं जो गुफ्तगू फरमा रहे हों। जामे तिर्मिज़ी से हम ने एक हदीस तहरीर की है।

(इक्माल फी अस्माइर्रिजाल स० ६३१)

मुख़्तसर हालाते ज़िन्दगी
अहमद बिन शुऐब नसाई
रहमतुल्लाहि अलैहि

उनकी कुन्नियत अबू अब्दुर्रहमान और नाम अहमद है वालिद के ना
शुऐब है और खुरासान के एक शहर नसा के रहने वाले हैं। बमकाम मक्क
३०३ हिज० में वफात पाई और वहीं मदफून हैं अह्ले हिफ्ज व साहिबे इल
व फिक्ह हजरात मे से हैं बड़े–बड़े मशाइख से उनकी मुलाकात हुई। सुन
नसाई से हम ने रफा यदैन के मुतअल्लिक २० अहादीस लिखी है।

मुख़्तसर हालाते ज़िन्दगी इब्ने माजह
रहमतुल्लाहि अलैहि

उनकी कुन्नियत अबू अब्दुल्लाह और नाम मुहम्मद है. यजीद बि
माजह के बेटे, कजवीन के बाशिन्दा, हाफिजे हदीस और किताब सुनन इ
माजह के मुसन्निफ हैं। इमाम मालिक रह० के शागिर्दो और लैस से हदी
की समाअत की और उन से अबुल हसन कत्तान और उनके अलावा दूस
लोगों ने हदीस की समाअत की २०१ हिज० में पैदा हुए और २७३ हिज
में ६२ साल की उम्र मे वफात पाई। सुनने इब्ने माजह मे से हम
रफा यदैन के मुतअल्लिक आठ अहादीस बयान की हैं।

मुख़्तसर हालाते ज़िन्दगी
इमाम अबू दाऊद सुलेमान बिन अश्अस सजिस्तानी
रहमतुल्लाहि अलैहि

उनकी कुन्नियत अबू दाऊद है अश्अस सजिस्तानी के बेटे हैं यह उ
लोगों मे से है जिन्होंने सफर किए और किताबें लिखीं और अहादीस व
जमा करके किताब तस्नीफ की। अह्ले इराक, खुरासान व शाम व मि
व जजीरह से रिवायात सुन कर लिखीं। २०२ हिज० में पैदा हुए और १
शौव्वाल २७५ हिज० मे बमकाम बसरा वफात पाई। बगदाद कई मरत
आए और फिर आखिरी बार ९७१ हिज० में वहां से निकल गये मुस्लिम बि
इब्राहीम, सुलेमान बिन हर्ब, अब्दुल्लाह बिन मुस्लिम कअ्बी, यह्या बि

मुईन, अहमद बिन हबल रह० और इनके अलावा उन अइम्म–ए–अहादीस से हदीस हासिल की जो बवजहे कसरत शुमार नहीं होते और उन से उनके साहबजादे अब्दुल्लाह ने और अब्दुर्रहमान नीशापुरी और अहमद बिन मुहम्मद खल्लाल वगैरह ने हदीस हासिल की। अबू दाऊद बसरा में सुकूनत पजीर रहे और बगदाद आए और वहां अपनी तस्नीफ सुनन अबू दाऊद की तस्नीफ की। वहां के रहने वालों ने इस किताब को आप से नकल किया और इसको इमाम अहमद बिन हंबल के सामने पेश किया तो उन्होंने उसके हुस्न व खूबी पर तहसीन का इज्हार फरमाया। अबू दाऊद ने कहा मैंने आंहजरत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से नक्ल करदह पांच लाख हदीसें जमा कीं उन में से मैंने उन अहादीस का इंतिखाब किया जिनको मैंने इस किताब में दर्ज किया। मैंने इस किताब में चार हजार आठ सौ हदीसें जमा कीं। मैंने सही, सही के मुशाबेह और सही के करीब करीब जो अहादीस जमा की हैं इनमें से आदमी को अपने दीन के लिए सिर्फ चार हदीसें काफी हैं।

१. आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इरशाद है कि आमाल नीयतों के साथ वाबस्ता हैं।
२. आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इरशाद है कि आदमी की खूबी यह है कि वह ला यानी चीजो को छोड़ दे।
३. आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का कौल है कि आदमी उस वक्त तक (पूरा) मोमिन नहीं होता जब तक कि वह अपने मुसलमान भाई के लिए वही चीज पसन्द न करे जो अपने लिए पसन्द करता हो।
४. आंहजरत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फरमान कि हलाल जाहिर है और हराम भी वाजेह है लेकिन इन दोनों के बीच में कुछ मुश्तबेह चीज़ें है ... ...

अबू बकर खल्लाल ने कहा कि अबू दाऊद अपने ज़माना में इमाम और पेशरू है। अबू दाऊद ने फरमाया मैंने अपनी किताब में कोई ऐसी हदीस दर्ज नही की जिसके तर्क पर तमाम लोगों का इत्तिफाक हुआ।

(बहवाला इक्माल फी अस्माइर्रिजाल)

इमाम अबू दाऊद ने कुल पाँच लाख अहादीस जमा की जिन मे से चार हजार आठ सौ अहादीस का इंतिखाब किया। इमाम अबू दाऊद अपनी किताब मे रफा यदैन के मुतअल्लिक नौ अहादीस लाए है।

मुख़्तसर हालाते ज़िन्दगी
इमाम अहमद बिन हंबल
रहमतुल्लाहि अलैहि

अहमद बिन हंबल, उनकी कुन्नियत अबू अब्दुल्लाह और नाम अहमद वालिद का नाम मुहम्मद बिन हंबल है। मरवज़ी और बनू शैबान में से हैं। १६४ हिज० में बगदाद में पैदा हुए और २४१ हिज० में ७७ साल की उम्र में बगदाद ही में वफ़ात पाई। मदीना, शाम और जजीरा का सफर किया और उस ज़माना के उलमाए किराम से हदीसें जमा कीं। अबू ज़र कहते हैं कि इमाम अहमद बिन हंबल रह० को दस लाख हदीसें याद थीं। मुहम्मद बिन मूसा ने कहा हसन बिन अब्दुल अज़ीज की मीरास उनके पास मिस्र से लाई गई यह एक लाख अशरफ़ी थी। उन्होंने इमाम अहमद बिन हंबल रह० के लिए तीन थैलिया जिन मे एक एक हजार दीनार थे भेजी और कहला भेजा कि हजरत यह मीरास हलाल मे से पेश करता हू आप उसे कबूल फरमा ले। आपने फरमाया कि मुझे उनकी जरूरत नही, मेरे पास जरूरत भर मौजूद है। चुनाचे उसको वापस कर दिया और उसमे से कुछ भी क़बूल नहीं किया। उनके बेटे अब्दुर्रहमान कहते हैं कि नमाजों के बाद मैं अपने वालिद को अक्सर यह कहते हुए सुनता था, ऐ अल्लाह जिस तरह तूने मेरे चेहरे को दूसरों के सामने झुकने से बचाया उसी तरह मेरे चेहरा को दूसरों से सवाल करने से महफूज रख। मैमून बिन अस्बा ने कहा कि मैं बगदाद में था मैंने एक चिल्लाने की आवाज सुनी। मैंने पूछा यह आवाज कैसी है? तो लोगों ने बयान किया कि अहमद बिन हंबल रह० का इम्तिहान किया जा रहा है। मैं वहा गया जब उनको एक कोडा मारा गया तो आपने फरमाया बिस्मिल्लाह जब दूसरा मारा गया, तो आप ने कहा **ला हौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाह**, जब तीसरा लगाया गया तो फरमाया कुरआन अल्लाह का कलाम है मख़्लूक नहीं। जब चौथा मारा गया तो आपने आयत **"लन युसीबना इल्ला मा कतबल्लाह"** पढ़ी। **तर्जमा** : "हम पर हरगिज कोई मुसीबत न आएगी सिवाए उसके जो अल्लाह ने हमारे लिए मुकर्रर कर दी है"। इसी तरह उन्तीस कोड़े लगाये गये। उस वक्त इमाम अहमद रह० का इजार बन्द एक कपड़े की कन्नी था कोड़े की मार से कट गया तो

उनका पायजामा नाफ के नीचे आ गया तो इमाम अहमद ने आसमान की तरफ देखा और अपने होंटों को कुछ हरकत दी। न मालूम क्या बात हुई उनका पायजामा ऊपर को हो गया और नीचे नहीं गिरा। एक हफ्ता बाद मैं उनके पास हाजिर हुआ तो मैंने अर्ज़ किया कि मैंने आपको देखा आप अपने होंटों को कुछ हरकत दे रहे थे, आपने क्या चीज पढ़ी थी? उन्होंने फरमाया कि मैंने कहा था ऐ अल्लाह मैं आप से आपके इस नाम के वसीला से दरख़्वास्त करता हू जिस से आपने अपने अर्श को पुर किया है कि अगर आपको इल्म है कि मैं सही रास्ता पर हूं तो आप मेरा पर्दा फाश न करें। (बहवाला इक्माल फी अस्माइर्रिजाल लिल ख़तीब तबरेजी)।

हमने मुसनद अहमद से रफा यदैन के मुतअल्लिक अपनी इस किताब मे २३ अहादीस नकल की है।

ख़ुलास-ए-कलाम

यानी यह ख़्याल करना कि बेग़ैर आजमाए जाने के छूट जायेंगे गलत है बल्कि ज़रूर अल्लाह तआला अपने ईमानदार बन्दों को उनके ईमान के मुताबिक इम्तिहान लेगा। जैसे इरशादे इलाही है।

أَحَسِبَ النَّاسُ أَنْ يُتْرَكُوا أَنْ يَقُولُوا آمَنَّا وَهُمْ لَا يُفْتَنُونَ - وَلَقَدْ فَتَنَّا الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَلَيَعْلَمَنَّ اللَّهُ الَّذِينَ صَدَقُوا وَلَيَعْلَمَنَّ الْكَاذِبِينَ

[العنكبوت/٢، ٣]

(सूरः अंकबूत, प २०, आयत : २ ता ३)

यानी "क्या लोगों ने यह समझ लिया है कि (ज़बान से) हम कह देंगे ईमान लाए तो छोड़ दिए जाएगे और उनकी जांच न होगी और हम उन से पहले अगले ईमानदार लोगों को आजमा चुके है। तो इसी तरह अल्लाह तआला सच्चो को ज़रूर अलग करेगा और झूठो को अलग"। सही हदीस में आया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया सबसे बढ कर पैगम्बरों पर इम्तिहान ज्यादा होता है फिर नेक लोगों पर फिर जो इनके बाद मरतबा मे अफजल हैं और आदमी पर उसके दीन के मुवाफिक दरजा बदरजा इम्तिहान आता है जिस कद्र कोई शख़्स दीन में मज़बूत और सख्त होगा उसी कद्र इम्तिहान में सख्ती होगी।

(फवाइद सत्तारिया तफ्सीरुल-कुरआन)

हजरत खब्बाब बिन अर्त रजि० से रिवायत है कि आंहजरत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया पहले लोगों के सरों पर आरा चला कर उनको चीर दिया गया। और लोहे की कंघी से उनके गोश्त और पोस्त को नोचा गया मगर यह चीज उनको दीन से न फेर सकी। (बुखारी व मुस्लिम स० ५१०)

हजरत इब्ने अब्बास रजि० फरमाते है कि मदीना मे हिजरत के बाद जब मुसलमानो को मुश्रेकीन, मुनाफेकीन और यहूद से सख्त तकालीफ पहुची तो यह आयत नाजिल हुई। अल्लाह तआला इरशाद फरमाते हैः

أَمْ حَسِبْتُمْ أَنْ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَأْتِكُمْ مَثَلُ الَّذِينَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِكُمْ مَسَّتْهُمُ الْبَأْسَاءُ وَالضَّرَّاءُ وَزُلْزِلُوا حَتَّى يَقُولَ الرَّسُولُ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ مَتَى نَصْرُ اللَّهِ أَلَا إِنَّ نَصْرَ اللَّهِ قَرِيبٌ [البقرة/٢١٤]

यानी 'मुसलमानो! क्या तुम समझते हो कि (बे खटके और) बगैर तक्लीफ उठाए जन्नत मे चले जाओगे और अभी तक तो तुम्हारी वह हालत नही हुई जो अगले लोगों की हुई थी मुसीबत और तकलीफ उनको लग गई यानी मुफिलसी और बिमारी ने घेर लिया और उस वक्त तक झिंझोड़े गये कि खुद पैगम्बरो और उनके साथ के ईमान वाले घबरा कर बोल उठे अल्लाह की मदद कब आएगी। सुन लो अल्लाह की मदद करीब है"।

इबरत का मकाम : इमाम अहमद बिन हबंल रहमतुल्लाहि अलैहि की आजमाइश हुई मुसलमानों के लिए इबरत है। कोड़े मारे गये फरमाया कुरआन अल्लाह का कलाम है, मख्लूक नहीं। जिस कद्र कोई दीन मे मजबूत और सख्त होगा उसी कद्र इम्तिहान में सख्ती होगी। लिहाजा इसान को सोच समझ कर बोलना चाहिए ऐसा न हो कि इंसान की पकड़ हो जाए फिर पछताए। अब पछताए क्या होत जब चिड़िया चुग गई खेत।

मरातिबे कुतुबे हदीस

अज हुज्जतुल्लाहिल-बालिगा

हजरत शाह वलीयुल्लाह हुज्जतुल्लाहिल बालिगा जिल्द अव्वल स० २६७ ता ३०० मे फरमाते है। जिस का खुलासा पेश किया जाता है कि अहादीस के चार तबके हैं। पहला तब्का बुखारी व मुस्लिम और मुअत्ता

इमाम मालिक रह० का है। दूसरा तबका तिर्मिजी, नसाई, अबू दाऊद और मुसनद अहमद का है। उसके बाद तीसरे और चौथे तब्का की किताबों को बयान करके फरमाते हैं कि दीन मे बतौरे दलाइल सिर्फ पहले और दूसरे तब्का की अहादीस ही पेश हो सकती है। क्योंकि तीसरे और चौथे तबका से तो तमाम बिदअती गरोहों रवाफिज़ व मोतजिला वगै़रह को भी दलाइल मिल जाते हैं इस लिए तीसरे और चौथे तब्का की रिवायात को बतौर दलील पेश नही किया जा सकता। बल्कि बतौर शवाहिद पेश किया जा सकता है। फिर फरमाया कि एक पाँचवां तबक़ा भी शुमार किया जा सकता है। और वह है जिन में से अक्सर सूफिया वगैरह बयान करते है। उनकी सनदे बडी कवी लगा कर बयान करते हैं। बड़े बड़े सिक़ह रावियों के नाम से रिवायात पेश करते है। लेकिन सब ऐसी होती है कि उनको किसी शुमार में नहीं लाया जा सकता। (हुज्जतुल्लाह अरबी स० १३३)

मेरे भाईयो! खुदा रा गौर करो, रिवायात के रावियों को सिक़ह कहने से कोई रिवायत सही नहीं हो सकती, बल्कि देखो उसको बयान करने वाला कौन है? और बयान करने वाले ने उसके मुतअल्लिक़ क्या कहा है?

बुखारी और मुस्लिम की रिवायात की तरदीद किसी मुसलमान के शायाने शान नहीं। उम्मत मे से जिस किसी ने भी बुखारी व मुस्लिम पर एतराज़ात किए वह खुद लोगों की नजरों से गिर गया। चाँद पर थूकने वाले की थूक उसी के मुंह पर गिरी। उसके बाद सिहाह का मकाम है। अब अगर आपको दलाइल पेश करने हों तो सिहाहे सित्ता या कुछ लोगों के कौल के मुताबिक मुसनद अहमद को शामिल करके सिहाहे सबआ से पेश करें। बशर्ते कि वह दलाइल साबित शुदः हों।

खुलासा–ए–कलाम यह है कि हम ने जो रिवायात बतौर दलाइल पेश की वह पहले और दूसरे तब्का की हैं और तीसरे और चौथे तबका की जो रिवायात पेश की हैं वह बतौर शवाहिद पेश की हैं।

जैसे अल्लाह तआला ने इरशाद फरमाया है

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُونُوا قَوَّامِينَ بِالْقِسْطِ شُهَدَاءَ لِلَّهِ وَلَوْ عَلَى أَنْفُسِكُمْ [النساء/١٣٥]

ऐ ईमान वालो! इंसाफ पर मज्बूत रहने वाले और अल्लाह के लिए सच गवाही देने वाले बन जाओ अगरचे वह तुम्हारे अपने खिलाफ हो। यानी

सच्ची शहादत दो।

मुहद्देसीन किराम रह० ने अपनी किताबों में बयान कर दिया जो उनका इल्म था अगर इल्म को जाहिर न करते तो अल्लाह तआला ने कुरआन मजीद में यह फरमा दिया है।

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ كَتَمَ شَهَادَةً عِنْدَهُ مِنَ اللَّهِ (البقرة/١٤٠)

"और उस से बढ कर जालिम कौन होगा कि खुदा की गवाही को ज उसके पास हो छुपाए। (सूरः बकरह, आयत १४०)

किसी हाल मे अल्लाह की शरीअत से ज्यादा तुम्हारी तरफदारी क मुस्तहिक नही हो सकता।

दीन खैर ख्वाही और नसीहत को कहते है। सवाल किया गया यह खै ख्वाही और नसीहत किस के लिए है। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल ने फरमाया कि खुदा के लिए, खुदा की किताब के लिए, खुदा के रसू सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए, मुसलमानों के इमामों के लिए औ आम मुसलमानों के लिए। (बुखारी किताबुल ईमान, मिश्कात स. ४२ मुस्लिम स० ५६)

शहादत का छुपाना इतना बडा गुनाह है कि उस से दिल मस्ख ह जाता है। **नऊजुबिल्लाहि मिन ज़ालिका।**

अल्लाह तआला इरशाद फरमाते है

وَلَا تَكْتُمُوا الشَّهَادَةَ وَمَنْ يَكْتُمْهَا فَإِنَّهُ آثِمٌ قَلْبُهُ (البقرة/٢٨٣)

और मत छुपाओ गवाही को और जो कोई छुपाएगा उसको प तहकीक गुनहगार है दिल उसका। (सूरः बकरः २८३, आयत ७, प 3)

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जिस शख से कोई इल्मी बात पूछी जाए जिसको वह जानता है और वह उस छुपाए यानी न बतलाए तो कयामत के दिन उसके मुह में आग की लगा दी जाएगी। (मिश्कात किताबुल इल्म)

❖ ❖ ❖

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

हिस्सा अव्वल

रफ़ा यदैन

अहादीस की रोशनी में

(१) सही बुख़ारी

١- (١) حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ عَنْ مَالِكٍ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ سَالِمِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ أَبِيهِ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يَرْفَعُ يَدَيْهِ حَذْوَ مَنْكِبَيْهِ إِذَا افْتَتَحَ الصَّلَاةَ وَإِذَا كَبَّرَ لِلرُّكُوعِ وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ رَفَعَهُمَا كَذَلِكَ أَيْضًا وَقَالَ سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ وَكَانَ لَا يَفْعَلُ ذَلِكَ فِي السُّجُودِ (صحيح البخاري- رقم الحديث: ٧٣٥)

हदीस १ (१) : हम से अब्दुल्लाह बिन मुस्लमा कअनबी ने बयान किया उन्होंने इमाम मालिक से उन्होंने इब्ने शिहाब से उन्होंने सालिम बिन अब्दुल्लाह से उन्होंने अपने बाप (अब्दुल्लाह बिन उमर रजि०) से कि आंहजरत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज शुरू करते तो दोनों मोंढो तक हाथ उठाते और जब रुकूअ की तक्बीर करते और जब रुकूअ से अपना सर उठाते तब भी इसी तरह दोनों हाथ उठाते और **समिअल्लाहु लिमन हमिदह रब्बना व लकल हम्द** कहते और सज्दो के बीच में हाथ न उठाते। (हदीस नम्बर : ७३५)

٢- (٢) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مُقَاتِلٍ قَالَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ قَالَ أَخْبَرَنَا يُونُسُ عَنِ الزُّهْرِيِّ أَخْبَرَنِي سَالِمُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا قَامَ فِي الصَّلَاةِ رَفَعَ يَدَيْهِ حَتَّى يَكُونَا حَذْوَ مَنْكِبَيْهِ وَكَانَ يَفْعَلُ ذَلِكَ حِينَ يُكَبِّرُ لِلرُّكُوعِ وَيَفْعَلُ ذَلِكَ إِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ وَيَقُولُ سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ وَلَا يَفْعَلُ ذَلِكَ فِي السُّجُودِ (صحيح البخاري – رقم الحديث: ٧٣٦)

हदीस २ (२) : हम से मुहम्मद बिन मुकातिल ने बयान किया कहा हम को अब्दुल्लाह बिन मुबारक (रह०) ने खबर दी कहा हम को यूनुस बिन यजीद आइली ने उन्होंने जुहरी से उन्होंने कहा मुझ को सालिम बिन अब्दुल्लाह बिन उमर रजि० ने उन्होंने अब्दुल्लाह बिन उमर रजि० से उन्होंने कहा मैंने देखा आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज में खडे होते तो (तक्बीर तहरीमा के वक्त) अपने दोनो हाथ मोंढों के बराबर उठाते और जब रुकूअ के लिए तक्बीर कहते तब भी ऐसा ही करते और जब रुकूअ से सर उठाते उस वक्त भी ऐसा ही करते और **समिअल्लाहुलिमन हमिदह** कहते अल्बत्ता सज्दों के बीच में हाथ न उठाते। (हदीस नम्बर : ७३६)

٢- (٢) حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ الْوَاسِطِيُّ قَالَ حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ عَبْدِ اللّٰهِ عَنْ خَالِدٍ عَنْ أَبِي قِلَابَةَ أَنَّهُ رَأَى مَالِكَ بْنَ الْحُوَيْرِثِ إِذَا صَلَّى كَبَّرَ وَرَفَعَ يَدَيْهِ وَإِذَا أَرَادَ أَنْ يَرْكَعَ رَفَعَ يَدَيْهِ وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ رَفَعَ يَدَيْهِ وَحَدَّثَ أَنَّ رَسُولَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ صَنَعَ هٰكَذَا
(صحيح البخاري – رقم الحديث: ٧٣٧)

हदीस ३ (३) : हम से इस्हाक वास्ती ने बयान किया कहा हम से खालिद बिन अब्दुल्लाह ने उन्होंने खालिद से उन्होंने अबू किलाबा से उन्होंने मालिक बिन हुवैरिस (सहाबी रजि०) को देखा जब वह नमाज शुरू करते अल्लाहु अक्बर कहते और जब रुकूअ करने लगते तो भी दोनों हाथ उठाते और जब रुकूअ से सर उठाते तो भी दोनों हाथ उठाते और बयान करते कि उन्होंने आंहजरत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ऐसा ही करते देखा। (हदीस नम्बर : ७३७)

٤- (٤) حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ قَالَ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ أَخْبَرَنَا سَالِمُ بْنُ عَبْدِ اللّٰهِ أَنَّ عَبْدَ اللّٰهِ بْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا قَالَ رَأَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ افْتَتَحَ التَّكْبِيرَ فِي الصَّلَاةِ فَرَفَعَ يَدَيْهِ حِينَ يُكَبِّرُ حَتَّى يَجْعَلَهُمَا حَذْوَ مَنْكِبَيْهِ وَإِذَا كَبَّرَ لِلرُّكُوعِ فَعَلَ مِثْلَهُ وَإِذَا قَالَ سَمِعَ اللّٰهُ لِمَنْ حَمِدَهُ فَعَلَ مِثْلَهُ وَقَالَ رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ وَلَا يَفْعَلُ ذٰلِكَ حِينَ يَسْجُدُ وَلَا حِينَ يَرْفَعُ رَأْسَهُ مِنَ السُّجُودِ
(صحيح البخاري – رقم الحديث: ٧٣٨)

हदीस ४ (४) : हम से अबुल यमान हकम बिन नाफे ने बयान किया कहा हम को शुऐब ने खबर दी उन्होंने जुहरी से उन्होंने कहा मुझको सालिम बिन अब्दुल्लाह बिन उमर रजि० ने कि अब्दुल्लाह बिन उमर रजि० ने कहा मैंने आंहजरत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा आपने अल्लाहु अकबर कह के नमाज़ शुरू की और अल्लाहु अकबर कहते वक़्त दोनों हाथ उठाए यहा तक कि उनको मोंढो के बराबर कर दिया और रुकूअ की तक्बीर के वक्त भी ऐसा ही किया और जब **समिअल्लाहुलिमन हमिदह** कहा तो भी ऐसा ही किया। और फरमाया **रब्बना व लकल हम्द** और सज्दा में ऐसा नहीं करते (यानी हाथ नहीं उठाते) और न जब सज्दे से सर उठाते। (हदीस नम्बर : ७३८)

٥- (٥) حَدَّثَنَا عَيَّاشٌ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْأَعْلَى قَالَ حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللّٰهِ عَنْ نَافِعٍ أَنَّ ابْنَ عُمَرَ كَانَ إِذَا دَخَلَ فِي الصَّلَاةِ كَبَّرَ وَرَفَعَ يَدَيْهِ وَإِذَا رَكَعَ رَفَعَ يَدَيْهِ وَإِذَا قَالَ سَمِعَ اللّٰهُ لِمَنْ حَمِدَهُ رَفَعَ يَدَيْهِ وَإِذَا قَامَ مِنَ الرَّكْعَتَيْنِ رَفَعَ يَدَيْهِ وَرَفَعَ ذٰلِكَ ابْنُ عُمَرَ إِلَى نَبِيِّ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ (صحيح البخاري – رقم الحديث: ٧٣٩)

हदीस ५ (५) : हज़रत नाफे रह० से मरवी है कि हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर रजि० जब नमाज में दाखिल होते तो अल्लाहु अकबर कहते और दोनों हाथ उठाते और जब रुकूअ मे जाते तब भी रफा यदैन करते और जब **समिअल्लाहुलिमन हमिदह** कहते तब भी रफा यदैन करते और जब दो रकअतें पढ़ कर उठते तब भी रफा यदैन करते। और हजरत अब्दुल्लाह इब्ने उमर रजि० ने इस हदीस को नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तक पहुचाया। यानी यह हदीस मरफूअ है और हजरत नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अमल है। (हदीस नम्बर : ७३९)

❖ ❖ ❖

(२) सही मुस्लिम शरीफ

٦- (١) حدثنا يحيى بن يحيى التميمي وسعيد بن منصور وأبو بكر بن أبي شيبة وعمرو الناقد وزهير بن حرب وابن نمير كلهم عن سفيان بن عيينة واللفظ ليحيى قال أخبرنا سفيان بن عيينة عن الزهري عن سالم عن أبيه قال رأيت رسول الله صلى الله عليه وسلم إذا افتتح الصلاة رفع يديه حتى يحاذي منكبيه وقبل أن يركع وإذا رفع من الركوع ولا يرفعهما بين السجدتين (صحيح مسلم - رقم الحديث: ٣٩٠/٢١)

हदीस ६ (१) : हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर रजि० का बयान है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज पढते तो अपने मोंढो तक अपने दोनों हाथ उठाते और इसी तरह रुकूअ में जाते वक्त और रुकूअ से सर उठाते वक्त अपने दोनों हाथ उठाते थे और सज्दों के दर्मियान रफा यदैन नही करते थे। (हदीस नम्बर २१/३६०)

٧- (٢) حدثني محمد بن رافع حدثنا عبد الرزاق أخبرنا ابن جريج حدثني ابن شهاب عن سالم بن عبد الله أن ابن عمر قال كان رسول الله صلى الله عليه وسلم إذا قام للصلاة رفع يديه حتى تكونا حذو منكبيه ثم كبر فإذا أراد أن يركع فعل مثل ذلك وإذا رفع من الركوع فعل مثل ذلك ولا يفعله حين يرفع رأسه من السجود (صحيح مسلم - رقم الحديث: ٣٩٠/٢٢)

हदीस ७ (२) : हजरत इब्ने उमर रजि० का बयान है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज के लिए खडे होते तो अपने दोनों हाथ अपने दोनो मोंढो तक उठा के अल्लाहु अकबर कहते और जब रुकूअ का इरादा फरमाते तब भी ऐसा ही करते। और जब सज्दा से सर उठाते तो ऐसा न करते यानी रफा यदैन सज्दो के दर्मियान नहीं करते थे।

(हदीस नम्बर : २२/३६०)

٨- (٣) حدثني محمد بن رافع حدثنا حجين وهو ابن المثنى حدثنا الليث عن عقيل ح و حدثني محمد بن عبد الله بن قهزاذ حدثنا سلمة بن سليمان أخبرنا يونس كلاهما عن الزهري بهذا الإسناد كما قال ابن جريج كان رسول الله إذا قام للصلاة رفع يديه حتى تكونا حذو منكبيه ثم كبر (صحيح مسلم - رقم الحديث: ٣٩٠/٢٣)

हदीस ८ (३) : मुझे मुहम्मद बिन राफे ने हदीस बयान की वह कहते है हमें हुसैन बिन मुसन्ना ने वह कहते हैं हमें लैस ने अकील से और हदीस बयान की मुझे मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन कुहजाज ने यह कहते है हमे सलमा बिन सुलेमान ने उसको यूनुस ने यूनुस और अकील दोनों ने जुहरी से इसी सनद से बयान किया है उसी तरह जिस तरह इब्ने जुरैज ने बयान किया यानी सालिम बिन अब्दुल्लाह से उस ने अब्दुल्लाह बिन उमर से कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज़ के लिए खड़े होते तो अपने दोनों हाथ मोंढों तक उठा कर अल्लाहु अकबर कहते।

(हदीस नम्बर २३/३६०)

٩- (٤) حدثنا يحيى بن يحيى أخبرنا خالد بن عبد الله عن خالد عن أبي قلابة أنه رأى مالك بن الحويرث إذا صلى كبر ثم رفع يديه وإذا أراد أن يركع رفع يديه وإذا رفع رأسه من الركوع رفع يديه وحدث أن رسول الله صلى الله عليه وسلم كان يفعل هكذا (صحيح مسلم - رقم الحديث: ٣٩١/٢٤)

हदीस ९ (४) : अबू किलाबा का बयान है कि उन्होंने मालिक बिन हुवैरिस रजि० को नमाज पढते देखा उन्होंने नमाज पढने के लिए तक्बीर कही और रफा यदैन किया और फिर रुकूअ मे जाते वक्त रफा यदैन किया और रुकूअ से सर उठा कर भी और बयान किया कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ऐसा ही किया करते थे। (हदीस नम:२४/३६१)

١٠- (٥) حدثني أبو كامل الجحدري حدثنا أبو عوانة عن قتادة عن نصر بن عاصم عن مالك بن الحويرث أن رسول الله صلى الله عليه وسلم كان إذا كبر رفع يديه حتى يحاذي بهما أذنيه وإذا ركع رفع يديه حتى يحاذي بهما أذنيه وإذا رفع رأسه من الركوع فقال سمع الله لمن حمده فعل مثل ذلك (صحيح مسلم - رقم الحديث: ٣٩١/٢٥)

हदीस १० (५) : मालिक बिन हुवैरिस रजि० का बयान है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब तक्बीर कहते तो अपने दोनों हाथ अपने कानों तक उठाते और जब रुकूअ करते तो अपने दोनों हाथ कानों तक उठाते और रुकूअ से सर उठाते हुए **समिअल्लाहुलिमन हमिदह** कहते और रफा यदैन करते थे। (हदीस नम्बर २५/३६१)

١١- (٦) حدثنا زهير بن حرب حدثنا عفان حدثنا همام حدثنا محمد بن جحادة حدثني عبد الجبار بن وائل عن علقمة بن وائل ومولى لهم أنهما حدثاه عن أبيه وائل بن حجر أنه رأى النبي صلى الله عليه وسلم رفع يديه حين دخل في الصلاة كبر وصف همام حيال أذنيه ثم التحف بثوبه ثم وضع يده اليمنى على اليسرى فلما أراد أن يركع أخرج يديه من الثوب ثم رفعهما ثم كبر فركع فلما قال سمع الله لمن حمده رفع يديه فلما سجد سجد بين كفيه (صحيح مسلم – رقم الحديث: ٥١/٤٠١)

हदीस ११ (६) : वाइल बिन हुज्र रजि० का बयान है कि उन्होंने रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इस तौर पर देखा कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने नमाज शुरू करते वक्त अपने दोनों हाथ उठाये और अल्लाहु अकबर कहा। इस हदीस के रावी हम्माम का बयान है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दोनों हाथ कानों तक उठाए फिर चादर ओढ ली। उसके बाद सीधा हाथ उलटे हाथ पर रखा। फिर आपने चादर में से दोनों हाथ बाहर निकाल के दोनों कानों तक उठा कर तक्बीर पढ़ी उसके बाद रुकूअ में गये। और हालते कयाम **समिअल्लाहुलिमन हमिदह** पढ़ कर रफा यदैन किया और फिर आपने दोनों हथेलियों के दर्मियान में सज्दा किया। (हदीस नम्बर ५४/४०१)

(३) तिर्मिज़ी शरीफ

١٢- (١) حدثنا قتيبة وابن أبي عمر قالا حدثنا سفيان بن عيينة عن الزهري عن سالم عن أبيه قال رأيت رسول الله صلى الله عليه وسلم إذا افتتح الصلاة يرفع يديه حتى يحاذي منكبيه وإذا ركع وإذا رفع رأسه من الركوع وزاد ابن أبي عمر في حديثه وكان لا يرفع بين السجدتين (سنن الترمذي – رقم الحديث: ٢٥٥)

हदीस १२ (७) : रिवायत है सालिम से वह रिवायत करते हैं अपने बाप (अब्दुल्लाह बिन उमर रजि अल्लाहु अन्हुमा) से कहा देखा मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जब शुरू करते नमाज तो उठाते दोनों हाथ यहां तक कि बराबर हो जाते दोनों शानों के और जब रुकूअ करते और जब रुकूअ से सर उठाते और ज्यादा कहा इब्ने अबी उमर ने अपनी रिवायत में कि हाथ नहीं उठाते थे दर्मियान दोनों सज्दों के। (हदीस नम्बर २५५)

(४) अबू दाऊद शरीफ

١٣- (١) حدثنا أحمد بن محمد بن حنبل حدثنا سفيان عن الزهري عن سالم عن أبيه قال رأيت رسول الله صلى الله عليه وسلم إذا استفتح الصلاة رفع يديه حتى يحاذي منكبيه وإذا أراد أن يركع وبعدما يرفع رأسه من الركوع وقال سفيان مرة وإذا رفع رأسه وأكثر ما كان يقول وبعد ما يرفع رأسه من الركوع ولا يرفع بين السجدتين (سنن أبي داود – رقم الحديث: ٧٢١)

हदीस १३ (१) : अहमद बिन हंबल, सुफियान, जुहरी, सालिम उनके वालिद अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि अल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा जब नमाज शुरू करते दोनों हाथ उठाते मोंढो तक इसी तरह जब रुकूअ करते और जब सर उठाते रुकूअ से और नही हाथ उठाते थे दोनों सज्दों के बीच में। (हदीस नम्बर जिल्द ७२१)

١٤- (٢) حدثنا محمد بن المصفى الحمصي حدثنا بقية حدثنا الزبيدي عن الزهري عن سالم عن عبد الله بن عمر قال كان رسول الله صلى الله عليه وسلم إذا قام إلى الصلاة رفع يديه حتى تكون حذو منكبيه ثم كبر وهما كذلك فيركع ثم إذا أراد أن يرفع صلبه رفعهما حتى تكون حذو منكبيه ثم قال سمع الله لمن حمده ولا يرفع يديه في السجود ويرفعهما في كل تكبيرة يكبرها قبل الركوع حتى تنقضي صلاته (سنن أبي داود – رقم الحديث: ٧٢٢)

हदीस १४ (२) : मुहम्मद बिन मुसफ्फा हिम्सी, बकिया, जुबैदी, जुहरी, सालिम, अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज़ के लिए खड़े होते तो दोनों हाथ उठाते मोंढों तक फिर तक्बीर कहते और हाथ वही रहते फिर रुकूअ करते, फिर जब सर उठाते रुकूअ से दोनों हाथों को उठाते मोंढों तक फिर फरमाते **समिअल्लाहुलिमन हमिदह** और नहीं उठाते थे दोनों सज्दों में बल्कि उठाते थे हर रकअत में जब तक्बीर कहते रुकूअ करने के लिए यहां तक कि पूरी हो जाती नमाज आपकी। (हदीस नम्बर : ७२२)

١٥- (٣) حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ الْمُفَضَّلِ عَنْ عَاصِمِ بْنِ كُلَيْبٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ وَائِلِ بْنِ حُجْرٍ قَالَ قُلْتُ لَأَنْظُرَنَّ إِلَى صَلَاةِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَيْفَ يُصَلِّي قَالَ فَقَامَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَاسْتَقْبَلَ الْقِبْلَةَ فَكَبَّرَ فَرَفَعَ يَدَيْهِ حَتَّى حَاذَتَا أُذُنَيْهِ ثُمَّ أَخَذَ شِمَالَهُ بِيَمِينِهِ فَلَمَّا أَرَادَ أَنْ يَرْكَعَ رَفَعَهُمَا مِثْلَ ذَلِكَ ثُمَّ وَضَعَ يَدَيْهِ عَلَى رُكْبَتَيْهِ فَلَمَّا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ رَفَعَهُمَا مِثْلَ ذَلِكَ فَلَمَّا سَجَدَ وَضَعَ رَأْسَهُ بِذَلِكَ الْمَنْزِلِ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ ثُمَّ جَلَسَ فَافْتَرَشَ رِجْلَهُ الْيُسْرَى وَوَضَعَ يَدَهُ الْيُسْرَى عَلَى فَخِذِهِ الْيُسْرَى وَحَدَّ مِرْفَقَهُ الْأَيْمَنَ عَلَى فَخِذِهِ الْيُمْنَى وَقَبَضَ ثِنْتَيْنِ وَحَلَّقَ حَلْقَةً وَرَأَيْتُهُ يَقُولُ هَكَذَا وَحَلَّقَ بِشْرٌ الْإِبْهَامَ وَالْوُسْطَى وَأَشَارَ بِالسَّبَّابَةِ (سنن ابي داود – رقم الحديث: ٧٢٦)

हदीस १५ (३) : मुसद्दद, बिश्र बिन मुफज्जल, आसिम बिन कुलैब, उनके वालिद वाइल बिन हुज्र रजि० से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नमाज को कस्दन देखा, आप कैसे पढ़ते है, तो पहले आप खड़े हुए तो किब्ले की तरफ मुह किया, और अल्लाहु अकबर कहा दोनों हाथ उठाए कानों तक फिर बाए हाथ को दाएं हाथ से पकड़ा जब रुकूअ का कसद किया। इसी तरह दोनो हाथों को उठाया, जब सज्दा किया तो अपने सर को दोनों हाथो के बीच में रखा फिर दोनों हाथ अपने घुटनो पर रखे, जब रुकूअ से सर उठाया उसी तरह दोनों हाथों को उठाया। फिर बैठे तो बाए पैर को बिछाया और बाया हाथ अपने बाएं रान

पर रखा और दाहिने हाथ की कुहनी दाहिनी रान से जुदा रखी। और दो उंगलियों को बन्द कर लिया। और एक हल्का बना लिया (बीच की उंगली और अंगूठे से) और देखा मैंने उनको इस तरह करते थे। और बिश्र ने बताया अंगूठे और बीच की उंगली का हल्का किया। और कलिमे की उंगली से इशारा किया। (हदीस नम्बर : ७२६)

١٦- (٤) حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ حَدَّثَنَا زَائِدَةُ عَنْ عَاصِمِ بْنِ كُلَيْبٍ بِإِسْنَادِهِ وَمَعْنَاهُ قَالَ فِيهِ ثُمَّ وَضَعَ يَدَهُ الْيُمْنَى عَلَى ظَهْرِ كَفِّهِ الْيُسْرَى وَالرُّسْغِ وَالسَّاعِدِ وَقَالَ فِيهِ ثُمَّ جِئْتُ بَعْدَ ذَلِكَ فِي زَمَانٍ فِيهِ بَرْدٌ شَدِيدٌ فَرَأَيْتُ النَّاسَ عَلَيْهِمْ جُلُّ الثِّيَابِ تَحَرَّكُ أَيْدِيهِمْ تَحْتَ الثِّيَابِ (سنن ابي داود – رقم الحديث: ٧٢٧)

हदीस १६ (४) : हसन बिन अली, अबुल वलीद, जाइदः, आसिम बिन कुलैब सनदन व मानन इसी तरह रिवायत करते हैं कि फिर आप ने अपना दाहिना हाथ बाए हथेली, गट्टे और कलाई पर रखा, इसी रिवायत में यह है कि फिर मैं आया सख़्त जाड़े में तो मैंने लोगों को देखा बहुत कपड़े पहने हुए उसके अन्दर उनके हाथ हिलते थे। (रफा यदैन के वक्त) (हदीस नम्बर : ७२७)

١٧- (٥) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ حَنْبَلٍ حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ الضَّحَّاكُ بْنُ مَخْلَدٍ ح و حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا يَحْيَى وَهَذَا حَدِيثُ أَحْمَدَ قَالَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ الْحَمِيدِ يَعْنِي ابْنَ جَعْفَرٍ أَخْبَرَنِي مُحَمَّدُ بْنُ عَمْرِو بْنِ عَطَاءٍ قَالَ سَمِعْتُ أَبَا حُمَيْدٍ السَّاعِدِيَّ فِي عَشَرَةٍ مِنْ أَصْحَابِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنْهُمْ أَبُو قَتَادَةَ قَالَ أَبُو حُمَيْدٍ أَنَا أَعْلَمُكُمْ بِصَلَاةِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالُوا فَلِمَ فَوَاللَّهِ مَا كُنْتَ بِأَكْثَرِنَا لَهُ تَبَعًا وَلَا أَقْدَمِنَا لَهُ صُحْبَةً قَالَ بَلَى قَالُوا فَاعْرِضْ قَالَ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا قَامَ إِلَى الصَّلَاةِ يَرْفَعُ يَدَيْهِ حَتَّى يُحَاذِيَ بِهِمَا مَنْكِبَيْهِ ثُمَّ يُكَبِّرُ حَتَّى يَقِرَّ كُلُّ عَظْمٍ فِي مَوْضِعِهِ مُعْتَدِلًا ثُمَّ يَقْرَأُ ثُمَّ يُكَبِّرُ فَيَرْفَعُ يَدَيْهِ حَتَّى يُحَاذِيَ بِهِمَا مَنْكِبَيْهِ ثُمَّ يَرْكَعُ وَيَضَعُ رَاحَتَيْهِ عَلَى رُكْبَتَيْهِ ثُمَّ يَعْتَدِلُ فَلَا يَصُبُّ رَأْسَهُ وَلَا يُقْنِعُ ثُمَّ يَرْفَعُ رَأْسَهُ فَيَقُولُ سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ ثُمَّ يَرْفَعُ يَدَيْهِ حَتَّى يُحَاذِيَ

بِهِمَا مَنْكِبَيْهِ مُعْتَدِلًا ثُمَّ يَقُولُ اللَّهُ أَكْبَرُ ثُمَّ يَهْوِي إِلَى الْأَرْضِ فَيُجَافِي يَدَيْهِ عَنْ جَنْبَيْهِ ثُمَّ يَرْفَعُ رَأْسَهُ وَيَثْنِي رِجْلَهُ الْيُسْرَى فَيَقْعُدُ عَلَيْهَا وَيَفْتَحُ أَصَابِعَ رِجْلَيْهِ إِذَا سَجَدَ وَيَسْجُدُ ثُمَّ يَقُولُ اللَّهُ أَكْبَرُ وَيَرْفَعُ رَأْسَهُ وَيَثْنِي رِجْلَهُ الْيُسْرَى فَيَقْعُدُ عَلَيْهَا حَتَّى يَرْجِعَ كُلُّ عَظْمٍ إِلَى مَوْضِعِهِ ثُمَّ يَصْنَعُ فِي الْأُخْرَى مِثْلَ ذَلِكَ ثُمَّ إِذَا قَامَ مِنَ الرَّكْعَتَيْنِ كَبَّرَ وَرَفَعَ يَدَيْهِ حَتَّى يُحَاذِيَ بِهِمَا مَنْكِبَيْهِ كَمَا كَبَّرَ عِنْدَ افْتِتَاحِ الصَّلَاةِ ثُمَّ يَصْنَعُ ذَلِكَ فِي بَقِيَّةِ صَلَاتِهِ حَتَّى إِذَا كَانَتِ السَّجْدَةُ الَّتِي فِيهَا التَّسْلِيمُ أَخَّرَ رِجْلَهُ الْيُسْرَى وَقَعَدَ مُتَوَرِّكًا عَلَى شِقِّهِ الْأَيْسَرِ قَالُوا صَدَقْتَ هَكَذَا كَانَ يُصَلِّي صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ (سنن ابي داود – رقم الحديث: ٧٣٠)

हदीस १७ (५) : अहमद बिन हंबल, अबू आसिम जह्हाक बिन मख़लद (दूसरी सनद) मुसद्दद, यहया, अब्दुल हमीद बिन जा'फर, मुहम्मद बिन उमर बिन अता, अबू हुमैद साइदी रज़ि० से रिवायत है कि वह दस सहाबियों में बैठे हुए थे उन में अबू कतादा रज़ि० भी थे। अबू हुमैद रज़ि० ने कहा मैं तुम सबसे ज्यादा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नमाज़ को जानता हूं। उन लोगों ने कहा क्यों कर? खुदा की कसम,तुम हम से ज्यादा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैरवी नहीं करते थे। और न ही तुम हम से आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुहबत के लिहाज़ से मुकद्दम हो। तो उन्होंने कहा क्यों नहीं तो इन (दस सहाबा रज़ि०) ने कहा कि फिर पेश करो,तो उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज़ को खड़े होते,दोनों हाथ उठाते अपने मोंढों तक फिर तक्बीर कहते जब हर एक हड्डी अपने मकाम पर आ जाती एतदाल से तो आप किरात शुरू करते फिर तक्बीर कहते और दोनों हाथ उठाते मोंढों तक फिर रुकूअ करते और दोनों हथेलियां अपने घुटनों पर रखते। और पीठ सीधी करते (और सर को पीठ के बराबर करते) न झुकाते न ऊंचा रखते फिर उठाते और फरमाते **समिअल्लाहुलिमन हमिदह** फिर दोनो हाथ उठाते अपने मोंढों तक सीधे खड़े हो कर फिर अल्लाहु अकबर कहते। और जमीन की तरफ झुकते तो दोनों हाथों को अपने पहलुओं से जुदा रखते, फिर उठाते अपना सर सज्दे से

और बाएं पांव को बिछा कर उस पर बैठते और सज्दा के वक़्त उंगलियों को खुला रखते। फिर दूसरा सज्दा करते अल्लाहु अकबर कह कर, फिर सर उठाते सज्दे से और बाएं पैर को बिछा कर उस पर बैठते इतनी देर तक कि हर एक हड्डी अपने ठिकाने पर आ जाती। (उसके बाद खड़े होते) और दूसरी रकअत में भी ऐसा ही करते। फिर दो रकअतों में भी ऐसा ही करते। फिर जब दो रकअतों के बाद तीसरी करअत के लिए खड़े होते। अल्लाहु अकबर कहते। और दोनों हाथ उठाते मोंढों तक जैसा कि शुरू नमाज के वक्त उठाते थे फिर बाकी नमाज मे ऐसा ही करते यहा तक कि जब अखीर सज्दे से फारिग होते जिस के बाद सलाम होता है। अपना बाया पांव निकालते और बाऐं कूल्हे पर बैठते। उन सहाबा रज़ि० ने यह सुन कर कहा सच कहा तूने, इसी तरह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नमाज पढते थे। (हदीस नम्बर : ७३०)

١٨- (٦) حَدَّثَنَا الْقَعْنَبِيُّ عَنْ مَالِكٍ عَنْ نَافِعٍ أَنَّ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عُمَرَ كَانَ إِذَا ابْتَدَأَ الصَّلَاةَ يَرْفَعُ يَدَيْهِ حَذْوَ مَنْكِبَيْهِ وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ رَفَعَهُمَا دُونَ ذَلِكَ قَالَ أَبُو دَاوُد لَمْ يَذْكُرْ رَفْعَهُمَا دُونَ ذَلِكَ أَحَدٌ غَيْرُ مَالِكٍ فِيمَا أَعْلَمُ (سنن أبي داود – رقم الحديث: ٧٤٢)

हदीस १८ (६) : कअनबी, मालिक, नाफे से रिवायत है कि अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० जब नमाज शुरू करते थे अपने दोनों हाथों को शानों तक उठाते थे और जब रुकूअ से सर उठाते तो उस से कम हाथों को उठाते थे। कहा अबू दाऊद ने सिवा मालिक के किसी ने यह रिवायत नहीं किया कि रुकूअ से सर उठाते वक्त उस से कम उठाते थे। (बल्कि और लोगों ने एक साथ रिवायत किया है। जितना शुरू में उठाते थे उतना ही बीच मे।)

(हदीस नम्बर : ७४२)

١٩- (٧) حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ وَمُحَمَّدُ بْنُ عُبَيْدٍ الْمُحَارِبِيُّ قَالَا حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ فُضَيْلٍ عَنْ عَاصِمِ بْنِ كُلَيْبٍ عَنْ مُحَارِبِ بْنِ دِثَارٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا قَامَ مِنَ الرَّكْعَتَيْنِ كَبَّرَ وَرَفَعَ يَدَيْهِ (سنن أبي داود–رقم الحديث: ٧٤٣)

हदीस १९ (७) : उस्मान बिन अबी शैबह और मुहम्मद बिन उबैद मुहारिबी,

मुहम्मद बिन फुजैल, आसिम बिन कुलैब, मुहारिब बिन दिसार, इब्ने उमर रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब दो रकअतें पढ़ कर उठते तो तक्बीर कहते और दोनों हाथ उठाते। (हदीस नम्बर : ७४३)

٢٠- (٨) حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ دَاوُدَ الْهَاشِمِيُّ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ أَبِي الزِّنَادِ عَنْ مُوسَى بْنِ عُقْبَةَ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ الْفَضْلِ بْنِ رَبِيعَةَ بْنِ الْحَارِثِ بْنِ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ الْأَعْرَجِ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ أَبِي رَافِعٍ عَنْ عَلِيِّ بْنِ أَبِي طَالِبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنْ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّهُ كَانَ إِذَا قَامَ إِلَى الصَّلَاةِ الْمَكْتُوبَةِ كَبَّرَ وَرَفَعَ يَدَيْهِ حَذْوَ مَنْكِبَيْهِ وَيَصْنَعُ مِثْلَ ذَلِكَ إِذَا قَضَى قِرَاءَتَهُ وَأَرَادَ أَنْ يَرْكَعَ وَيَصْنَعُهُ إِذَا رَفَعَ مِنَ الرُّكُوعِ وَلَا يَرْفَعُ يَدَيْهِ فِي شَيْءٍ مِنْ صَلَاتِهِ وَهُوَ قَاعِدٌ وَإِذَا قَامَ مِنَ السَّجْدَتَيْنِ رَفَعَ يَدَيْهِ كَذَلِكَ وَكَبَّرَ قَالَ أَبُو دَاوُد فِي حَدِيثِ أَبِي حُمَيْدٍ السَّاعِدِيِّ حِينَ وَصَفَ صَلَاةَ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا قَامَ مِنَ الرَّكْعَتَيْنِ كَبَّرَ وَرَفَعَ يَدَيْهِ حَتَّى يُحَاذِيَ بِهِمَا مَنْكِبَيْهِ كَمَا كَبَّرَ عِنْدَ افْتِتَاحِ الصَّلَاةِ (سنن ابي داود – رقم الحديث: ٧٤٤)

हदीस २० (८) : हसन बिन अली, सुलेमान बिन दाऊद हाशमी अब्दुर्रहमान बिन अबिज्जिनाद मूसा बिन उक्बा, अब्दुल्लाह बिन फजल अब्दुर्रहमान आरज, उबैदुल्लाह बिन अबी राफे, अली रज़ि० बिन अबी तालिब से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब फर्ज नमाज के लिए खड़े होते तो तक्बीर कहते और दोनों हाथ उठाते मोंढों तक और जब किरअत से फारिग होते और रुकूअ का इरादा करते तो उसी तरह हाथों को उठाते और जब रुकूअ से सर उठाते तो उसी तरह हाथों को उठाते और बैठने की हालत में हाथों को न उठाते। और जब दो रकअतें पढ़ कर उठते तो दोनों हाथ उसी तरह उठाते और तक्बीर कहते। अबू दाऊद ने कहा कि अबू हुमैद साइदी रज़ि० की हदीस में है जब दो रकअतें पढ़ कर खड़े होते तो तक्बीर कहते और दोनों हाथ उठाते मोंढों तक जैसे तक्बीर कही थी शुरू नमाज में (इस

के बयान करने से यह गर्ज है, कि हजरत अली रज़ि० की रिवायत में इजा कामा मिनस्सज्दतैन के मानी व इजा कामा मिनर्रकअतैन हैं। चुनांचे इसी तरह तर्जमा किया गया है) (हदीस नम्बर : ७४४)

٢١- (٩) حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ عُمَرَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ نَصْرِ بْنِ عَاصِمٍ عَنْ مَالِكِ بْنِ الْحُوَيْرِثِ قَالَ رَأَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَرْفَعُ يَدَيْهِ إِذَا كَبَّرَ وَإِذَا رَكَعَ وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ حَتَّى يَبْلُغَ بِهِمَا فُرُوعَ أُذُنَيْهِ (سنن ابي داود – رقم الحديث: ٧٤٥)

हदीस २१ (९) : हफ्स बिन उमर, शोअबा, कतादा, नस्र बिन आसिम, मालिक बिन हुवैरिस रज़ि० से रिवायत है, वह कहते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा जब तक्बीर तहरीमा कहते, और जब रुकूअ करते और रुकूअ से सर उठाते तो कानों की लव तक रफा यदैन करते। (हदीस नम्बर : ७४५)

(५) सुनन नसाई शरीफ़

٢٢- (١) أَخْبَرَنَا عَمْرُو بْنُ مَنْصُورٍ قَالَ حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَيَّاشٍ قَالَ حَدَّثَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ حَدَّثَنِي سَالِمٌ ح و أَخْبَرَنِي أَحْمَدُ بْنُ مُحَمَّدِ بْنِ الْمُغِيرَةِ قَالَ حَدَّثَنَا عُثْمَانُ هُوَ ابْنُ سَعِيدٍ عَنْ شُعَيْبٍ عَنْ مُحَمَّدٍ وَهُوَ الزُّهْرِيُّ قَالَ أَخْبَرَنِي سَالِمُ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ عَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ رَأَيْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا افْتَتَحَ التَّكْبِيرَ فِي الصَّلَاةِ رَفَعَ يَدَيْهِ حِينَ يُكَبِّرُ حَتَّى يَجْعَلَهُمَا حَذْوَ مَنْكِبَيْهِ وَإِذَا كَبَّرَ لِلرُّكُوعِ فَعَلَ مِثْلَ ذَلِكَ ثُمَّ إِذَا قَالَ سَمِعَ اللهُ لِمَنْ حَمِدَهُ فَعَلَ مِثْلَ ذَلِكَ وَقَالَ رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ وَلَا يَفْعَلُ ذَلِكَ حِينَ يَسْجُدُ وَلَا حِينَ يَرْفَعُ رَأْسَهُ مِنَ السُّجُودِ (سنن النسائي – رقم الحديث: ٨٧٦)

हदीस २२ (१) : अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० से रिवायत है, उन्होंने कहा कि मैंने देखा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जब तक्बीर कहते नमाज शुरू करने की तो दोनों हाथ उठाते तक्बीर कहते वक्त यहां तक कि मोंढों के बराबर आ जाते और जब रुकूअ के लिए तक्बीर कहते तब भी ऐसा

ही करते (यानी दोनों हाथ उठाते मोंढो तक) फिर जब **समिअल्लाहुलि** हमिदह कहते तो ऐसा ही करते यानी दोनों हाथ उठाते मोंढो तक और र ब लकल हम्द कहते, फिर जब सज्दे में जाते तो हाथ न उठाते, इसी त जब सज्दे से सर उठाते तब भी हाथ न उठाते। (हदीस नम्बर : ८७६)

٢٢- (٢) أَخْبَرَنَا سُوَيْدُ بْنُ نَصْرٍ قَالَ أَنْبَأَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ الْمُبَارَكِ عَنْ يُونُسَ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ أَخْبَرَنِي سَالِمٌ عَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا قَامَ إِلَى الصَّلَاةِ رَفَعَ يَدَيْهِ حَتَّى تَكُونَا حَذْوَ مَنْكِبَيْهِ ثُمَّ يُكَبِّرُ قَالَ وَكَانَ يَفْعَلُ ذَلِكَ حِينَ يُكَبِّرُ لِلرُّكُوعِ وَيَفْعَلُ ذَلِكَ حِينَ يَرْفَعُ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ وَيَقُولُ سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ وَلَا يَفْعَلُ ذَلِكَ فِي السُّجُودِ (سنن النسائي – رقم الحديث: ٨٧٧)

हदीस २३ (२) : इब्ने उमर रजि० से रिवायत है कि मैंने दे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जब आप खड़े होते नम के लिए उठाते दोनों हाथ यहा तक कि मोंढो के बराबर आ जाते। फ़ तकबीर कहते। और जब रुकूअ के लिए तकबीर कहते तब भी ऐसा करते (यानी दोनों हाथ मोंढो तक उठाते) फिर **समिअल्लाहुलि हमिदह** कहते तो ऐसा ही करते (यानी मोंढो तक हाथ उठाते और ज सज्दे में जाते तो हाथ नहीं उठाते थे।) (हदीस नम्बर : ८७७)

٢٤- (٣) أَخْبَرَنَا قُتَيْبَةُ عَنْ مَالِكٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ سَالِمٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ إِذَا افْتَتَحَ الصَّلَاةَ رَفَعَ يَدَيْهِ حَذْوَ مَنْكِبَيْهِ وَإِذَا رَكَعَ وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ رَفَعَهُمَا كَذَلِكَ وَقَالَ سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ وَكَانَ لَا يَفْعَلُ ذَلِكَ فِي السُّجُودِ(سنن النسائي–رقم الحديث: ٨٧٨)

हदीस २४ (३) : अब्दुल्लाह बिन उमर रजि० से रिवायत है कि रसूलुल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज का आगाज करते तो दोनों हाथ मों तक उठाते और जब रुकूअ करते और रुकूअ से सर उठाते तो दोनों हाथ उ मोंढो तक और कहते समिअल्लाहुलिमन हमिदह रब्बना व लकल हम्द फि सज्दे में ऐसा नहीं करते थे। (यानी हाथ नहीं उठाते थे।) (हदीस नम्बर : ८७

٢٥- (٤) أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الْأَعْلَى قَالَ حَدَّثَنَا خَالِدٌ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ قَتَادَةَ قَالَ سَمِعْتُ نَصْرَ بْنَ عَاصِمٍ عَنْ مَالِكِ بْنِ الْحُوَيْرِثِ وَكَانَ مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ إِذَا صَلَّى رَفَعَ يَدَيْهِ حِينَ يُكَبِّرُ حِيَالَ أُذُنَيْهِ وَإِذَا أَرَادَ أَنْ يَرْكَعَ وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ (سنن النسائي – رقم الحديث: ٨٨٠)

हदीस २५ (४) : मालिक बिन हुवैरिस रजि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज पढ़ते थे तो दोनों हाथ उठाते थे और जब रुकूअ करते थे तो दोनों हाथ कानों तक उठाते थे। इसी तरह जब रुकूअ से सर उठाते थे। (तो दोनों हाथ कानों तक उठाते थे) (हदीस नम्बर ८८०)

٢٦- (٥) أَخْبَرَنَا يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ عُلَيَّةَ عَنِ ابْنِ أَبِي عَرُوبَةَ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ نَصْرِ بْنِ عَاصِمٍ عَنْ مَالِكِ بْنِ الْحُوَيْرِثِ قَالَ رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حِينَ دَخَلَ فِي الصَّلَاةِ رَفَعَ يَدَيْهِ وَحِينَ رَكَعَ وَحِينَ رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ حَتَّى حَاذَتَا فُرُوعَ أُذُنَيْهِ(سنن النسائي – رقم الحديث: ٨٨١)

हदीस २६ (५) : हमें खबर दी याकूब बिन इब्राहीम ने कहा बयान किया इब्ने उलय्य: ने वह इब्ने अबी अरूबा से, कतादा से नस्र बिन आसिम से वह मालिक बिन हुवैरिस रजि० से रिवायत करते हैं, कहते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा आप ने जब नमाज शुरू की तो दोनों हाथ उठाए और जब रुकूअ किया तो दोनों हाथ उठाए फिर जब रुकूअ से सर उठाया तो दोनों हाथ उठाए कानों की लव तक।
(हदीस नम्बर : ८८१)

٢٧- (٦) أَخْبَرَنَا سُوَيْدُ بْنُ نَصْرٍ قَالَ أَنْبَأَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ الْمُبَارَكِ عَنْ زَائِدَةَ قَالَ حَدَّثَنَا عَاصِمُ بْنُ كُلَيْبٍ قَالَ حَدَّثَنِي أَبِي أَنَّ وَائِلَ بْنَ حُجْرٍ أَخْبَرَهُ قَالَ قُلْتُ لَأَنْظُرَنَّ إِلَى صَلَاةِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَيْفَ يُصَلِّي فَنَظَرْتُ إِلَيْهِ فَقَامَ فَكَبَّرَ وَرَفَعَ يَدَيْهِ حَتَّى حَاذَتَا بِأُذُنَيْهِ

ثُمَّ وَضَعَ يَدَهُ الْيُمْنَى عَلَى كَفِّهِ الْيُسْرَى وَالرُّسْغِ وَالسَّاعِدِ فَلَمَّا أَرَادَ أَنْ يَرْكَعَ رَفَعَ يَدَيْهِ مِثْلَهَا قَالَ وَوَضَعَ يَدَيْهِ عَلَى رُكْبَتَيْهِ ثُمَّ لَمَّا رَفَعَ رَأْسَهُ رَفَعَ يَدَيْهِ مِثْلَهَا ثُمَّ سَجَدَ فَجَعَلَ كَفَّيْهِ بِحِذَاءِ أُذُنَيْهِ ثُمَّ قَعَدَ وَافْتَرَشَ رِجْلَهُ الْيُسْرَى وَوَضَعَ كَفَّهُ الْيُسْرَى عَلَى فَخِذِهِ وَرُكْبَتِهِ الْيُسْرَى وَجَعَلَ حَدَّ مِرْفَقِهِ الْأَيْمَنِ عَلَى فَخِذِهِ الْيُمْنَى ثُمَّ قَبَضَ اثْنَتَيْنِ مِنْ أَصَابِعِهِ وَحَلَّقَ حَلْقَةً ثُمَّ رَفَعَ إِصْبَعَهُ فَرَأَيْتُهُ يُحَرِّكُهَا يَدْعُو بِهَا

(سنن النسائي – رقم الحديث: ٨٨٩)

हदीस २७ (६) : वाइल बिन हुज्र रजि० से रिवायत है कि मैंने कहा कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नमाज को जरूर देखूंगा. आप किस तरह नमाज पढ़ते हैं। मैंने देखा आप खड़े हुए और तक्बीर कही, फिर दोनों हाथ उठाए कानों के बराबर, फिर दाहिना हाथ बाए हाथ पर रखा। यानी एक पहुंचा दूसरे पहुंचे पर या एक हाथ दूसरे हाथ पर। जब रुकूअ करने का कस्द किया तो दोनों हाथ उठाए उसी तरह (यानी कानों के बराबर) और दोनों हाथ अपने घुटनों पर रखे फिर जब सर उठाया रुकूअ से तो दोनों हाथ उठाए उसी तरह (यानी कानों के बराबर) फिर सज्दा किया और दोनों हाथों को अपने कानों के बराबर रखा। फिर बैठे बाया पाव बिछा कर और बाए हाथ की हथेली अपनी रान पर और घुटने पर रखी और दाहिने हाथ की कुहनी दाहिनी रान पर जमाई फिर दो उंगलियों को बन्द कर लिया और एक हल्का बांध लिया (बीच की उंगली और अंगूठे से) और कलिमे की उंगली को ऊपर उठाया तो मैंने देखा आप कलिमे की उंगली को हिलाते थे और उस से दुआ करते थे। (हदीस नम्बर : ८८६)

٢٨- (٧)- أَخْبَرَنَا عَلِيُّ بْنُ حُجْرٍ قَالَ أَنْبَأَنَا إِسْمَعِيلُ عَنْ سَعِيدٍ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ نَصْرِ بْنِ عَاصِمٍ اللَّيْثِيِّ عَنْ مَالِكِ بْنِ الْحُوَيْرِثِ قَالَ رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَرْفَعُ يَدَيْهِ إِذَا كَبَّرَ وَإِذَا رَكَعَ وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ حَتَّى بَلَغَتَا فُرُوعَ أُذُنَيْهِ(سنن النسائي – رقم الحديث: ١٠٢٤)

हदीस २८ (७) : हम को अली बिन हुज्र ने बयान किया उसको इस्माईल ने, उसको सईद ने, उसको कतादा ने, उसको नस्र बिन आसिम लैसी ने उसने कहा हजरत मालिक बिन हुवैरिस रजि० से रिवायत है उन्होंने कहा कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा आप अपने दोनों हाथ उठाते जब तक्बीर कहते और जब रुकूअ करते और जब रुकूअ से सर उठाते, कानों की लव तक। (हदीस नम्बर : १०२४)

٢٩- (٨) أَخْبَرَنَا قُتَيْبَةُ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ سَالِمٍ عَنْ أَبِيهِ قَالَ رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا افْتَتَحَ الصَّلَاةَ يَرْفَعُ يَدَيْهِ حَتَّى يُحَاذِيَ مَنْكِبَيْهِ وَإِذَا رَكَعَ وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ(سنن النسائي – رقم الحديث: ١٠٢٥)

हदीस २९ (८) : हम को कुतैबा ने खबर दी उसने कहा हम को सुफियान ने जुहरी से उसने सालिम से उस ने कहा मेरे वालिद हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर रजि० से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा आप जब नमाज शुरू करते तो दोनों हाथ उठाते मोंढो तक इसी तरह जब रुकूअ करते और रुकूअ से सर उठाते। (हदीस नम्बर : १०२५)

٣٠- (٩) أَخْبَرَنَا سُوَيْدُ بْنُ نَصْرٍ قَالَ أَنْبَأَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ الْمُبَارَكِ عَنْ قَيْسِ بْنِ سُلَيْمٍ الْعَنْبَرِيِّ قَالَ حَدَّثَنِي عَلْقَمَةُ بْنُ وَائِلٍ قَالَ حَدَّثَنِي أَبِي قَالَ صَلَّيْتُ خَلْفَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَرَأَيْتُهُ يَرْفَعُ يَدَيْهِ إِذَا افْتَتَحَ الصَّلَاةَ وَإِذَا رَكَعَ وَإِذَا قَالَ سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ هَكَذَا وَأَشَارَ قَيْسٌ إِلَى نَحْوِ الْأُذُنَيْنِ(سنن النسائي – رقم الحديث: ١٠٥٥)

हदीस ३० (९) : हम को सुवैद बिन नस्र ने खबर दी उसको अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने, उसको कैस बिन सलीम अम्बरी ने, उसको अल्कमा बिन वाइल ने बयान किया कि मेरे बाप वाइल ने मुझे बताया कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पीछे नमाज पढ़ी तो मैंने देखा आप दोनों हाथ उठाते थे जब नमाज शुरू करते थे और जब रुकूअ करते और जब **समिअल्लाहुलिमन हमिदह** कहते कैस रावी ने कहा कि कानों तक। (हदीस नम्बर : १०५५)

٣١- (١٠) أَخْبَرَنَا إِسْمَعِيلُ بْنُ مَسْعُودٍ قَالَ حَدَّثَنَا يَزِيدُ وَهُوَ ابْنُ زُرَيْعٍ قَالَ حَدَّثَنَا سَعِيدٌ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ نَصْرِ بْنِ عَاصِمٍ أَنَّهُ حَدَّثَهُمْ عَنْ مَالِكِ بْنِ الْحُوَيْرِثِ أَنَّهُ رَأَى رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَرْفَعُ يَدَيْهِ إِذَا رَكَعَ وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ حَتَّى يُحَاذِيَ بِهِمَا فُرُوعَ أُذُنَيْهِ(سنن النسائي – رقم الحديث: ١٠٥٦)

हदीस ३१ (१०) : हम को इसमाईल बिन मसऊद ने खबर दी उसको यजीद बिन जुरैअ ने उसको सईद ने कतादा से उसको नस्र बिन आसिम ने उस ने मालिक बिन हुवैरिस से बयान किया कि उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा दोनों हाथ उठाते हुए रुकूअ के वक्त और रुकूअ से सर उठाते वक्त कानों की लव तक। (हदीस नम्बर : १०५६)

٣٢- (١١) أَخْبَرَنَا عَمْرُو بْنُ عَلِيٍّ قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ قَالَ حَدَّثَنَا مَالِكُ بْنُ أَنَسٍ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ سَالِمٍ عَنْ أَبِيهِ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يَرْفَعُ يَدَيْهِ إِذَا دَخَلَ فِي الصَّلَاةِ حَذْوَ مَنْكِبَيْهِ وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ فَعَلَ مِثْلَ ذَلِكَ وَإِذَا قَالَ سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ قَالَ رَبَّنَا لَكَ الْحَمْدُ وَكَانَ لَا يَرْفَعُ يَدَيْهِ بَيْنَ السَّجْدَتَيْنِ(سنن النسائي – رقم الحديث: ١٠٥٧)

हदीस ३२ (११) : हम को अम्र बिन अली ने खबर दी उसको यहया बिन सईद ने उसको मालिक बिन अनस ने जुहरी से, उस ने सालिम से, उस ने अपने वालिद से, हजरत इब्ने उमर रजि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने दोनों हाथों को उठाते मोंढों तक जब नमाज शुरू करते और जब सर उठाते रुकूअ से तो ऐसा ही करते और जब **समिअल्लाहुलिमन हमिदह** कहते तो **रब्बना लकल हम्द** और दोनों सज्दों के बीच मे हाथ नहीं उठाते थे। (हदीस नम्बर : १०५७)

٣٣- (١٢) أَخْبَرَنَا سُوَيْدُ بْنُ نَصْرٍ قَالَ أَنْبَأَنَا عَبْدُ اللَّهِ عَنْ مَالِكٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ سَالِمٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ إِذَا افْتَتَحَ الصَّلَاةَ رَفَعَ يَدَيْهِ حَذْوَ مَنْكِبَيْهِ وَإِذَا كَبَّرَ لِلرُّكُوعِ وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ رَفَعَهُمَا كَذَلِكَ وَقَالَ سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ وَكَانَ لَا يَفْعَلُ ذَلِكَ فِي السُّجُودِ(سنن النسائي: رقم الحديث: ١٠٥٩)

हदीस ३३ (१२) : हम को सुवैद बिन नस्र ने खबर दी. उसको अब्दुल्लाह ने, उसको मालिक ने, उसको इब्ने शिहाब ने, उसको सालिम ने कि हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर रजि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज शुरू करते तो दोनों हाथ मोंढों तक उठाते थे और इसी तरह हाथ उठाते थे जब रुकूअ के लिए तक्बीर कहते और जब रुकूअ से सर उठाते (तो दोनों हाथ मोंढों तक उठाते) और **समिअल्लाहुलिमन हमिदह रब्बना व लकल हम्द** कहते। और सज्दे में हाथ नहीं उठाते थे। (हदीस नम्बर : १०५९)

٣٤- (١٣) أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عُبَيْدٍ الْكُوفِيُّ الْمُحَارِبِيُّ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ الْمُبَارَكِ عَنْ مَعْمَرٍ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ سَالِمٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَرْفَعُ يَدَيْهِ إِذَا افْتَتَحَ الصَّلَاةَ وَإِذَا رَكَعَ وَإِذَا رَفَعَ وَكَانَ لَا يَفْعَلُ ذَلِكَ فِي السُّجُودِ (سنن النسائي – رقم الحديث: ١٠٨٨)

हदीस ३४ (१३) : मुझ को मुहम्मद बिन उबैदुल्लाह कूफी ने खबर दी, उसको इब्ने मुबारक ने, उसको मुअम्मर ने, उसको जुहरी ने सालिम से उसने कहा कि हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर रजि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दोनों हाथ उठाते थे जब नमाज शुरू करते और जब रुकूअ करते और जब रुकूअ से सर उठाते और सज्दे में ऐसा नहीं करते थे (हदीस नम्बर : १०८८)

٣٥- (١٤) أَخْبَرَنِي أَحْمَدُ بْنُ نَاصِحٍ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ إِدْرِيسَ قَالَ سَمِعْتُ عَاصِمَ بْنَ كُلَيْبٍ يَذْكُرُ عَنْ أَبِيهِ عَنْ وَائِلِ بْنِ حُجْرٍ قَالَ قَدِمْتُ الْمَدِينَةَ فَقُلْتُ لَأَنْظُرَنَّ إِلَى صَلَاةِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَكَبَّرَ وَرَفَعَ يَدَيْهِ حَتَّى رَأَيْتُ إِبْهَامَيْهِ قَرِيبًا مِنْ أُذُنَيْهِ فَلَمَّا أَرَادَ أَنْ يَرْكَعَ كَبَّرَ وَرَفَعَ يَدَيْهِ ثُمَّ رَفَعَ رَأْسَهُ فَقَالَ سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ ثُمَّ كَبَّرَ وَسَجَدَ فَكَانَتْ يَدَاهُ مِنْ أُذُنَيْهِ عَلَى الْمَوْضِعِ الَّذِي اسْتَقْبَلَ بِهِمَا الصَّلَاةَ(سنن النسائي – رقم الحديث: ١١٠٢)

हदीस ३५ (१४) : हम को अहमद बिन नासेह ने खबर दी उस ने
हम को इदरीस ने उस ने कहा हम आसिम बिन कुलैब को अपने बा
जिक्र करते सुना कि वह कहते है कि हजरत वाइल बिन हुज्र रजि० फर
है कि मैं मदीना तैय्यबा गया तो मैंने कहा कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल
अलैहि व सल्लम की नमाज जरूर देखूगा। तो आप सल्लल्लाहु अलै
सल्लम ने अल्लाहु अकबर कह कर रफा यदैन की, यहां तक कि आ
दोनो अगूठे को तकरीबन आपके दोनों कानों के बराबर में मैंने देखे।
आप ने रुकूअ करने का इरादा किया तो अल्लाहु अकबर कहा और
यदैन किया। फिर आपने (रुकूअ से) सर उठाया तो **समिअल्लाहुलि
हमिदह** कहा फिर अल्लाहु **अकबर** कह कर सज्दा में चले गये, तो
के दोनो हाथ इस तरह कानों के बराबर हो गये जिस तरह कि नमाज
करते वक्त हुए थे। (हदीस नम्बर ११०२)

٢- (١٥) أَخْبَرَنَا إِسْحَقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ عَنْ سُفْيَانَ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ
الِمٍ عَنْ أَبِيهِ قَالَ كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا افْتَتَحَ الصَّلَاةَ
كَبَّرَ وَرَفَعَ يَدَيْهِ وَإِذَا رَكَعَ وَبَعْدَ الرُّكُوعِ وَلَا يَرْفَعُ بَيْنَ
لسَّجْدَتَيْنِ(سنن النسائي- رقم الحديث: ١١٤٤)

हदीस ३६ (१५) : हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर रजि० फरमाते है
नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज शुरू करते तो **अल
अकबर** कहते और रफा यदैन करते। और जब आप रुकूअ को जाते
रुकूअ के बाद भी (रफा यदैन करते) और दोनों सज्दो के दर्मियान
यदैन नही करते थे। (हदीस नम्बर ११४४)

٢- (١٦) أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ يَزِيدَ الْمُقْرِئُ قَالَ حَدَّثَنَا
فْيَانُ قَالَ حَدَّثَنَا عَاصِمُ بْنُ كُلَيْبٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ وَائِلِ بْنِ حُجْرٍ قَالَ
يْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَرَأَيْتُهُ يَرْفَعُ يَدَيْهِ إِذَا افْتَتَحَ
لصَّلَاةَ حَتَّى يُحَاذِيَ مَنْكِبَيْهِ وَإِذَا أَرَادَ أَنْ يَرْكَعَ وَإِذَا جَلَسَ فِي
لرَّكْعَتَيْنِ أَضْجَعَ الْيُسْرَى وَنَصَبَ الْيُمْنَى وَوَضَعَ يَدَهُ الْيُمْنَى عَلَى
فَخِذِهِ الْيُمْنَى وَنَصَبَ أُصْبُعَهُ لِلدُّعَاءِ وَوَضَعَ يَدَهُ الْيُسْرَى عَلَى فَخِذِهِ
لْيُسْرَى قَالَ ثُمَّ أَتَيْتُهُمْ مِنْ قَابِلٍ فَرَأَيْتُهُمْ يَرْفَعُونَ أَيْدِيَهُمْ فِي الْبَرَانِسِ
سنن النسائي – رقم الحديث: ١١٥٩)

हदीस ३७ (१६) : हजरत वाइल बिन हुज्र रजि० से रिवायत है कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आया। मैंने देखा कि आप दोनों हाथ उठाते थे नमाज के शुरू में मोंढो तक और इसी तरह जब रुकूअ करते तो हाथ उठाते थे और जब दो रकअतो के बाद बैठते तो बाया पांव बिछाते और दाहिना खडा करते और दाहिना हाथ दाहिनी रान पर रखते और कलिमे की उगली खडी करते दुआ के लिए और बायां हाथ बाएं पांव पर रखते। हजरत वाइल बिन हुज्र रजि० ने कहा कि फिर मैं सहाबा रजि० के पास दूसरे साल (सर्दी के मौसम में) आया तो देखा कि वह अपने हाथ उठाते थे जुब्बों के अन्दर। (हदीस नम्बर : ११५६)

٢٨- (١٧)- أَخْبَرَنَا يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ الدَّوْرَقِيُّ وَمُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ وَاللَّفْظُ لَهُ قَالَا حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْحَمِيدِ بْنُ جَعْفَرٍ قَالَ حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ عَمْرِو بْنِ عَطَاءٍ عَنْ أَبِي حُمَيْدٍ السَّاعِدِيِّ قَالَ سَمِعْتُهُ يُحَدِّثُ قَالَ كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا قَامَ مِنَ السَّجْدَتَيْنِ كَبَّرَ وَرَفَعَ يَدَيْهِ حَتَّى يُحَاذِيَ بِهِمَا مَنْكِبَيْهِ كَمَا صَنَعَ حِينَ افْتَتَحَ الصَّلَاةَ (سنن النسائي –رقم الحديث: ١١٨١)

हदीस ३८ (१७) : हम को याकूब बिन इब्राहीम दौरकी और मुहम्मद बिन बश्शार ने खबर दी और लफ्ज मुहम्मद बिन बश्शार के है। उन दोनों ने कहा हम को यह्या बिन सईद ने खबर दी उसने कहा हम को अब्दुल हमीद बिन जाफर ने खबर दी उसने कहा मुझको मुहम्मद बिन अम्र बिन अता ने खबर दी उसने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब दो रकअत के बाद उठते तो **अल्लाहु अकबर** कहते और अपने दोनों हाथ मोंढो तक इस तरह उठाते जैसे शुरू नमाज में उठाते थे। (हदीस नम्बर : ११८१)

٢٩- (١٨) أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الْأَعْلَى الصَّنْعَانِيُّ قَالَ حَدَّثَنَا الْمُعْتَمِرُ قَالَ سَمِعْتُ عُبَيْدَ اللَّهِ وَهُوَ ابْنُ عُمَرَ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ سَالِمٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّهُ كَانَ يَرْفَعُ يَدَيْهِ إِذَا دَخَلَ فِي الصَّلَاةِ وَإِذَا أَرَادَ أَنْ يَرْكَعَ وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ وَإِذَا قَامَ مِنَ الرَّكْعَتَيْنِ يَرْفَعُ يَدَيْهِ كَذَلِكَ حَذْوَ الْمَنْكِبَيْنِ (سنن النسائي – رقم الحديث: ١١٨٢)

हदीस ३६ (१८) : हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर रजि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दोनों हाथ उठाते थे जब नमाज शुरू करते और जब रुकूअ करते और जब रुकूअ से सर उठाते और जब दो रकअतें पढ़ कर (तीसरी रकअत के लिए) उठते इसी तरह मोढों तक हाथ उठाते। (हदीस नम्बर : ११८२)

٤٠- (١٩) أَخْبَرَنَا قُتَيْبَةُ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ عَاصِمِ بْنِ كُلَيْبٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ وَائِلِ بْنِ حُجْرٍ قَالَ رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَرْفَعُ يَدَيْهِ إِذَا افْتَتَحَ الصَّلَاةَ وَإِذَا رَكَعَ وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ وَإِذَا جَلَسَ أَضْجَعَ الْيُسْرَى وَنَصَبَ الْيُمْنَى وَوَضَعَ يَدَهُ الْيُسْرَى عَلَى فَخِذِهِ الْيُسْرَى وَيَدَهُ الْيُمْنَى عَلَى فَخِذِهِ الْيُمْنَى وَعَقَدَ ثِنْتَيْنِ الْوُسْطَى وَالْإِبْهَامَ وَأَشَارَ (سنن النسائي – رقم الحديث: ١٢٦٣)

हदीस ४० (१९) : हम को कुतैबा ने खबर दी उसने कहा मुझको सुफियान ने आसिम बिन कुलैब से उसने अपने बाप से उसने कहा कि हजरत वाइल बिन हुज्र रजि० से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा आप दोनों हाथ उठाते थे जब नमाज शुरू करते और जब रुकूअ करते और जब रुकूअ से सर उठाते और जब बैठते तो बायां पॉव बिछा देते और दाहिना पॉव खड़ा रखते। और बायॉ हाथ बाएँ रान पर रखते और दाहिना हाथ दाहिनी रान पर रखते। और बीच की उंगली और अंगूठे का हलका बाध लेते और इशारा करते। (हदीस नम्बर : १२६३)

٤١- (٢٠) أَخْبَرَنَا إِسْمَعِيلُ بْنُ مَسْعُودٍ قَالَ أَنْبَأَنَا بِشْرُ بْنُ الْمُفَضَّلِ قَالَ حَدَّثَنَا عَاصِمُ بْنُ كُلَيْبٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ وَائِلِ بْنِ حُجْرٍ قَالَ قُلْتُ لَأَنْظُرَنَّ إِلَى صَلَاةِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَيْفَ يُصَلِّي فَقَامَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَاسْتَقْبَلَ الْقِبْلَةَ فَرَفَعَ يَدَيْهِ حَتَّى حَاذَتَا أُذُنَيْهِ ثُمَّ أَخَذَ شِمَالَهُ بِيَمِينِهِ فَلَمَّا أَرَادَ أَنْ يَرْكَعَ رَفَعَهُمَا مِثْلَ ذَلِكَ وَوَضَعَ يَدَيْهِ عَلَى رُكْبَتَيْهِ فَلَمَّا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ رَفَعَهُمَا مِثْلَ ذَلِكَ فَلَمَّا سَجَدَ وَضَعَ رَأْسَهُ بِذَلِكَ الْمَنْزِلِ مِنْ يَدَيْهِ ثُمَّ جَلَسَ فَافْتَرَشَ رِجْلَهُ الْيُسْرَى وَوَضَعَ يَدَهُ الْيُسْرَى عَلَى فَخِذِهِ الْيُسْرَى

وَحَدَّ مِرْفَقَهُ الْأَيْمَنَ عَلَى فَخِذِهِ الْيُمْنَى وَقَبَضَ ثِنْتَيْنِ وَحَلَّقَ وَرَأَيْتُهُ يَقُولُ هَكَذَا وَأَشَارَ بِشْرٌ بِالسَّبَّابَةِ مِنَ الْيُمْنَى وَحَلَّقَ الْإِبْهَامَ وَالْوُسْطَى (سنن النسائي – رقم الحديث: ١٢٦٥)

हदीस ४१ (२०) : हमको इस्माईल बिन मसऊद ने खबर दी उसने कहा कि हम को बिश्र बिन मुफज्जल ने खबर दी उसने कहा हमको आसिम बिन कुलैब ने अपने बाप से बयान किया उसने कहा कि हजरत वाइल बिन हुज्र रजि० से रिवायत है कि मैंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नमाज़ को देखूंगा, आप किस तरह नमाज पढ़ते हैं। तो आप खड़े हुए और किब्ला की तरफ मुँह किया फिर दोनों हाथ उठाए कानों के बराबर। फिर दाहिने हाथ से बाएं हाथ को पकड़ा। जब रुकूअ का इरादा किया तो दोनों हाथों को उसी तरह उठाया (यानी कानों के बराबर) और दोनों हाथ घुटनों पर रखे जब रुकूअ से सर उठाया तो दोनों हाथों को उसी तरह उठाया। फिर जब सज्दा किया तो सर को उसी मकाम पर हाथ के पास रखा (यानी जहां तक हाथ उठाया था वहीं तक हाथ सज्दे में सर से करीब रहा) फिर बैठे तो बायॉं पॉव बिछाया और बायॉं हाथ बाएं रान पर रखा और दाहिनी कुहनी को दाहिनी रान से उठा रखा और दो उंगलियों को बन्द कर लिया और हल्क़ा बांधा। इस तरह बिश्र जो रावी है इस हदीस का उसने कलिमे की उंगली से इशारा किया दाहिने हाथ के अंगूठे और बीच की उंगली का हल्का बनाया। (हदीस नम्बर : १२६५)

(६) सुनन इब्ने माजह शरीफ़

٤٢- (١) حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ مُحَمَّدٍ وَهِشَامُ بْنُ عَمَّارٍ وَأَبُو عُمَرَ الضَّرِيرُ قَالُوا حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ سَالِمٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا افْتَتَحَ الصَّلَاةَ رَفَعَ يَدَيْهِ حَتَّى يُحَاذِيَ بِهِمَا مَنْكِبَيْهِ وَإِذَا رَكَعَ وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ وَلَا يَرْفَعُ بَيْنَ السَّجْدَتَيْنِ (سنن ابن ماجه – رقم الحديث: ٨٥٨)

हदीस ४२ (१) : हमें अली बिन मुहम्मद, हिशाम बिन अम्मार और अबू उमर जरीर ने हदीस सुनाई। उन्होंने कहा हमें सुफियान बिन उयैना ने जुहरी से, उन्होंने सालिम से और वह इब्ने उमर रजि० से उन्होंने कहा कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा, आपने जब नमाज शुरू

की तो अपने दोनो हाथो को उठाया, यहाँ तक कि मोंढो के बराबर कर दिया। इसी तरह जब रुकूअ किया। इसी तरह जब रुकूअ से सर उठाया। और दोनो सज्दो के दर्मियान आप हाथ नही उठाते थे। (हदीस नम्बर : ८५८)

٤٢- (٢) حَدَّثَنَا حُمَيْدُ بْنُ مَسْعَدَةَ حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ حَدَّثَنَا هِشَامٌ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ نَصْرِ بْنِ عَاصِمٍ عَنْ مَالِكِ بْنِ الْحُوَيْرِثِ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ إِذَا كَبَّرَ رَفَعَ يَدَيْهِ حَتَّى يَجْعَلَهُمَا قَرِيبًا مِنْ أُذُنَيْهِ وَإِذَا رَكَعَ صَنَعَ مِثْلَ ذَلِكَ وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ صَنَعَ مِثْلَ ذَلِكَ(سنن ابن ماجه – رقم الحديث:٨٥٩)

हदीस ४३ (२) : हम से हुमैद बिन मस्अदा ने बयान किया उन्होंने यजीद बिन जुरैअ् से, उन्होने ने हिशाम से, उन्होंने नस्र बिन आसिम से, उन्होंने मालिक बिन हुवैरिस रजि० से रिवायत किया कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब तक्बीरे तहरीमा कहते तो दोनों हाथ उठाते थे कानों के करीब तक। और जब रुकूअ करते तो ऐसा ही दोनों हाथों को उठाते। और इसी तरह जब रुकूअ से सर उठाते। (हदीस नम्बर : ८५९)

٤٤- (٣) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْحَمِيدِ بْنُ جَعْفَرٍ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَمْرِو بْنِ عَطَاءٍ عَنْ أَبِي حُمَيْدٍ السَّاعِدِيِّ قَالَ سَمِعْتُهُ وَهُوَ فِي عَشَرَةٍ مِنْ أَصْحَابِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَحَدُهُمْ أَبُو قَتَادَةَ بْنُ رِبْعِيٍّ قَالَ أَنَا أَعْلَمُكُمْ بِصَلَاةِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ إِذَا قَامَ فِي الصَّلَاةِ اعْتَدَلَ قَائِمًا وَرَفَعَ يَدَيْهِ حَتَّى يُحَاذِيَ بِهِمَا مَنْكِبَيْهِ ثُمَّ قَالَ اللَّهُ أَكْبَرُ وَإِذَا أَرَادَ أَنْ يَرْكَعَ رَفَعَ يَدَيْهِ حَتَّى يُحَاذِيَ بِهِمَا مَنْكِبَيْهِ فَإِذَا قَالَ سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ رَفَعَ يَدَيْهِ فَاعْتَدَلَ فَإِذَا قَامَ مِنَ الثِّنْتَيْنِ كَبَّرَ وَرَفَعَ يَدَيْهِ حَتَّى يُحَاذِيَ مَنْكِبَيْهِ كَمَا صَنَعَ حِينَ افْتَتَحَ الصَّلَاةَ(سنن ابن ماجه – رقم الحديث: ٨٦٢)

हदीस ४४ (३) : हम से मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, उन्होंने यह्या बिन सईद से, उन्होंने अब्दुल हमीद बिन जाफर से, उन से मुहम्मद बिन अम्र बिन अता ने उन्होंने कहा मैंने हजरत अबू हुमैद साइदी रजि० से उस वक्त सुना जब वह रसूलुल्लाह सल्लल्लहु अलैहि व सल्लम के

दस सहाबियों के बीच बैठे थे। उन में से एक अबू कतादा रजि० थे। खैर! अबू हुमैद रजि० ने कहा मैं तुम सबसे ज्यादा जानता हूँ आंहजरत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नमाज को। जब आप (स०) नमाज के लिए खड़े होते तो सीधे खड़े होते और दोनो हाथ उठाते, यहाँ तक कि मोंढों के बराबर कर देते। फिर फरमाते अल्लाहु अकबर और जब रुकूअ का कस्द करते तो दोनों हाथ उठाते यहाँ तक कि मोंढों के बराबर कर देते। फिर **समिअल्लाहुलिमन हमिदह** कहते, और दोनों हाथों को उठाते, और सीधे खड़े हो जाते तो **अल्लाहु अकबर** कहते और दोनों हाथ उठाते यहाँ तक कि उनको मोंढों के बराबर कर देते। जैसे शुरू नमाज में किया था। (हदीस नम्बर : ८६२)

٤٥- (٤) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا أَبُو عَامِرٍ حَدَّثَنَا فُلَيْحُ بْنُ سُلَيْمَانَ حَدَّثَنَا عَبَّاسُ بْنُ سَهْلٍ السَّاعِدِيُّ قَالَ اجْتَمَعَ أَبُو حُمَيْدٍ السَّاعِدِيُّ وَأَبُو أُسَيْدٍ السَّاعِدِيُّ وَسَهْلُ بْنُ سَعْدٍ وَمُحَمَّدُ بْنُ مَسْلَمَةَ فَذَكَرُوا صَلَاةَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ أَبُو حُمَيْدٍ أَنَا أَعْلَمُكُمْ بِصَلَاةِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَامَ فَكَبَّرَ وَرَفَعَ يَدَيْهِ ثُمَّ رَفَعَ حِينَ كَبَّرَ لِلرُّكُوعِ ثُمَّ قَامَ فَرَفَعَ يَدَيْهِ وَاسْتَوَى حَتَّى رَجَعَ كُلُّ عَظْمٍ إِلَى مَوْضِعِهِ (سنن ابن ماجه – رقم الحديث: ٨٦٣)

हदीस ४५ (४) : हमें मुहम्मद बिन बश्शार ने हदीस सुनाई, उन्हें अबू आमिर ने, उन्हे फुलैह बिन सुलेमान ने, उन्हे अब्बास बिन सहल साइदी ने हदीस सुनाई कि अबू हुमैद रजि०, अबू उसैद साइदी रजि०, सहल बिन सअद रजि० और मुहम्मद बिन मस्लिम रजि० जमा हुए। और आँहजरत (स०) की नमाज का तज्किरा किया। अबू हुमैद रजि० ने कहा मैं तुम सबसे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नमाज को ज्यादा जानता हूँ। आप खडे हुए और अल्लाहु अकबर कहा और दोनों हाथ उठाए फिर जब रुकूअ की तक्बीर कही तो दोनो हाथ उठाए। फिर खडे हुए (रुकूअ से फारिग हो कर) और दोनों हाथ उठाए और सीधे खडे हुए कि हर एक जोड अपने ठिकाने पर आ गया। (हदीस नम्बर : ८६३)

٤٦- (٥) حدثنا العباس بن عبد العظيم العنبري حدثنا سليمان بن داود أبو أيوب الهاشمي حدثنا عبد الرحمن بن أبي الزناد عن موسى بن عقبة عن عبد الله بن الفضل عن عبد الرحمن الأعرج عن عبيد الله بن أبي رافع عن علي بن أبي طالب قال كان النبي صلى الله عليه وسلم إذا قام إلى الصلاة المكتوبة كبر ورفع يديه حتى يكونا حذو منكبيه وإذا أراد أن يركع فعل مثل ذلك وإذا رفع رأسه من الركوع فعل مثل ذلك وإذا قام من السجدتين فعل مثل ذلك(سنن ابن ماجه – رقم الحديث: ٨٦٤)

हदीस ४६ (५) : हमें अब्बास बिन अब्दुल अजीम अंबरी ने हदीस सुनाई उन्हें सुलेमान बिन दाऊद ने उन्हें अब्दुर्रहमान बिन अबू जिनाद ने, उन्हें मूसा बिन उक़बा ने उन्हें अब्दुल्लाह बिन फ़ज़ल ने उन्हें अब्दुर्रहमान अअरज ने उन्हें उबैदुल्लाह बिन अबू राफ़े ने हज़रत अली रज़ि० से हदीस सुनाई कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब फ़र्ज़ नमाज़ के लिए खड़े होते तो तक्बीर कहते और दोनों हाथों को उठाते मोंढों के बराबर तक और जब रुकूअ करते तो भी ऐसा ही करते (यानी हाथों को उठाते मोंढों तक) और जब रुकूअ से सर उठाते तो भी ऐसा ही करते। और जब दो रकअत पढ़ कर खड़े होते तो भी ऐसा ही करते। (हदीस नम्बर : ८६४)

٤٧- (٦) حدثنا محمد بن بشار حدثنا عبد الوهاب حدثنا حميد عن أنس أن رسول الله صلى الله عليه وسلم كان يرفع يديه إذا دخل في الصلاة وإذا ركع (سنن ابن ماجه – رقم الحديث: ٨٦٦)

हदीस ४७ (६) : मुहम्मद बिन बश्शार कहते है कि हमें अब्दुल वहाब ने हदीस सुनाई उन्हें हुमैद ने और वह हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज़ में दाखिल होते तो अपने दोनों हाथ उठाते। (और इसी तरह) जब रुकूअ करते। (हदीस नम्बर : ८६६)

٤٨- (٧) حدثنا بشر بن معاذ الضرير حدثنا بشر بن المفضل حدثنا عاصم بن كليب عن أبيه عن وائل بن حجر قال قلت لأنظرن إلى رسول الله صلى الله عليه وسلم كيف يصلي فقام فاستقبل القبلة فرفع يديه

حتى حاذتا أذنيه فلما ركع رفعهما مثل ذلك فلما رفع رأسه من الركوع رفعهما مثل ذلك(سنن ابن ماجه – رقم الحديث: ٨٦٧)

हदीस ४८ (७) : बिश बिन मुआज़ जरीर ने हमें हदीस सुनाई उन्होंने बिश बिन मुफ़ज़्ज़ल से, उन्होंने आसिम बिन कुलैब से, उन्होंने अपने बाप से, उन्होंने हज़रत वाइल बिन हुज्र रज़ि० से कि मैंने अपने दिल में कहा मैं देखूंगा आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कैसे नमाज पढ़ते है तो आप खड़े हुए और क़िबला की तरफ़ मुँह किया और दोनों हाथ उठाए, यहाँ तक कि कानों के बराबर हो गये। जब रुकूअ किया तो भी इसी तरह दोनों हाथों को उठाया और जब रुकूअ से सर उठाया तो भी इसी तरह दोनों हाथों को उठाया। (हदीस नम्बर : ८६७)

٤٩- (٨) حدثنا محمد بن يحيى حدثنا أبو حذيفة حدثنا إبراهيم بن طهمان عن أبي الزبير أن جابر بن عبد الله كان إذا افتتح الصلاة رفع يديه وإذا ركع وإذا رفع رأسه من الركوع فعل مثل ذلك ويقول رأيت رسول الله صلى الله عليه وسلم فعل مثل ذلك ورفع إبراهيم بن طهمان يديه إلى أذنيه(سنن ابن ماجه – رقم الحديث: ٨٦٨)

हदीस ४९ (८) : मुहम्मद बिन यह्या कहते है हमें अबू हुज़ैफ़ा ने हदीस सुनाई, उन्हें इब्राहीम बिन तह्मान ने, वह अबू ज़ुबैर से बयान करते है कि जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि० जब नमाज़ शुरु करते तो अपने दोनों हाथ उठाते और जब रुकूअ करते और जब रुकूअ से सर उठाते तो भी ऐसा ही करते (यानी दोनों हाथ उठाते) और कहते कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मैंने ऐसा ही करते हुए देखा। इब्राहीम बिन तह्मान जो इस हदीस के रावी है, उन्होंने अपने हाथ उठाए दोनों कानों तक (यानी रफ़ा यदैन की हद बतलाई)। (हदीस नम्बर : ८६८)

❖ ❖ ❖

(७) मुअत्ता इमाम मालिक रह०

٥٠- (١) حَدَّثَنِي يَحْيَى عَنْ مَالِكٍ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ سَالِمِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ إِذَا افْتَتَحَ الصَّلَاةَ رَفَعَ يَدَيْهِ حَذْوَ مَنْكِبَيْهِ وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ رَفَعَهُمَا كَذَلِكَ أَيْضًا وَقَالَ سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ وَكَانَ لَا يَفْعَلُ ذَلِكَ فِي السُّجُودِ(موطا مالك -ص:٥٩)

हदीस ५० (१) : मुझे यहया ने हदीस सुनाई, उन्होंने मालिक से, उन्होंने इब्ने शिहाब से उन्होंने सालिम बिन अब्दुल्लाह से, उन्होंने अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० से कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज़ शुरू करते थे तो उठाते थे दोनों हाथ बराबर दोनों मोंढो के और जब सर उठाते थे रुकूअ से तब भी दोनों हाथो को उसी तरह उठाते और कहते **समिअल्लाहुलिमन हमिदह रब्बना व लकल हम्द** और सज्दो के बीच में हाथ नहीं उठाते थे। (स० ५९)

फाइदा : यहया बिन यहया की रिवायत मे **"इज़ा रकअ"** का लफ्ज़ छूट गया है। लेकिन इब्ने वहब और इब्ने कासिम और इब्ने मेहदी और मुहम्मद बिन हसन और अब्दुल्लाह बिन यूसुफ और इब्ने नाफ़े वगैरहुम ने अपने अपने मुअत्ता मे इमाम मालिक रह० से–

وَإِذَا رَكَعَ وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ رَفَعَهُمَا كَذَلِكَ أَيْضًا

(व इज़ा रकअ व इज़ा रफ़अ रासहू मिनर्रुकूअ रफ़अहुमा कज़ालिका ऐज़न) ज़िक्र किया है (यानी जब रुकूअ करते और रुकूअ से सर उठाते तब भी दोनों हाथ इसी तरह उठाते)

[illegible] इब्ने अब्दुल बर्र ने इन तमाम रावियों का ज़िक्र किया है जो **"इज़ा रकअ"** का लफ़्ज़ ज़िक्र करते हैं।

[illegible] ने उनके अस्मा [illegible] हस्बे ज़ैल फरमाए

(१) इब्ने वहब (२) इब्ने कासिम (३) यहया बिन सईद अल कत्तान (४) इब्ने अबी औवैस (५) अब्दुर्रहमान बिन महदी (६) जुवैरिया बिन अस्मा (७)

इब्राहीम बिन तहमान (८) अब्दुल्लाह बिन मुबारक (९) बशीर बिन उमर (१०) उस्मान बिन उमर (११) अब्दुल्लाह बिन यूसुफ अत्तनीसी (१२) खालिद बिन मुखल्लद (१३) मक्की बिन इब्राहीम (१४) मुहम्मद बिन अल हसन अश्शैबानी (१५) खारजा बिन मुसअब (१६) अब्दुल मलिक बिन ज्याद अन्नुसैबी (१७) अब्दुल्लाह बिन नाफ़े अस्साइग (१८) अबू कुर्रह मूसा बिन तारिक (१९) मतरफ़ बिन अब्दुल्लाह (२०) कुतैबा बिन सईदीया यह तमाम रावी रुकूअ की तरफ जाते वक्त रफ़ा यदैन का ज़िक्र करते है, और उन्होंने इस हदीस में यह कहा है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम **"काना यरफ़ओ यदैहे इज़ा इफ़्तताहस्सलाता हज़वा मनकबैहि व इज़ा रकआ व इज़ा रफ़आ रासहू मिनर्रुकूअ"।**

यानी : जब नमाज़ शुरू करते और जब रुकूअ करते और जब रुकूअ से सर उठाते तो कन्धों के बराबर रफ़ा यदैन करते।

इमाम दार कुतनी ने इमाम मालिक रह० से इन में से अक्सर की सनदें ज़िक्र की है। जिस तरह हमने ज़िक्र किया है और यही दुरुस्त है। (अत्तम्हीद लेमा फ़िल मुअत्ता मिनल मआनी वल असानीद। (जिल्द : ९, स० २१०, २११)

ज़रकानी शरह मुअत्ता में है :

ورواه ابن وهب وابن القاسم وابن مهد ومحمدابن الحسن وعبد الله بن يوسف وابن نافع وجماعة غيرهم في الموطا باثباته فقالو واذا ركع واذا رفع رأسه من الركوع رفعهماكذلك ايضا (زرقاني ج:١ ،ص:١٥٧)

यानी : इब्ने वहब, इब्ने कासिम, इब्ने महद, मुहम्मद बिन हसन अब्दुल्लाह बिन यूसुफ, इब्ने नाफे और उनके अलावा दीगर जमाअत ने मुअत्ता में **"इज़ा रकआ"** यानी जब रुकूअ करते का लफ्ज़ रिवायत किया है। उन्होंने कहा है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब रुकूअ करते और रुकूअ से सर उठाते तो उसी तरह दोनों हाथों को उठाते।

(ज़रकानी जिल्द १, स० १५७)

शाह वलीयुल्लाह मुहद्दिस देहलवी फरमाते है।

मुतर्जिम कहता है कि यहया बिन यहया की रिवायत में **"इज़ा रकआ"** का लफ़्ज़ साकित हो गया लेकिन मुअत्ता के अक्सर रावी उसे ज़िक्र करते

है। और यही मसलक इमाम मालिक रह० और अक्सर अहले इल्म का है (मुसफ्फा स० १०६)

इस की मजीद शहादत मुअत्ता इमाम मुहम्मद रह० से मिलती है चुनाचे इमाम मुहम्मद रह० फरमाते हैं।

اخبرنا مَالِك حدثنا الزهري عَنْ سَالِمِ بْنِ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ عُمَرَ أَنَّ عَبْدِ اللّٰهِ بن عمر قال كان رَسُولُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا افْتَتَحَ الصَّلٰوةَ رَفَعَ يَدَيْهِ حذاء مَنْكِبَيْهِ وَإِذَاكبر للركوع رَفَعَ يديه وإذا رفع راسه مِنَ الرُّكُوعِ رَفَعَ يديه ثم قَالَ سَمِعَ اللّٰهُ لِمَنْ حَمِدَهُ رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ (موطا امام محمد ص:٨٩)

यानी : हमें मालिक रह० ने खबर दी, हमें ज़ुहरी ने सालिम बिन अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० से हदीस सुनाई। सालिम ने कहा, अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० ने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज शुरू करते और जब रुकूअ के लिए अल्लाहु अकबर कहते और जब रुकूअ से सर उठाते तो कन्धों के बराबर रफ़ा यदैन करते फिर "समिअल्लाहु लिमन हमिदह रब्बना व लकल हम्द" कहते। (मुअत्ता इमाम मुहम्मद स० ८९)

तीसरी रकअ़त के लिए खड़े होने के बाद भी रफ़ा यदैन का सुबूत

बाकी रहा तीसरी रकअत की तरफ उठते वक्त रफा यदैन करना, तो जवाब उसका यह है कि उसमें शक नहीं कि जिस तरह कुर'आन की आयात एक दूसरी की तफ्सीर होती हैं उसी तरह अहादीस भी एक दूसरी की मुफस्सिर हैं। जब तक किसी हदीस के तर्क पर कवी दलील न हो। तीसरी रकअत के लिए रफा यदैन का सुबूत सही बुखारी से मुलाहिजा फरमाए।

حَدَّثَنَا عَيَّاشٌ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْأَعْلَى قَالَ حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللّٰهِ عَنْ نَافِعٍ أَنَّ ابْنَ عُمَرَ كَانَ إِذَا دَخَلَ فِي الصَّلٰوةِ كَبَّرَ وَرَفَعَ يَدَيْهِ وَإِذَا رَكَعَ رَفَعَ يَدَيْهِ وَإِذَا قَالَ سَمِعَ اللّٰهُ لِمَنْ حَمِدَهُ رَفَعَ يَدَيْهِ وَإِذَا قَامَ مِنَ الرَّكْعَتَيْنِ رَفَعَ يَدَيْهِ وَرَفَعَ ذٰلِكَ ابْنُ عُمَرَ إِلَى نَبِيِّ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ (صحيح البخاري – رقم الحديث:٧٣٩)

हदीस (१) : हजरत नाफ़े से मरवी है कि हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० जब नमाज़ में दाखिल होते तो **"अल्लाहु अकबर"** कहते और दोनों हाथ उठाते और जब रुकूअ में जाते तब भी रफ़ा यदैन करते और जब **"समिअल्लाहुलिमन हमिदह"** कहते तब भी रफ़ा यदैन करते। और जब दो रकअतें पढ़ कर उठते तब भी रफ़ा यदैन करते और हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० ने इस हदीस को नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तक पहुंचाया। (यानी यह हदीस मरफू है। और हजरत नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अमल है) (सही बुखारी : हदीस नम्बर : ७३९)

मजीद दूसरी के बाद तीसरी रकअत के लिए खड़े होकर रफ़ा यदैन का सुबूत नसाई शरीफ में मुलाहिज़ा फरमाए :

أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الْأَعْلَى الصَّنْعَانِيُّ قَالَ حَدَّثَنَا الْمُعْتَمِرُ قَالَ سَمِعْتُ عُبَيْدَ اللّٰهِ وَهُوَ ابْنُ عُمَرَ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ سَالِمٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّهُ كَانَ يَرْفَعُ يَدَيْهِ إِذَا دَخَلَ فِي الصَّلٰوةِ وَإِذَا أَرَادَ أَنْ يَرْكَعَ وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ وَإِذَا قَامَ مِنَ الرَّكْعَتَيْنِ يَرْفَعُ يَدَيْهِ كَذٰلِكَ حَذْوَ الْمَنْكِبَيْنِ (سنن النسائي - رقم الحديث: ١١٨٢)

हदीस (२) : हम को मुहम्मद बिन अब्दुल आला अस्सनआनी ने खबर दी और कहा खबर दी हम को मोतमिर ने कहा सुना मैंने उबैदुल्लाह से जो इब्ने उमर हैं उन्होंने इब्ने शिहाब से उन्होंने सालिम से उन्होंने इब्ने उमर से रिवायत बयान की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दोनों हाथ उठाते थे, जब नमाज शुरू करते और जब रुकूअ करते और जब रुकूअ से सर उठाते और जब दो रकअतें पढ़ कर उठते उसी तरह मोंढों तक हाथ उठाते। (सुनन नसाई, हदीस नम्बर : ११८२)

حَدَّثَنَا عبد الله حَدَّثَنِي ابي حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ عَنْ عَبْدِ الْحَمِيدِ بْنِ جَعْفَرٍ قَالَ حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ عَطَاءٍ عَنْ أَبِي حُمَيْدٍ السَّاعِدِيِّ قَالَ سَمِعْتُهُ وَهُوَ فِي عَشَرَةٍ مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَحَدُهُمْ أَبُو قَتَادَةَ بْنُ رِبْعِيٍّ يَقُولُ أَنَا أَعْلَمُكُمْ بِصَلَاةِ رَسُولِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالُوا لَهُ مَا كُنْتَ أَقْدَمَنَا صُحْبَةً وَلَا أَكْثَرَنَا لَهُ

يَقْعَةً قَالَ بَلَى قَالُوا فَاعْرِضْ قَالَ كَانَ إِذَا قَامَ إِلَى الصَّلَاةِ اعْتَدَلَ قَائِمًا وَرَفَعَ يَدَيْهِ حَتَّى حَاذَى بِهِمَا مَنْكِبَيْهِ فَإِذَا أَرَادَ أَنْ يَرْكَعَ رَفَعَ يَدَيْهِ حَتَّى يُحَاذِيَ بِهِمَا مَنْكِبَيْهِ ثُمَّ قَالَ اللهُ أَكْبَرُ فَرَكَعَ ثُمَّ اعْتَدَلَ فَلَمْ يُصَبِّ رَأْسَهُ وَلَمْ يُقْنِعْهُ وَوَضَعَ يَدَيْهِ عَلَى رُكْبَتَيْهِ ثُمَّ قَالَ سَمِعَ اللهُ لِمَنْ حَمِدَهُ ثُمَّ رَفَعَ وَاعْتَدَلَ حَتَّى رَجَعَ كُلُّ عَظْمٍ فِي مَوْضِعِهِ مُعْتَدِلًا ثُمَّ هَوَى سَاجِدًا وَقَالَ اللهُ أَكْبَرُ ثُمَّ جَافَى وَفَتَحَ عَضُدَيْهِ عَنْ بَطْنِهِ وَفَتَخَ أَصَابِعَ رِجْلَيْهِ ثُمَّ ثَنَى رِجْلَهُ الْيُسْرَى وَقَعَدَ عَلَيْهَا وَاعْتَدَلَ حَتَّى رَجَعَ كُلُّ عَظْمٍ فِي مَوْضِعِهِ ثُمَّ هَوَى سَاجِدًا وَقَالَ اللهُ أَكْبَرُ ثُمَّ ثَنَى رِجْلَهُ وَقَعَدَ عَلَيْهَا حَتَّى يَرْجِعَ كُلُّ عُضْوٍ إِلَى مَوْضِعِهِ ثُمَّ نَهَضَ فَصَنَعَ فِي الرَّكْعَةِ الثَّانِيَةِ مِثْلَ ذَلِكَ حَتَّى إِذَا قَامَ مِنَ السَّجْدَتَيْنِ كَبَّرَ وَرَفَعَ يَدَيْهِ حَتَّى يُحَاذِيَ بِهِمَا مَنْكِبَيْهِ كَمَا صَنَعَ حِينَ افْتَتَحَ الصَّلَاةَ ثُمَّ صَنَعَ كَذَلِكَ حَتَّى إِذَا كَانَتِ الرَّكْعَةُ الَّتِي تَنْقَضِي فِيهَا الصَّلَاةُ أَخَّرَ رِجْلَهُ الْيُسْرَى وَقَعَدَ عَلَى شِقِّهِ مُتَوَرِّكًا ثُمَّ سَلَّمَ (مسند احمدمع كنز العمال ج:٥ ،ص:٦٢٢)

हदीस (३) : हमें अब्दुल्लाह ने खबर दी, मुझे मेरे वालिद ने हमें यह बिन सईद ने अब्दुल हमीद बिन जाफर से हदीस सुनाई. उसने कह मुझे मुहम्मद बिन अता ने अबी हुमैद साइदी से हदीस सुनाई उस कहा मैंने उसे दस सहाबा की मौजूदगी में कहते हुए सुना. जिन में अ कतादा बिन रिब्ई थे. कहा कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि सल्लम की नमाज को अच्छी तरह जानता हू उन्होंने कहा. न तो तू ह से पहले मुसलमान हुआ है न ही हम से ज्यादा आप (स०) की रिफाक़ की है उसने कहा यह तो ठीक है, तो उन्होंने कहा अच्छा फिर पे करो, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नमाज कैसी होती थी उसने कहा कि जब आप ठीक से खड़े हो जाते तो कन्धों तक रफ़ा यदैन करते। फिर जब रुकूअ करते तो भी कन्धों तक रफा यदैन क और रुकूअ में न सर को ऊंचा रखते और न नीचा. और हाथ अप घुटनों पर रखते। फिर **"समिअल्लाहुलिमन हमिदह"** कह कर खड़े जाते. तो रफ़ा यदैन करते फिर सज्दा में जाते तो **"अल्लाहु अकब**

कहते फिर अपने बाएं पाँव को बिछा कर उस पर बैठ जाते यहाँ तक कि जिस्म का हर जोड़ अपनी अपनी जगह पर आ जाता। फिर उठते और इसी तरह दूसरी रकअत में भी करते। फिर दो रकअतों से जब उठते तक्बीर कह कर कन्धों तक रफा यदैन करते, जिस तरह पहली बार नमाज शुरू करते वक्त किया था। उसी तरह सारी नमाज़ में करते हत्ता कि वह रकअत आ जाती जिस में नमाज खत्म होती है तो फिर बाया पाव आगे निकाल कर अपने सुरीन पर बैठ जाते फिर सलाम फेरते। (मुस्नद अहमद मअ कन्जुल उम्माल, जिल्द ५ स० ६२३)

औनुल बारी लफ्ज़ ३९२ में अल मआनी अलबदीआ फी मारिफ़ते इख़्तिलाफ़े अहलि शरीआ से मन्कूल है

وعند الشافعي وابن عمر وابن عباس وابي سعيد الخدري وابن الزبير وأنس والاوزاعي والليث واحمد واسحاق ومالك يستحب أن يرفع يديه في تكبيرة الإحرام وعند الركوع والرفع منه-

यानी : अकाबिर सहाबा अब्दुल्लाह बिन उमर रजि० अब्दुल्लाह बिन अब्बास रजि० अब्दुल्लाह बिन जुबैर रजि० अबू सईद खुदरी रजि० अनस बिन मालिक रजि० वगैरह और अकाबिर अइम्मा इमाम मालिक रह०, इमाम शाफई रह०, इमाम अहमद रह० इमाम इसहाक रह०, इमाम लैस रह० इमाम औजाई रह० वगैरह के नज्दीक शुरू नमाज में और रुकूअ जाते और उस से सर उठाते वक्त रफा यदैन करना मुस्तहब है।

अल्लामा इब्ने अब्दुलबर रहेमहुल्लाह तआला फरमाते है

وروى ابو مصعب وابن وهب عن مالك أنه كان يرفع يديه إذا أحرم وإذا ركع وإذا رفع من الركوع على حديث ابن عمر (الاستذكار ج:٢ ،ص:١٢٤)

यानी अबू मुस्अब रह० और इब्ने वहब रह० का बयान है कि इमाम मालिक रह० हजरत इब्ने उमर रजि० की रिवायत के मुताबिक तक्बीर तहरीमा के वक्त रुकूअ में जाते और रुकूअ से उठते वक्त रफा यदैन करते थे। (अल इस्तिज्कार, जिल्द २, स० १२४)

इमाम तिर्मिजी फरमाते हैं

وبه يقول مالك ومعمر و الأوزاعي وابن عيينة وعبد الله ابن المبارك والشافعي وأحمد و إسحاق (ترمذي تحقيق أحمد شاكر ج٢، ص:٣٧)

यानी : इमाम मालिक रह०, मअ्मर रह०, औजाई रह०, इब्ने उयैना रह० अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह०, इमाम शाफ़ई रह०, अहमद रह० और इस्हा का यही मसलक है। (तिर्मिजी, तहकीक अहमद शाकिर मतबूआ बैरुत जिल्द

अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन अल-हसन अश्शैबानी रह० लिखते हैं

وقال اهل المدينة يرفع يديه حذو منكبيه اذا افتتح الصلاة و اذا كبر للركوع وإذا رفع رأسه من الركوع رفعهما كذلك ايضا و قال سمع الله لمن حمده ربنا و لك الحمد فيرفع يديه في هذا كله حذو منكبيه وقالوا لا يفعل ذلك في السجود ورروه ذلك عن ابن عمر(ص:٦٣، ج:١)

यानी : और अहले मदीना ने कहा कि जब नमाज शुरू करे त कन्धो के बराबर रफा यदैन करे और जब रुकूअ् के लिए तक्बीर कहे औ जब रुकूअ् से सर उठाए तो भी इसी तरह रफा यदैन करे औ **"समिअल्लाहुलिमन हमिदह रब्बना व लकल हम्द"** कहे। इन तमा जगहो मे कन्धों के बराबर रफा यदैन करे। और उन्होंने कहा है कि सुजू मे रफा यदैन न करे और उन्होंने इब्ने उमर रजि० से रिवायत की है। (किताबुल हुज्जा अला अहलिल मदीना

وقال عبد الله ابن المباركة قد ثبت حديث من يرفع و ذكر حديث الزهري عن سالم عن ابيه ولم يثبت حديث ابن مسعود ان النبي صلى الله عليه وسلم لم يرفع إلا في أول مرة (ترمذي مع تحفةالأحوذي ص:٢٢٠، ج:١)

यानी : अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह० ने कहा कि हदीस **"मन यरफअ्"** साबित है और हदीस जुहरी का जिक्र किया है जो सालिम अन अबीह है और इब्ने मसऊद की हदीस से साबित नही कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सिर्फ पहली मरतबा ही (यानी नमाज शुरू करते वक्त) रफा

यदैन किया है। (तिर्मिजी मअ् तुहफ़ातुल अहवाजी जिल्द : १, स. २२०)

अल गरज़ इन हवालाजात से रोज रोशन की तरह अयां होता है कि इमाम मालिक का मज़्हब रफा यदैन करना है।

(८) सही इब्ने खुज़ैमा

٥١- (١) اخبرنا ابو طاهر حَدَّثَنَا ابو بكر حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ ، أَخْبَرَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ ، حَدَّثَنِي ابْنُ شِهَابٍ ، عَنْ سَالِمِ بْنِ عَبْدِ اللهِ ، أَنَّ ابْنَ عُمَرَ ، قَالَ : كَانَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا قَامَ لِلصَّلَاةِ رَفَعَ يَدَيْهِ حَتَّى تَكُونَا بِحَذْوِ مَنْكِبَيْهِ ، ثُمَّ كَبَّرَ ، فَإِذَا أَرَادَ أَنْ يَرْكَعَ فَعَلَ مِثْلَ ذَلِكَ ، فَإِذَا رَفَعَ مِنَ الرُّكُوعِ فَعَلَ مِثْلَ ذَلِكَ ، وَلَا يَفْعَلُهُ حِينَ يَرْفَعُ رَأْسَهُ مِنَ السُّجُودِ. (صحيح ابن خزيمة ص:٢٣٢ج:١)

हदीस ५१ (१) : हमें अबू ताहिर ने खबर दी उन्होंने अबू बकर से सुना, उन्होंने मुहम्मद बिन राफ़े से बयान किया उन्होंने अबदुर्रज़्ज़ाक़ से बयान किया, उन्होंने सालिम बिन अब्दुल्लाह से, उन्होंने इब्ने उमर रज़ि० से बयान किया कि आंहजरत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज़ के लिए खडे होते तो दोनों मोंढों के बराबर तक हाथ उठाते फिर आप अल्लाहु अकबर कहते। जब रुकूअ् का इरादा करते थे तो उसी तरह हाथ उठाते, फिर जब रुकूअ् से (सर) उठाते तो उसी तरह करते। और सज्दा से सर उठाते वक्त ऐसा नहीं करते थे। (सही इब्ने खुजैमा, जिल्द : १, स. २३२)

٥٢- (٢) اخبرنا ابو طاهر حَدَّثَنَا ابو بكر حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الْمَخْزُومِيُّ ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ ، عَنْ عَاصِمِ بْنِ كُلَيْبٍ ، عَنْ أَبِيهِ ، عَنْ وَائِلِ بْنِ حُجْرٍ ، قَالَ : صَلَّيْتُ مَعَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَصْحَابِهِ فَرَأَيْتُهُمْ يَرْفَعُونَ أَيْدِيَهُمْ فِي الْبَرَانِسِ. (صحيح ابن خزيمة – ص:٢٣٣ج:١)

हदीस ५२ (२) : खबर दी हम को अबू ताहिर ने, उनको अबू बकर ने उनको सईद बिन अब्दुर्रहमान मख़्ज़ूमी ने, उनको सुफियान ने उनको आसिम बिन कुलैब ने, उनको उनके बाप ने, उनको वाइल बिन हुज्र रजि०

ने कहा कि : मैने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आ सहाबा रजि० के साथ नमाजे अदा की, मैने उन्हें चादरों के नीचे से र यदैन करते हुए देखा। (सही इब्ने खुजैमा, जिल्द : १, स. २३३)

-٥٣ (٣) اخبرنا ابو طاهر حَدَّثَنَا ابو بكر حَدَّثَنَا عَبْدُ الْجَبَّارِ بْنُ الْعَلَاءِ الْعَطَّارُ ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ ، قَالَ : سَمِعْتُ الزُّهْرِيَّ يَقُولُ : سَمِعْتُ سَالِمًا يُخْبِرُ عَنْ أَبِيهِ (ح) وَحَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ حُجْرٍ السَّعْدِيُّ ، وَعَلِيُّ بْنُ خَشْرَمٍ ، وَسَعِيدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الْمَخْزُومِيُّ ، وَعُتْبَةُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ الْيُحْمِدِيُّ ، وَالْحَسَنُ بْنُ مُحَمَّدٍ ، وَيُونُسُ بْنُ عَبْدِ الْأَعْلَى الصَّدَفِيُّ ، وَمُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ ، وَعَلِيُّ بْنُ الْأَزْهَرِ ، وَغَيْرُهُمْ قَالُوا : حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنِ الزُّهْرِيِّ ، عَنْ سَالِمٍ ، عَنْ أَبِيهِ ، قَالَ : رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَرْفَعُ يَدَيْهِ إِذَا افْتَتَحَ الصَّلَاةَ حَتَّى يُحَاذِيَ مَنْكِبَيْهِ ، وَإِذَا أَرَادَ أَنْ يَرْكَعَ ، وَبَعْدَمَا يَرْفَعُ مِنَ الرُّكُوعِ وَلَا يَرْفَعُ بَيْنَ السَّجْدَتَيْنِ هَذَا لَفْظُ ابْنِ رَافِعٍ. سَمِعْتُ الْمَخْزُومِيَّ يَقُولُ : أَيُّ إِسْنَادٍ أَصَحُّ مِنْ هَذَا اخبرنا ابو طاهر نا ابو بكر قَالَ : سَمِعْتُ مُحَمَّدَ بْنَ يَحْيَى يَحْكِي عَنْ عَلِيِّ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ قَالَ : سُفْيَانُ : هَذَا الْإِسْنَادُ مِثْلُ هَذِهِ الْأُسْطُوَانَةِ.(صحيح ابن خزيمة – ص:٢٩٤ج:١)

हदीस ५३ (३) : हमे अबू ताहिर ने खबर दी, उन्हें अबू बकर ने, उ अब्दुल जब्बार बिन अला अत्तार ने, उन्हें सुफियान ने, उन्होंने कहा मैंने जुह से सुना, उन्होने कहा मैने सालिम से सुना, वह अपने वालिद से खबर देते थे (दूसरी सनद) और हमें अली बिन हुज्र सअदी, अली बिन खशरम, सईद बि अब्दुर्रहमान मख्जूमी, उतैबा बिन अब्दुल्लाह युहमेदी, हसन बिन मुहम्मद, यू बिन अब्दुल आला सदफी, मुहम्मद बिन राफे और अली बिन अजहर वगैरहु ने हदीस सुनाई इन सब ने कहा हमे सुफियान ने जुहरी से, उन्होंने सालि से, उन्होने अपने वालिद (अब्दुल्लाह बिन उमर रजि०) से बयान किया कि मैने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा जब आप नमा शुरू करते तो अपने मोढों तक अपने दोनो हाथ उठाते और उसी त रुकूअ में जाते वक्त और रुकूअ से सर उठाते वक्त रफा यदैन करते औ

सज्दों के दर्मियान रफा यदैन नहीं करते थे, यह इब्ने राफे के लफ्ज हैं। मैने मख्जूमी से सुना कहते थे कि इस से बढ़ कर सही कोई और सनद नहीं है। हमें अब ताहिर ने खबर दी, उन्हें अबू बकर ने, उन्होंने कहा कि मुहम्मद बिन यहया अली बिन अब्दुल्लाह से बयान करते है कि सुफियान का बयान है कि यह सनद सुतून की तरह है। (सही इब्ने खुजैमा, जिल्द : १, स० २९४)

-٥٤ (٤) اخبرنا ابو طاهر حَدَّثَنَا ابو بكر حَدَّثَنَا الرَّبِيعُ بْنُ سُلَيْمَانَ الْمُرَادِيُّ ، وَبَحْرُ بْنُ نَصْرٍ الْخَوْلَانِيُّ ، قَالَا : حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ ، أَخْبَرَنِي ابْنُ أَبِي الزِّنَادِ (ح) وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يَحْيَى ، وَمُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ ، قَالَا : حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ دَاوُدَ الْهَاشِمِيُّ ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ أَبِي الزِّنَادِ ، عَنْ مُوسَى بْنِ عُقْبَةَ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الْفَضْلِ الْهَاشِمِيِّ ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ الْأَعْرَجُ ، عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي رَافِعٍ ، عَنْ عَلِيِّ بْنِ أَبِي طَالِبٍ ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّهُ كَانَ إِذَا قَامَ إِلَى الصَّلَاةِ الْمَكْتُوبَةِ كَبَّرَ وَرَفَعَ يَدَيْهِ حَذْوَ مَنْكِبَيْهِ ، وَيَصْنَعُ مِثْلَ ذَلِكَ إِذَا قَضَى قِرَاءَتَهُ وَأَرَادَ أَنْ يَرْكَعَ ، وَيَصْنَعُهُ إِذَا رَفَعَ مِنَ الرُّكُوعِ ، وَلَا يَرْفَعُ يَدَيْهِ فِي شَيْءٍ مِنْ صَلَاتِهِ وَهُوَ قَاعِدٌ ، وَإِذَا قَامَ مِنَ السَّجْدَتَيْنِ رَفَعَ يَدَيْهِ كَذَلِكَ وَكَبَّرَ

(صحيح ابن خزيمة – ص: ٢٩٥. ٢٩٦ج:١)

हदीस ५४ (४) : हमें अबू ताहिर ने खबर दी, उन्होंने कहा हमें अबू बकर ने, उन्हें रबीअ बिन सुलेमान मुरादी और बहर बिन नस्र खौलानी ने, दोनों ने कहा हमें इब्ने वहब ने हदीस सुनाई। उसने कहा मुझे इब्ने अबू जेनाद ने हदीस सुनाई। (दूसरी सनद : और हमें मुहम्मद बिन यहया और मुहम्मद बिन राफे ने हदीस सुनाई, दोनो ने कहा हमे सुलेमान बिन दाऊद हाशमी ने हदीस सुनाई, उन्होने कहा हमे अब्दुर्रहमान बिन अबू जिनाद ने मूसा बिन उक्बा से खबर दी, उन्हे अब्दुल्लाह बिन फजल हाशमी ने बताया। हमें अब्दुर्रहमान अअरज ने उबैदुल्लाह बिन अबू राफे से, उन्होने हजरत अली रजि अल्लाहु अन्हु से बयान फरमाया, उन्होने नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुतअल्लिक बयान फरमाया कि जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फर्ज नमाज के लिए खडे होते तो अल्लाहु अकबर कहते और दोनों हाथ मोढों

के बराबर उठाते और उसी तरह (रफ़ा यदैन) करते जब किरअत से फ़ारि होते और रुकूअ् का इरादा करते और उसी तरह हाथों को उठाते जब रुकू से सर उठाते और बैठने की हालत में हाथों को नहीं उठाते थे। और जब रकअतें पढ़ कर उठते तो दोनों हाथ उसी तरह उठाते और तकबीर कह

(सही इब्ने खुज़ैमा, जिल्द : १, स० २६५-२६

٥٥- (٥) اخبرنا ابو طاهر حَدَّثَنَا ابو بكر حَدَّثَنَا أَبُو بِشْرٍ الْوَاسِطِيُّ ، أَخْبَرَنَا خَالِدٌ ، يَعْنِي ابْنَ عَبْدِ اللهِ،عَنْ خَالِدٍ ، وَهُوَ الْحَذَّاءُ ، عَنْ أَبِي قِلَابَةَ ، أَنَّهُ رَأَى مَالِكَ بْنَ الْحُوَيْرِثِ إِذَا صَلَّى كَبَّرَ وَرَفَعَ يَدَيْهِ، وَإِذَا أَرَادَ أَنْ يَرْكَعَ رَفَعَ يَدَيْهِ ، وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ رَفَعَ يَدَيْهِ ، وَحَدَّثَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يُصَلِّي هَكَذَا. (ص:٢٩٥ج:١)

हदीस ५५ (५) : अबू ताहिर, अबू बकर, अबू बिश्र वास्ती, ख़ालिद बि अब्दुल्लाह, खालिद हज़्ज़ा, अबू किलाबा से रिवायत है कि उन्होंने मालिक बि हुवैरिस रज़ि० को देखा जब नमाज के लिए अल्लाहु अकबर कहते रफ़ा यदैन करते और जब रुकूअ् का इरादा करते और रुकूअ् से सर उठा तो (भी) रफ़ा यदैन करते। फिर उन्होंने हदीस बयान फरमाई कि रसूलुल्ला सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इसी तरह नमाज अदा किया करते थे।

(सही इब्ने खुज़ैमा, जिल्द : १, स० २६

قَالَ أَبُو بَكْرٍ : فَقَدْ أَمَرَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَالِكَ بْنَ الْحُوَيْرِثِ وَالشَّبَبَةَ الَّذِينَ كَانُوا مَعَهُ أَنْ يُصَلُّوا كَمَا رَأَوا النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُصَلِّي (و) قَدْ أَعْلَمَ مَالِكُ بْنُ الْحُوَيْرِثِ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يَرْفَعُ يَدَيْهِ إِذَا كَبَّرَ فِي الصَّلَاةِ، وَإِذَا رَكَعَ، وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ ، فَفِي هَذَا مَا دَلَّ عَلَى أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَدْ أَمَرَ بِرَفْعِ الْيَدَيْنِ إِذَا أَرَادَ الْمُصَلِّي الرُّكُوعَ ، وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ (صحيح ابن خزيمة-(ص:٢٩٥،٢٩٦ج:١)

इमाम अबू बकर रह० फरमाते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल

ने मालिक बिन हुवैरिस रज़ि० और उनके दीगर साथी नौजवानों को हुक्म फरमाया कि वह नमाज इसी तरह अदा करें जिस तरह उन्होंने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को नमाज पढ़ते देखा। (और) मालिक बिन हुवैरिस रज़ि० ने खबर दी कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नमाज के लिए अल्लाहु अकबर कहते वक्त और रुकूअ् को जाते वक़्त और रुकूअ् से सर उठाते वक्त रफ़ा यदैन किया करते थे। इसमें वाज़ेह दलालत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हर नमाज़ी को जब रुकूअ् का इरादा करे और रुकूअ् से सर उठाये रफ़ा यदैन करने का हुक्म दिया है। (सही इब्ने खुज़ैमा, जिल्द : १, स० २६५, २६६)

٥٦- (٦) اخبرنا ابو طاهر حَدَّثَنَا ابو بكر حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ ، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ الْقَطَّانُ ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْحَمِيدِ بْنُ جَعْفَرٍ ، حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ عَطَاءٍ ، وَهُوَ مُحَمَّدُ بْنُ عَمْرِو بْنِ عَطَاءٍ نَسَبَهُ إِلَى جَدِّهِ ، عَنْ أَبِي حُمَيْدٍ السَّاعِدِيِّ، قَالَ : كَانَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا قَامَ إِلَى الصَّلَاةِ اعْتَدَلَ قَائِمًا (فَذَكَرَ بَعْضَ الْحَدِيثِ) وَقَالَ : ثُمَّ ، قَالَ : "اللهُ أَكْبَرُ" وَرَكَعَ ، ثُمَّ اعْتَدَلَ وَلَمْ يُصَبِّ رَأْسَهُ وَلَمْ يُقْنِعْ ، وَوَضَعَ يَدَيْهِ عَلَى رُكْبَتَيْهِ ، ثُمَّ . قَالَ : سَمِعَ اللهُ لِمَنْ حَمِدَهُ ، وَرَفَعَ يَدَيْهِ وَاعْتَدَلَ حَتَّى يَرْجِعَ كُلُّ عَظْمٍ فِي مَوْضِعِهِ مُعْتَدِلاً ، ثُمَّ هَوَى إِلَى الأَرْضِ سَاجِدًا ثُمَّ قَالَ : اللهُ أَكْبَرُ ، ثُمَّ تَجَافَى عَضُدَيْهِ عَنْ إِبْطَيْهِ ، وَفَتَخَ أَصَابِعَ رِجْلَيْهِ ، ثُمَّ ثَنَى رِجْلَهُ الْيُسْرَى وَقَعَدَ عَلَيْهَا ، ثُمَّ اعْتَدَلَ حَتَّى يَرْجِعَ كُلُّ عَظْمٍ فِي مَوْضِعِهِ مُعْتَدِلاً ، ثُمَّ هَوَى سَاجِدًا ، ثُمَّ قَالَ : اللهُ أَكْبَرُ ، ثُمَّ ثَنَى رِجْلَهُ وَقَعَدَ وَاعْتَدَلَ حَتَّى يَرْجِعَ كُلُّ عَظْمٍ فِي مَوْضِعِهِ ، ثُمَّ نَهَضَ، ثُمَّ صَنَعَ فِي الرَّكْعَةِ الثَّانِيَةِ مِثْلَ ذَلِكَ ، حَتَّى إِذَا قَامَ مِنَ السَّجْدَتَيْنِ كَبَّرَ وَرَفَعَ يَدَيْهِ حَتَّى يُحَاذِيَ بِهِمَا مَنْكِبَيْهِ كَمَا صَنَعَ حِينَ افْتَتَحَ الصَّلَاةَ ، ثُمَّ صَنَعَ كَذَلِكَ حَتَّى إِذَا كَانَتِ الرَّكْعَةُ الَّتِي تَنْقَضِي فِيهَا الصَّلَاةُ أَخَّرَ رِجْلَهُ الْيُسْرَى وَقَعَدَ عَلَى شِقِّهِ مُتَوَرِّكًا ، ثُمَّ سَلَّمَ.

(صحيح ابن خزيمة – (ص:٢٩٧ج:١))

हदीस ५६ (६) : अबू ताहिर, अबू बकर, मुहम्मद बिन बश्शार, यह्य बिन सईद कत्तान, अब्दुल हमीद बिन जा'फ़र, मुहम्मद बिन अता और मु मुहम्मद बिन अम्र बिन अता हैं उनकी निस्बत दादा की तरफ है, अबू हुमैद साइदी रजि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज के लिए खडे होते तो सीधे खडे हो जाते। रावी ने हदीस का बाज हिस्सा जिक्र किया। और कहा, फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने **अल्लाहु अकबर** कहा और रुकूअ् किया, फिर पीठ सीधी करते (और सर को पीठ के बराबर करते) न झुकाते न ऊंचा करते। और दोनों हथेलियां अपने घुटनों पर रखते, फिर आप ने "**समिअल्लाहुलिमन हमिदह**" कहा और रफा यदैन की और सीधे खडे हो गये यहा तक कि हर हड्डी अपनी असली जगह पर वापस आ जाती। फिर आप सज्दे के लिए जमीन की तरफ झुके, और **अल्लाहु अकबर** कहा, अपने बाजू बगलों से दूर रखे और अपने पॉव की उंगलियां खोली। फिर बाएं पैर को बिछा कर उस पर बैठते इतनी देर तक कि हर हड्डी अपने ठिकाने पर आ जाती। फिर दूसरे सज्दे के लिए झुके, फिर अल्लाहु अकबर कहा, फिर अपने पैर को बिछा कर बैठे। यहा तक हर हड्डी अपनी असली जगह पर आ जाती। फिर दूसरी रकअत मे भी इसी तरह करते। फिर दो रकअत पढ कर खडे होते तो रफा यदैन करते जैसा कि शुरू नमाज में करते। फिर बाकी नमाजें ऐसे ही करते। यहॉं तक कि आप उस रकअत पर पहुचते जिस पर नमाज़ पूरी होती है, अपना बाया पॉव निकालते और बाएं कूल्हे पर बैठते फिर आप सलाम फेरते।

(सही इब्ने खुजैमा, जिल्द : १, स० २६

٥٧- (٧) أخبرنا ابو طاهر حَدَّثَنَا ابو بكر حَدَّثَنَا بُنْدَارٌ ، حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ ، حَدَّثَنَا فُلَيْحُ بْنُ سُلَيْمَانَ ، حَدَّثَنِي الْعَبَّاسُ بْنُ سَهْلٍ السَّاعِدِيُّ، قَالَ : اجْتَمَعَ نَاسٌ مِنَ الأَنْصَارِ فِيهِمْ سَهْلُ بْنُ سَعْدٍ السَّاعِدِيُّ ، وَأَبُو حُمَيْدٍ السَّاعِدِيُّ ، وَأَبُو أُسَيْدٍ السَّاعِدِيُّ فَذَكَرُوا صَلَاةَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ : حُمَيْدٌ : دَعُونِي أُحَدِّثْكُمْ فَأَنَا أَعْلَمُكُمْ بِهَذَا. قَالُوا : فَحَدِّثْ قَالَ : رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَحْسَنَ الْوُضُوءَ ، ثُمَّ دَخَلَ الصَّلَاةَ وَكَبَّرَ فَرَفَعَ يَدَيْهِ حَذْوَ مَنْكِبَيْهِ ، ثُمَّ رَكَعَ فَوَضَعَ يَدَيْهِ عَلَى رُكْبَتَيْهِ كَالْقَابِضِ

عَلَيْهِمَا فَلَمْ يُصَبِّ رَأْسَهُ وَلَمْ يُقْنِعْهُ ، وَنَحَّى يَدَيْهِ عَنْ جَنْبَيْهِ ، ثُمَّ رَفَعَ رَأْسَهُ فَاسْتَوَى قَائِمًا حَتَّى عَادَ كُلُّ عَظْمٍ مِنْهُ إِلَى مَوْضِعِهِ ، ثُمَّ ذَكَرَ بَقِيَّةَ الْحَدِيثِ ، فَقَالَ الْقَوْمُ كُلُّهُمْ : هَكَذَا كَانَتْ صَلَاةُ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. (ص:٢٩٨ج:١ ، ص:٣٠٨ ، ج:١)

हदीस ५७ (७) : हम को खबर दी अबू ताहिर ने, उन्हें अबू बकर ने, उन्हें बुन्दार ने उन्हें अबू दाऊद ने, उन्हें फुलैह बिन सुलेमान ने, उन्हें अब्बास बिन सहल साइदी ने कहा कि अन्सार के कुछ लोग जमा हुए। उन में सहल बिन सअद साइदी रजि०, अबू हुमैद साइदी रजि०, और अबू उसैद साइदी रज़ि० भी मौजूद थे। उन्होने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नमाज का तज़्किरा किया, तो अबू हुमैद रजि० ने फरमाया, मुझे इजाजत दें मै आपको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नमाज के मुतअल्लिक बताऊं। क्योंकि मै उसके मुतअल्लिक आप सभी से ज्यादा जानता हूं। उन्होंने कहा अच्छा! तुम ही बताओ। आप रजि० ने कहा, मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा, आप ने अच्छी तरह वुज़ू किया, फिर नमाज़ में दाखिल हुए **अल्लाहु अकबर** कहा और दोनो हाथ मोंढों के बराबर उठाए। फिर रुकूअ् किया। पस दोनों हाथ पकडने के अंदाज में घुटनों पर रखते और सर को पीठ के बराबर करते, न झुकाते न ऊंचा रखते। और अपने दोनों हाथों को अपने पहलुओं से दूर रखते। फिर अपना सर उठाया और सीधे खडे हो गये यहॉं तक कि हर जोड़ अपने असली मकाम पर आ गया। फिर बन्दार रावी ने हदीस का बकिया हिस्सा जिक्र किया और उसके आखिर में कहा कि तमाम हाजिरीने मज्लिस ने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नमाज ऐसे ही होती थी –

(सही इब्ने खुजैमा, जिल्द : २, स० २९८, ३०८)

٥٨- (٨) أخبرنا ابو طاهر حَدَّثَنَا ابو بكر قال : سَمِعْتُ مُحَمَّدَ بْنَ يَحْيَى يَقُولُ: مَنْ سَمِعَ هَذَا الْحَدِيثَ ثُمَّ لَمْ يَرْفَعْ يَدَيْهِ يَعْنِي إِذَا رَكَعَ وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ فَصَلَاتُهُ نَاقِصَةٌ (صحيح ابن خزيمة – ص:٢٩٨ج:١)

हदीस ५८ (८) : हमको खबर दी अबू ताहिर ने, उन्हें अबू बकर ने, उन्होंने कहा कि इमाम मुहम्मद बिन यह्या फरमाते हैं कि जो शख़्स इस हदीस को सुने फिर रुकूअ् को जाते और रुकूअ् से सर उठाते वक्त रफा यदैन न करे तो उसकी नमाज नाकिस है।(सही इब्ने ख़ुज़ैमा, जिल्द : १ स० २९८)

٥٩- (٩) وأخبرنا أبو الحسن على بن المسلم ابن محمد السلمي، نا ابو محمد عبد العزيز بن احمد الكناني، قال اخبرنا الأستاذ الإمام أبو عثمان إسماعيل بن عبد الرحمن الصابوني قراءة عليه، قال، اخبرنا أبو طاهر، نا محمد بن الفضل بن محمد بن اسحاق بن خزيمة، نا ابو بكر محمد بن إسحاق بن خزيمة حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْمَلِكِ بْنُ الصَّبَّاحِ الْمِسْمَعِيُّ ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْحَمِيدِ بْنُ جَعْفَرٍ الْمَدَنِيُّ ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَمْرِو بْنِ عَطَاءٍ ، قَالَ : سَمِعْتُ أَبَا حُمَيْدٍ السَّاعِدِيَّ فِي عَشَرَةٍ مِنْ أَصْحَابِ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ، قَالَ : أَنَا أَعْلَمُكُمْ بِصَلَاةِ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالُوا : مَا كُنْتَ أَقْدَمَنَا لَهُ صُحْبَةً ، وَلَا أَطْوَلَنَا لَهُ تِبَاعَةً، قَالَ : بَلَى قَالُوا : فَاعْرِضْ قَالَ : كَانَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا قَامَ إِلَى الصَّلَاةِ رَفَعَ يَدَيْهِ حَتَّى يُحَاذِيَ مَنْكِبَيْهِ ثُمَّ كَبَّرَ، وَاعْتَدَلَ قَائِمًا حَتَّى يَقَرَّ كُلُّ عَظْمٍ فِي مَوْضِعِهِ مُعْتَدِلًا ، ثُمَّ يَقْرَأُ ثُمَّ يَرْفَعُ يَدَيْهِ ، وَيُكَبِّرُ وَيَرْكَعُ فَيَضَعُ رَاحَتَيْهِ عَلَى رُكْبَتَيْهِ ، وَلَا يَصُبُّ رَأْسَهُ ، وَلَا يُقْنِعُهُ ، ثُمَّ يَقُولُ: سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ ، وَيَرْفَعُ يَدَيْهِ حَتَّى يُحَاذِيَ بِهِمَا مَنْكِبَيْهِ مُعْتَدِلًا ، حَتَّى يَقَرَّ كُلُّ عَظْمٍ فِي مَوْضِعِهِ مُعْتَدِلًا ، ثُمَّ يُكَبِّرُ وَيَسْجُدُ فَيُجَافِي جَنْبَيْهِ ، ثُمَّ يَرْفَعُ رَأْسَهُ، فَيَثْنِي رِجْلَهُ الْيُسْرَى ، فَيَقْعُدُ عَلَيْهَا ، وَيَفْتَخُ أَصَابِعَ رِجْلِهِ الْيُمْنَى، ثُمَّ يَقُومُ فَيَصْنَعُ فِي الرَّكْعَةِ الْأُخْرَى مِثْلَ ذَلِكَ ، ثُمَّ يَقُومُ مِنَ السَّجْدَتَيْنِ فَيَصْنَعُ مِثْلَ مَا صَنَعَ حِينَ افْتَتَحَ الصَّلَاةَ.(صحيح ابن خزيمة – ص:٢٣٧ج:١)

हदीस ५९ (९) : हम को अबुल हसन अली बिन मुस्लिम बिन मुहम्मद सलमी ने बयान किया, उसने कहा हम को अबू मुहम्मद अब्दुल अज़ीज बिन अहमद अल किनानी ने बयान किया, उस ने कहा हम को उस्ताद इमाम

अबू उस्मान इस्माईल बिन अब्दुर्रहमान साबूनी ने बयान किया इस हाल में कि उस पर पढा जा रहा था, उस ने कहा हम को अबू ताहिर ने, उन्हें मुहम्मद बिन फ़ज़ल बिन मुहम्मद बिन इसहाक़ बिन खुज़ैमा ने, उनको अबू बकर मुहम्मद बिन इसहाक़ बिन खुज़ैमा ने, उनको मुहम्मद बिन राफ़े ने, उनको अब्दुल मलिक बिन सबाह मिस्मई ने हम को अब्दुल हमीद बिन ज'फर मदनी ने महम्मद बिन अम्र बिन अता ने, उस ने कहा मैंने अबू हुमैद अस्साइदी को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दस सहाबा रज़ि० की मौजूदगी में कहते हुए सुना : मुझे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नमाज़ का तुम से ज़्यादा इल्म है। लोगों ने कहा यह कैसे हो सकता है। न तो तुम हम से पहले आपकी सोहबत में आए और न ही हम से ज़्यादा आप की पैरवी करते थे। (अबू हुमैद रज़ि०) ने कहा क्यों नहीं। लोगों ने कहा अच्छा बयान करो। अबू हुमैद रज़ि० ने कहा रसूलुल्लाह सल्ललाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज़ के लिए खड़े होते तो दोनों हाथ मोंढो तक उठाते, फिर तक्बीर कहते। जब हर हड्डी ऐतदाल से अपने असल मकाम पर आ जाती। तो आप किरअत शुरू करते। फिर रफ़ा यदैन करते और **अल्लाहु अकबर** कह कर रुकूअ् करते। पस दोनों हथेलिया अपने घुटनों पर रखते और सर को पीठ के बराबर करते, न झुकाते न ऊंचा रखते। फिर **"समिअल्लाहुलिमन हमिदह"** कहते। फिर दोनों हाथ मोंढो तक उठाते सीधे खडे हो कर। यहा तक कि हर हड्डी ऐतदाल से अपने मकाम पर आ जाती। फिर **अल्लाहु अकबर** कहते और सज्दा करते और दोनों हाथ अपने पहलुओं से जुदा रखते। फिर सज्दे से अपना सर उठाते, और बाएं पाँव को बिछा कर उस पर बैठते और दाएं पाँव की उंगलियां खुली रखते। फिर आप दूसरी रकअत के लिए खडे होते और उसे पहली रकअत की तरह ही अदा करते। फिर दो रकअत पढ़ कर खड़े होते तो ऐसे ही करते जैसे शुरू नमाज में किया था। (यानी रफा यदैन)

(सही इब्ने खुज़ैमा, जिल्द : १, स० ३३७)

٦٠- (١٠) قَالَ أَبُو بَكْرٍ : فِي خَبَرِ عَلِيِّ بْنِ أَبِي طَالِبٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّهُ كَانَ إِذَا قَامَ مِنَ السَّجْدَتَيْنِ كَبَّرَ وَرَفَعَ يَدَيْهِ،وَكَذَلِكَ فِي الْخَبَرِ أَبِي حُمَيْدٍ السَّاعِدِيِّ، (و) خَبَرِ عَبْدِ الْحَمِيدِ بْنِ جَعْفَرٍ.(صحيح ابن خزيمة – ص: ٣٤٤ ج: ١)

हदीस ६० (१०) : इमाम अबू बकर रह० फरमाते है कि हजरत अली रजि० की मरफूअ रिवायत में है कि जब आहजरत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दो रकअत पढ कर खडे होते तो **अल्लाहु अकबर** कहते और रफा यदैन करते। इसी तरह यह अल्फाज अबू हुमैद साइदी रजि० और अब्दुल हमीद बिन ज'फर की रिवायत मे भी मौजूद है।

(सही इब्ने खुजैमा, जिल्द : १, स० ३४४)

٦١- (١١) اخبرنا ابو طاهر نا ابو بكر حَدَّثَنَا الصَّنْعَانِيُّ ، أَخْبَرَنَا الْمُعْتَمِرُ ، قَالَ : سَمِعْتُ عُبَيْدَ اللهِ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ سَالِمٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّهُ كَانَ يَرْفَعُ يَدَيْهِ إِذَا دَخَلَ فِي الصَّلَاةِ ، وَإِذَا أَرَادَ أَنْ يَرْكَعَ ، وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ ، وَإِذَا قَامَ مِنَ الرَّكْعَتَيْنِ ، يَرْفَعُ يَدَيْهِ فِي ذٰلِكَ كُلِّهِ حَذْوَ الْمَنْكِبَيْنِ.(صحيح ابن خزيمة – ص:٣٤٤ج:١)

हदीस ६१ (११) : हम को अबू ताहिर ने खबर दी, उन्हें अबू बकर ने उन्हें सनआनी ने. उन्होंने कहा हम को मु'तमिर ने, उस ने कहा मैंने उबैदुल्लाह से सुना, उस ने इब्ने शिहाब से, उसने सालिम से, उसने इब्ने उमर से. वह आंहजरत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नमाज के बारे में बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज मे दाखिल होते तो रफा यदैन करते और जब रुकूअ का इरादा करते और जब रुकूअ से सर उठाते और जब दो रकअत पढ कर खडे होते तो इन तमाम मकामात पर मोंढो के बराबर रफा यदैन किया करते थे। (सही इब्ने खुजैमा, जिल्द : १, स० ३४४)

٦٢- (١٢) اخبرنا ابو طاهر نا ابو بكر حدثنا بندار ، حدثنا محمد بن جعفر ، حدثنا شعبة عن عاصم بن كليب عن أبيه عن وائل بن حجر ،قال: صليت مع النبي صلى الله عليه وسلم فكبر حين دخل في الصلاة ، ورفع يديه ، وحين أراد أن يركع رفع يديه وحين رفع رأسه من الركوع رفع يديه ووضع كفيه وجافى- يعني في السجود- وفرش فخذه اليسرى وأشار بأصبعه السبابة يعني في الجلوس في التشهد.(صحيح ابن خزيمة – ص:٣٤٥-٣٤٦ج:١)

हदीस ६२ (१२) : हम को अबू ताहिर ने खबर दी, उनको अबू बकर ने, उनको बुन्दार ने, उनको मुहम्मद बिन ज'फर ने, उनको शो'बा ने, उनको आसिम बिन कुलैब ने, उन्हें उनके वालिद ने कहा कि वाइल बिन हुज्र कहते है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ नमाज पढ़ी जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नमाज मे दाखिल हुए तो **अल्लाहु अकबर** कहा और रफा यदैन की। और जब रुकूअ का इरादा किया तो (फिर भी) रफा यदैन की और जब रुकूअ से सर उठाया (तब भी) रफा यदैन की और हथेलियों को जमीन पर रखा, और पहलुओं से जुदा रखा। यानी सज्दे की हालत में. और बाएं कूल्हे पर बैठे और शहादत की उंगली से इशारा किया यानी तशहहुद में बैठ कर पॉव को बिछाया। (सही इब्ने खुजैमा, जिल्द १ स. ३४६)

٦٣- (١٣) اخبرنا ابو طاهر نا ابو بكر حدثنا محمد بن يحيى ، حدثنا وهب بن جرير ، حدثنا شعبة عن عاصم بن كليب عن أبيه عن وائل بن حجر الحضرمي : أن رسول الله صلى الله عليه وسلم رفع يديه حين كبر ، وحين ركع ، وحين رفع رأسه من الركوع ، وقال حين سجد : هكذا ، وجافى يديه عن إبطيه ، ووضع فخذه اليمنى على فخذه اليسرى ، وقال : هكذا ونصب وهب السبابة وعقد بالوسطى وأشار محمد بن يحيى أيضا بسبابته وحلق بالوسطى والإبهام ، وعقد بالوسطى. (صحيح ابن خزيمة – ص:٣٤٦ج:١)

हदीस ६३ (१३) : हम को अबू ताहिर ने खबर दी, उनको अबू बकर ने, उनको मुहम्मद बिन यह्या ने, उनको वहब बिन जरीर ने, उनको ौअ्बा ने, उनको आसिम बिन कुलैब ने, उनको उनके वालिद ने, उनको ाइल बिन हुज्र हजरमी ने कहा बेशक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब **अल्लाहु अकबर** कहते तो रफा यदैन करते और जब रुकूअ को जाते और रुकूअ से सर उठाते तो (भी) रफा यदैन करते और कहा जब आप ने सज्दा किया और हाथों को बगलो से दूर रखा। और कहा इस तरह, वहब रावी ने सब्बाबा उंगली को खडा किया और बिचियानी उंगली के साथ हल्का बनाया और मुहम्मद बिन यह्या ने भी

सब्बाबा उंगली के साथ इशारा किया और उस्ता और इब्हाम के
हल्का बनाया। (सही इब्ने खुज़ैमा, जिल्द : १, स० ३४६)

(६) अस्सुनन अल कुबरा

-٦ (١) اخبرنا ابو الحسن محمد بن الحسين بن داود الحسينى
احمد بن محمد بن الحسن الحافظ ثنا عبد الرحمن ابن بشر بن
لحكم ثناسفيان عن الزهري عن سالم بن عبد الله بن عمر عن
يه قال رايت رسول الله صلى الله تعالى عليه وسلم يرفع يديه إذا
تتح الصلوة يحاذي بهما منكبيه وإذا ركع وإذا رفع راسه من
ركوع ولا يفعل ذلك في السجود(السنن الكبرى – للإمام
بيهقي – ص:٢٢ج٢)

हदीस ६४ (१) : हम से अबुल हसन मुहम्मद बिन हुसैन बिन दा
हुसैनी ने बयान किया, उन्होंने अहमद बिन मुहम्मद बिन हसन हाफि
उन्होंने अब्दुर्रहमान बिन बिश्र बिन हकम से, उन्होंने सुफ़ियान से, उ
जुहरी से उन्होंने सालिम बिन अब्दुल्लाह से, उन्होंने अपने वालिद इब्ने
रज़ि० से कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा
जब आप नमाज शुरू करते तो अपने दोनों हाथ मोंढों के बराबर क
और जब रुकूअ़ करते और रुकूअ़ से सर उठाते (तब भी) रफ़ा यदैन
और सज्दों के दर्मियान ऐसा नहीं करते थे। (जिल्द : २, स० २३)

-٦ (٢) (اخبرنا) ابو محمد عبد الله بن يوسف انبا ابو سعيد بن
عرابي بمكة انبا الحسن بن محمد بن الصباح ثنا عفان ابن
سلم ثنا حماد عن ايوب عن نافع عن ابن عمر ان رسول الله صلى
له تعالى عليه وسلم كان إذا دخل في الصلوة رفع يديه حذو
كبيه وإذا ركع وإذا رفع رأسه من الركوع(السنن الكبرى -
إمام البيهقي –ص:٢٤ج:٢)

हदीस ६५ (२) : हमे अबू मुहम्मद अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने ख़ब
उन्हे अबू सईद बिन अराबी ने मक्का मुकर्रमा में, उन्हें हसन बिन मुहम्म
सबाह ने, उन्हे अफ़्फ़ान बिन मुस्लिम ने उन्हें हम्माद ने, उन्हें अय्यूब ने

नाफे ने, उन्हें इब्ने उमर रज़ि० ने कि : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज में दाखिल होते और जब रुकूअ़ करते और जब रुकूअ़ से सर उठाते तो मोंढों के बराबर रफ़ा यदैन करते। (जिल्द : २, स० २४)

-٦٦ (٣) (اخبرنا) ابو عبد الله الحافظ ثنا ابو العباس محمد بن
يعقوب ثنا ابو الحسن محمد بن سنان القزاز البصري ببغداد ثنا ابو
عاصم عن عبد الحميد بن جعفر حدثنى محمد عمر بن عمرو بن
عطاء قال سمعت ابا حميد الساعدي في عشرة من اصحاب رسول
الله صلى الله عليه وسلم فيهم أبو قتادة الحارث بن ربعى فقال أبو
حميد كان رسول الله صلى الله عليه وسلم إذا قام إلى الصلوة رفع
يديه حتى يحاذي بهما منكبيه ثم يكبر(السنن الكبرى -
للإمام البيهقي –ص: ٢٤ ج:٢)

हदीस ६६ (३) : हमे अबू अब्दुल्लाह हाफ़िज़ ने खबर दी, उन्हें अबू अब्बास मुहम्मद बिन याकूब ने, उन्हे अबुल हसन मुहम्मद बिन सिनान कज्जाज बसरी ने बग़दाद में, उन्हें अबू आसिम ने उन्हे अब्दुल हमीद बिन जाफ़र ने उन्हें मुहम्मद उमर बिन अम्र बिन अता ने। कहा मैंने अबू हुमैद साइदी रज़ि० को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दस सहाबा रज़ि० की मौजूदगी में सुना उन में अबू कतादा रज़ि० यानी हारिस बिन रिबई रज़ि० भी थे। अबू हुमैद रज़ि० ने फ़रमाया कि : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज के लिए खड़े होते तो मोंढों के बराबर रफ़ा यदैन करते फिर अल्लाहु अकबर कहते। (जिल्द : २, स० २४)

-٦٧ (٤) (اخبرناه) أبو الحسين على بن محمد بن عبد الله بن بشران
العدل ببغداد انبا أبو الحسين عبد الصمد بن على الطستى ثنا
محمد بن ربيع بن سليمان البزار ثنا سليمان بن داؤد الهاشمي ثنا ابن
ابى الزناد عن موسى وهو ابن عقبة عن عبد الله بن الفضل القرشى
عن الاعرج عن عبيدالله بن ابى رافع عن على رضى الله تعالى عنه
قال كان النبي صلى الله عليه وسلم إذا افتتح الصلوة رفع يديه
حذو منكبيه وإذا اراد ان يركع وإذا رفع راسه من الركوع

وكان لا يفعل ذلك في شيء من سجوده وإذا قام من السجدتين مثل ذلك(السنن الكبرى - للإمام البيهقي - ص:٢٤ج:٢)

हदीस ६७ (४) : हमें अबुल हसन अली बिन मुहम्मद बिन अब्दुल्ला बिन बिशरान अदल ने बगदाद में खबर दी, उन्हें अब्दुस्समद बिन अ... तरती ने, उन्हें मुहम्मद बिन रिह बिन सुलेमान बज्जार ने, उन्हें सुलेमा... बिन दाउद हाशमी ने, उन्हें इब्ने अबी जिनाद ने, उन्हें मूसा ने जो इब्ने उक्बा है उन्हें अब्दुल्लाह बिन फजल कुरशी ने, उन्हें अ'रज ने, उन्हें उबैदुल्लाह बिन अबी राफे ने उन्हें हजरत अली रजि अल्लाहु अन्हु ने उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज शुरू करते तो मोढो के बराबर रफा यदैन करते और जब रुकूअ का इरादा करते और रुकूअ से सर उठाते और सज्दो में ऐसा नहीं करते थे और जब दो रकअत पढ कर खडे होते तो भी ऐसा ही करते थे (यानी रफा यदैन करते मोढो के बराबर) (जिल्द : २, स० २४)

٦٨- (٥) (اخبرنا) ابو زكريا ابن ابى اسحاق المزكي ثنا ابو العباس محمد بن يعقوب انبا الربيع بن سليمان انبا الشافعي انبا سفيان عن عاصم بن كليب قال سمعت ابى يقول حدثني وائل بن حجر قال رايت رسول الله صلى الله عليه وسلم إذا افتتح الصلوة يرفع يديه حذو منكبيه وإذا ركع وبعد ما يرفع راسه من الركوع قال وائل ثم اتيتهم في الشتاء فرايتهم يرفعون ايديهم في البرانس (السنن الكبرى - للإمام البيهقي -ص:٢٤ج:٢)

हदीस ६८ (५) : हमें अबू जकरिया बिन अबी इसहाक मुजकी ने खबर दी, उन्हें अबुल अब्बास मुहम्मद बिन याकूब ने, उन्हें रबी बिन सुलेमान ने, उन्हें इमाम शाफई रह० ने, उन्हें सुफियान ने, उन्हें आसिम बिन कुलैब ने, उन्होंने कहा मैंने अपने वालिद को फरमाते हुए सुना कि मुझे वाइल बिन हुज रजि० ने खबर दी कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा जब आप नमाज शुरू करते तो मोढो के बराबर रफा यदैन करते और जब रुकूअ करते और रुकूअ से सर उठाने के बाद भी ऐसा ही करते।

वाइल रजि० कहते हैं फिर मैं सर्दियों के मौसम में आया तो मैंने देखा कि वह (सहाबा रजि०) चादरों के नीचे से ही रफा यदैन करते थे।

(जिल्द : २, स० २४)

٦٩- (٦) (اخبرنا) ابو عبد الله الحافظ اخبرني ابو الوليد الفقيه ثنا عبد الله بن محمد ثنا محمد بن المثنى ثنا ابن ابى عدى عن سعيد (ح واخبرنا) ابو الحسن المقرى انبا الحسن بن محمد بن اسحاق ثنا يوسف بن يعقوب ثنا محمد بن المنهال ثنا يزيد بن زريع ثنا سعيد عن قتادة عن نصر بن عاصم الليثى عن مالك بن الحويرث قال كان رسول الله صلى الله عليه وسلم إذا كبر رفع يديه حتى يحاذي هما فروع اذنيه وإذا ركع كذلك وإذا رفع راسه من الركوع كذلك(السنن الكبرى - للإمام البيهقي -ص:٢٥ج:٢)

हदीस ६९ (६) : हमें अबू अब्दुल्लाह हाफिज ने खबर दी, उन्हें अबू वलीद फकीह ने, उन्हें अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने, उन्हें मुहम्मद बिन मुसन्ना ने, उन्हें इब्ने अबी अदी ने, उन्हे सईद ने।

दूसरी सनद : हमें अबुल हसन मुकरी ने खबर दी, उन्हें हसन बिन मुहम्मद बिन इस्हाक ने, उन्हे यूसुफ बिन याकूब ने उन्हें मुहम्मद बिन मिन्हाल ने, उन्हें यजीद बिन जुरैअ ने, उन्हे सईद ने, उन्हें कतादा ने उन्हें नस्र बिन आसिम लैसी ने, उन्हें मालिक बिन हुवैरिस रजि० ने वह फरमाते है किरसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तक्बीरे तहरीमा और रुकूअ जाते वक्त और रुकूअ से सर उठाने के वक्त कानो के बराबर रफा यदैन किया करते थे। (जिल्द : २, स० २५)

٧٠- (٧) (اخبرنا) على بن محمد بن عبد الله بن بشران العدل ببغداد انبا ابو على اسمعيل بن محمد الصفار ثنا عبد الكريم بن الهيثم ثنا ابو اليمان انبا شعيب بن ابى حمزة القرشى عن محمد بن مسلم بن عبيدالله بن شهاب الزهري قال اخبرني سالم ابن عبد الله عن عبد الله بن عمر بن الخطاب رضى الله عنه انه قال رايت رسول الله صلى الله عليه وسلم إذا افتتح التكبير في الصلوة رفع

بديه حين يكبر حتى يجعلهما حذو منكبيه ثم إذا كبر للركوع فعل مثل ذلك ثم إذا قال سمع الله لمن حمده فعل مثل ذلك وقال ربنا ولك الحمد ولا يفعل ذلك حين يسجد ولا حين يرفع رأسه من السجود(السنن الكبرى - للإمام البيهقي – ص:٢٦ج:٢)

हदीस ७० (७) : हमे अली बिन मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन विश अद्ल ने बगदाद में खबर दी, उन्हें अबू अली इस्माईल बिन मुहम्मद स ने, उन्हे अबदुल करीम बिन हैसेम ने, उन्हें अबू यमान ने, उन्हें शुऐब ब अबी हम्जा कुरशी ने, उन्हें मुहम्मद बिन मुस्लिम बिन उबैदुल्लाह बि शिहाब जुहरी ने, उन्होंने कहा मुझे सालिम बिन अब्दुल्लाह ने अब्दुल्ल बिन उमर बिन खत्ताब रजि० से हदीस सुनाई, उन्होंने कहा कि आंहजरत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा आपने **अल्लाहु अक** कह कर नमाज शुरू की, और अल्लाहु अकबर कहते वक्त दोनों हाथ उठ यहा तक कि उन को मोंढों के बराबर कर दिया और रुकूअ् की तक्बीर वक्त भी ऐसा ही किया और जब **समिअल्लाहुलिमन हमिदह** कहा तो ऐसा ही किया और फरमाया **रब्बना व लकल हम्द**। और सज्दा क वक्त ऐसा नहीं करते थे (यानी रफ़ा यदैन नहीं करते थे) और न जब सज से सर उठाते वक्त। (जिल्द . २, स० २६)

٧١- (٨) (اخبرنا) ابو طاهر الفقيه من اصله انبا ابو بكر محمد بن الحسين القطان ثنا عبد الرحمن بن بشر ثنا عبد الرزاق انبا ابن جريج اخبرني ابن شهاب عن سالم ان ابن عمر كان يقول كان رسول الله صلى الله عليه وسلم إذا قام إلى الصلوة رفع يديه حتى تكونا حذو منكبيه ثم كبر وساق الحديث(السنن الكبرى - للإمام البيهقي – ص: ٢٦ج:٢)

हदीस ७१ (८) अबू ताहिर फकीह ने अपनी असल किताब से ब किया, उन्हे अबू बकर मुहम्मद बिन हुसैन कत्तान ने बताया, उन्हें अब्दुर्रह बिन बिश्र ने उन्हे अब्दुर्रज्जाक ने, उन्हें इब्ने जुरैज ने, उन्हे इब्ने शिहाब उन्हे सालिम ने, उन्हे इब्ने उमर रजि० ने उन्होंने कहा कि रसूलुल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज के लिए खड़े होते तो रफा

किया करते, फिर **अल्लाहु अकबर** कहते थे, फिर रावी ने पूरी हदीस बयान की। (जिल्द : २, स० २६)

٧٢- (٩) (واخبرنا) محمد بن عبد الله الحافظ ثنا ابو عبد الله محمد بن يعقوب ثنا ابراهيم بن ابى طالب ثنا محمد بن رافع ثنا عبد الرزاق انبا ابن جريج حدثنى ابن شهاب عن سالم بن عبد الله ان ابن عمر رضى الله عنهما قال كان رسول الله صلى الله عليه وسلم إذا قام للصلوة رفع يديه حتى تكونا حذو منكبيه ثم كبرو إذا اراد ان يركع فعل مثل ذلك وإذا رفع من الركوع فعل مثل ذلك ولا يفعله حين يرفع رأسه من السجود(السنن الكبرى - للإمام البيهقي – ص:٢٦ج:٢)

हदीस ७२ (६) : हमें मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह हाफिज ने खबर दी, उन्हें अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन याकूब ने, उन्हे इब्राहीम बिन अबी तालिब ने उन्हें मुहम्मद बिन राफे ने, उन्हें अब्दुर्रज्जाक ने, उन्हें इब्ने जुरैज ने, उन्हें इब्ने शिहाब ने, उन्हे सालिम बिन अब्दुल्लाह ने कि इब्ने उमर रजि० का बयान है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हमेशा जब नमाज के लिए खड़े होते तो अपने दोनों हाथ अपने दोनों मोंढों तक उठा के अल्लाहु अकबर कहते, और जब रुकूअ् से सर उठाते तब भी ऐसा ही करते और जब सज्दा से सर उठाते तो ऐसा नहीं करते। यानी रफ़ा यदैन सज्दों के दर्मियान नहीं करते थे। (जिल्द २, स० २६)

٧٣- (١٠) (اخبرنا) ابو عبد الله الحافظ اخبرني ابو النضر الفقيه ثنا محمد بن نصر وابراهيم بن على قالا ثنا يحيى بن يحيى انبا خالد بن عبد الله عن خالد يعنى الحذاء عن ابى قلابة انه رأى مالك بن الحويرث إذا صلى كبر ثم رفع يديه وإذا اراد ان يركع رفع يديه وإذا رفع راسه من الركوع رفع يديه وحدث ان رسول الله صلى الله عليه وسلم كان يفعل هذا(السنن الكبرى - للإمام البيهقي –ص:٢٧ج:٢)

हदीस ७३ (१०) : हमें अबू अब्दुल्लाह हाफिज ने खबर दी, उन्हें अबू

नज फकीह ने, उन्हें मुहम्मद बिन नस्र ने और इब्राहीम बिन अली ने, ने कहा हमे यह्या बिन यहया ने खबर दी, उन्हे खालिद बिन अब्दु ने, उन्हें खालिद हज्जा ने, उन्हे अबू किलाबा ने, उन्होंने मालिक हुवैरिस को देखा कि जब उन्होंने नमाज के लिए तक्बीर कही तो उ दोनों हाथ उठाए फिर जब रुकूअ् का कस्द किया और रुकूअ् से उठाया तब भी दोनों हाथ उठाए और बयान किया कि रसूलु सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ऐसा ही किया करते थे। इस हदीस **'काना यफअलु'** मौजूद है जो माज़ी इस्तिम्रारी है कि आप हमेशा यदैन किया करते थे। (जिल्द : २, स० २७)

٧٤- (١١) (اخبرنا) ابو عبد الله الحافظ انبأ ابو الحسن احمد بن محمد العنزي ثنا عثمان بن سيد ثنا عبد الله بن رجاء ثنازائدة ثنا عاصم بن كليب الجرمى قال اخبرني ابى ان وائل بن حجر اخبره قال قلت لانظرن الى رسول الله صلى الله عليه وسلم كيف يصلى قال فنظرت إليه قام وكبر ورفع يديه وذكر الحديث وقال في آخره ثم جئت بعد ذلك بزمان فيه برد فرايت الناس عليهم جل الثياب تحرك ايديهم من تحت الثيب ◆ ورواه سفيان بن عيينة عن عاصم وقال في الحديث ثم اتيتهم في الشتاء فرايتهم يرفعون ايديهم في البرانس(السنن الكبرى - للإمام البيهقي – ص:٢٧- ٢٨ج:٢)

हदीस ७४ (११) : हमे अबू अब्दुल्लाह हाफिज ने खबर दी, उन्हें अ हसन अहमद बिन मुहम्मद अजी ने, उन्हें उस्मान बिन सईद ने, अब्दुल्लाह बिन रजा ने, उन्हे जाइदा ने, उन्हे आसिम बिन कुलैब जर्मी उन्होंने कहा मुझे मेरे वालिद ने खबर दी कि वाइल बिन हुज्र रज़ि० ने मै रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नमाज को जरूर देखूगा आप कैसे नमाज अदा करते है। मैने आपकी तरफ देखा, आप खडे तक्बीर कही और रफा यदैन की फिर बाकी हदीस जिक्र की। उसके आ मे है कि फिर मै सख्त सर्दी के मौसम मे आया, और लोगों को देखा बडे कपडे पहने हुए। (उसके बावजूद) कपडो के अन्दर उनके हाथ रफ के लिए हरकत करते थे। और सुफियान बिन उयैना ने आसिम से

अल्फाज नकल किए है 'फिर मै सर्दियों के मौसम मे उनके पास आया तो मैने देखा वह चादरों के नीचे से रफा यदैन करते थे। (जिल्द २, स० २७, २८)

٧٥- (١٢) (اخبرنا) على بن محمد بن عبد الله بن بشران العدل ببغداد انبأ ابو جعفر الرزاز انبأ جعفر بن محمد بن شاكر ثنا عفان ثنا همام ثنا محمد بن جحادة عن عبد الجبار بن وائل ومولى لهم انهما حدثاه عن ابيه وائل بن حجرانه راى النبي صلى الله عليه وسلم حين دخل في الصلوة كبر قال ابو عثمان وصف همام حيال اذنيه ثم التحف بثوبه ثم وضع يده اليمنى على يده اليسرى فلما اراد ان يركع اخرج يديه من الثوب ورفعهما فكبر فلما قال سمع الله لمن حمده رفع يديه فلما سجد سجد بين كفيه(السنن الكبرى - للإمام البيهقي –ص:٢٨ج:٢)

हदीस ७५ (१२) : हमें अली बिन मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन बिशरान अदल ने खबर दी बगदाद में, उन्हें अबू ज'फर रज़्ज़ाज ने, उन्हें ज'फर बिन मुहम्मद बिन शाकिर ने उन्हें अफ्फान ने, उन्हे हम्माम ने, उन्हें मुहम्मद बिन जुहादा ने, उन्हे अब्दुल जब्बार बिन वाइल और उनके मौला ने, उन दोनों ने अपने वालिद वाइल बिन हुज्र रजि० से रिवायत किया कि उन्होंने रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा कि आप ने नमाज शुरु करते वक्त अपने दोनों हाथ उठाए और **अल्लाहु अकबर** कहा। इस हदीस के रावी हम्माम का बयान है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दोनों हाथ कानों तक उठाए, फिर चादर ओढ ली। उसके बाद सीधा हाथ उलटे हाथ पर रखा, फिर आपने चादर में से हाथ बाहर निकाल कर दोनो कानों तक उठा कर तक्बीर कही, उसके बाद रुकूअ् मे गये और बहालते क़याम **समिअल्लाहुलिमन हमिदह** पढ कर रफा यदैन किया और आपने दोनों हथेलियों के दर्मियान मे सज्दा किया। (जिल्द २, स० २८)

٧٦- (١٣) (اخبرناه) ابو الحسين بن بشران العدل ببغداد انبأ اسمعيل بن محمد الصفار وابو جعفر محمد بن عمرو الرزاز قالا ثنا سعدان بن نصر المخرمى ثنا سفيان بن عيينة عن الزهري عن سالم

عن ابيه قال رأيت رسول الله صلى الله عليه وسلم إذا افتتح الصلوة رفع يديه حتى يحاذي منكبيه وإذا اراد ان يركع وبعد ما يرفع من الركوع ولا يرفع بين السجدتين(السنن الكبرى - للإمام البيهقي ص:٦٩ج:٢)

हदीस ७६ (१३) : हमे अबुल हसन बिन बिशरान अल अद्ल ने बगदाद मे खबर दी, उन्हें इस्माईल बिन मुहम्मद सफ्फार और अबू जाफर मुहम्मद बिन अम रज्जाज दोनों ने कहा हमे सअ्दान बिन नस्र मखरमी ने खबर दी, उन्हे सुफियान बिन उयैना ने, उन्हे जुहरी ने, उन्हें सालिम ने, उनको उनके वालिद (अब्दुल्लाह रजि०) ने कहा, मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा, जब आप नमाज शुरू करते और जब रुकूअ का इरादा करते और रुकूअ से सर उठाने के बाद मोंढो कि बराबर रफा यदैन किया करते थे। और सज्दो के दर्मियान रफा यदैन नहीं किया करते थे।
(जिल्द २, स० ६९)

٧٧- (١٤) (اخبرنا) أبو عبد الله الحافظ انبا الحسن بن حليم المروزى ثنا ابو الموجه ثنا عبدان ثنا عبد الله (ح واخبرنا) أبو عبد الله انبا بكر بن محمد بن حمدان بمرو واللفظ له انبا ابراهيم بن هلال ثنا على بن ابراهيم البنانى ثنا عبد الله انبا يونس بن يزيد الايلى عن الزهري قال اخبرني سالم بن عبد الله عن ابن عمر قال رايت رسول الله صلى الله عليه وسلم إذا قام في الصلوة رفع يديه حتى تكونا حذو منكبيه ثم يكبر قال وكان يفعل ذلك حين يكبر للركوع ويفعل ذلك حين يرفع رأسه من الركوع ويقول سمع الله لمن حمده ولا يفعل ذلك في السجودقال وكان ابن المبارك يرفع يديه كذلك في الصلوت الخمس والتطوع والعيدين الجنائز(السنن الكبرى - للإمام البيهقي ص ٦٩ج ٢)

हदीस ७७ (१४) : हमें अबू अब्दुल्लाह हाफिज ने खबर दी, उन्हे हसन बिन हलीम मुरूज़ी ने, उन्हे अबू मौजा ने, उन्हे अब्दान ने, उन्हे अब्दुल्लाह ने।
(दूसरी सनद) हमें अबू अब्दुल्लाह ने खबर दी, उन्हे बकर बिन मुहम्मद बिन हम्दान ने मरवा नाम की जगह में और लफ्ज उन्हीं के हैं।

इब्राहीम बिन हिलाल ने, उन्हें अली बिन इब्राहीम बुनानी ने, उन्हे अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने, उन्हें यूनुस बिन यजीद ऐली ने, उन्हें जुहरी ने, उन्हें सालिम बिन अब्दुल्लाह ने, उन्हें इब्ने उमर रजि० ने, उन्होंने कहा मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा जब नमाज मे खड़े होते तो रफा यदैन करते फिर **अल्लाहु अकबर** कहते यहाँ तक कि आपके दोनो हाथ मोंढो के बराबर हो जाते, इसी तरह जब रुकूअ के लिए **अल्लाहु अकबर** कहते और रुकूअ से सर उठाते (रफा यदैन) करते और **समिअल्लाहुलिमन हमिदह** कहते। और सज्दो के दर्मियान ऐसा नहीं करते थे। और उसने कहा कि अब्दुल्लाह बिन मुबारक पाँचो नमाजों, नवाफिल, ईदैन और जनाइज मे रफा यदैन किया करते थे। (जिल्द २, स० ६६)

٧٨- (١٥) (اخبرنا) محمد بن عبد الله الحافظ انبا ابو عبد الله محمد بن عبد الله الصفار ثنا احمد بن مهدى ثنا ابو اليمان الحكم بن نافع قال اخبرني أبو بشر شعيب بن دينار عن ابى حمزة عن محمد بن مسلم بن عبيدالله بن شهاب الزهري اخبرني سالم ابن عبد الله عن عبد الله بن عمر بن الخطاب رضى الله عنهما قال رايت رسول الله صلى الله عليه وسلم إذا افتتح التكبير للصلوة رفع يديه حين يكبر حتى يجعلهما حذاء منكبيه ثم إذا كبر للركوع فعل مثل ذلك ثم إذا قال سمع الله لمن حمده فعل مثل ذلك وقال ربنا ولك الحمد ولا يفعل ذلك حين يسجد(السنن الكبرى - للإمام البيهقي ص:٧٠ج:٢)

हदीस ७८ (१५) : हमे मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह हाफिज ने खबर दी, उन्हें अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह सफ्फार ने, उन्हे अहमद बिन महदी ने, उन्हें अबू यमान हकम बिन नाफे ने, उन्हे अबू बिश्र शुऐब बिन दीनार ने, उन्हे अबू हम्जा ने, उन्हे मुहम्मद बिन मुस्लिम बिन उबैदुल्लाह बिन शिहाब जुहरी ने, उन्हे सालिम बिन अब्दुल्लाह ने, उन्हे अब्दुल्लाह बिन उमर रजि० ने, कहा कि मैंने आंहजरत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा, आपने अल्लाहु अकबर कह कर नमाज शुरू की और अल्लाहु अकबर कहते वक्त दोनो हाथ उठाए यहाँ तक कि उनको मोंढो के बराबर कर दिया, और रुकूअ की तक्बीर के वक्त भी ऐसा ही किया, और जब

"समिअल्लाहुलिमन हमिदह" कहा तो भी ऐसा ही किया और फरमा "रब्बना व लकल हम्द" और सज्दा में ऐसा नही करते थे। (यानी र यदैन नही करते थे।) (जिल्द २, स० ७०)

٧٩- (١٦) (اخبرنا) أبو الحسن على بن احمد بن عبدان انبأ احمد بن عبيد الصفار ثنا عبيد بن شريك وابن ملحان قالا ثنا يحيى بن بكير ثنا الليث عن عقيل عن ابن شهاب عن سالم بن عبد الله عن ابن عمر قال كان رسول الله صلى الله عليه وسلم إذا قام للصلوة رفع يديه حتى تكونا حذو منكبيه ثم يكبر فإذا اراد ان يركع فعل مثل ذلك وإذا رفع من الركوع فعل مثل ذلك ولا يفعله حين يرفع راسه من السجود(السنن الكبرى - للإمام البيهقي – ص:٧٠ج:٢)

हदीस ७९ (१६) : हमें अबुल हसन अली बिन अहमद बिन अब्दान खबर दी, उन्हें अहमद बिन उबैद सफ्फार ने, उन्हें उबैद बिन शरीक अहमद बिन मिल्हान ने, उन दोनों ने कहा हमें यहया बिन बुकैर ने, लैस ने, उन्हें उकैल ने, उन्हे इब्ने शिहाब ने, उन्हें सालिम बिन अब्दुल् ने उन्हें इब्ने उमर रजि० ने, बताया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि सल्लम जब नमाज के लिए खडे होते तो हमेशा अपने दोनों हाथ मोंढो उठा कर **अल्लाहु अकबर** कहते और जब रुकूअ् का इरादा फरमाते भी ऐसा ही करते। (लेकिन) जब सज्दा से सर उठाते, तो ऐसा नहीं क थे यानी सज्दों के दर्मियान रफा यदैन नहीं करते थे। (जिल्द २, स०

٨٠- (١٧) (اخبرنا) ابو عمرو الاديب انبأ ابو بكر الاسماعيلي انبا ابو الحسين عبد الله بن محمد السمناني ثنا نصر بن على الجهضمي اخبرني عبد الاعلى بن عبد الاعلى انبأ عبد الله عن نافع عن ابن عمر انه كان إذا دخل في الصلوة رفع يديه وإذا ركع وبعدما يرفع راسه من الركوع وإذا قام من الركعتين رفع يديه ورفع ذلك إلى النبي صلى الله عليه وسلم(السنن الكبرى- للإمام البيهقي –ص:٧٠ج:٢)

हदीस ८० (१७) : हमें अबू अम्र अदीब ने खबर दी, उन्हें अबू बकर इस्माईली ने, उन्हें अबु हुसैन अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद सम्नानी ने, उन्हें नस्र बिन अली जहज्मी ने, उन्हें अब्दुल आला बिन अब्दुल आला ने उन्हें अब्दुल्लाह ने, उन्हे नाफे ने, उन्होंने कहा कि हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर रजि० जब नमाज मे दाखिल होते तो **अल्लाहु अकबर** कहते और रफा यदैन करते। और जब रुकूअ् मे जाते तब भी रफा यदैन करते और जब **"समिअल्लाहुलिमन हमिदह"** कहते तब भी रफा यदैन करते और जब दो रकअतें पढ़ कर उठते तब भी रफा यदैन करते। और इब्ने उमर रजि० ने कहा कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी ऐसा ही करते थे। (जिल्द २, स० ७०)

٨١- (١٨) (اخبرنا) أبو عبد الله الحافظ ثنا ابو العباس محمد بن يعقوب ثنا محمد بن اسحاق الصغانى ثنا عفان ثنا حماد بن سلمة ثنا ايوب ثنا نافع عن ابن عمر رضى الله عنه ان رسول الله صلى الله عليه وسلم كان إذا دخل في الصلوة رفع يديه حذو منكبيه وإذا ركع رفع راسه من الركوع(السنن الكبرى - للإمام البيهقي –ص:٧٠ج:٢)

हदीस ८१ (१८) : हमें अबू अब्दुल्लाह हाफिज ने खबर दी, उन्हें अबुल अब्बास मुहम्मद बिन याकूब ने, उन्हें मुहम्मद बिन इसहाक सगानी ने, उन्हें अफ्फान ने, उन्हें हम्माद बिन सलमा ने, उन्हें अय्यूब ने, उन्हें नाफे ने, उन्हें इब्ने उमर रजि० ने कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज मे दाखिल होते और जब रुकूअ् करते और रुकूअ् से सर उठाते तो मोंढों के बराबर रफा यदैन किया करते थे। (जिल्द २, स० ७०)

٨٢- (١٩) (اخبرنا) أبو الحسن محمد بن الحسين العلوى انبا احمد بن محمد بن الحسين الحافظ ثنا احمد بن يوسف السلمى ثنا عمر بن عبد الله بن رزين السلمي أبو العباس ثنا ابراهيم بن طهمان عن ايوب بن ابى تميمة وموسى بن عقبة عن نافع عن ابن عمرانه كان يرفع يديه حين يفتتح الصلوة وإذا ركع وإذا استوى قائما من ركوعه حذو منكبيه ويقول كان صلى الله عليه وسلم يفعل ذلك (السنن الكبرى - للإمام البيهقي – ص:٧٠- ٧١ج:٢)

हदीस ८२ (१६) : हमें अबुल हसन मुहम्मद बिन हुसैन अल्वी ने उन्हें अहमद बिन मुहम्मद बिन हसन हाफिज ने, उन्हें अहमद बिन यूसुफ सलमी ने, उन्हें उमर बिन अब्दुल्लाह बिन रज़ीन सलमी अबुल अब्बास ने, उन्हें इब्राहीम बिन महान ने, उन्हें अय्यूब बिन अबू तमीमा और मूसा बिन उक़बा ने, उन्हें नाफे ने, उन्होंने इब्ने उमर रजि० के मुतअल्लिक़ बताया कि वा हमेशा जब नमाज शुरू करते और रुकूअ् करते और रुकूअ् से सीधे खड़े हो जाते तो मोंढों के बराबर रफा यदैन करते और फरमाते कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ऐसा ही करते थे। (जिल्द २, स० ७०, ७१

٨٢- (٢٠) (اخبرنا) ابو عمرو محمد بن عبد الله الاديب انبا ابو بكر الاسماعيلي حدثني عبد الله بن وهب الدينوري واحمد ابن محمد بن عبد الكريم قالا ثنا ابو بشر اسحاق بن شاهين وقال الدينوري اسحاق بن ابى عمران الواسطي ثنا خالد ابن عبد الله عن خالد الحذاء عن ابى قلابة قال رايت مالك بن الحويرث إذا صلى كبر ورفع يديه وإذا اراد ان يركع رفع يديه وإذا رفع راسه من الركوع رفع يديه وحدثنا ان رسول الله صلى الله عليه وسلم كان يصلى هكذا(السنن الكبرى - للإمام البيهقي –ص:٧١ج:٢)

हदीस ८३ (२०) : हमें अबू अम्र मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह अदीब ने ख़बर सुनाई, उन्हें अबू बकर इस्माईली ने, उन्हें अब्दुल्लाह बिन वहब दैनूरी और अहमद बिन मुहम्मद बिन अब्दुल करीम ने, दोनो ने कहा कि हमें अबुल बि इसहाक बिन शाहीन ने और दैनूरी इसहाक बिन अबी इमरान वास्ती ने कहा उन्हें खालिद बिन अब्दुल्लाह ने, उन्हें खालिद हज्जा ने, उन्हें अबू किला ने उन्होंने कहा मैंने मालिक बिन हुवैरिस रजि० को देखा उन्होंने जब नमा पढ़ी तो अल्लाहु अकबर कहा और रफा यदैन की और (इसी तरह) जब रुकूअ का इरादा किया और रुकूअ से सर उठाया तो रफा यदैन की और हमें हदीस सुनाई कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ऐसे ही नमाज पढ़ा करते थे। (जिल्द २, स० ७१

٨٤- (٢١) (اخبرنا) ابو عبد الله الحسين بن عمر بن برهان وابو الحسن بن الفضل القطان وابو محمد عبد الله بن يحيى بن عبد الجبار السكرى ببغداد قالوا انبا اسمعيل بن محمد الصفار ثنا

الحسن بن عرفة ثنا خالد بن الحارث الهجيمى البصري عن سعيد بن ابى عروبة قال انبانا قتادة عن نصر بن عاصم عن مالك بن الحويرث انه قال رايت رسول الله صلى الله عليه وسلم يرفع يديه في صلوة إذا ركع وإذا رفع راسه من الركوع حتى يحاذي بهما فروع اذنيه (السنن الكبرى - للإمام البيهقي – ص:٧١ج:٢)

हदीस ८४ (२१) : हमें अबू अब्दुल्लाह हुसैन बिन उमर बिन बुरहान और अबुल हसन बिन फजल कत्तान और अबू मुहम्मद अब्दुल्लाह बिन यहया बिन अब्दुल जब्बार सक्री ने बगदाद में, उन्होंने कहा हमें इस्माईल बिन मुहम्मद सफ्फार ने हमें हसन बिन अरफा ने, उन्हें ख़ालिद बिन हारिस हुजैमी बसरी ने, उन्हें सईद बिन अबी अरूबा ने, उन्हें कतादा ने, उन्हें नस्र बिन आसिम ने उन्हें मालिक बिन हुवैरिस रजि० ने, उन्होंने कहा कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा कि आप नमाज में जब रुकूअ् करते और जब रुकूअ् से सर उठाते तो कानों के बराबर रफा यदैन किया करते थे। (जिल्द २ स० ७१)

٨٥- (٢٢) (اخبرنا) ابو الحسين بن بشران ببغداد انبا أبو جعفر محمد بن عمرو الرزاز ثنا جعفر بن محمد بن شاكر ثنا عفان ثنا همام ثنا محمد بن جحادة عن عبد الجبار بن وائل عن علقمة بن وائل ومولى لهم انهما حدثاه عن ابيه وائل بن حجرانه راى النبي صلى الله عليه وسلم حين دخل في الصلوة كبر قال أبو عثمان وصف همام حيال اذنيه يعنى رفع اليدين ثم التحف بثوبه ثم وضع يده اليمنى على يده اليسرى فلما اراد ان يركع اخرج يديه من الثوب ورفعهما فكبر فلما قال سمع الله لمن حمده رفع يديه فلما سجد سجد بين كفيه(السنن الكبرى - للإمام البيهقي – ص:٧١ ج:٢)

हदीस ८५ (२२) : हमें अबुल हुसैन बिन बिशरान ने बगदाद में ख़बर दी उन्हें अबू जा'फर मुहम्मद बिन अम्र रज्जाज ने उन्हें जा'फर बिन मुहम्मद बिन शाकिर ने, उन्हें अफ्फान ने, उन्हें हम्माम ने, उन्हें मुहम्मद बिन जुहादा ने, उन्हें अब्दुल जब्बार बिन वाइल ने, उन्हें अल्कमा बिन वाइल और उनके मौला ने उन दोनों ने अपने वालिद वाइल बिन हुज्र रजि० से कि उन्होंने

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा कि आपने नमाज़ शुरू करते वक्त अपने दोनों हाथ उठाए और **अल्लाहु अकबर** कहा। इस हदीस के रावी हम्माम का बयान है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दोनों हाथ कानों तक उठाए फिर चादर ओढ ली, उसके बाद दायाँ हाथ बाए हाथ पर रखा। फिर आपने चादर में से हाथ बाहर निकाल के दोनों कानों तक उठा कर तक्बीर पढी, उसके बाद में रुकूअ् में गये, और हालते क्याम **समिअल्लाहुलिमन हमिदह** आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पढ़ कर रफा यदैन किया। और फिर आपने दोनों हथेलियों के दर्मियान में सज्दा किया। (जिल्द २, स० ७१)

٨٦- (٢٣) (اخبرنا) ابو الحسن على بن احمد بن عبدان انبا احمد بن عبيدالصفار ثنا عثمان بن عمر الضبى ثنا مسدد ثنا عبد الواحد يعنى ابن زياد ثنا عاصم بن كليب عن ابيه عن وائل بن حجر الحضرمي قال اتيت النبي صلى الله عليه وسلم فقلت لا نظرن كيف يصلى فاستقبل القبلة وكبر ورفع يديه حتى كانتاحذو منكبيه ثم اخذ شماله بيمينه فلما اراد ان يركع رفع يديه حتى كانتا حذو منكبيه فلما ركع وضع يديه على ركبتيه فلما اراد ان يرفع رفع يديه حتى كانتا حذو منكبيه فلما سجد وضع يديه من وجهه ذلك الموضع فلما جلس افترش رجله اليسرى ووضع يديه اليسرى على فخذه اليسرى ووضع حد مرفقه اليمنى على فخذه اليمنى وعقد ثنتين وحلق واحدة واشار بالسبابة(السنن الكبرى - للإمام البيهقي – ص:٧٢ج:٢)

हदीस ८६ (२३) : हमें अबुल हसन अली बिन अहमद बिन अब्दान ने खबर दी उन्हें अहमद बिन उबैद सफ्फार ने, उन्हे उस्मान बिन उमर जब्बी ने, उन्हे मुसद्दद ने उन्हे अब्दुल वाहिद यानी इब्ने जियाद ने, उन्हे आसिम बिन कुलैब ने, उन्हें उनके वालिद ने, उन्हें वाइल बिन हुज्र हजरमी रज़ि० ने बताया कि मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आया। मैंने कहा मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नमाज को देखूंगा, आप किस तरह नमाज पढते हैं तो (आप खडे हुए और) किब्ला की तरफ

मुंह किया। फिर दोनों हाथ उठाए कानों के बराबर, फिर दाहिने हाथ से बाए हाथ को पकडा। फिर जब रुकूअ् का कस्द किया तो कन्धों के बराबर रफा यदैन की और दोनों हाथ घुटनों पर रखे, फिर जब रुकूअ् से सर उठाया तो दोनों हाथों को उसी तरह उठाया। जब सज्दा किया तो हाथों को उसी मकाम पर रखा (यानी हालते सज्दा में हाथों को मोंढों के बराबर रखा) फिर बैठे तो बायाँ पाँव बिछाया और बायाँ हाथ बायें रान पर रखा। और दाहिनी कुहनी के किनारे को दाहिनी रान पर रखा। और दो उंगलियों को बन्द कर लिया। (यानी छगुलियां को और उसके पास वाली को। यानी खिंसर और बिंसर को) और हल्का बांधा (उस्ता और अंगूठे का) और कलिमे की सब्बाबह उंगली से इशारा किया। (जिल्द २, स० ७२)

٨٧- (٢٤) (اخبرنا) ابو عبد الله الحافظ ثنا ابو العباس محمد بن يعقوب ثنا ابو الحسن محمد بن سنان القزاز البصري ببغداد ثنا ابو عاصم عن عبد الحميد بن جعفر قال حدثنى محمد بن عمرو بن عطاء قال سمعت ابا حميد الساعدي في عشرة من اصحاب النبي صلى الله عليه وسلم فيهم ابو قتادة الحارث بن ربعى فقال ابو حميد الساعدي انا اعلمكم بصلوة رسول الله صلى الله عليه وسلم قالوا لم ما كنت اكثرنا له تبعا ولا اقد منا له صحبة قال بلى قالوا فاعرض علينا قال فقال كان رسول الله صلى الله عليه وسلم إذا قام إلى الصلوة رفع يديه حتى يحاذي بهما منكبيه ثم يكبر حتى يقر كل عضو منه في موضعه معتدلا ثم يقرا ثم يكبر ويرفع يديه حتى يحاذي بهما منكبيه ثم يركع ويضع راحتيه على ركبتيه ثم يعتدل ولا ينصب راسه ولا يقنع ثم يرفع راسه فيقول سمع الله لمن حمده ثم يرفع يديه حتى يحاذي بهما منكبيه حتى يعود كل عضو منه إلى موضعه معتدلا ثم يقول الله اكبر ثم يهوى الى الارض فيجافى يديه عن جنبيه ثم يرفع راسه فيثنى رجله اليسرى فيقعد عليها ويفتح اصابع رجليه إذا سجد ثم يعود ثم يرفع

فيقول الله اكبر ثم يثنى برجله فيقعد عليها معتدلا حتى يرجع او يقر كل عظم موضعه معتدلا ثم يصنع في الركعة الاخرى مثل ذلك ثم إذا قام من الركعتين كبر ورفع يديه حتى يحاذي بهما منكبيه كما فعل او كبر عند افتتاح الصلوة ثم يصنع مثل ذلك في بقية صلوته حتى إذا كان في السجدة التى فيها التسليم اخر رجله اليسرى وقعد متوركا على شقه الايسر فقالوا جميعا صدق هكذا كان يصلى رسول الله صلى الله عليه وسلم (السنن الكبرى - للإمام البيهقي -ص:٧٢ج:٢)

हदीस ८७ (२४) : हमें अबू अब्दुल्लाह हाफिज ने खबर दी उन्हें अबुल अब्बास मुहम्मद बिन याकूब ने, उन्हें अबुल हसन मुहम्मद बिन सिनान कज्जाज बसरी ने बग़दाद में, उन्हें अबू आसिम ने, उन्हें अब्दुल हमीद बिन जफर ने, उन्हे मुहम्मद बिन अम्र बिन अता ने, उन्होंने कहा मैंने अबू हुमैद साइदी रजि० को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दस सहाबा रजि० की मौजूदगी में कहते सुना, उनमें अबू कतादा हारिस बिन रिबई रजि० भी थे। हजरत अबू हुमैद साइदी ने फरमाया मै रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नमाज तुम से ज्यादा जानता हूँ। उन्होंने कहा तुम हम से ज्यादा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैरवी न करते थे और न ही हम से पहले आप स० की सुहबत मे आए। उन्होंने कहा हाँ क्यों नहीं उन्होंने कहा अच्छा बयान करो। अबू हुमैद रजि० ने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज की तरफ खडे होते तो अपने दोनों हाथो को अपने कन्धो के बराबर उठाते फिर **अल्लाहु अकबर** कहते यहाँ तक कि हर हड्डी अपनी अपनी जगह पर करार पाती, फिर आप किरअत शुरू करते, फिर तक्बीर कहते और मोंढों के बराबर रफा यदैन करते और रुकूअ करते और दोनों हथेलियाँ अपने घुटनों पर रखते और पीठ सीधी करते और सर को पीठ के बराबर करते, न झुकाते न ऊंचा करते। फिर सर उठाते और **समिअल्लाहुलिमन हमिदह** कहते। फिर मोंढों के बराबर रफा यदैन करते और सीधे खडे हो जाते। यहाँ तक कि हर हड्डी अपने असली मकाम पर आ जाती। फिर **अल्लाहु अकबर** कहते। फिर सज्दे के लिए जमीन की तरफ झुकते, तो दोनों हाथों को अपने पहलुओं से जुदा

रखते। फिर सज्दे से सर उठाते और बाएं पाँव को बिछा कर उस पर बैठते और सज्दा के वक्त उंगलियों को खुला रखते। फिर दूसरा सज्दा करते और **अल्लाहु अकबर** कह कर सर उठाते और बाए पाँव को बिछा कर उस पर बैठते यहाँ तक कि हर हड्डी अपने असली मकाम पर आ जाती या करार पा जाती फिर दूसरी रकअत में भी ऐसे ही करते। फिर जब दो रकअत पढ़ कर खड़े होते **अल्लाहु अकबर** कहते और मोंढों के बराबर रफा यदैन करते, जैसे नमाज शुरू करते वक्त किया था। फिर इसी तरह बाकी नमाज में करते। यहाँ तक कि जब अखीर सज्दे से फारिग होते, जिस के बाद सलाम होता है, अपना बायाँ पाँव निकालते और अपने बाएं पहलू पर तवर्रुक की हालत में बैठते। तमाम सहाबा रजि० ने तस्दीक की और फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ऐसे ही नमाज पढा करते थे।

(जिल्द २, स० ७२)

٨٨- (٢٥) (اخبرناه) ابو حازم الحافظ انبا أبو احمد الحافظ انبا ابو العباس محمد بن اسحاق الثقفى ثنا عبيدالله بن سعيد ومحمد ابن رافع قالا ثنا أبو عامر عبد الملك بن عمرو ثنا فليح حدثنى عباس بن سهل قال اجتمع محمد بن سلمة وابو حميد وابو اسيد وسهل بن سعد فذكروا صلوة رسول الله صلى الله عليه وسلم فقال أبو حميد انا اعلمكم بصلوة رسول الله صلى الله عليه وسلم ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قام فكبر ورفع يديه ثم رفع يديه حين كبر للركوع ثم ركع ثم وضع يديه على ركبتيه كانه قابض عليهما ووتر يديه فنحاهما عن جنبيه ولم يصب رأسه ولم يقنعه ثم رفع يديه فاستوى قائما حتى اخذ كل عظم موضعه ثم سجد وامكن جبهته وانفه ونحى يديه عن جنبيه ووضع كفيه حذو منكبيه حتى فرغ ثم جلس فافترش رجله اليسرى واقبل بصدر اليمنى على قبلته ووضع يده اليسرى على ركبته اليسرى ويده اليمنى على ركبته اليمنى واشار باصبعه(السنن الكبرى - للإمام البيهقي – ص:٧٢ج:٢)

हदीस ८८ (२५) : हमें अबू हाजिम हाफिज़ ने खबर दी, उन्हे अबू

अहमद हाफिज ने खबर दी, उन्हें अबुल अब्बास मुहम्मद बिन इस्
सक्फी ने खबर दी। उन्हे अब्दुल्लाह बिन सईद और मुहम्मद बिन रा
दोनों ने कहा हमें अबू आमिर अब्दुल मलिक बिन अम्र बिन फुलैह ने,
अब्बास बिन सहल ने, उन्होंने कहा कि मुहम्मद बिन मस्लिमः रजि०,
हुमैद रजि० अबू उसैद रजि० और सहल बिन सअद रजि० जमा हुए
नबी स० की नमाज का जिक्र फरमाया। हजरत अबू हुमैद रजि० ने
कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नमाज के मुतअ
तुम सबसे ज्यादा जानता हूँ। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व स
नमाज के लिए खडे हुए, तक्बीर कही और रफा यदैन की। फिर जब रु
के लिए तक्बीर कही तो भी रफा यदैन की। फिर रुकूअ् किया,
पकड़ने के अन्दाज़ में हाथ घुटनों पर रखे और हाथों को पहलुओं से
रखा। (और सर को पीठ के बराबर करते) न झुकाते न ऊंचा करते
(रुकूअ् से सर उठाया) और रफा यदैन किया। आप सीधे खड़े हो
यहाँ तक कि हर हड्डी अपने असल मक़ाम पर वापस आ गई। फिर
किया और पेशानी और नाक को ज़मीन पर रखा और हाथों को प
से दूर रखा और हथेलियो को मोंढों के बराबर रखा। यहाँ तक कि
से फारिग हुए। फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बैठे और बाए
को फैलाया और दाएं के मुँह को किब्ला की तरफ़ किया। और बाए
को बाएं रान पर और दाएं हाथ को दाएं रान पर रखा और उंगली के
इशारा किया। (जिल्द २, स० ७३)

- (٢٦) (اخبرنا) ابو عبد الله الحافظ ثنا ابو عبد الله محمد بن
الله الصفار الزاهد املاء من اصل كتابه قال قال ابو اسمعيل
بن اسمعيل السلمى صليت خلف ابى النعمان محمد بن
فرفع يديه حين افتتح الصلوة وحين ركع وحين رفع راسه
الركوع فسألته عن ذلك فقال صليت خلف حماد بن زيد فرفع
حين افتتح الصلوة وحين ركع وحين رفع رأسه من الركوع
عن ذلك فقال صليت خلف ايوب السختيانى فكان يرفع
إذا افتتح الصلوة وإذا ركع وإذا رفع رأسه من الركوع
فقال رأيت عطاء بن ابى رباح يرفع يديه إذا افتتح الصلوة

وإذا ركع وإذا رفع راسه من الركوع فسألته فقال صليت خلف
عبد الله بن الزبير فكان يرفع يديه إذا افتتح الصلوة وإذا ركع
وإذا رفع رأسه من الركوع فسألته فقال عبد الله بن الزبير صليت
خلف ابى بكر الصديق رضى اللّٰه عنه فكان يرفع يديه إذا افتتح
الصلوة وذا ركع وإذا رفع راسه من الركوع وقال ابو بكر صليت
خلف رسول الله صلى الله عليه وسلم فكان يرفع يديه إذا افتتح
الصلوة وإذا ركع وإذا رفع رأسه من الركوع رواته ثقات (السنن
الكبرى - للإمام البيهقي – ص:٧٣ج:٢)

हदीस ८६ (२६) : हमें अबू अब्दुल्लाह हाफ़िज ने खबर दी। उन्हे अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह सफ्फार जाहिद ने अपनी किताब से लिखवाया। अबू इस्माईल मुहम्मद बिन इस्माईल सुलमी ने कहा कि मैने अबू नौमान मुहम्मद बिन फ़ज़ल के पीछे नमाज पढ़ी। उन्होंने नमाज शुरू करते वक्त, रुकूअ् जाते वक़्त और रुकूअ् से सर उठाते वक्त रफा यदैन किया। मैंने उन से उसके मुतअल्लिक पूछा तो उन्होंने कहा मैंने हम्माद बिन जैद के पीछे नमाज पढी तो उन्होंने नमाज शुरू करते वक्त और रुकूअ् जाते वक्त और रुकूअ् से सर उठाते वक्त रफ़ा यदैन किया। मैंने उन से उसके मुतअल्लिक पूछा। तो उन्होंने कहा कि मैंने अय्यूब सख्तियानी के पीछे नमाज़ पढी, तो वह शुरू नमाज के वक्त रुकूअ् जाते और रुकूअ् से सर उठाते वक्त रफ़ा यदैन किया करते थे। मैंने उन से उसके मुतअल्लिक पूछा, तो उन्होंने कहा कि मैंने अता बिन अबी रबाह को देखा वह नमाज शुरू करते वक्त और रुकूअ् जाते और रुकूअ् से सर उठाते वक्त रफा यदैन किया करते थे। मैंने उन से उसके मुतअल्लिक पूछा, तो उन्होंने कहा कि मैंने अब्दुल्लाह बिन जुबैर रजि० के पीछे नमाज पढी वह नमाज शुरू करते वक्त और रुकूअ् करते वक्त और रुकूअ् से सर उठाते वक्त रफ़ा यदैन किया करते थे। मैंने उन से उसके मुतअल्लिक पूछा तो अब्दुल्लाह बिन जुबैर रजि० ने कहा मैंने अबू बकर रजि० के पीछे नमाज पढी वह शुरू नमाज में और रुकूअ् करते वक्त और रुकूअ् से सर उठाते वक्त रफा यदैन किया करते थे। और हजरत अबू बकर रजि० ने फरमाया

कि मैंने रसूलुल्लल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पीछे नमाज़ वह शुरू नमाज़ में और रुकूअ् जाते वक्त और रुकूअ् से सर उठाते रफ़ा यदैन किया करते थे। (इसके तमाम रावी सिकह हैं) इस हदीस सिर्फ रफ़ा यदैन का सुबूत ही नही मिलता बल्कि अबू बकर सिद्दीक जैसा जलीलुल कद्र और हुज़ूर का यारे गार हमेशा आपके साथ रहने नकल कर रहा है जिस से मुतनाज़े फीह रफ़ा यदैन के दवाम मे कोई बाकी नही रहता। (जिल्द २, स० ७३)

٩٠- (٢٧) (واخبرنا) ابو عبد الله الحافظ ثنا الامام ابو بكر
حمد بن اسحاق بن ايوب انبا محمد بن صالح بن عبد الله ابو
جعفر الكيليني الحافظ ثنا سلمة بن شبيب قال سمعت عبد الرزاق
يقول اخذ اهل مكة الصلوة من ابن جريج واخذ ابن جريج من
عطاء واخذ عطاء من ابن الزبير واخذ ابن الزبير من ابى بكر
الصديق رضى الله عنه واخذ ابو بكر من النبي صلى الله عليه
وسلم قال سلمة (وثنا) احمد بن حنبل عن عبد الرزاق وزاد فيه
واخذ النبي صلى الله عليه وسلم من جبرئيل واخذ جبرئيل عليه
السلام من الله تبارك وتعالى قال عبد الرزاق فقال ابن جريج برفع
يديه (السنن الكبرى - للإمام البيهقي – ص:٧٣- ٧٤ج:٢)

हदीस ६० (२७) : हमें अबू अब्दुल्लाह हाफिज ने खबर दी, उन्हें अबू बकर अहमद बिन इस्हाक बिन अय्यूब ने, उन्हें मुहम्मद बिन सालेह अब्दुल्लाह अबू ज'फर कैलीनी हाफिज ने, उन्हें सलमा बिन शुऐब ने, कहा मैंने इमाम अब्दुर्रज्जाक को सुना, कहते थे कि अहले मक्का ने इब्ने जुरैज से सीखी और इब्ने जुरैज ने अता से और अता ने इब्ने रजि० से और इब्ने जुबैर रजि० ने अबू बकर सिद्दीक रज़ि० से और सिद्दीक रजि० ने नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से।

और हमें हदीस सुनाई अहमद बिन हबल ने, उन्हें अब्दुर्रज्जाक ने, और यह लफ्ज़ जाइद है, और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने नमाज़ जिब्री ली और जिब्रील ने अल्लाहु तबारक व तआला से। और इमाम अब्दु फरमाते है कि इब्ने जुरैज रफ़ा यदैन किया करते थे।(जिल्द : २, स० ७३)

٩١- (٢٨) (اخبرنا) محمد بن عبد الله الحافظ ثنا ابو جعفر احمد
بن عبيدالله الحافظ وابو القاسم عبد الرحمن بن الحسن القاضى
الاسديان بهمدان قالا ثنا ابراهيم بن الحسين بن ديزيل الهمداني ثنا
آدم بن ابى اياس ثنا شعبة ثنا الحكم قال رأيت طاؤسا كبر فرفع
يديه حذو منكبيه عند التكبير وعند ركوعه وعند رفعه رأسه
من الركوع فسالت رجلا من اصحابه فقال انه يحدث به عن ابن
عمر عن عمر عن النبي صلى الله عليه وسلم قال أبو عبد الله
الحافظ فالحديثان كلاهما محفوظان عن ابن عمر عن عمر عن
النبي صلى الله عليه وسلم وابن عمر عن النبي صلى الله عليه وسلم
فان ابن عمر راى النبي صلى الله عليه وسلم فعله وراى اباه فعله
ورواه عن النبي صلى الله عليه وسلم(السنن الكبرى - للإمام
البيهقي – ص:٧٤ج:٢)

हदीस ६१ (२८) : हमे मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह हाफ़िज ने खबर दी, उन्हें अबू ज'फर अहमद बिन उबैद हाफ़िज़ और अबुल कासिम अब्दुर्रहमान बिन हसन काजी असदी दोनों ने हम्दान में, उन्हें इब्राहीम बिन हुसैन बिन हैजील हम्दानी ने उन्हे आदम बिन अबू इलियास ने उन्हे शो'बा ने, उन्हें हकम ने उन्होंने कहा कि मैंने ताऊस को देखा उन्होंने **अल्लाहु अकबर** कहा और रफ़ा यदैन की (इसी तरह) रुकूअ् को जाते और रुकूअ् से सर उठाते वक्त (भी) रफ़ा यदैन की। मैंने ताऊस के साथियों में से एक से पूछा तो उन्होंने जवाब दिया कि इब्ने उमर रज़ि० उमर रजि० से हदीस बयान करते हैं और वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बयान करते हैं। अबू अब्दुल्लाह हाफिज कहते हैं कि दोनों हदीसें महफूज है (१) इब्ने उमर रजि० अन उमर रज़ि० अनिन्नबीये सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी और (२) इब्ने उमर रजि० अनिन्नबीये सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी क्योंकि इब्ने उमर रजि० ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को रफ़ा यदैन करते देखा उसी तरह अपने वालिद हज़रत उमर रजि० को भी देखा और नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिवायत किया।

(जिल्द २, स० ७४)

٩٢- (٢٩) (اخبرنا) أبو عبد الله الحافظ وابو سعيد بن ابي عمرو قالا ثنا أبو العباس محمد بن يعقوب ثنا بحر بن نصر ثنا عبد الله ابن وهب اخبرني ابن ابي الزناد عن موسى بن عقبة عن عبد الله بن الفضل الهاشمي عن عبد الرحمن الاعرج عن عبيدالله بن ابي رافع عن علي بن ابى طالب رضى الله عنه عن رسول الله صلى الله عليه وسلم انه كان إذا قام إلى الصلوة المكتوبة كبر ورفع يديه حذو منكبيه ويصنع مثل ذلك إذا قرأ قراءته واراد ان يركع ويصنعه إذا فرغ من الركوع ولا يرفع يديه في شئ من صلوته وهو قاعد وإذا قام من السجدتين رفع يديه كذلك وكبر

وقد روينا هذا الحديث عن ابى موسى الاشعري وجابر عبد الله الانصاري وابى هريرة وانس بن مالك عن النبي صلى الله عليه وسلم (السنن الكبرى - للإمام البيهقي - ص:٧٤ج:٢)

हदीस ६२ (२९) : हमें अबू अब्दुल्लाह हाफिज ने और अबू सईद बिन अबू अम्र और उन्हें अबुल अब्बास मुहम्मद बिन याकूब ने, उन्हें बहर बिन नस्र ने, उन्हें अब्दुल्लाह बिन वहब ने, उन्हें इब्ने अबी जिनाद ने, उन्हें मूसा बिन उक्बा ने, उन्हें अब्दुल्लाह बिन फजल हाशमी ने, उन्हें अब्दुर्रहमान अअरज ने उन्हें उबैदुल्लाह बिन अबू राफे ने, उन्हें अली बिन अबू तालिब ने उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब फर्ज नमाज के लिए खड़े होते तो तक्बीर कहते और मोंढो के बराबर रफा यदैन करते, और इसी तरह जब किरअत से फारिग होते और रुकूअ का इरादा करते, तो उसी तरह रफा यदैन करते और जब रुकूअ से सर उठाते तो ऐसे ही रफा यदैन करते। और बैठने की हालत में हाथों को न उठाते, और जब दो रकअतें पढ़ कर उठाते तो भी रफा यदैन करते और अल्लाहु अक्बर कहते।

और यह हदीस (रफा यदैन वाली) हम ने अबू मूसा अशअरी रजि० जाबिर बिन अब्दुल्लाह अंसारी रजि० अबू हुरैरह रजि० और अनस बिन मालिक रजि० से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बयान की है।

(जिल्द २, स० ७४)

٩٣- (٣٠) (اخبرنا) أبو عبد الله الحافظ انبا محمد بن احمد بن موسى البخاري بنيسابور ثنا محمود بن اسحاق بن محمود البخاري ثنا محمد بن اسمعيل البخاري قال وقد روينا عن سبعة عشر نفسا من اصحاب النبي صلى الله عليه وسلم انهم كانوا يرفعون ايديهم عند الركوع فمنهم ابو قتادة الانصاري وابو اسيد الساعدي البدرى ومحمد بن مسلمة البدرى وسهل بن سعد الساعدي و عبد الله بن عمر بن الخطاب و عبد الله بن عباس بن عبد المطلب الهاشمي وانس بن مالك خادم رسول الله صلى الله عليه وسلم وابو هريرة الدوسى و عبد الله بن عمرو بن العاص و عبد الله بن الزبير بن العوام القرشي ووائل ابن حجر الحضرمي ومالك بن الحويرث وابو موسى الاشعري وابو حميد الساعدي الانصاري رضى الله تعالى عنهم (قال الشيخ) وقد روينا عن هؤلاء وعن ابى بكر الصديق وعمر بن الخطاب وعلى بن ابى طالب وجابر بن عبد الله الانصاري وعقبة بن عامر الجهنى و عبد الله بن جابر البياضي رضى الله عنهم (السنن الكبرى - للإمام البيهقي - ٧٥,٧٤ج:٢)

हदीस ६३ (३०) : हमें अबू अब्दुल्लाह हाफिज ने खबर दी, उन्हें मुहम्मद बिन अहमद बिन मूसा बुखारी ने नीशापुर में, उन्हें महमूद बिन इसहाक बिन महमूद बुखारी ने, उन्हें मुहम्मद बिन इस्माईल बुखारी ने, उन्होंने कहा कि सतरह सहाबा रजि० से रिवायत है कि बेशक वह रुकूअ को जाते वक्त और रुकूअ से सर उठाते वक्त रफा यदैन करते थे। उन में से चन्द एक यह हैं :

(१) अबू कतादा अंसारी रजि०
(२) अबू उसैद साइदी बदरी रजि०
(३) मुहम्मद बिन मस्लिमा बदरी रजि०
(४) सहल बिन सअद साइदी रजि०
(५) अब्दुल्लाह बिन उमर बिन खत्ताब रजि०
(६) अब्दुल्लाह बिन अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब हाशमी रजि०

(७) अनस बिन मालिक रजि० खादिमे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम०
(८) अबू हुरैरह रजि०
(९) अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ि०
(१०) अब्दुल्लाह बिन जुबैर बिन अव्वाम कुरैशी रजि०
(११) वाइल बिन हुज्र हज़रमी रज़ि०
(१२) मालिक बिन हुवैरिस रजि०
(१३) अबू मूसा अल अशअरी रजि०
(१४) अबू हुमैद अस्साइदी अल अंसारी रज़ि०

शैख फरमाते हैं कि : मज्कूरा सहाबा रजि० के अलावा

(१५) अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि०
(१६) उमर बिन खत्ताब रज़ि०
(१७) अली बिन अबी तालिब०
(१८) जाबिर बिन अब्दुल्लाह अंसारी रजि०
(१९) उक्बा बिन आमिर जुहनी रज़ि०
(२०) और अब्दुल्लाह बिन जाबिर बयाजी रजि अल्लाहु अन्हुम से रफा यदैन मरवी है। (जिल्द : २, स० ७४,७५)

९ـ (٢١) (واخبرنا) محمد بن عبد الله حدثنى محمد بن صالح نا يعقوب بن يوسف الاخرم ثنا الحسن بن عيسى انبا ابن المبارك انبا عبد الملك بن ابى سليمان عن سعيد بن جبير انه سئل عن رفع اليدين في الصلوة فقال هو شئ يزين به الرجل صلوته كان اصحاب رسول الله صلى الله عليه وسلم يرفعون ايديهم في الافتتاح وعند الركوع واذا رفعوا رؤسهم (السنن الكبرى للإمام البيهقي – ص:٧٥ج:٢)

हदीस ६४ (३१) : हमें मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह ने हदीस सुनाई, उ मुहम्मद बिन सालेह ने, उन्हें याकूब बिन यूसुफ अखरम ने, उन्हे हसन बि ईसा ने, उन्हें अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने, उन्हें अब्दुल मलिक बिन सुलेमान ने कि सईद बिन जुबैर से नमाज में रफा यदैन के मुतअल्लि सवाल किया गया तो उन्होने कहा यह वह चीज है कि आदमी उसके स

अपनी नमाज़ को मुज़ैयन करता है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा रज़ि० शुरू नमाज और रुकूअ् के वक्त और रुकूअ् से सर उठाते वक्त हमेशा रफा यदैन किया करते थे। (जिल्द २, स० ७५)

٩٥ـ (٣٢) (اخبرنا) محمد بن عبد الله ثنا محمد بن احمد بن موسى البخاري ثنا محمود بن اسحاق البخاري ثنا محمد بن اسمعيل قال ويروى عن عشرة من اهل مكة واهل الحجاز واهل العراق واهل الشام والبصرة واليمن انهم كانوا يرفعون ايديهم عند الركوع ورفع الرأس منه. منهم سعيد بن جبير وعطاء بن ابى رباح ومجاهد والقاسم بن محمد وسالم بن عبد الله بن عمر بن الخطاب وعمر بن عبد العزيز والنعمان بن ابى عياش والحسن وابن سيرين وطاؤس ومكحول و عبد الله بن دينار ونافع وعبيد الله بن عمرو الحسن بن مسلم وقيس بن سعد وغيرهم عدة كثيرة قال الشيخ وقد رويناه عن ابى قلابة وابى الزبير ثم عن مالك بن انس والاوزاعي والليث بن سعد وابن عيينة ثم عن الشافعي ويحيى بن سعيد القطان و عبد الرحمن بن مهدى و عبد الله بن المبارك ويحيى بن يحيى واحمد بن حنبل واسحاق بن ابراهيم الحنظلي وعدة كثيرة من اهل الآثار بالبلدان رحمهم الله تعالى (السنن الكبرى للإمام البيهقي – ص:٧٥ج:٢)

हदीस ६५ (३२) : हमें मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह ने, उन्हे मुहम्मद बिन अहमद बिन मूसा बुखारी ने, उन्हें महमूद बिन इसहाक बुखारी ने, उन्हें मुहम्मद बिन इसमाईल ने हदीस सुनाई कहा कि कई हजरात अहले मक्का, अहले हिजाज, अहले इराक़ और अहले शाम व बसरा के है जो रुकूअ् जाते और रुकूअ् से सर उठाते हुए रफा यदैन किया करते थे। उन में से चन्द एक यह है :–

सईद बिन जुबैर रह०, अता बिन अबू रबाह रह०, मुजाहिद रह० कासिम बिन मुहम्मद रह०, सालिम बिन अब्दुल्लाह बिन उमर बिन खत्ताब रजि०, उमर बिन अब्दुल अजीज रह०, नो'मान बिन अबू अय्याश, हसन बसरी, इबने सीरीन, ताऊस, मकहूल, अब्दुल्लाह बिन दीनार, नाफे, उबैदुल्लाह बिन

उम्र रजि०, हसन बिन मुस्लिम, कैस बिन सअद और इनके अलावा बहुत बहुत से अफराद हैं।

हजरत शैख फरमाते हैं कि :

हम ने अबू किलाबा, अबू जुबैर, मालिक बिन अनस, औजाई, लैस बिन सअद, इब्ने उयैना, शाफई, यह्या बिन सईद अल कत्तान, अब्दुर्रहमान बिन महदी, अब्दुल्लाह बिन मुबारक, यह्या बिन यह्या, अहमद बिन हबल, इस्हाक बिन इब्राहीम, और बहुत से उलमाए किराम व मुहद्देसीन से रिवायत ली है। (जिल्द २, स० ७५)

٩٦- (٢٣) (وحدثنا) ابو عبد الله الحافظ املاء ثنا ابو محمد عبد الرحمن بن حمدان الجلاب بهمدان ثنا ابو حاتم محمد بن ادريس الرازي ثنا وهب بن ابى مرحوم ثنا اسرائيل بن حاتم عن مقاتل بن حيان عن الاصبغ بن نباتة عن على بن ابى طالب رضى الله عنه قال لما نزلت هذه الآية على رسول الله صلى الله عليه وسلم (انا اعطيناك الكوثر فصل لربك وانحر) قال النبي صلى الله عليه وسلم لجبريل ما هذه النحيرة التى امرني بها ربي قال انها ليست بنحيرة ولكنه يامرك إذا تحرمت للصلوة ان ترفع يديك إذا كبرت وإذا ركعت وإذا رفعت رأسك من الركوع فانها صلوتنا وصلوة الملائكة الذين في السماوات السبع قال النبي صلى الله عليه وسلم رفع الايدى من الاستكانة التى قال الله تبارك وتعالى (فما استكانوا لربهم وما يتضرعون) وقد روى هذا والاعتماد على ما مضى وبالله التوفيق (السنن الكبرى للإمام البيهقي - (ج ٢ / ص ٧٥- ٧٦)

हदीस ९६ (३३) : हमको अबू अब्दुल्लाह ने इमलाअन बयान किया उस ने कहा हम को अबू मुहम्मद अब्दुर्रहमान बिन हम्दान जल्लाब ने हम्दान मे बयान किया उसने कहा हम को अबू हातिम मुहम्मद बिन इदरीस राजी ने बयान किया उस ने कहा हम से वहब बिन अबू मरहूम ने बयान किया। उनको इस्राईल बिन हातिम ने, उसको मकातिल बिन हय्यान, उसको अस्बग बिन नुबाता, उसको अली बिन अबू तालिब ने, अली बिन अबू तालिब

फरमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर सूरत "**इन्ना आतैनाकल कौसर फसल्लि लिरब्बिका वन्हर**" नाजिल हुई तो आपने जिब्रील से पूछा कि यह नुहैरह क्या चीज है? जिसका मुझे अल्लाह तआला ने हुक्म दिया है? तो जिब्रील अलैहिस्सलाम ने कहा कि यह नुहैरा नही बल्कि खुदाए तआला ने आपको हुक्म दिया है कि जब आप तक्बीर तहरीमा कह ले तो रफा यदैन करें और इसी तरह रुकूअ् को जाते वक्त और रुकूअ् से सर उठाते वक्त रफा यदैन करें क्योंकि यही हमारी नमाज और दीगर फरिश्तों की नमाज है जो सातों आसमानो पर रहते हैं।

खैर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि रफा यदैन इज्ज व इंकिसारी की एक सूरत है। जिसके बारे में इरशाद है

"फमस्तकानू लेरब्बिहिम वमा यतजर्रऊना०"

कि वह अपने रब के सामने न झुके न रोते। और तहकीक यह हदीस रिवायत की गई है और मोतमद मा सबक ही है। (जिल्द २, स० ७५, ७६)

٩٧- (٢٤) (اخبرنا) ابو على الروذبارى انبأ أبو بكر بن داسة قال ثنا ابو داود ثنا ابن المصفى الحمصى ثنا بقية ثنا الزبيدى عن الزهري عن سالم عن عبد الله بن عمر قال كان رسول الله صلى الله عليه وسلم إذا قام إلى الصلوة رفع يديه حتى تكونا حذو منكبيه ثم يكبروهما كذلك فيركع ثم إذا اراد ان يرفع صلبه رفعهما حتى تكونا حذو منكبيه ثم قال سمع الله لمن حمده ولا يرفع يديه في السجود ويرفعهما في كل تكبيرة يكبرها قبل الركوع حتى تنقضي صلاته (السنن الكبرى للإمام البيهقي - (ج ٢ / ص ٨٣)

हदीस ९७ (३४) : हमें अबू अली रौजबारी ने खबर दी, उन्हें अबू बकर बिन दासा ने, उन्हें अबू दाऊद ने, उन्हे इब्ने मुसफ्फा हिम्सी ने, उन्हें बकिया ने, उन्हें जुबैदी ने, उन्हे जुहरी ने, उन्हें सालिम ने, उन्हें अब्दुल्लाह बिन उमर रजि० ने कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज के लिए खड़े होते तो मोंढों के बराबर रफा यदैन करते फिर रुकूअ के वक्त भी हाथ उठाते फिर जब रुकूअ् से पीठ उठाते तो भी

मोंढो के बराबर रफा यदैन करते। फिर **समिअल्लाहुलिमन हमिदह** कहते और सज्दों में रफा यदैन न करते।

और रुकूअ से कब्ल हर तक्बीर में रफा यदैन करते, यहाँ तक कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नमाज़ पूरी हो जाती। (जिल्द २, स० ८३)

٩٨- (٢٥) (اخبرنا) ابو عبد الله الحافظ انبا ابو بكر احمد بن اسحاق الفقيه انبا احمد بن ابراهيم ثنا ابن بكير ثنا الليث عن ابن ابى حبيب عن محمد بن عمرو بن حلحلة عن محمد بن عمرو بن عطاء انه كان جالسا مع نفر من اصحاب رسول الله صلى الله عليه وسلم قال فذكرنا صلوة رسول الله صلى الله عليه وسلم فقال ابو حميد الساعدي انا كنت احفظكم لصلوة رسول الله صلى الله عليه وسلم رايته اذا كبر جعل يديه حذو منكبيه واذا ركع امكن يديه من ركبتيه ثم هصر ظهره وذكر الحديث (السنن الكبرى للإمام البيهقي - (ج ٢ / ص ٨٤)

हदीस ९८ (३५) : हमें अबू अब्दुल्लाह हाफिज़ ने खबर दी, उन्हें अबू बकर अहमद बिन इसहाक फकीह ने, उन्हें अहमद बिन इब्राहीम ने, उन्हें इब्ने बुकैर ने, उन्हें लैस ने, उन्हें इब्ने अबी हबीब ने, उन्हें मुहम्मद बिन अम्र बिन हलहला ने, उन्हें मुहम्मद बिन अम्र बिन अता ने कि वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा रज़ि० की एक जमाअत के पास बैठे हुए थे कि उन में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नमाज़ का तज्किरा चल निकला तो अबू हुमैद साइदी रज़ि० ने फरमाया कि मुझे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नमाज तुम सबसे ज्याद याद है। मैंने आप को देखा जब आप **अल्लाहु अकबर** कहते तो हाथ मोंढो के बराबर करते और जब रुकूअ करते तो हाथ घुटनो पर रखते फिर पीठ बराबर करते और रावी ने पूरी हदीस ज़िक्र की। (जिल्द २,स० ८४)

٩٩- (٢٦) (واخبرنا) ابو الحسين على بن محمد بن بشران العدل ببغداد انبا ابو جعفر محمد بن عمرو الرزاز ثنا حنبل بن اسحاق ثنا حجاج بن منهال ثنا همام ثنا محمد بن جحادة عن عبد الجبار بن وائل بن حجر عن ابيه عن النبى صلى الله عليه وسلم كان إذا دخل

فى الصلوة رفع يديه وكبر ثم التحف بثوبه ووضع اليمنى على اليسرى فاذا اراد ان يركع قال هكذا بثوبه واخرج يديه ثم رفعهما وكبر فلما اراد ان يسجد وقعت ركبتاه على الارض قبل ان تقعا كفاه فلما سجد وضع جبهته بين كفيه وجافى عن ابطيه وقال همام وثنا شقيق ثنا عاصم عن ابيه عن النبي صلى الله عليه وسلم قال مثل هذا قال وفى حديث احدهما قال همام واكبر علمي انه فى حديث محمد بن جحادة فاذا نهض نهض على ركبتيه واعتمد على فخذيه (السنن الكبرى للإمام البيهقي - (ج ٢ / ص ٩٨- ٩٩)

हदीस ९९ (३६) : हमें अबुल हुसैन अली बिन मुहम्मद बिन बिशरान अद्ल ने बगदाद में खबर दी, उन्हे अबू ज'फर मुहम्मद बिन अम्र रज्जाज ने, उन्हे हंबल बिन इसहाक ने, उन्हे हज्जाज बिन मिंहाल ने, उन्हें हम्माम ने, उन्हे मुहम्मद बिन जुहादा ने, उन्हें अब्दुल जब्बार बिन वाइल बिन हुज्र ने अपने वालिद से कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज में दाखिल हुए तो रफा यदैन की और **अल्लाहु अकबर** कहा। फिर दोनों हाथ कपडे के अन्दर कर लिए फिर दाहिने हाथ को बाएं हाथ पर रखा फिर जब रुकूअ का इरादा किया तो कपडे से हाथ निकाले फिर रफा यदैन की और **अल्लाहु अकबर** कहा। जब सज्दे का इरादा किया तो दोनो घुटने हथेलियों से पहले जमीन पर रखे। जब सज्दा किया तो पेशानी को दोनों हथेलियों के दर्मियान रखा और हाथों को बगलों से दूर रखा। हम्माम कहते है कि मेरे इल्म के मुताबिक मुहम्मद बिन जुहादा की हदीस मे यह लफ्ज़ है कि जब आप उठते तो घुटनों के बल उठते। और रानों का सहारा लेते। (जिल्द : २, स० ९८, ९९)

١٠٠- (٢٧) (اخبرنا) ابو الفتح هلال بن محمد بن جعفر الحفار ببغداد انبا ابو عبد الله الحسين بن يحيى بن عياش انبا على بن اشكاب ثنا ابو بدر شجاع بن الوليد حدثنى ابو خيثمة حدثنى الحسن بن الحر حدثنى عيسى بن عبد الله بن مالك عن محمد بن عمرو بن عطاء اخبرني مالك عن عياش أو عباس بن سهل الساعدي انه كان فى مجلس فيه ابوه وكان من اصحاب النبي

صلى الله عليه وسلم وفي المجلس أبو هريرة وابو اسيد وابو حميد
الساعدي من الانصار انهم تذاكروا الصلوة فقال أبو حميد انا
اعلمكم بصلوة رسول الله صلى الله عليه وسلم قالوا كيف قال
اتبعت ذلك من رسول الله صلى الله عليه وسلم قالوا فارنا قال فقام
يصلى وهم ينظرون إليه فبدأ فكبر فرفع يديه نحو المنكبين ثم
كبر للركوع فرفع يديه ايضا حتى امكن يديه من ركبتيه غير
مقنع راسه ولا مصوبه ثم رفع رأسه فقال سمع الله لمن حمده اللهم
ربنا لك الحمد فرفع يديه ثم قال الله اكبر فسجد فانتصب على
كفيه وركبتيه وصدور قدميه وهو ساجد ثم كبر فجلس فتورك
احدى قدميه ونصب قدمه الاخرى ثم كبر وسجد ثم كبر يعنى
قام ولم يتورك ثم عاد فركع الركعة الاخرى كذلك ثم جلس
بعد الركعتين حتى إذا هو اراد ان ينهض للقيام قام بتكبير ثم
ركع الركعتين الاخريين ثم سلم عن يمينه السلام عليكم ورحمة
الله وسلم عن شماله ايضا السلام عليكم ورحمة الله (السنن
الكبرى للإمام البيهقي - ج ٢ / ص١٠٢- ١٠١)

हदीस १०० (३७) : हमें अबुल फतह हिलाल बिन मुहम्मद बिन ज
हफार ने बगदाद में खबर दी उन्हे अबू अब्दुल्लाह हुसैन बिन यहया
अय्याश ने उन्हें अली बिन अशकाब ने, उन्हें अबू बद्र शुजाअ् बिन व
ने, उन्हे अबू खैसमा ने, उन्हें हसन बिन हुर ने, उन्हें ईसा बिन अब्दुल
बिन मालिक ने, उन्हे मुहम्मद बिन अम्र बिन अता ने उन्हें मालिक ने अ
या अब्बास बिन सहल साइदी से वह एक मज्लिस में थे जिन में उ
वालिद भी थे। और वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के स
रजि अल्लाहु अन्हुम मे से है। मज्लिस में अबू हुरैरह रजि०, अबू
रजि० और अबू हुमैद साइदी रजि० भी शामिल थे। उन्होंने रसूलु
सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नमाज का तज्किरा किया तो अबू हु
रजि० ने फरमाया मै तुम सबसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व स
की नमाज को ज्यादा जानता हूं। उन्होंने पूछा कैसे? फरमाया यह

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से हासिल की। सहाबा रजि० ने कहा अच्छा भला हमें भी दिखाओ, पस अबू हुमैद नमाज के लिए खड़े हुए और दीगर सहाबा रजि० आपकी तरफ देख रहे थे। पस आपने नमाज शुरू की अल्लाहु अकबर कहा और मोंढों के बराबर रफा यदैन की फिर अल्लाहु अकबर कहा फिर रुकूअ् के लिए अल्लाहु अकबर कहा फिर भी रफा यदैन किया हत्ता कि अपने हाथों को घुटनो पर रखा अपने सर को न तो ऊंचा किया और न ही नीचा किया फिर सर को रुकूअ् से उठाया और **समिअल्लाहुलिमन हमिदह अल्लाहुम्मा रब्बना लकल हम्द** कहा पस अपने हाथों को बुलन्द किया फिर **अल्लाहु अकबर** कहा और सज्दा किया। सज्दा की हालत में आप हथेलियों, घुटनो और पॉव के अगले हिस्से पर वजन डाल कर झुके रहे फिर आप ने **अल्लाहु अकबर** कहा पस आप बैठे और एक कदम को बिछाया और दूसरे को खड़े रखा। फिर आपने **अल्लाहु अकबर** कहा और सज्दा किया। फिर **अल्लाहु अकबर** कहा और खडे हुए। फिर दूसरी रकअत भी इसी तरह अदा की। फिर दो रकअत के बाद बैठे और जब खड़े होने का इरादा किया और **अल्लाहु अकबर** कहा फिर दूसरी दो रकअत भी पढ़ी फिर दाएं तरफ **अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि** कह कर सलाम फेरा इसी तरह बाएं तरफ भी **अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि** कहा।

(जिल्द : २, स० १०१, १०२)

١٠١ - (٢٨) (اخبرنا) ابو عبد الله الحافظ ثنا على بن حمشاذ (قال
واخبرني) أبو سعيد احمد بن يعقوب الثقفي قالا انبانا محمد ابن
ايوب انبانا مسدد انبا خالد بن عبد الله ثنا عاصم بن كليب عن
ابيه عن وائل بن حجر ان النبي صلى الله عليه وسلم قام إلى الصلوة
فكبر ورفع يديه حتى حاذى بهما اذنيه واخذ شماله بيمينه فلما
اراد ان يركع رفع يديه فلما رفع راسه من الركوع رفع يديه فلما
سجد وضع يديه فسجد بينهما ثم جلس فوضع يده اليسرى على
فخذه اليسرى ومرفقه اليمنى على فخذه اليمنى ثم عقد الخنصر
والبنصر ثم حلق الوسطى بالابهام واشار بالسبابة (السنن الكبرى
للإمام البيهقي - ج ٢ / ص ١٣١)

हदीस १०१ (३८) : हमें अबू अब्दुल्लाह हाफ़िज ने खबर दी, उन्हें अली बिन हमशाज और अबू सईद अहमद बिन याकूब सक्फी ने, दोनों ने कहा हमें मुहम्मद बिन अय्यूब ने खबर दी, उन्हें मुसद्दद ने, उन्हें खालिद बिन अब्दुल्लाह ने, उन्हें आसिम बिन कुलैब ने अपने वालिद से, उन्होंने वाइल बिन हुज्र रजि० से कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज के लिए खड़े हुए तो **अल्लाहु अकबर** कहा और कानों के बराबर रफ़ा यदैन की और बाएं हाथ को दाएं हाथ के साथ पकड़ा। जब रुकूअ का इरादा किया तो रफ़ा यदैन की और जब रुकूअ से सर उठाया तो भी रफ़ा यदैन की। जब आपने सज्दा किया तो दोनों हाथ ज़मीन पर रखे और उन दोनों के दर्मियान सज्दा किया। फिर आप बैठे तो बायां हाथ बाएं रान पर और दाएं कुहनी को दाएं रान पर रखा, छंगुलिया और साथ वाली उंगली को बन्द किया और फिर दर्मियान वाली उंगली और अंगूठे से हल्का बनाया और शहादत की उंगली से इशारा किया। (जिल्द २, स० १३१)

١٠٢- (٣٩) (اخبرنا) أبو عمرو الاديب انبا أبو بكر الاسماعيلي ثنا إبراهيم بن يوسف بن خالد حدثنا حسين بن معاذ حدثنا عبد الأعلى (ح وأخبرنا) ابو عبد الله الحافظ حدثني ابو الحسن على بن عيسى بن ابراهيم الحيري حدثنا ابراهيم بن ابي طالب ثنا إسماعيل بن بشر بن منصور ثنا عبد الأعلى بن عبد الأعلى عن عبيد الله عن نافع عن ابن عمر كان إذا دخل في الصلوة كبر ورفع يديه وإذا ركع رفع يديه وإذا قال سمع الله لمن حمده رفع يديه وإذا قام من الركعتين رفع يديه ورفع ذلك ابن عمر إلى النبي صلى الله عليه وسلم (السنن الكبرى للإمام البيهقي- (ج ٢ / ص ١٣١)

हदीस १०२ (३६) : हमें अबू अम्र अदीब ने खबर दी, उन्हें अबू बक्र इस्माईली ने, उन्हें इब्राहीम बिन यूसुफ बिन खालिद ने, उन्हें हुसैन बिन मुआज ने, उन्हें अब्दुल आला ने।

दूसरी सनद : हमें अबू अब्दुल्लाह हाफ़िज ने खबर दी, उन्हें अबुल हसन अली बिन ईसा बिन इब्राहीम हैरी ने, उन्हें इब्राहीम बिन अबी तालिब ने, उन्हें इस्माईल बिन बिश्र बिन मन्सूर ने, उन्हें अब्दुल आला बिन अब्दुल आला ने, उन्हें उबैदुल्लाह ने, उन्हें नाफ़े ने कि इब्ने उमर रजि० जब नमाज में दाखिल होते तक्बीर कहते और रफ़ा यदैन करते। जब रुकूअ करते तो (भी) रफ़ा यदैन करते और जब **समिअल्लाहुलिमन हमिदह** कहते तो भी रफ़ा यदैन करते और जब दो रकअत पढ़ कर खड़े होते तो भी रफ़ा यदैन करते और हजरत इब्ने उमर रजि० ने मरफ़ूअन यह बताया कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी ऐसे ही किया करते थे (जिल्द २, स० १३६)

١٠٣- (٤٠) (اخبرنا) أبو الحسن محمد بن الحسين بن الفضل القطان ببغداد انبا اسمعيل بن محمد الصفار ثنا عبد الله بن محمد بن شاكر ثنا أبو اسامة ثنا عبد الحميد بن جعفر ثنا محمد بن عمرو بن عطاء قال سمعت ابا حميد يقول كان رسول الله صلى الله عليه وسلم إذا قام إلى الصلوة استقبل القبلة ثم رفع يديه حتى يحاذي بهما منكبيه ثم يقول الله اكبر وإذا ركع كبر حين يركع ويرفع يده ثم عدل صلبه فلم يصوبه ولم يقنعه ثم رفع رأسه فقال سمع الله لمن حمده ثم رفع يديه حتى يحاذي بهما منكبيه ثم اعتدل حتى جاء كل عضو إلى موضعه معتدلا ثم يفعل في الركعة الاخرى مثل ذلك حتى إذا قام من الركعتين كبر ورفع يديه كما صنع في ابتداء الصلوة حتى إذا كانت السجدة التى تكون حلة الصلوة رفع راسه فيها وقعد متوركا (السنن الكبرى للبيهقي- ج ٢ / ص ١٣٧)

हदीस १०३ (४०) : हमें अबुल हसन मुहम्मद बिन हुसैन बिन फ़जल क़त्तान ने बग़दाद में खबर दी, उन्हें इस्माईल बिन मुहम्मद सफ़्फ़ार ने खबर दी, उन्हें अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद बिन शाकिर ने खबर दी, उन्हें अबू उसामा ने खबर दी, उन्हें अब्दुल हमीद बिन जाफ़र ने खबर दी, उन्हें मुहम्मद बिन अम्र बिन अता ने खबर दी कि मैंने अबू हुमैद रजि० को कहते हुए सुना कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज के लिए खड़े होते तो क़िब्ला की तरफ़ मुंह करते, फिर मोंढों के बराबर रफ़ा यदैन करते और फिर **अल्लाहु अकबर** कहते और जब रुकूअ करते तो **अल्लाहु अकबर** कहते और रफ़ा यदैन करते फिर अपनी पीठ बराबर की, न तो उसको ज्यादा

झुकाया न ही बुलन्द रखा। फिर अपने सर को रुकूअ से उठाया और समिअल्लाहुलिमन हमिदह कहा। फिर मोंढो के बराबर दोनों हाथ उठा… फिर सीधे खड़े हो गये यहाँ तक कि हर जोड़ अपनी असली जगह पर… गया। फिर उसी तरह दूसरी रकअत मे करते, फिर जब दो रकअत पढ़… खड़े हुए तो **अल्लाहु अकबर** कहा और रफा यदैन की जिस तरह शुरू नमाज़ मे किया। यहाँ तक जब आखिरी सज्दा हुआ जिसके बाद नमाज खत्म… है आप ने अपना सर उठाया और तवर्रुक बैठे। (जिल्द २, स० १३७)

१०… (٤١) (واخبرنا) ابو عبد الله الحافظ ثنا ابو العباس محمد …يعقوب ثنا محمد بن سنان القزاز ثنا أبو عاصم عن عبد الحميد …ن جعفر قال حدثني محمد بن عمرو بن عطاء قال سمعت ابا …يد الساعدي في عشرة من اصحاب النبي صلى الله عليه وسلم …هم أبو قتادة الحارث بن ربعي فقال أبو حميد انا اعلمكم بصلوة …ول الله صلى الله عليه وسلم فذكر الحديث وذكر فيه رفع …يه حتى يحاذي بهما منكبيه إذا قام إلى الصلوة وعند الركوع …ند رفع الرأس منه قال ثم إذا قام من الركعتين كبر ورفع يديه …ى يحاذي بهما منكبيه كما فعل إذا كبر عند افتتاح الصلوة …صنع مثل ذلك في بقية صلوته (السنن الكبرى للإمام البيهقي ج ٢ / ص ١٣٧)

हदीस १०४ (४१) : हमे अबू अब्दुल्लाह हाफिज ने खबर दी, … अबुल अब्बास मुहम्मद बिन याकूब ने, उन्हे मुहम्मद बिन सिनान कज़्ज़… ने, [illegible] अबू आसिम ने, उन्हे अब्दुल हमीद बिन जाफर ने उन्होने कहा… मुहम्मद बिन अम्र बिन अता ने हदीस सुनाई कि मैंने अबू हुमैद साइदी… को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दस सहाबा रजि० … मौजूदगी मे सुना उनमे अबू कतादा हारिस बिन रिबई रजि० भी थे … हुमैद ने कहा मै रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नमाज़ को … [illegible] जानता हूं। उसी ने पूरी हदीस जिक्र की और उसमें जिक्र कि… कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज के लिए खड़े… और रुकूअ के [illegible] और रुकूअ से सर उठाते [illegible] मोंढो के बराबर…

यदैन की। फिर जब दो रकअत पढ़ कर खड़े हुए तो भी रफा यदैन की जिस तरह नमाज शुरू करने के वक्त किया था। फिर इसी तरह आपने बाकी नमाज में किया। (जिल्द २, स० १३७)

١٠٥- (٤٢) (اخبرنا) أبو طاهر الفقيه انبأ أبو عثمان عمرو بن عبد الله البصري ثنا محمد بن عبد الوهاب ثنا سليمان بن داود الهاشمي ثنا عبد الرحمن بن ابى الزناد عن موسى بن عقبة عن عبد الله بن الفضيل الهاشمي عن عبد الرحمن الاعرج عن عبيدالله بن ابى رافع عن على بن ابى طالب رضى الله عنه قال كان رسول الله صلى الله عليه وسلم إذا قام إلى الصلوة المكتوبة كبر ورفع يديه حذو منكبيه ويصنعه إذا قضى قرآته واراد ان يركع وإذا رفع رأسه من الركوع فعل مثل ذلك ولا يرفع يديه في شئ من صلوته وهو قاعد وإذا قام من السجدتين كبر ورفع يديه كذلك (السنن الكبرى للإمام البيهقي - ج ٢ / ص ١٣٧)

हदीस १०५ (४२) : हमें अबू ताहिर फकीह ने खबर दी, उन्हें अबू उस्मान अम्र बिन अब्दुल्लाह बसरी ने, उन्हें मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब ने, उन्हें सुलेमान बिन दाऊद हाशमी ने, उन्हें अब्दुर्रहमान बिन अबू जिनाद ने, उन्हें मूसा बिन उकबा ने, उन्हें अब्दुल्लाह बिन फजल हाशमी ने, उन्हें अब्दुर्रहमान अ'रज ने, उन्हे उबैदुल्लाह बिन अबू राफे ने, उन्हें अली इब्ने अबू तालिब रजि० ने हदीस सुनाई कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब फर्ज नमाज के लिए खड़े होते तो **अल्लाहु अकबर** कहते और मोंढो के बराबर रफा यदैन करते। और इसी तरह करते जब किरअत पूरी करते और रुकूअ करने का इरादा करते। और जब रुकूअ से सर उठाते तो भी ऐसा ही करते। नमाज में बैठने की हालत मे रफा यदैन न करते। और जब दो रकअत पढ़ कर खड़े होते तो **अल्लाहु अकबर** कहते और उसी तरह रफा यदैन करते। (जिल्द १, स० १३७)

❖ ❖ ❖

(१०) मुसनद अल हुमैदी

١٠٦- (١) حَدَّثَنَا الْحُمَيْدِىُّ قَالَ حَدَّثَنَا الْوَلِيدُ بْنُ مُسْلِمٍ قَالَ سَمِعْتُ
زَيْدَ بْنَ وَاقِدٍ يُحَدِّثُ عَنْ نَافِعٍ أَنَّ عَبْدَ اللهِ بْنَ عُمَرَ كَانَ إِذَا أَبْصَرَ
رَجُلًا يُصَلِّى لَا يَرْفَعُ يَدَيْهِ كُلَّمَا خَفَضَ وَرَفَعَ حَصَبَهُ حَتَّى يَرْفَعَ يَدَيْهِ.
(مسند الحميدي – ص:٢٧٧ج:٢)

हदीस १०६ (१) : हमें अबू हुमैदी ने खबर दी, उन्हें वलीद बिन मु
ने,उन्होंने कहा कि मैंने जैद बिन वाकिद को सुना, वह नाफे से हदीस
करते थे कि अब्दुल्लाह बिन उमर रजि० जब किसी आदमी को नमाज़
हुए देखते, और वह रफ़ा यदैन न करता, तो आप रजि० उसे कंकरियों
करते थे। यहाँ तक कि वह रफ़ा यदैन करता। (जिल्द २, स० २७७

١٠٧- (٢) حَدَّثَنَا الْحُمَيْدِىُّ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ حَدَّثَنَا عَاصِمُ بْنُ
كُلَيْبٍ الْجَرْمِىُّ قَالَ سَمِعْتُ أَبِى يَقُولُ سَمِعْتُ وَائِلَ بْنَ حُجْرٍ
الْحَضْرَمِىَّ قَالَ: رَأَيْتُ رَسُولَ اللهِ صلى الله عليه وسلم إِذَا افْتَتَحَ
الصَّلَاةَ رَفَعَ يَدَيْهِ وَإِذَا رَكَعَ وَبَعْدَ مَا يَرْفَعُ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ،
وَأَنَّهُ إِذَا جَلَسَ فِى الصَّلَاةِ أَضْجَعَ رِجْلَهُ الْيُسْرَى ، وَنَصَبَ الْيُمْنَى ،
وَوَضَعَ يَدَهُ الْيُسْرَى عَلَى فَخِذِهِ الْيُسْرَى وَبَسَطَهَا ، وَوَضَعَ يَدَهُ الْيُمْنَى
عَلَى فَخِذِهِ الْيُمْنَى وَقَبَضَ ثِنْتَيْنِ ، وَحَلَّقَ حَلْقَةً وَدَعَا هٰكَذَا. وَنَصَبَ
الْحُمَيْدِىُّ السَّبَّابَةَ قَالَ وَائِلٌ : ثُمَّ أَتَيْتُهُمْ فِى الشِّتَاءِ فَرَأَيْتُهُمْ يَرْفَعُونَ
أَيْدِيَهُمْ فِى الْبَرَانِسِ (مسند الحميدي – ص:٣٩٢ج:٢)

हदीस १०७ (२) : हदीस बयान की हमे हुमैदी ने, वह कहते है
सुफियान ने वह कहते है हमे आसिम बिन कुलैब अल जरमी ने, उन्होंने
कि मै अपने वालिद को कहते हुए सुना कि मैने हजरत वाइल बिन
रजि० से सुना कि उन्होने कहा मैने हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम
देखा कि जब आप ने नमाज शुरू की तो रफा यदैन की और जब
किया और रुकूअ से सर उठाया तो रफा यदैन की और मैने देखा कि

आप बैठे नमाज मे तो बाए कदम को बिछा लिया और दाए को खड़ा किया और अपने दाएं हाथ को दाएं रान पर और बाए हाथ को बाएं रान पर रखा और दो उंगलियों को बन्द किया और हल्का बनाया और दुआ पढ़ी। इसी तरह हुमैदी ने इशारा से समझाया हजरत वाइल रजि० कहते है कि मै फिर सर्दियों मे आया तो देखा कि वह अपने हाथों को कपड़ो के अन्दर उठाते थे।

(जिल्द २, स० ३९२)

(११) मुसनद अबी अवाना

١٠٨- (١) حدثنا عبد الله بن أيوب المخرمي وسعدان بن نصر وشعيب بن عمرو في آخرين قالوا ثنا سفيان بن عيينة عن الزهري عن سالم عن أبيه قال رأيت رسول الله صلى الله عليه وسلم إذا افتتح الصلوة رفع يديه حتى يحاذي بهما وقال بعضهم: حذو منكبيه، وإذا أراد أن يركع وبعد ما يرفع رأسه من الركوع لا يرفعهما وقال بعضهم، ولا يرفع بين السجدتين والمعنى واحد.
(ص:٤٢٣ ج:١)

हदीस १०८ (१) : हमें अब्दुल्लाह बिन अय्यूब मखरमी, सअ्दान बिन नस्र, और शुऐब बिन अम्र ने हदीस सुनाई, उन्हें सुफियान बिन उयैना ने, उन्हें ज़ुहरी ने, उन्हें सालिम ने उन्हें उनके वालिद ने, उन्होंने कहा कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा, जब नमाज शुरु करते और जब रुकूअ् का इरादा करते और रुकूअ् से सर उठाने के बाद मोंढो के बराबर रफा यदैन किया करते थे। और दो सज्दों के दर्मियान नहीं करते थे। बाज़ रावियों ने कहा कि सज्दों के दर्मियान रफा यदैन न करते थे और दोनों के मानी एक ही है। (जिल्द : १, स० ४२३)

١٠٩- (٢) حدثنا الربيع قال ثنا الشافعي أن مالك أخبره عن ابن شهاب عن سالم عن أبيه أن النبي صلى الله عليه وسلم كان اذا افتتح الصلاة رفع يديه حذو منكبيه واذا رفع راسه من الركوع رفعهما وكان لا يفعل ذلك في السجود. (ص:٤٢٤ ج:١)

हदीस १०९ (२) : हमें रबीअ् ने उन्हें शाफई रह० ने, उन्हे मालिक रह०

ने उन्हें इब्ने शिहाब ने, उन्हें सालिम ने, उन्होंने अपने वालिद से कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हमेशा जब नमाज शुरू करते और जब रुकूअ से सर उठाते तो मोंढो के बराबर रफ़ा यदैन किया करते थे। और सज्दों में ऐसा नही करते थे। (जिल्द १, स० ४२४)

١١٠- (٣) حدثنا اسحاق بن ابراهيم الصنعاني قال: انبا عبد الرزاق قال اخبرني ابن جريج قال حدثني ابن شهاب عن سالم ان ابن عمر كان يقول كان رسول الله صلى الله عليه وسلم اذا قام الى الصلاة رفع يديه حتى تكونا حذو منكبيه ثم كبر، واذا اراد ان يركع فعل مثل ذلك واذا رفع من الركوع فعل مثل ذلك، ولا يفعله حين يرفع راسه من السجود. (ص:٤٢٤ ج:١)

हदीस ११० (३) : हमें इसहाक बिन इब्राहीम सनआनी ने खबर दी, उन्हें अब्दुर्रज्जाक ने, उन्हे इब्ने जुरैज ने, उन्हे इब्ने शिहाब ने, उन्हें सालिम ने, उन्हें इब्ने उमर रजि० ने आप फरमाया करते थे कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज के लिए खड़े होते तो हमेशा मोंढो के बराबर रफ़ा यदैन करते थे फिर आप **अल्लाहु अकबर** कहते और जब रुकूअ का इरादा करते और रुकूअ से सर उठाते तो भी रफ़ा यदैन किया करते थे। जब सज्दे से सर उठाते तो ऐसा नही किया करते थे। (जिल्द १, स० ४२४)

١١١- (٤) حدثنا ابو محمد يحيى بن اسحاق ابن سافري واحمد بن الوريد الفحام قالا ثنا زكريا بن عدي قال انبا ابن المبارك عن يونس ومعمر وعبيد الله ابن عمر ومحمد ابن ابي حفصة عن الزهري عن سالم عن ابن عمر عن النبي صلى الله عليه وسلم انه كان يرفع يديه إذا افتتح الصلاة واذا ركع واذا رفع راسه من الركوع، ولا يفعل ذلك بين السجدتين. (ص:٤٢٤ ج:١)

हदीस १११ (४) : हमें अबू मुहम्मद यहया बिन इसहाक बिन साफरी और अहमद बिन वरीद फहहाम ने हदीस सुनाई, उन दोनों ने कहा हमें जकरिया बिन अदी ने, उन्हे इब्ने मुबारक ने, उन्हे यूनुस, मअमर, उबैदुल्लाह बिन उमर और मुहम्मद बिन अबी हफसा ने हदीस सुनाई, उन्हें जुहरी ने, उन्हें सालिम ने, उन्हे इब्ने उमर रजि० ने कि नबी अकरम सल्लल्लाहु

अलैहि व सल्लम जब नमाज शुरू करते और जब रुकूअ करते और जब रुकूअ से सर उठाते तो रफ़ा यदैन किया करते और दो सज्दों के दर्मियान ऐसा नही करते थे। (जिल्द : १, स० ४२४)

١١٢- (٥) حدثنا مسلم بن الحجاج قال ثنا يحيى بن يحيى قال ثنا خالد بن عبد الله عن خالد عن ابي قلابة انه راى مالك ابن الحويرث اذا صلى كبر ثم رفع يديه واذا اراد ان يركع رفع يديه وحدث ان رسول الله صلى الله عليه وسلم كان يفعل هكذا. (ص:٤٢٦ ج:١)

हदीस ११२ (५) : हदीस बयान की हमें मुस्लिम बिन हज्जाज ने, वह कहते है कि हमें यहया बिन यहया ने खबर दी, उन्हें खालिद बिन अब्दुल्लाह ने, उन्हें खालिद ने, उन्हें अबू किलाबा ने, कि उन्होंने मालिक बिन हुवैरिस को देखा कि जब उन्होंने नमाज पढ़ी, **अल्लाहु अकबर** कहा फिर रफ़ा यदैन की फिर जब रुकूअ का इरादा किया और रुकूअ से सर उठाया तो भी रफ़ा यदैन की। मालिक बिन हुवैरिस रज़ि० ने हदीस सुनाई कि रसूलुल्लल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इसी तरह किया करते थे। (जिल्द १, स० ४२६)

١١٣- (٦) حدثنا بشر بن موسى قال ثنا الحميدي قال ثنا معاذ بن هشام الدستوائي قال ثنا ابي عن قتادة عن نصر بن عاصم الليثي عن مالك بن الحويرث: أن نبي الله صلى الله عليه وسلم كان اذا دخل في الصلاة كبر، ثم رفع يديه حتى يجعلهما حيال أذنيه، وربما قال: حذاء اذنيه، فاذا ركع فعل مثل ذلك، واذا رفع رأسه من الركوع فعل مثل ذلك. (ص:٤٢٦ ج:١)

हदीस ११३ (६) : हमें बिश्र बिन मूसा ने खबर दी, उन्हें हुमैदी ने, उन्हे मुआज बिन हिशाम दस्तवाई ने, उन्हें उनके वालिद ने, उन्हें कतादा ने, उन्हे नस्र बिन आसिम लैसी ने, उन्हें मालिक बिन हुवैरिस रजि० ने, कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नमाज में दाखिल होते तो हमेशा कानों के बराबर रफ़ा यदैन किया करते थे। और जब रुकूअ का इरादा करते और रुकूअ से सर उठाते तो उसी तरह किया करते। यानी कानों के बराबर रफ़ा यदैन करते थे। (जिल्द १, स० ४२६)

١١٤- (٧) حدثنا ابو قلابة قال ثنا عبد الصمد ابن عبد الوارث وابو الوليد ح وحدثنا ابو امية قال ثنا ابو الوليد كلاهما عن شعبة، عن قتادة عن نصر بن عاصم عن مالك ابن الحويرث ان النبي صلى الله عليه وسلم كان اذا افتتح الصلاة رفع يديه حذو اذنيه واذا ركع واذا رفع راسه من الركوع هذا لفظ ابي قلابة. (ص:٤٢٦ ج:١)

हदीस ११४ (७) : हमें अबू किलाबा ने हदीस सुनाई, उन्हें अब्दुस्समद बिन अब्दुल वारिस और अबुल वलीद ने. **दूसरी सनद** : हमें अबू उमैया ने हदीस सुनाई उन्हें अबुल वलीद ने. इन दोनों को शो'बा ने, उन्हें क़तादा ने उन्हें नस्र बिन आसिम ने, उन्हें मालिक बिन हुवैरिस ने, कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज शुरू करते और जब रुकूअ़ करते और जब रुकूअ़ से सर उठाते तो कानों के बराबर रफा यदैन करते। (जिल्द : १, स० ४२

١١٥- (٨) حدثنا معاوية بن صالح ومحمد ابن اسماعيل الصائغ وعثمان بن خرزاذ والصغاني قالوا: ثنا عفان قال: ثنا همام قال: ثنا محمد بن حجادة قال حدثني عبد الجبارين وائل عن علقمة بن وائل ومولى لهم أنهما حدثاه عن ابيه وائل بن حجر أنه راى رسول الله صلى الله عليه وسلم رفع يديه حين دخل في الصلاة فكبر ووصف همام حيال أذنيه، ثم التحف بثوبه ثم وضع يده اليمنى على اليسرى فلما اراد أن يركع أخرج يديه من الثوب، ثم رفعهما وكبر فركع، فلما قال سمع الله لمن حمده رفع يديه فلما سجد سجد بين كفيه. (ص:٤٢٨ ج:١)

हदीस ११५ (८) : हमें मुआविया बिन सालेह और मुहम्मद बिन इस्माईल साइग़, उस्मान बिन खरजाज और सगानी ने खबर दी उन्होंने कहा हमें अफ्फान ने, उन्हें हम्माम ने, उन्हें मुहम्मद बिन जुहादा ने, उन्हें अब्दुल जब्बार बिन वाइल ने, उन्हें अल्कमा बिन वाइल और उनके एक मौला ने, उन दोनों ने अपने वालिद वाइल इब्ने हुज्र रजि० से रिवायत कि

कि उन्होंने देखा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज में दाखिल हुए तो रफा यदैन की और तक्बीर कही। हम्माम ने बताया कि कानों के बराबर. फिर आपने कपडा लपेट लिया। फिर दाएं हाथ को बाएं हाथ पर रखा फिर जब रुकूअ का इरादा किया तो कपडे से हाथों को निकाला रफा यदैन की और **अल्लाहु अकबर** कहा, फिर रुकूअ़ किया. जब **समिअल्लाहुलिमन हमिदह** कहा तो (भी) रफ़ा यदैन की और जब सज्दा किया तो दोनों हथेलियों के दर्मियान सज्दा किया। (जिल्द : १, स० ४२८)

(१२) शरहुस्सुन्नह:

١١٦- (١) اخبرنا أبو عثمان الضبي،انا أبو محمد الجراحي،نا ابوالعباس المحبوبي،نا ابو عيسى الترمذي،نا محمد بن بشار،ومحمد ابن المثنى قالا : ثنا يحيى بن سعيد، نا عبد الحميد بن جعفر،نا محمد ابن عمرو بن عطاء عن أبي حميد الساعدي قال: سمعته وهو في عشرة من أصحاب النبي صلى الله عليه وسلم أحدهم : أبو قتادة بن ربعي يقول:انا اعلمكم بصلاة رسول الله صلى الله عليه وسلم قالوا: ما كنت أقدمنا له صحبة،ولا أكثرنا له إتيانا قال : بلى ، قالوا : فاعرض ، فقال : كان رسول الله صلى الله عليه وسلم إذا قام إلى الصلاة اعتدل قائما ورفع يديه حتى يحاذي بهما منكبيه ، فإذا أراد ان يركع رفع يديه حتى يحاذي بهما منكبيه ، ثم قال : الله أكبر ، وركع، ثم اعتدل ، فلم يصب راسه ، ولم يقنع ، ووضع يديه على ركبتيه ، ثم قال : سمع الله لمن حمده ، ورفع يديه ، واعتدل حتى يرجع كل عظم في موضعه معتدلا ، ثم هوى إلى الأرض ساجدا ، ثم قال : الله أكبر، ثم جافى عضديه عن إبطيه ، وفتخ أصابع رجليه ، ثم ثنى رجله اليسرى ، وقعد عليها ، ثم اعتدل حتى يرجع كل عظم في موضعه معتدلا ، ثم هوى ساجدا ، ثم قال : الله أكبر ، ثم ثنى رجله وقعد واعتدل حتى يرجع كل عضو في موضعه ، ثم نهض ،ثم صنع في الركعة الثانية مثل ذلك ، حتى إذا قام من السجدتين ، كبر ورفع يديه حتى يحاذي بهما منكبيه كما صنع حين افتتح الصلاة ، ثم

صنع كذلك حتى كانت الركعة التي تنقضي فيها صلاته ، اخر رجله اليسرى ، وقعد على شقه متوركا ، ثم سلم.(شرح السنة- البغوي – ص:١٢، ١١ج:٣)

हदीस ११६ (१) : हमें उस्मान जब्बी ने खबर दी, उन्हें अबू मुहम्मद जर्राही ने, उन्हें अबुल अब्बास महबूबी ने, उन्हें अबू ईसा तिर्मिजी रह० ने, उन्हें मुहम्मद बिन बश्शार और मुहम्मद बिन मुसन्ना ने, इन दोनों को यहया बिन सईद ने, उन्हें अब्दुल हमीद बिन जा'फर ने, उन्हें मुहम्मद बिन अम्र बिन अता ने, उन्होंने अबू हुमैद साइदी रजि० को नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दस सहाबा रजि० की मौजूदगी में कहते हुए सुना, उन में से एक अबू कतादा रजि० भी थे, कि मै रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नमाज को तुम से ज्यादा जानता हूं उन्होंने कहा, तुम सुहबत के लिहाज से हम से मुक़द्दम नहीं और न ही तुम हम से ज्यादा रसूलुल्लल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आते थे। उन्होंने कहा क्यों नहीं। तो मौजूद सहाबा रजि० ने कहा तुम पेश करो। आपने कहा : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज के लिए खड़े होते तो सीधे खडे हो जाते और मोंढों के बराबर रफा यदैन करते। फिर जब रुकूअ का इरादा करते तो कन्धों के बराबर रफा यदैन करते, फिर **अल्लाहु अकबर** कहते। और रुकूअ् करते न तो सर को ऊंचा करते, और न झुकाते और दोनों हाथ घुटनों पर रखते। फिर **समिअल्लाहुलिमन** हमिदह कहते और रफा यदैन करते, और सीधे खड़े हो जाते, यहाँ तक कि हड्डी अपने असली मकाम पर आ जाती। फिर सज्दे के लिए जमीन की तरफ झुकते और **अल्लाहु अकबर** कहते। फिर दोनों बाजुओ को अपने बगलों से दूर रखते। और दोनों पैरों की उगलियों को खुला रखा। फिर बाए पैर को मोडा और उस पर बैठ गये फिर ऐतदाल किया। यहाँ तक कि हर जोड अपनी असली जगह पर आ गया। फिर सज्दा की तरफ झुके फिर **अल्लाहु अकबर** कहा फिर अपने पाँव को मोड़ा और उस पर बैठ गये और ऐतदाल किया हत्ता कि हर जोड अपनी जगह पर लौट आया। फिर आप उठे और दूसरी रकअत मे भी ऐसे ही किया। यहाँ तक कि जब दो रकअतो से खड़े हुए, तो भी मोंढों के बराबर रफा यदैन की। जैसे शुरु नमाज में किया था। यहाँ तक कि जब आखिरी रकअत पर पहुंचे जिसमें नमाज पूरी होती है, बायाँ पाँव को दायाँ पाँव के नीचे से निकाला और तवर्रुक से यानी बाये सुरीन पर बैठे फिर सलाम फेरा। (जिल्द ३, स० ११, १२)

١١٧- (٢) اخبرنا أبو الحسن الشيرزي ، انا زاهر بن احمد،انا ابو إسحاق الهاشمي ، انا أبو مصعب ، عن مالك ، عن ابن شهاب، عن سالم بن عبد الله عن عبد الله بن عمر ان رسول الله صلى الله عليه وسلم كان إذا افتتح الصلاة رفع يديه حذو منكبيه ، وإذا ركع ، وإذا رفع رأسه من الركوع رفعهما كذلك ، وقال : سمع الله لمن حمده ، ربنا لك الحمد ، وكان لا يفعل ذلك في السجود. شرح السنة - البغوي - ص:٢٠ ج:٣)

हदीस ११७ (२) : हमें अबुल हसन शीरजी ने खबर दी, उन्हे जाहिर बिन अहमद ने, उन्हे अबू इसहाक हाशमी ने, उन्हें अबू मुस्अब ने, उन्हे मालिक ने, उन्हें इब्ने शिहाब ने, उन्हें सालिम बिन अब्दुल्लाह ने, उन्हे अब्दुल्लाह बिन उमर रजि० ने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हमेशा जब नमाज शुरू करते तो रफा यदैन करते मोंढों तक और जब रुकूअ् करते और जब रुकूअ् से सर उठाते तो इसी तरह रफा यदैन करते और **"समिअल्लाहुलिमन हमिदह रब्बना लकल-हम्द"** कहा। और सज्दे में ऐसा नहीं करते थे। (जिल्द ३, स० २०)

١١٨- (٣) اخبرنا ابو سعد احمد بن محمد بن العباس الحميدي،انا ابو عبد الله محمد بن عبد الله الحافظ ، حدثني ابو الحسن علي بن عيسى بن إبراهيم الجيرمي ، نا إبراهيم بن ابي طالب ، نا سماعيل ابن بشر بن منصور ، حدثنا عبد الأعلى بن عبد الأعلى ، عن عبيد الله ابن عمر ، عن نافع أن ابن عمر كان إذا دخل في الصلاة كبر ورفع يديه ، وإذا ركع رفع يديه ، وإذا قال : سمع الله لمن حمده رفع يديه ، وإذا قام من الركعتين رفع يديه ، ورفع ذلك ابن عمر الى النبي صلى الله عليه وسلم. هذا حديث صحيح ، اخرجه محمد ، عن عياش بن الوليد ، عن عبد الأعلى. (شرح السنة - البغوي - ص:٢١ ج:٣)

हदीस ११८ (३) : हमें अबू सअद अहमद बिन मुहम्मद बिन अब्बास हुमैदी ने खबर दी, उन्हें अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह हाफिज ने,

उन्हे अबुल हसन अली बिन ईसा बिन इब्राहीम जीरमी ने, उन्हे इब्राहीम बिन अबू तालिब ने, उन्हे इसमाईल बिन बिश्र बिन मन्सूर ने, उन्हे अब्दुल आला बिन अब्दुल आला ने उन्हे उबैदुल्लाह बिन उमर ने, उन्हे नाफे ने, कहा कि

इब्ने उमर रजि० जब नमाज मे दाखिल होते तो **अल्लाह अकबर** कहते और रफा यदैन करते। और जब रुकूअ् का इरादा करते और जब **"समिअल्लाहुलिमन हमिदह"** कहते और जब दो रकअत पढ़ कर खड़े होते तो रफा यदैन करते। इब्ने उमर रजि० ने यह हदीस नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मरफूअ् बयान फरमाई। यह हदीस सही है इसको मुहम्मद ने अय्याश बिन वलीद से, उन्होने अब्दुल आला से बयान फरमाई।

(जिल्द 3, स० २१)

١١٩- (٤) اخبرنا عمر بن عبد العزيز ، انا القاسم بن جعفر ، انا ابو علي اللؤلؤي ، حدثنا ابو داود ، نا محمد بن المصفى الحمصي، نا بقية ، نا الزبيدي ، عن الزهري ، عن سالم عن عبد الله بن عمر قال : كان رسول الله صلى الله عليه وسلم إذا قام إلى الصلاة رفع يديه حتى تكونا حذو منكبيه ، ثم كبر ، وهما كذلك ، فركع ، ثم إذا اراد ان يرفع صلبه رفعهما حتى تكونا حذو منكبيه ، ثم قال : سمع الله لمن حمده ، ولا يرفع يديه في السجود ، ويرفعهما في كل تكبيرة يكبرها قبل الركوع حتى تنقضي صلاته. (شرح السنة - البغوي - ص:٢٢ ج:٣)

हदीस ११९ (४) : हमें उमर बिन अब्दुल अजीज ने खबर दी, उन्हे कासिम बिन जाफर ने, उन्हे अबू अली लुलुई ने, उन्हे अबू दाऊद ने, उन्हे मुहम्मद बिन मुसफ्फा हिम्सी ने उन्हे बकीया ने, उन्हे जुबैदी ने, उन्हें जुहरी ने, उन्हें सालिम ने, उन्हें अब्दुल्लाह बिन उमर ने कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नमाज के लिए खड़े होते तो मोंढो के बराबर रफा यदैन किया करते थे, फिर जब रुकूअ के लिए **अल्लाहु अकबर** कहते तो भी रफा यदैन करते फिर जब पीठ रुकूअ से उठाते तो भी मोंढो के बराबर रफा यदैन करते, फिर **समिअल्लाहुलिमन हमिदह** कहते और सज्दे मे रफा यदैन नहीं किया करते थे। और रुकूअ से पहले हर तकबीर मे रफा यदैन किया करते थे यहाँ तक कि आप की नमाज पूरी हो जाती। (जिल्द 3, स० २२)

١٢٠- (٥) أخبرنا عمر بن عبد العزيز ، انا القاسم بن جعفر الهاشمي ، انا ابو علي اللؤلؤي ، نا ابو داود ، نا مسدد ، حدثنا بشر بن المفضل ، عن عاصم بن كليب ، عن أبيه عن وائل بن حجر قال : قلت : لأنظرن إلى صلاة رسول الله صلى الله عليه وسلم كيف يصلي قال : فقام رسول الله صلى الله عليه وسلم فاستقبل القبلة ، فكبر ، فرفع يديه حتى حاذتا اذنيه ، ثم اخذ شماله بيمينه ، فلما اراد ان يركع رفعهما مثل ذلك ، ثم وضع يديه على ركبتيه ، فلما رفع رأسه من الركوع رفعهما مثل ذلك ، فلما سجد وضع رأسه بذلك المنزل من بين يديه ، ثم جلس فافترش رجله اليسرى ، ووضع يده اليسرى على فخذه اليسرى ، وحد مرفقه الأيمن على فخذه اليمنى ، وقبض ثنتين ، وحلق حلقة ، ورايته يقول : هكذا ، وحلق بشر الإبهام والوسطى ، وأشار بالسبابة.(شرح السنة - البغوي - ص:٢٧ ج:٣)

हदीस १२० (५) : हमें उमर बिन अब्दुल अजीज ने खबर दी, उन्हे कासिम बिन जाफर हाशमी ने, उन्हे अबू अली लुलुई ने, उन्हें अबू दाऊद ने, उन्हें मुसद्दद ने, उन्हें बिश्र बिन मुफज्जल ने, उन्हें आसिम बिन कुलैब ने, उन्हे उनके वालिद ने, कि वाइल बिन हुज्र ने कहा मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नमाज को करदन देखूंगा कि आप कैसे नमाज पढ़ते है। आप रजि० ने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम खड़े हुए, किब्ला की जानिब रुख किया, और **अल्लाहु अकबर** कहा और कानों के बराबर रफा यदैन किया, फिर बाए हाथ को दाए हाथ से पकड़ा। फिर जब रुकूअ् का इरादा किया, उसी तरह रफा यदैन किया फिर अपने हाथो को घुटनो पर रखा, फिर जब रुकूअ् से सर उठाया तो उसी तरह रफा यदैन किया। फिर जब सज्दा किया तो अपने सर को उसी जगह पर दोनो हाथो के दर्मियान रखा। फिर जब बैठे तो बाए पाँव को बिछाया। और दाए हाथ को दाए रान पर रखा। और दाहिने हाथ की कुहनी दाहिनी रान से जुदा रखी। और दो उगलियों को बन्द कर लिया और एक हल्का बना लिया। (बीच की उगली और अगूठे से) और मैंने उनको इस

तरह करते देखा। और बिश्र ने अंगूठे और बीच की उंगली का ह[illegible]
बनाया और कलिमे की उंगली से इशारा किया। (जिल्द ३, स० २८)

١٢١- (٦) نامحمد بن سليمان الأنباري، نا وكيع، عن شريك، عن
عاصم بن كليب، عن علقمة بن وائل ابن حجرعن وائل بن حجر
قال: اتيت النبي صلى الله عليه وسلم في الشتاءفرايت اصحابه
يرفعون ايديهم في ثيابهم في الصلاة.(شرح السنة - البغوي -
ص:٢٨ ج:٣)

हदीस १२१ (६) : हमे मुहम्मद बिन सुलेमान अबारी ने खबर दी, उ[न्हें] वकीअ ने, उन्हे शरीक ने उन्हें आसिम बिन कुलैब ने, उन्हें अल्क़मा [बि]न वाइल बिन हुज्र ने वाइल बिन हुज्र रज़ि० से रिवायत की कि मै नबी अक[रम] सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास सर्दियो में आया, तो मैंने आप[के] सहाबा को देखा कि वह नमाज मे कपडो के अन्दर से रफा यदैन करते। (जिल्द ३, स० [illegible])

١٢٢- (٧) اخبرنا عمر بن عبد العزيز، أنا القاسم بن جعفر، أنا
أبو علي اللؤلؤي، نا أبو داود، نا حفص بن عمر، نا شعبة، عن
قتادة، عن نصر بن عاصم عن مالك بن الحويرث قال: رايت النبي
صلى الله عليه وسلم رفع يديه إذا كبر، وإذا ركع، وإذا رفع راسه
من الركوع حتى يبلغ بهما فروع اذنيه (شرح السنة - البغوي -
ص:٢٩ ج:٣)

हदीस १२२ (७) : हमे उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ ने खबर दी उ[न्हें] क़ासिम बिन जाफर ने, उन्हे अबू अली लुलुई ने, उन्हें अबू दाऊद ने, उ[न्हें] हफ्स बिन उमर ने, उन्हें शोबा ने, उन्हें क़तादा ने, उन्हे नस्र बिन आसि[म ने] उन्हें मालिक बिन हुवैरिस ने कि मैने नबी अकरम सल्लल्लाहु अलै[हि व] सल्लम को देखा कि आप जब तकबीर कहते तो रफा यदैन करते, और [जब] रुकूअ करते और जब रुकूअ से सर उठाते तो कानो के बराबर रफा [यदैन] किया करते थे। (जिल्द ३, स० २९)

✣ ✣ ✣

(१३) मुसन्नफ़ अब्दुर्रज़्ज़ाक़

١٢٣- (١) عبد الرزاق عن بن جريج قال حدثني بن شهاب عن
سالم بن عبد الله ان بن عمر كان يقول كان رسول الله صلى الله
عليه وسلم إذا قام إلى الصلاة رفع يديه حتى تكونا حذو منكبيه
ثم يكبر وإذا اراد ان يركع فعل مثل ذلك وإذا رفع من الركوع
فعل مثل ذلك ولا يفعله حين يرفع راسه من السجود(مصنف عبد
الرزاق - ص:٦٧ ج:٢)

हदीस १२३ (१) : हमें अब्दुर्रज़्ज़ाक ने खबर दी उन्हें इब्ने जुरैज ने, [उन]्हें इब्ने शिहाब ने, उन्हें सालिम बिन अब्दुल्लाह ने कि इब्ने उमर रज़ि० [फ़]रमाते थे कि रसूलुल्लल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज के [लि]ए खडे होते तो मोढों के बराबर रफा यदैन करते थे, फिर **अल्लाहु अकबर** कहते और जब रुकूअ का इरादा करते तो उसी तरह करते और [ज]ब रुकूअ से सर उठाते तो उसी तरह करते और जब सज्दे से सर उठाते [तो] रफा यदैन नहीं करते थे। (जिल्द २, स० ६७)

١٢٤- (٢) عبد الرزاق عن عبد الله بن عمر عن بن شهاب عن
سالم قال كان بن عمر إذا قام إلى الصلاة رفع يديه حتى يكونا
حذو منكبيه وإذا ركع رفعهما فإذا رفع راسه من الركعة رفعهما
وإذا قام من مثنى رفعهما ولا يفعل ذلك في السجود قال ثم يخبرهم
ان رسول الله صلى الله عليه وسلم كان يفعله قال عبد الله سمعت
نافعا يحدث عن بن عمر مثل هذا إلا انه قال يرفع يديه حتى
يكونا حذو اذنيه (مصنف عبد الرزاق - ص:٦٨- ٦٧ ج:٢)

हदीस १२४ (२) : अब्दुर्रज़्ज़ाक ने अब्दुल्लाह बिन उमर से बयान [कि]या, उन्होंने इब्ने शिहाब से, उन्होंने सालिम से, कि इब्ने उमर रज़ि० जब [न]माज के लिए खडे होते तो रफा यदैन किया करते थे और जब रुकूअ [क]रते और रुकूअ से सर उठाते और दो रकअत पढ कर खडे होते तो इसी

तरह मोंढो के बराबर रफा यदैन किया करते थे और सज्दों में रफा नहीं करते थे। फिर उनको खबर देते कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ऐसा करते थे। अब्दुल्लाह कहते हैं मैंने नाफे को सुना वह इब्ने उमर रजि० से इसी तरह हदीस बयान करते थे। मगर उस में यह अल्फाज थे कि कानो के बराबर रफा यदैन किया करते थे। (जिल्द २, स० ६८)

١٢٥- (٣) عبد الرزاق عن معمر عن قتادة أن رسول الله صلى الله عليه و سلم كان يرفع يديه إذا ركع وإذا رفع رأسه من الركوع حتى يكونا حذو اذنيه(مصنف عبد الرزاق - ص:٦٨ج:٢)

हदीस १२५ (३) : अब्दुर्रज्जाक ने मअमर से खबर दी, उन्होंने क़तादा से कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब रुकूअ करते और जब रुकूअ से सर उठाते तो कानो के बराबर रफा यदैन किया करते थे। (जिल्द २, स० ६८)

١٢٦- (٤) عبد الرزاق عن هشيم قال أخبرني ابو حمزة مولى بني أسد قال رأيت بن عباس إذا افتتح الصلاة يرفع يديه وإذا ركع وإذا رفع رأسه من الركوع (مصنف عبد الرزاق - ص:٦٩ج:٢)

हदीस १२६ (४) : अब्दुर्रज्जाक ने हुशैम से खबर दी, उन्होंने कहा मुझे अबू हम्जा मौला बनी असद ने खबर दी उन्होंने कहा मैंने इब्ने अब्बास रजि० को देखा कि जब नमाज शुरू करते और जब रुकूअ करते और जब रुकूअ से सर उठाते तो रफा यदैन किया करते थे। (जिल्द २, स० ६९)

١٢٧- (٥) عبد الرزاق عن داود بن إبراهيم قال رأيت وهب بن منبه إذا كبر في الصلاة رفع يديه حتى تكونا حذو اذنيه وإذا ركع وإذا رفع رأسه من الركوع (مصنف عبد الرزاق - ص:٦٩ج:٢)

हदीस १२७ (५) : अब्दुर्रज्जाक ने दाऊद बिन इब्राहीम से बयान किया, उन्होंने कहा मैंने वहब बिन मुनब्बह को देखा, जब नमाज में अल्लाहु अकबर कहते और जब रुकूअ करते और जब रुकूअ से सर उठाते तो कानो के बराबर रफा यदैन किया करते थे। (जिल्द २, स० ६९)

١٢٨- (٦) عبد الرزاق عن بن جريج قال أخبرني حسن بن مسلم قال سمعت طاوسا وهو يسال عن رفع اليدين في الصلاة فقال رأيت عبد الله وعبد الله وعبد الله يرفعون ايديهم في الصلاة لعبد الله بن عمر وعبد الله بن عباس وعبد الله بن الزبير (مصنف عبد الرزاق - ص:٦٩ج:٢)

हदीस १२८ (६) : अब्दुर्रज्जाक ने इब्ने जुरैज से बयान किया, उन्होंने कहा मुझे हसन बिन मुस्लिम ने खबर दी, उन्होंने कहा मैंने ताऊस को सुना उन से नमाज में रफा यदैन के मुतअल्लिक पूछा गया। उन्होंने कहा मैंने अब्दुल्लाह और अब्दुल्लाह और अब्दुल्लाह को देखा नमाज में अपने हाथों को उठाते थे। यानी अब्दुल्लाह बिन उमर, अब्दुल्लाह बिन अब्बास और अब्दुल्लाह बिन जुबैर रजि अल्लाहु अन्हुम को। (जिल्द २, स० ६९)

١٢٩- (٧) عبد الرزاق عن بن جريج قال قلت لعطاء وفي التطوع من اليدين مثل ما في المكتوبة؟ قال نعم في كل صلاة(مصنف عبد الرزاق - ص:٧٠ج:٢)

हदीस १२९ (७) : अब्दुर्रज्जाक ने इब्ने जुरैज से बयान किया कि मैंने अता से कहा कि जिस तरह फरज़ नमाजों में रफा यदैन की जाती है, क्या उसी तरह नवाफिल में भी करनी चाहिए? आपने कहा हां, हर नमाज में करनी चाहिए। (जिल्द २, स० ७०)

(१४) सुननुद्दारमी

١٣٠- (١) أَخْبَرَنَا عُثْمَانُ بْنُ عُمَرَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ سَالِمٍ عَنْ أَبِيهِ : أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم كَانَ إِذَا دَخَلَ الصَّلاَةَ كَبَّرَ وَرَفَعَ يَدَيْهِ حَذْوَ مَنْكِبَيْهِ ، وَإِذَا رَكَعَ كَبَّرَ وَرَفَعَ يَدَيْهِ ، وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ فَعَلَ مِثْلَ ذَلِكَ،وَلاَ يَرْفَعُ بَيْنَ السَّجْدَتَيْنِ أَوْ فِى السُّجُودِ. (سنن الدارمي -ص:٢٢٩ج:١)

हदीस १३० (१) : हमें उसमान बिन उमर ने खबर दी, उन्हें मालिक ने, उन्हें जुहरी ने, उन्हें सालिम ने, उन्होंने अपने वालिद से कि रसूलुल्लाह

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज में दाखिल होते तो **अल्लाहु अकबर** कहते और मोंढों के बराबर रफा यदैन करते और जब रुकूअ् करते **अल्लाहु अकबर** कहते तो रफा यदैन करते और जब रुकूअ् से सर उठाते तो उसी तरह रफा यदैन करते और दो सज्दों के दर्मियान रफा यदैन नहीं करते थे या सज्दो में रफा यदैन नहीं करते थे। (जिल्द १, स० २२६)

١٣١- (٢) أَخْبَرَنَا أَبُو الْوَلِيدِ الطَّيَالِسِيُّ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ نَصْرِ بْنِ عَاصِمٍ عَنْ مَالِكِ بْنِ الْحُوَيْرِثِ : أَنَّ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم كَانَ إِذَا كَبَّرَ رَفَعَ يَدَيْهِ حَتَّى يُحَاذِيَ أُذُنَيْهِ ، وَإِذَا أَرَادَ أَنْ يَرْكَعَ، وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ. (سنن الدارمي – ص:٢٢٩ج:١)

हदीस १३१ (२) : हमें अबुल वलीद त्यालिसी ने खबर दी, उन्हें शोबा ने, उन्हें कतादा ने, उन्हें नस्र बिन आसिम ने, उन्हें मालिक बिन हुवैरिस रजि० ने, कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब **अल्लाहु अकबर** कहते तो कानों के बराबर रफा यदैन किया करते थे। उसी तरह जब रुकूअ् का इरादा करते और रुकूअ् से सर उठाते तो रफा यदैन किया करते थे। (जिल्द १, स० २२६)

١٣٢- (٣) أَخْبَرَنَا سَهْلُ بْنُ حَمَّادٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ عَمْرِو بْنِ مُرَّةَ قَالَ حَدَّثَنِي أَبُو الْبَخْتَرِيِّ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الْيَحْصُبِيِّ عَنْ وَائِلٍ الْحَضْرَمِيِّ: أَنَّهُ صَلَّى مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَكَانَ يُكَبِّرُ إِذَا خَفَضَ وَإِذَا رَفَعَ ، وَيَرْفَعُ يَدَيْهِ عِنْدَ التَّكْبِيرِ وَيُسَلِّمُ عَنْ يَمِينِهِ وَعَنْ يَسَارِهِ. قَالَ قُلْتُ : حَتَّى يَبْدُوَ وَضَحُ وَجْهِهِ؟ قَالَ : نَعَمْ. (سنن الدارمي –ص:٢٢٩ج:١)

हदीस २३२ (३) : हमें सहल बिन हम्माद ने खबर दी, उन्हें शोबा ने उन्हें अम्र बिन मुर्रह ने, उन्हें अबुल बखतरी ने, उन्हें अब्दुर्रहमान यहसुबी ने उन्हें वाइल हजरमी रजि० ने कि उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ नमाज पढी। जब झुकते और रुकूअ् से सर उठाते तो **अल्लाहु अकबर** कहते और रफा यदैन करते और दाए बाए सलाम फेरते। रावी ने कहा मैंने कहा यहाँ तक कि चेहरे की चमक जाहिर हो जाती उन्होंने कहा हाँ। (जिल्द १ स० २२६)

١٣٣- (٤) أَخْبَرَنَا أَبُو عَاصِمٍ عَنْ عَبْدِ الْحَمِيدِ بْنِ جَعْفَرٍ قَالَ حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ عَمْرِو بْنِ عَطَاءٍ قَالَ سَمِعْتُ أَبَا حُمَيْدٍ السَّاعِدِيَّ فِي عَشَرَةٍ مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم أَحَدُهُمْ أَبُو قَتَادَةَ قَالَ: أَنَا أَعْلَمُكُمْ بِصَلَاةِ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَقَالُوا: لِمَ؟ فَمَا كُنْتَ أَكْثَرَنَا لَهُ تَبَعَةً وَلَا أَقْدَمَنَا لَهُ صُحْبَةً. قَالَ : بَلَى. قَالُوا : فَاعْرِضْ. قَالَ : كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم إِذَا قَامَ إِلَى الصَّلَاةِ رَفَعَ يَدَيْهِ حَتَّى يُحَاذِيَ بِهِمَا مَنْكِبَيْهِ ثُمَّ كَبَّرَ حَتَّى يَقَرَّ كُلُّ عَظْمٍ فِي مَوْضِعِهِ ، ثُمَّ يَقْرَأُ ثُمَّ يُكَبِّرُ وَيَرْفَعُ يَدَيْهِ حَتَّى يُحَاذِيَ بِهِمَا مَنْكِبَيْهِ ، ثُمَّ يَرْكَعُ وَيَضَعُ رَاحَتَيْهِ عَلَى رُكْبَتَيْهِ حَتَّى يَرْجِعَ كُلُّ عَظْمٍ إِلَى مَوْضِعِهِ ، وَلَا يَصُبُّ رَأْسَهُ وَلَا يُقْنِعُ ، ثُمَّ يَرْفَعُ رَأْسَهُ فَيَقُولُ « سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ ». ثُمَّ يَرْفَعُ يَدَيْهِ حَتَّى يُحَاذِيَ بِهِمَا مَنْكِبَيْهِ فَظَنَّ أَبُو عَاصِمٍ أَنَّهُ قَالَ : حَتَّى يَرْجِعَ كُلُّ عَظْمٍ إِلَى مَوْضِعِهِ مُعْتَدِلًا ، ثُمَّ يَقُولُ « اللَّهُ أَكْبَرُ ». ثُمَّ يَهْوِي إِلَى الْأَرْضِ فَيُجَافِي يَدَيْهِ عَنْ جَنْبَيْهِ ثُمَّ يَسْجُدُ ، ثُمَّ يَرْفَعُ رَأْسَهُ فَيَثْنِي رِجْلَهُ الْيُسْرَى فَيَقْعُدُ عَلَيْهَا وَيَفْتَخُ أَصَابِعَ رِجْلَيْهِ إِذَا سَجَدَ ، ثُمَّ يَعُودُ فَيَسْجُدُ ثُمَّ يَرْفَعُ رَأْسَهُ فَيَقُولُ « اللَّهُ أَكْبَرُ ». وَيَثْنِي رِجْلَهُ الْيُسْرَى فَيَقْعُدُ عَلَيْهَا مُعْتَدِلًا حَتَّى يَرْجِعَ كُلُّ عَظْمٍ إِلَى مَوْضِعِهِ مُعْتَدِلًا ، ثُمَّ يَقُومُ فَيَصْنَعُ فِي الرَّكْعَةِ الْأُخْرَى مِثْلَ ذَلِكَ ، فَإِذَا قَامَ مِنَ السَّجْدَتَيْنِ كَبَّرَ وَرَفَعَ يَدَيْهِ حَتَّى يُحَاذِيَ بِهِمَا مَنْكِبَيْهِ كَمَا فَعَلَ عِنْدَ افْتِتَاحِ الصَّلَاةِ ، ثُمَّ يَصْنَعُ مِثْلَ ذَلِكَ فِي بَقِيَّةِ صَلَاتِهِ حَتَّى إِذَا كَانَتِ السَّجْدَةُ أَوِ الْقَعْدَةُ الَّتِي يَكُونُ فِيهَا التَّسْلِيمُ أَخَّرَ رِجْلَهُ الْيُسْرَى وَجَلَسَ مُتَوَرِّكًا عَلَى شِقِّهِ الْأَيْسَرِ. قَالَ قَالُوا: صَدَقْتَ هَكَذَا كَانَتْ صَلَاةُ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم. (سنن الدارمي – ص:٢٥٥- ٢٥٤ ج:١)

हदीस १३३ (४) : हमें अबू आसिम ने खबर दी, उन्हें अब्दुल हमीद बिन

ज़'फर ने उन्हें मुहम्मद बिन अम्र बिन अता ने, उन्होंने कहा मैंने अबू हुमैद साइदी रज़ि० को दस सहाबा रज़ि० की मौजूदगी मे कहते सुना। उन मे से एक अबू कतादा रज़ि० थे, कि मै रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नमाज को तुम से ज्यादा जानता हूं। उन्होंने कहा कैसे? न तो तुम हम से ज्यादा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इताअत करते थे, और न सुहबत के लिहाज से हम से मुकद्दम थे। उन्होंने कहा क्यो नहीं। इस पर उन्होंने कहा अच्छा तो फिर पेश करो। उन्होंने कहा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज के लिए खडे होते तो अपने दोनों हाथों को कन्धों के बराबर उठाते फिर रुकूअ् करते और अपनी हथेलियों को अपने घुटनों पर रखते हत्ता कि हर हड्डी अपनी जगह पर लौट जाती. रुकूअ् में आप पीठ को बराबर करते, न तो सर को ज्यादा झुकाते और न ही ज्यादा बुलन्द करते। फिर **समिअल्लाहुलिमन हमिदह** कहते और सर उठाते और मोंढों के बराबर रफा यदैन करते। अबू आसिम का ख्याल है कि उन्होंने कहा यहाँ तक कि हर हड्डी अपने असली मकाम पर आ जाती। फिर **अल्लाहु अकबर** कहते और जमीन की तरफ झुकते, हाथो को पहलुओ से दूर रखते, फिर सज्दा करते, फिर अपना सर उठाते फिर बाया पॉव मोडते और उस पर बैठ जाते और पॉव की उंगलियाँ सज्दा के वक्त खुली रखते फिर वापस होते और सज्दा करते फिर सर उठाते और **अल्लाहु अकबर** कहते और बायॉ पॉव मोडते और सीधे उस पर बैठ जाते। यहॉ तक कि हर हड्डी अपने असली मकाम पर आ जाती, फिर खडे होते और दूसरी रकअत मे भी उसी तरह करते। पस जब दो रकअत पढ कर खडे होते तो भी रफा यदैन करते, जिस तरह नमाज शुरू करते वक्त किया था। फिर इसी तरह बाकी नमाज मे करते। फिर जब कअ्दे में होते जिस में सलाम है, बायाँ पॉव को दायॉ पॉव के नीचे से निकालते और बाए जानिब सुरीन पर बैठ जाते। सब सहाबा रज़ि० ने कहा तुम ने सच कहा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ऐसे ही नमाज पढा करते थे। (जिल्द : १, स० २५४)

١٢٤- (٥) أَخْبَرَنَا مُعَاوِيَةُ بْنُ عَمْرٍو حَدَّثَنَا زَائِدَةُ بْنُ قُدَامَةَ حَدَّثَنَا عَاصِمُ بْنُ كُلَيْبٍ أَخْبَرَنِي أَبِي أَنَّ وَائِلَ بْنَ حُجْرٍ أَخْبَرَهُ قَالَ قُلْتُ: لأَنْظُرَنَّ إِلَى صَلاَةِ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم كَيْفَ يُصَلِّي؟ فَنَظَرْتُ إِلَيْهِ فَقَامَ فَكَبَّرَ فَرَفَعَ يَدَيْهِ حَتَّى حَاذَتَا بِأُذُنَيْهِ ، وَوَضَعَ يَدَهُ

الْيُمْنَى عَلَى ظَهْرِ كَفِّهِ الْيُسْرَى قَالَ ثُمَّ لَمَّا أَرَادَ أَنْ يَرْكَعَ رَفَعَ يَدَيْهِ مِثْلَهَا فَوَضَعَ يَدَيْهِ عَلَى رُكْبَتَيْهِ ، ثُمَّ رَفَعَ رَأْسَهُ فَرَفَعَ يَدَيْهِ مِثْلَهَا ثُمَّ سَجَدَ فَجَعَلَ كَفَّيْهِ بِحِذَاءِ أُذُنَيْهِ،ثُمَّ قَعَدَ فَافْتَرَشَ رِجْلَهُ الْيُسْرَى وَوَضَعَ كَفَّهُ الْيُسْرَى عَلَى فَخِذِهِ وَرُكْبَتِهِ الْيُسْرَى،وَجَعَلَ مِرْفَقَهُ الأَيْمَنَ عَلَى فَخِذِهِ الْيُمْنَى،ثُمَّ قَبَضَ ثِنْتَيْنِ فَحَلَّقَ حَلْقَةً ثُمَّ رَفَعَ إِصْبَعَهُ، فَرَأَيْتُهُ يُحَرِّكُهَا يَدْعُو بِهَا قَالَ: ثُمَّ جِئْتُ بَعْدَ ذَلِكَ فِي زَمَانٍ فِيهِ بَرْدٌ فَرَأَيْتُ عَلَى النَّاسِ جُلَّ الثِّيَابِ يُحَرِّكُونَ أَيْدِيَهُمْ مِنْ تَحْتِ الثِّيَابِ(سنن الدارمي – ص:٢٥٥ج:١)

हदीस १३४ (५) : हमें मुआविया बिन अम्र ने खबर दी, उन्हें जाइदा बिन कुदामा ने खबर दी, उन्हें आसिम बिन कुलैब ने, उन्हें उनके वालिद ने खबर दी कि वाइल बिन हुज्र रज़ि० ने कहा, कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नमाज़ की तरफ देखूंगा कि आप कैसे नमाज पढते है? मैंने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तरफ देखा, आप खड़े हुए, तो आपने **अल्लाहु अकबर** कहा और कानो के बराबर रफा यदैन की और दाएं हाथ को बाएं हाथ की पुश्त पर रखा। फिर जब रुकूअ् का इरादा किया तो पहले की तरह रफा यदैन की। पस हाथों को घुटनों पर रखा। फिर आपने रुकूअ् से सर उठाया तो उसी तरह रफा यदैन की। फिर सज्दा किया और दोनों हथेलियों को कानों के बराबर किया। फिर बैठ गये पस बायाँ पॉव फैलाया। और बाएं हथेली को अपने रान पर और बाएं घुटने पर रखा। और दाएं कुहनी को दाएं रान पर रखा। फिर दो उंगलियों को बन्द किया और हल्का बनाया फिर उंगली को उठाया। मैंने उसे हरकत देते हुए देखा। फिर मैं सर्दियों के मौसम पर आया। और लोगों पर भारी भारी कपडे देखे और कपड़ों के नीचे से ही उनके हाथो को रफा यदैन के लिए हरकत करते हुए देखा। (जिल्द १, स० २५५)

(१५) सुनन दारु कुतनी

١٢٥- (١) حدثنا ابو بكر النيسابوري حدثنا بحر بن نصر حدثنا ابن وهب اخبرني ابن ابي الزناد ح وحدثنا ابو بكر حدثنا احمد بن

حدثنا سليمان بن داود الهاشمى حدثنا ابن ابى الزناد عن ... بن عقبة عن عبد الله بن الفضل عن عبد الرحمن الأعرج عن ... الله بن ابى رافع عن على قال كان رسول الله صلى الله عليه ... إذا قام إلى الصلاة المكتوبة كبر ورفع يديه حذو منكبيه ... مثل ذلك إذا قضى قراءته فأراد أن يركع ويصنعه إذا رفع ... الركوع ولا يرفع يديه فى شىء من صلاته وهو جالس فإذا قام ... السجدتين رفع يديه كذلك وكبر. (سنن الدارقطني - ... ص: ٢٨٧)

हदीस १३५ (१) : हमें अबू बकर नीशापुरी ने हदीस सुनाई, उन्हें ... बिन नस्र ने, उन्हें इब्ने वहब ने, उन्हें इब्ने अबी जिनाद ने खबर दी (... **सनद**) हमे अबू बकर ने हदीस सुनाई, उन्हें अहमद बिन मन्सूर ने, ... सुलेमान बिन दाऊद हाशमी ने, उन्हें इब्ने ज़िनाद ने, उन्हें मूसा बिन ... ने, उन्हें अब्दुल्लाह बिन फ़ज़ल ने, उन्हें अब्दुर्रहमान अ'रज़ ने, उन्हें उबैद... बिन अबू राफे ने, उन्हें हज़रत अली रज़ि० ने, उन्होंने कहा कि रसूलु... सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब फ़र्ज़ नमाज़ के लिए खड़े हो... **अल्लाहु अकबर** कहते और मोंढों के बराबर रफ़ा यदैन करते। और ... किरअत पूरी करते और रुकूअ़ का इरादा करते और रुकूअ़ से सर ... तो भी रफ़ा यदैन करते। बैठने की हालत में रफ़ा यदैन नहीं करते थे। ... जब दो रकअत पढ़ कर खड़े होते तो उसी तरह रफ़ा यदैन करते।

(जिल्द १, स० ...)

١٣... (٢) حدثنا ابو بكر النيسابورى عبد الله بن محمد بن زياد ... ثنا عبد الرحمن بن بشر بن الحكم والحسن بن يحيى قالا ... ثنا عبد الرزاق أخبرنا ابن جريج حدثنى ابن شهاب عن سالم بن ... عبد الله ان عبد الله بن عمر كان يقول كان رسول الله صلى الله ... عليه وسلم إذا قام إلى الصلاة رفع يديه حتى يكونا حذو منكبيه ... ثم كبر وإذا أراد أن يركع فعل مثل ذلك وإذا رفع رأسه من ... الركوع فعل مثل ذلك ولا يفعله حين يرفع رأسه من السجود. (سنن ... الدارقطني — ص: ٢٨٧ - ٢٨٨ ج: ١)

हदीस १३६ (२) : हमें अबू बकर नीशापुरी ने खबर दी, उन्हें अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद बिन ज़ियाद ने, उन्हें अब्दुर्रहमान बिन बिश्र बिन हकम और हसन बिन यहया ने, दोनों ने कहा हमें अब्दुर्रज़्ज़ाक ने खबर दी, उन्हें इब्ने जुरैज ने, उन्हें इब्ने शिहाब ने, उन्हें सालिम बिन अब्दुल्लाह ने, उन्होंने कहा कि अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० कहा करते थे कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज़ के लिए खड़े होते तो मोंढों के बराबर रफ़ा यदैन किया करते थे फिर **अल्लाहु अकबर** कहते और जब रुकूअ़ करने का इरादा करते तो उसी तरह करते और जब रुकूअ़ से सर उठाते तो उसी तरह करते और जब सज्दे से सर उठाते तो रफ़ा यदैन नही करते थे।

(जिल्द १, स० २८७, २८८)

١٣٧ - (٣) حدثنا الحسين بن إسماعيل المحاملى ومحمد بن سليمان الباهلى قالا حدثنا أبو عتبة أحمد بن الفرج حدثنا بقية حدثنا الزبيدى عن الزهرى عن سالم عن أبيه قال كان النبى صلى الله عليه وسلم إذا قام إلى الصلاة رفع يديه حتى إذا كانتا حذو منكبيه كبر ثم إذا اراد أن يركع رفعهما حتى يكونا حذو منكبيه وهما كذلك ثم يركع ثم إذا أراد أن يرفع صلبه رفعهما حتى يكونا حذو منكبيه ثم قال « سمع الله لمن حمده ». ثم سجد فلا يرفع يديه فى السجود ويرفعهما فى كل تكبيرة يكبرها قبل الركوع حتى ينقضى صلاته (سنن الدارقطني — ص: ٢٨٨ ج: ١)

हदीस १३७ (३) : हमें हुसैन बिन इसमाईल महामली और मुहम्मद बिन सुलेमान बाहिली ने हदीस सुनाई, दोनों ने कहा हमें अबू उत्बा अहमद बिन फरज ने, उन्हें बकिया ने, उन्हें जुबैदी ने, उन्हें जुहरी ने, उन्हें सालिम ने उन्हें उनके वालिद ने, उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज के लिए खडे होते तो मोंढों के बराबर रफा यदैन किया करते थे और **अल्लाहु अकबर** कहते। फिर जब रुकूअ़ का इरादा करते तो भी रफा यदैन करते मोंढों के बराबर फिर रुकूअ़ करते। और जब पीठ को रुकूअ़ से उठाते तो दोनों हाथों को मोंढों के बराबर उठाते फिर **समिअल्लाहुलिमन हमिदह** कहते। फिर सज्दा करते और सज्दों में रफा

यदैन नहीं करते थे और रुकूअ से कब्ल हर तक्बीर में रफा यदैन करते यहाँ तक कि आप की नमाज पूरी हो जाती। (जिल्द १, स० २८८)

١٣٨- (٤) حدثنا أبو بكر النيسابوري حدثنا عيسى بن ابراهيم الغافقي ابو موسى حدثنا عبد الله بن وهب قال اخبرني يونس عن ابن شهاب عن سالم بن عبد الله أن عبد الله بن عمر قال رايت رسول الله صلى الله عليه وسلم إذا قام إلى الصلاة رفع يديه حتى يكونا حذو منكبيه ثم يكبر وكان يفعل ذلك حين يكبر للركوع ويفعل ذلك حين يرفع رأسه من الركوع ويقول : سمع الله لمن حمده. ولا يفعل ذلك حين يرفع رأسه من السجود.(سنن الدارقطني –ص:٢٨٨ج:١)

हदीस १३८ (४) : हमें अबू बकर नीशापुरी ने खबर दी, उन्हें ईसा बिन इब्राहीम गाफ़ेकी ने, उन्हें अबू मूसा ने, उन्हें अब्दुल्लाह बिन वहब ने, उन्हें यूनुस ने उन्हें इब्ने शिहाब ने, उन्हें सालिम बिन अब्दुल्लाह ने, कि अब्दुल्लाह बिन उमर रजि० ने कहा कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा जब आप नमाज के लिए खड़े होते तो मोंढों के बराबर रफा यदैन किया करते थे फिर तक्बीर कहते और उसी तरह करते जब रुकूअ के लिए **अल्लाहु अकबर** कहते। और उसी तरह करते जब रुकूअ से सर उठाते और **समिअल्लाहुलिमन हमिदह** कहते। और जब सज्दों से सर उठाते तो उस वक्त रफा यदैन नहीं करते थे। (जिल्द १, स० २८८)

١٣٩- (٥) حدثنا ابو بكر النيسابوري حدثنا يوسف بن سعيد حدثنا حجاج حدثنا ليث حدثني عقيل ح وحدثنا أبو بكر حدثنا محمد بن عزيز حدثنا سلامة عن عقيل عن ابن شهاب عن سالم عن ابن عمر عن النبي صلى الله عليه وسلم بهذا يرفع ثم يكبر (سنن الدارقطني – ص:٢٨٨ج:١)

हदीस १३९ (५) : हमें अबू बकर नीशापुरी ने खबर दी, उन्हें यूसुफ बिन सईद ने उन्हें हज्जाज ने उन्हें लैस ने उन्हें अकील ने (**दूसरी सनद**) हमें अबू बकर ने खबर दी, उन्हें मुहम्मद बिन अजीज ने, उन्हें सलामा ने उन्हें अकील ने, उन्हें इब्ने शिहाब ने, उन्हें सालिम ने, उन्हें इब्ने उमर रजि० ने उन्होंने नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कि इसी तरह आप रफा यदैन करते फिर **अल्लाहु अकबर** कहते। (जिल्द १, स० २८८)

١٤٠- (٦) حدثنا أبو بكر حدثنا محمد بن يحيى ومحمد بن إسحاق قالا حدثنا يعقوب بن إبراهيم حدثنا ابن أخي ابن شهاب عن عمه اخبرني سالم عن عبد الله قال كان النبي صلى الله عليه وسلم إذا قام إلى الصلاة رفع يديه حتى إذا كانتا حذو منكبيه كبر نحوه. (سنن الدارقطني – ص:٢٨٩ج:١)

हदीस १४० (६) : हमें अबू बकर ने खबर दी, उन्हें मुहम्मद बिन यहया और मुहम्मद बिन इसहाक ने, दोनों ने कहा हमें याकूब बिन इब्राहीम ने, उन्हें इब्ने अखी इब्ने शिहाब (इब्ने शिहाब के भतीजे ने) उन्होंने अपने चचा (इब्ने शिहाब) से उन्होंने सालिम से, उन्होंने अब्दुल्लाह रजि० से, उन्होंने कहा नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नमाज के लिए खड़े होते तो मोंढों के बराबर रफा यदैन करते, फिर **अल्लाहु अकबर** कहते। (पहली हदीस की तरह) (जिल्द १, स० २८९)

١٤١- (٧) حدثنا أبو بكر حدثنا محمد بن يحيى وأحمد بن يوسف السلمي قالا حدثنا عبد الرزاق عن معمر عن الزهري عن سالم عن ابن عمر قال كان رسول الله صلى الله عليه وسلم يرفع يديه حين يكبر حتى يكونا حذو منكبيه او قريبا من ذلك ثم ذكر نحوه .(سنن الدارقطني – ص:٢٨٩ج:١)

हदीस १४१ (७) : हम को अबू बकर ने खबर दी, उनको मुहम्मद बिन यहया और अहमद बिन यूसुफ ने, उन्होंने कहा हम को अब्दुर्रज्जाक ने मामर से खबर दी, उन्होंने जुहरी से उन्होंने सालिम से उन्होंने अब्दुल्लाह बिन उमर रजि० से उस ने कहा कि आंहजरत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब **अल्लाहु अकबर** कहते तो अपने दोनों हाथों को अपने कन्धों के बराबर या उस से जरा करीब बुलन्द करते फिर पहली हदीस की तरह जिक्र किया। (जिल्द १, स० २८९)

-١٤.. (٨) حدثنا ابو بكر حدثنا محمد بن إسحاق حدثنا على بن ...ياش وابو اليمان قالا حدثنا شعيب عن الزهرى بهذا إذا افتتح ...تكبير فى الصلاة رفع يديه حين يكبر حتى يجعلهما حذو ...منكبيه نحوه. (سنن الدارقطني – ص:٢٨٩ج:١)

हदीस १४२ (८) : हमें अबू बकर ने खबर दी, उन्हें मुहम्मद बिन इस... ने उन्हें अली बिन अय्याश ने और अबू यमान ने, दोनों ने कहा हमें शु... खबर दी, उन्हें जुहरी ने कि जब नमाज़ में तक्बीर शुरू करते तो मों... बराबर रफा यदैन करते, मज़्कूरा हदीस की तरह। (जिल्द २, स० २...

-١٤.. (٩) حدثنا أحمد بن محمد بن أبى بكر الواسطى حدثنا ...يد الله بن سعد حدثنى عمي حدثنا ابن اخي الزهرى عن عمه ...برني سالم ان عبد الله قال كان رسول الله صلى الله عليه ...سلم إذا قام إلى الصلاة رفع يديه حتى إذا كانتا حذو منكبيه ...كبر ثم إذا اراد ان يركع رفعهما حتى يكونا حذو منكبيه ...كبر وهما كذلك ثم يركع ثم إذا اراد آن يرفع صلبه رفعهما ...حتى تكونا حذو منكبيه ثم قال سمع الله لمن حمده ثم يسجد فلا ...يرفع يديه فى شيء من السجود ويرفعهما فى كل ركعة وتكبيرة ...يكبرها قبل الركوع حتى ينقضى صلاته. (سنن الدارقطني – ص:٢٨٩ج:١)

हदीस १४३ (६) : हमें अहमद बिन मुहम्मद बिन अबू बकर वासि... खबर दी, उन्हें उबैदुल्लाह बिन सअद ने, उन्हें उनके चचा ने, उन्हें... अखी जुहरी (जुहरी के भतीजे) ने उनको उनके चचा (इब्ने शिहाब जु... ने उन्हें सालिम ने कि अब्दुल्लाह रजि० ने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज के लिए खड़े होते तो मों... बराबर रफा यदैन करते फिर **अल्लाहु अकबर** कहते। फिर जब रुकूअ... इरादा करते तो (भी) मोंढों के बराबर रफा यदैन करते, फिर रुकूअ क... फिर जब रुकूअ से पीठ उठाते तो भी मोंढों के बराबर रफा यदैन करते... **समिअल्लाहुलिमन हमिदह** कहते फिर सज्दा करते। सज्दा में रफा य... नही करते थे। और रुकूअ से पहले हर रकअत और तक्बीर में रफा य...

...किया करते थे। यहाँ तक कि आप की नमाज़ पूरी हो जाती।

(जिल्द १, स० २८६)

-١٤٤ (١٠) حدثنا ابو بكر النيسابورى حدثنا عيسى بن ابى عمران حدثنا الوليد بن مسلم حدثنا زيد بن واقد عن نافع قال كان ابن عمر إذا راى رجلا يصلى لا يرفع يديه كلما خفض ورفع حصبه حتى يرفع. (سنن الدارقطني –ص:٢٨٩ج:١)

हदीस १४४ (१०) : हमें अबू बकर नीशापुरी ने खबर दी, उन्हें ईसा बिन अबू इमरान ने, उन्हें वलीद बिन मुस्लिम ने, उन्हें ज़ैद बिन वाकिद ने, उन्हें नाफे ने उन्होंने कहा कि इब्ने उमर रजि० जब किसी आदमी को देखते कि नमाज में रफा यदैन नहीं करता तो उसे कंकरियाँ मारा करते थे यहाँ तक कि रफा यदैन कर लेते। (जिल्द १, स० २८६)

-١٤٥ (١١) حدثنا الحسين بن إسماعيل حدثنا على بن شعيب حدثنا سفيان بن عيينة عن عاصم بن كليب عن أبيه عن وائل بن حجر قال رأيت رسول الله صلى الله عليه وسلم إذا افتتح الصلاة رفع يديه حتى حاذتا منكبيه وحين أراد أن يركع وبعد ما يرفع رأسه من الركوع ووضع يده اليمنى على فخذه الأيمن ويده اليسرى على فخذه الأيسر وحلق حلقة ودعا هكذا وأشار سفيان بإصبعه السبابة، قال: وأتيتهم يعنى أصحاب رسول الله صلى الله عليه وسلم فوجدتهم يرفعون أيديهم فى برانسهم فى الشتاء. (سنن الدارقطني – ص:٢٩٠- ٢٩١ ج:١)

हदीस १४५ (११) : हमें हुसैन बिन इस्माईल ने खबर दी, उन्हें अली बिन शुऐब ने, उन्हें सुफियान बिन उयैना ने, उन्हें आसिम बिन कुलैब ने, उन्हें उनके वालिद ने, उन्हें वाइल बिन हुज्र रजि० ने, उन्होंने कहा मैंने नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा जब नमाज शुरू करते तो मोंढों के बराबर रफा यदैन करते थे, और जब रुकूअ करते और रुकूअ से सर उठाने के बाद भी रफा यदैन किया करते थे और दायाँ हाथ दाएं रान पर रखते और बायाँ हाथ बाएं रान पर और उंगलियों का हल्का बनाते और इस तरह दुआ की। और सुफियान ने शहादत की उंगली से इशारा किया।

वाइल बिन हुज्र रजि० कहते है कि फिर मैंने उनको देखा यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को कि वह चादरो के सर्दियो में रफा यदैन किया करते थे। (जिल्द १, स० २९०,२९१)

١٤٦- (١٢) حدثنا الحسين بن إسماعيل حدثنا يوسف بن موسى حدثنا جرير عن عاصم بن كليب عن ابيه عن وائل بن حجر قال رأيت النبى صلى الله عليه وسلم حين افتتح الصلاة يرفع يديه الى اذنيه واذا ركع واذا قال « سمع الله لمن حمده »، رفع يديه. (سنن الدارقطني – ص:٢٩٢ج:١)

हदीस १४६ (१२) - हमे हुसैन बिन इस्माईल ने खबर दी, उन्हे यूसुफ बिन मूसा ने, उन्हे जरीर ने, उन्हे आसिम बिन कुलैब ने, उन्होंने अपने वालिद से उन्होने वाइल बिन हुज्र रजि० से, कि मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा जब नमाज शुरु करते और रुकूअ करते और जब **समिअल्लाहुलिमन हमिदह** कहते तो कान बराबर रफा यदैन किया करते थे। (जिल्द १, स० २९२)

١٤٧- (١٣) حدثنا ابن مبشر حدثنا احمد بن سنان ح وحدثنا محمد بن جعفر بن رميس حدثنا محمد بن حسان قالا حدثنا عبد الرحمن بن مهدى حدثنا شعبة يعنى عن قتادة. وحدثنا عبد الله بن عبد العزيز حدثنا أبو كامل حدثنا ابو عوانة عن قتادة عن نصر بن عاصم عن مالك بن الحويرث أن رسول الله صلى الله عليه وسلم كان يرفع يديه إذا استفتح الصلاة وإذا أراد أن يركع وبعد ما يرفع رأسه من الركوع قال ابن مبشر ان رسول الله صلى الله عليه وسلم كان إذا استفتح الصلاة رفع يديه واذا اراد ان يركع واذا رفع راسه من الركوع. وقال ابو عوانة كان يرفع يديه إذا كبر واذا ركع واذا رفع راسه من الركوع فقال « سمع الله لمن حمده » رفع يديه حذو منكبيه (سنن الدارقطني –ص:٢٩٢ج:١)

हदीस १४७ (१३) : हमे इब्ने मुबश्शिर ने खबर दी, उन्हे अहमद बिन सिनान ने (**दूसरी सनद**) हमे मुहम्मद बिन जाफर बिन रमीस

खबर दी, उन्हे मुहम्मद बिन हस्सान ने दोनों ने कहा हमे अब्दुर्रहमान महदी ने खबर दी, उन्हे शो'बा ने उन्हें कतादा ने (**तीसरी सनद**) और हमें अब्दुल्लाह बिन अब्दुल अजीज ने उन्हें अबू कामिल ने, उन्हें अबू अवाना ने, उन्हें कतादा ने, उन्हें नस्र बिन आसिम ने, उन्हे मालिक बिन हुवैरिस ने कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज़ शुरू करते और जब रुकूअ का इरादा करते और रुकूअ से सर उठाते तो रफा यदैन किया करते थे। इब्ने मुबश्शिर ने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज़ शुरू करते और जब रुकूअ का इरादा करते और रुकूअ से सर उठाते तो रफा यदैन किया करते थे। और अबू अवाना ने कहा कि जब **अल्लाहु अकबर** कहते और जब रुकूअ करते और रुकूअ से सर उठाते तो **समिअल्लाहुलिमन हमिदह** कहते और मोढों के बराबर रफा यदैन किया करते थे। (जिल्द १, स० २९२)

١٤٨- (١٤) حدثنا دعلج بن احمد حدثنا عبد الله بن شيرويه حدثنا إسحاق بن راهويه حدثنا النضر بن شميل حدثنا حماد بن سلمة عن الأزرق بن قيس عن حطان بن عبد الله عن أبى موسى الأشعرى قال هل اريكم صلاة رسول الله صلى الله عليه وسلم؟ فكبر ورفع يديه ثم كبر ورفع يديه للركوع ثم قال سمع الله لمن حمده ثم رفع يديه ثم قال هكذا فاصنعوا ولا يرفع بين السجدتين. (سنن الدارقطني –ص:٢٩٢ج:١)

हदीस १४८ (१४) : हमे द'लज बिन अहमद ने खबर दी, उन्हे अब्दुल्लाह बिन शीरवैह ने खबर दी, उन्हे इस्हाक बिन राहवैह ने खबर दी उन्हें नज्र बिन शुमैल ने, उन्हें हम्माद बिन सलमा ने, उन्हें अजरक बिन कैस ने, उन्हें हित्तान बिन अब्दुल्लाह ने, उन्हे अबू मूसा अशअरी रजि० ने, उन्होंने कहा क्या मैं तुम को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नमाज न दिखाऊं? पस **अल्लाहु अकबर** कहा और रफा यदैन की, फिर **अल्लाहु अकबर** कहा और रुकूअ के लिए रफा यदैन की फिर **समिअल्लाहुलिमन हमिदह** कहा फिर रफा यदैन की फिर फरमाया तुम भी इसी तरह किया करो। और दो सज्दो के दर्मियान रफा यदैन नहीं करते थे। (जिल्द १ स० २९२)

١٤٩- (١٥) حدثنا ابو سعيد محمد بن عبد الله بن إبراهيم بن مشكان المروزى حدثنا عبد الله بن محمود حدثنا عبد الكريم بن عبد الله عن وهب بن زمعة عن سفيان بن عبد الملك عن عبد الله بن المبارك قال لم يثبت عندى حديث ابن مسعود ان رسول الله صلى الله عليه وسلم رفع يديه اول مرة ثم لم يرفع، وقد ثبت عندى حديث من يرفع يديه إذا ركع وإذا رفع. قال ابن المبارك ذكره عبيد الله العمرى ومالك ومعمر وسفيان ويونس ومحمد بن ابى حفصة عن الزهرى عن سالم عن ابيه عن النبى صلى الله عليه وسلم. (سنن الدارقطني –ص:٢٩٢ج:١)

हदीस १४९ (१५) : हमें अबू सईद मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन इब्राहीम बिन मुश्कान मरवजी ने खबर दी, उन्हें अब्दुल्लाह बिन महमूद ने, उन्हें अब्दुल करीम बिन अब्दुल्लाह ने, उन्हें वहब बिन जमआ ने, उन्हें सुफियान बिन अब्दुल मलिक ने, उन्हें अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह० ने, उन्होंने कहा कि मेरे नज्दीक अब्दुल्लाह बिन मसऊद रजि० की यह हदीस साबित ही नहीं कि "रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सिर्फ पहली दफा रफा यदैन किया करते थे, फिर नहीं करते थे।" बल्कि मेरे नजदीक रुकूअ् जाते और रुकूअ् से सर उठाते वक्त रफा यदैन करने की हदीस साबित है। इब्ने मुबारक रह० ने कहा उसको उबैदुल्लाह उमरी, मालिक, मअमर, सुफयान यूनुस और मुहम्मद बिन अबू हफसा ने जुहरी से, उन्होंने सालिम से, उन्होंने अपने वालिद से उन्होंने नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बयान की है।

(जिल्द १, स० २६३)

١٥٠- (١٦) حدثنا ابن صاعد حدثنا لوين محمد بن سليمان حدثنا صالح بن عمر الواسطى عن عاصم بن كليب عن ابيه عن وائل بن حجر قال اتيت النبى صلى الله عليه وسلم لأنظر كيف يصلى فاستقبل القبلة فكبر فرفع يديه حتى حاذي اذنيه فلما ركع رفع يديه حتى جعلهما بذلك المنزل فلما رفع راسه من الركوع رفع يديه حتى جعلهما بذلك المنزل فلما سجد وضع يديه من راسه بذلك المنزل. (سنن الدارقطني –ص:٢٩٥ج:١)

हदीस १५० (१६) : हमें इब्ने साइद ने, उन्हें लुवैन मुहम्मद बिन सुलेमान ने उन्हें सालेह बिन उमर वासिती ने, उन्हें आसिम बिन कुलैब ने, उन्होंने अपने वालिद से उन्होंने वाइल बिन हुज रजि० से कि मैं नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आया, ताकि देखूं कि आप कैसे नमाज पढ़ते हैं। आपने किब्ला की तरफ मुँह किया, **अल्लाहु अकबर** कहा और कानो के बराबर रफा यदैन की, रुकूअ् किया तो फिर भी कानों के बराबर रफा यदैन की, फिर जब रुकूअ् से सर उठाया तो भी उसी जगह तक रफा यदैन की, फिर जब सज्दा किया तो अपने हाथों को उसी जगह पर रखा। (जिल्द १, स० २६५)

١٥١- (١٧) حدثنا ابن صاعد حدثنا لوين حدثنا ابو الأحوص عن عاصم بن كليب عن ابيه عن وائل بن حجر عن النبى صلى الله عليه وسلم نحوه إلا انه لم يذكر السجود . (سنن الدارقطني – ص:٢٩٥ج:١)

हदीस १५१ (१७) : हमें इब्ने साइद ने हदीस बयान की कहते हैं हमें लुवैन ने हदीस बयान की, वह कहते हैं हमें अबुल अहवस ने आसिम बिन कुलैब से, उन्होंने अपने वालिद से, उन्होंने हजरत वाइल बिन हज्र रज़ि० से उन्होंने नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पहली हदीस की ही तरह मगर इसमें सज्दा का जिक्र नहीं (यानी फलम्मा सजदा वजआ) अल्फाज इस हदीस में नहीं। (जिल्द १, स० २६५)

١٥٢- (١٨) حدثنا أبو القاسم عبد الله بن محمد ابن عبد العزيز ثنا عثمان بن أبي شيبة ثنا إسماعيل بن عياش أبو عتبة عن صالح بن كيسان عن الأعرج عن أبي هريرة و صالح بن كيسان عن نافع عن ابن عمر قال كان رسول الله صلى الله عليه وسلم إذا افتتح الصلاة رفع يديه حذو منكبيه وإذا ركع وإذا رفع رأسه من الركوع.(سنن الدارقطني –ص:٢٩٦، ٢٩٥ج:١)

हदीस १५२ (१८) : हमें अबुल कासिम अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद बिन अब्दुल अजीज ने खबर दी, उन्हें उसमान बिन अबू शैबा ने, उन्हें इसमाईल बिन अय्याश ने, उन्हें अबू उतबा ने, उन्हें सालेह बिन कैसान ने, उन्हें अ'रज

ने उन्हें अबू हुरैरह रजि० ने (**दूसरी सनद**) और सालेह बिन कैसान ने, उन्हें नाफे ने, उन्हें इब्ने उमर रजि० उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज शुरु करते और जब रुकूअ् करते और जब रुकूअ् से सर उठाया करते तो मोंढों के बराबर रफा यदैन किया करते थे।

(जिल्द १, स० २६५, २६६)

❖ ❖ ❖

(१६) अल-मुन्तक़ा लेइब्निल-जारूद

(वफ़ात 307 हिजरी)

١٥٣- (١) حدثنا ابن المقرئ، وهارون بن إسحاق، ويوسف بن موسى، قالوا: ثنا سفيان عن الزهري، عن سالم، عن أبيه، رضي الله عنه أنه رأى النبي صلى الله عليه وسلم إذا افتتح الصلاة رفع يديه حتى يحاذي منكبيه وإذا اراد أن يركع وبعدما يرفع راسه من الركوع ولا يرفع بين السجدتين (المنتقى لابن الجارود– ص:٦٩)

हदीस १५३ (१) : हमें इब्ने मुकरी, हारून बिन इसहाक और यूसुफ बिन मूसा ने हदीस सुनाई, उन्हें सुफियान ने, उन्हें जुहरी ने, उन्हें सालिम ने उनको उनके वालिद (अब्दुल्लाह बिन उमर रजि०) ने कि उन्होंने नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा कि वह जब नमाज शुरू करते और जब रुकूअ् का इरादा करते और रुकूअ् से सर उठाने के बाद मोंढों बराबर रफा यदैन किया करते थे। और दो सज्दों के दर्मियान रफा यदैन नहीं किया करते थे। (स० ६९)

١٥٤- (٢) حدثنا علي بن خشرم قال: ثنا عبد الله يعني ابن ادريس عن عاصم بن كليب عن أبيه عن وائل بن حجر رضي الله عنه قلت: لأنظرن إلى صلاة رسول الله صلى الله عليه وسلم قال: فلما افتتح الصلاة كبر ورفع يديه فرأيت إبهاميه قريبا من اذنيه وذكر الحديث ، فسجد فوضع راسه بين يديه على مثل مقدارهما حين افتتح الصلاة (المنتقى لابن الجارود –ص:٧٩)

हदीस १५४ (२) : हमें अली बिन खशरम ने खबर दी, उन्हें अब्दुल्लाह यानी इब्ने इदरीस ने, उन्होंने आसिम बिन कुलैब से, उन्होंने अपने वालिद से, उन्होंने वाइल बिन हुज रजि० से, उन्होंने कहा मैं जरूर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नमाज देखूंगा। उन्होंने कहा जब आपने नमाज शुरु की तो **अल्लाहु अकबर** कहा और रफा यदैन की, मैंने आपके अंगूठों को कानों के बराबर देखा और पूरी हदीस जिक्र की। उन्होंने कहा, बस आपने सज्दा किया, फिर अपने सर को हाथों के दर्मियान रखा उसकी मिस्ल जब नमाज शुरू की। (स० ७९)

١٥٥- (٣) حدثنا محمد بن يحيى قال: ثنا يعقوب بن إبراهيم بن سعدقال: ثني ابن أخي ابن شهاب عن عمه قال: اخبرني سالم بن عبد الله أن عبد الله بن عمررضي الله عنهما قال: كان رسول الله صلى الله عليه وسلم إذا قام إلى الصلاة رفع يديه حتى إذا كانتا حذومنكبيه كبر ثم إذاأراد أن يركع رفعهماحتى يكوناحذو منكبيه كبروهماكذلك فركع ثم إذاأرادأن يرفع صلبه رفعهماحتى يكوناحذو منكبيه ثم قال: سمع الله لمن حمده ثم يسجد فلا يرفع يديه في السجود ورفعهما في كل ركعةوتكبيرة كبرها قبل الركوع حتى تنقضي صلاته (المنتقى لابن الجارود . ص:٦٩)

हदीस १५५ (३) : हमें मुहम्मद बिन यहया ने खबर दी, उन्हें याकूब बिन इब्राहीम बिन सअद ने, उन्हें इब्ने शिहाब के भाई के लड़के ने, उन्हें उनके चचा ने उन्होंने कहा मुझे सालिम बिन अब्दुल्लाह ने खबर दी कि अब्दुल्लाह बिन उमर रजि० ने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज के लिए खड़े होते तो कन्धों के बराबर रफा यदैन करते, फिर **अल्लाहु अकबर** कहते। फिर जब रुकूअ का इरादा करते तो रफा यदैन करते और जब हाथ मोंढों के बराबर होते तो **अल्लाहु अकबर** कहते और रुकूअ् करते फिर जब पीठ उठाने का इरादा करते तो मोंढों के बराबर रफा यदैन करते फिर **समिअल्लाहुलिमन हमिदह** कहते। फिर जब सज्दा करते तो सज्दों में रफा यदैन नहीं करते थे। रुकूअ् से पहले हर रकअत और तक्बीर पर रफा यदैन करते। यहाँ तक कि आपकी नमाज पूरी हो जाती। (स० ६९)

١٥٦- (٤) حدثنا محمد بن يحيى ، قال : انا ابو عاصم ، عن عبد الحميد بن جعفر ، عن محمد بن عمرو بن عطاء ، قال : سمعت ابا حميد الساعدي ، في عشرة من اصحاب رسول الله صلى الله عليه وسلم احدهم ابو قتادة رضي الله عنهم قال : إني لأعلمكم بصلاة رسول الله صلى الله عليه وسلم قالوا : لم فوالله ما كنت اكثرنا له تبعا ولا اقدمنا أو قال : أطول له منا صحبة قال : بلى قالوا : فاعرض قال : كان رسول الله صلى الله عليه وسلم إذا قام إلى الصلاة رفع يديه حتى يحاذي بهما منكبيه ثم كبر حتى يقر كل عظم في موضعه معتدلا ثم يقرأ ثم يكبر ويرفع يديه حتى يحاذي بهما منكبيه حتى يرجع كل عظم إلى منصله ثم يركع ويضع راحتيه على ركبتيه ثم يعتدل ولا يصوب ولا يقنع ثم يرفع راسه فيقول : « سمع الله لمن حمده » ، يرفع يديه حتى يحاذي منكبيه معتدلا قال ابو عاصم : أظنه قال : حتى يرجع كل عظم إلى موضعه ثم يقول : « الله أكبر » ، ثم يهوي إلى الأرض مجافيا يديه عن جنبيه ثم يسجد ثم يرفع رأسه فيثني رجله اليسرى فيقعد عليها وكان يفتح اصابع رجليه إذا سجد ثم يعود فيسجد ثم يرفع راسه فيقول : « الله اكبر » ويثني رجله اليسرى فيقعد عليها معتدلا حتى يرجع كل عظم الى موضعه ثم يصنع في الركعة الأخرى مثل ذلك حتى إذا قام من الركعتين كبر ورفع يديه حتى يحاذي بهما منكبيه كما فعل عند افتتاح الصلاة ثم صنع في بقية صلاته مثل ذلك حتى إذا كانت القعدة التي فيها التسليم آخر رجله اليسرى وجلس متوركا على شقه الأيسر قالوا : صدقت هكذا كان يفعل (المنتقى لابن الجارود –ص:٧٤- ٧٥)

हदीस १५६ (४) : हमें मुहम्मद बिन यहया ने खबर दी, उन्हें अबू आसिम ने उन्हें अब्दुल हमीद बिन जाफर ने, उन्हें मुहम्मद बिन अम्र बिन

अता ने उन्होंने कहा, मैंने अबू हुमैद साइदी रजि० को दस सहाबा की मौजूदगी में सुना। उन में से एक अबू कतादा रजि० थे। उन्होंने कहा मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नमाज को तुम से ज्यादा जानता हूँ। उन्होंने कहा कैसे? तुम अल्लाह की कसम हम से ज्यादा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैरवी करने वाले न थे और न ही हम से ज्यादा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुहबत में रहे। आपने कहा क्यों नहीं? उन्होंने ने कहा तो फिर पेश करो। आप ने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज के लिए खडे होते तो मोंढों के बराबर रफा यदैन किया करते थे फिर **अल्लाहु अकबर** कहते यहाँ तक कि हर हड्डी अपनी असली जगह पर आ जाती। फिर आप किरअत करते। फिर **अल्लाहु अकबर** कहते और मोंढों के बराबर रफा यदैन करते, यहाँ तक कि हर हड्डी अपनी असली जगह पर आ जाती। फिर रुकूअ़ करते और अपनी हथेलियाँ घुटनों पर रखते। फिर पीठ बराबर करते, न तो उसे ज्यादा झुकाते और न बुलन्द रखते। फिर अपना सर उठाते और **समिअल्लाहुलिमन हमिदह** कहते और मोंढों के बराबर रफा यदैन करते। अबू आसिम कहते हैं कि मेरा ख्याल है कि उस ने कहा है कि यहाँ तक कि हर हड्डी अपने असली मकाम पर आ जाती। फिर **अल्लाहु अकबर** कहते, फिर जमीन की तरफ झुकते, अपने हाथों को पहलुओं से दूर रखते, फिर सज्दा करते, फिर अपना सर उठाते, फिर बायाँ पाँव मोडते और उस पर बैठते और दोनों पाँव की उंगलियाँ खोलते सज्दे के वक्त फिर लौटते, पस सज्दा करते, फिर अपना सर उठाते और **अल्लाहु अकबर** कहते और बायाँ पाँव मोडते और सीधे बैठ जाते, यहाँ तक कि हर हड्डी अपने असली मकाम पर आ जाती। फिर दूसरी रकअत में भी ऐसा ही करते। फिर जब दो रकअत पढ कर खडे होते तो **अल्लाहु अकबर** कहते और मोंढों के बराबर रफा यदैन करते, जिस तरह शुरू नमाज में करते। फिर बाकी नमाज में उसी तरह करते, यहाँ तक कि जब सलाम वाला कअ़दा होता तो बायाँ पाँव को दायाँ पाँव के नीचे से निकालते और बाएं तरफ सुरीन पर टेक लगा कर बैठते। उन्होंने कहा (यानी मौजूद सहाबा ने) तूने सच कहा है, नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ऐसे ही किया करते थे। (स०, ७४, ७५)

١٥٧- (٥) حدثنا إسحاق بن منصور ، قال : ثنا عبد الرحمن يعني ابن مهدي ، عن زائدة بن قدامة ، عن عاصم بن كليب ، قال : اخبرني ابي أن وائل بن حجر ، رضي الله عنه قال : قلت : لأنظرن إلى رسول الله صلى الله عليه وسلم كيف يصلي قال : فنظرت إليه قام فكبر ورفع يديه حتى حاذتا بإذنيه ثم وضع كفه اليمنى على ظهر كفه اليسرى والرسغ والساعد ثم ركع فرفع يديه مثلها ثم سجد فجعل كفيه بحذاء اذنيه ثم جلس فافترش رجله اليسرى ووضع كفه اليسرى على فخذه وركبته اليسرى ووضع حد مرفقه اليمنى على فخذه اليمنى ثم قبض ثنتين من أصابعه وحلق حلقة ثم رفع إصبعه فرايته يحركها يدعو ثم جئت بعد ذلك في زمن فيه برد فرايت الناس وعليهم جل الثياب تحرك ايديهم من تحت الثياب (المنتقى لابن الجارود – ص:٨١)

हदीस १५७ (५) : हमें इसहाक बिन मन्सूर ने खबर दी, उन्हें अब्दुर्रहमान यानी इब्ने महदी ने, उन्हें जाइदा बिन कुदामा ने, उन्हें आसिम बिन कुलैब ने, उन्होंने कहा, मुझे मेरे वालिद ने खबर दी कि हज़रत वाइल बिन हुज्र रज़ि० ने कहा कि मैं जरूर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नमाज देखूंगा कि आप कैसे नमाज पढ़ते हैं, उन्होंने कहा, मैंने आपकी तरफ़ देखा, आप खड़े हुए पस **अल्लाहु अकबर** कहा और कानों के बराबर रफ़ा यदैन की। फिर दाएं हथेली को बाए हथेली और पहुंचे पर रखा फिर रुकूअ् किया और रफ़ा यदैन की और हाथों को कानों के बराबर रखा, फिर आप बैठे बायाँ पाँव बिछाया और बाएं हथेली को रान और बाएं घुटने पर रखा और दाएं कुहनी के सिरे को दाए रान पर। फिर दो उगलियाँ बन्द की और हल्का बनाया, फिर शहादत की उगली को उठाया। और मैंने देखा कि उसको हरकत देते थे। फिर मैं उसके बाद सर्दियों के मौसम में आपके पास आया तो लोगों को देखा उन पर बड़े बड़े कपड़े थे और उनके हाथ रफ़ा यदैन के लिए कपड़ो के नीचे से ही हरकत करते थे। (स० ८१)

❖ ❖ ❖

(१७) जुज़ओ रफ़इल यदैन इमाम बुख़ारी रह:

١٥٨- (١) اخبرنا إسماعيل بن ابي يونس ، حدثني عبد الرحمن بن ابي الزناد ، عن موسى بن عقبة ، عن عبد الله بن الفضل الهاشمي، عن عبد الرحمن بن هرمز الأعرج ، عن عبيد الله بن ابي رافع ، عن علي بن ابي طالب ، رضي الله تعالى عنه ان رسول الله صلى الله عليه وسلم : كان يرفع يديه إذا كبر للصلاة حذو منكبيه ، وإذا أراد ان يركع ، وإذا رفع رأسه من الركوع ، وإذا قام من الركعتين فعل مثل ذلك (جزء رفع اليدين للإمام البخاري: رقم الحديث: ١)

हदीस १५८ (१) : हमें इस्माईल बिन अबू यूनुस ने खबर दी है, वह कहते हैं मुझे अब्दुर्रहमान बिन अबु ज़िनाद ने मूसा बिन उक्बा से, उन्होंने अब्दुल्लाह बिन फ़ज़ल हाशमी से, उन्होंने अब्दुर्रहमान बिन हरमुज अ'रज से, उन्होंने उबैदुल्लाह बिन अबू राफ़े से, उन्होंने हजरत अली बिन अबू तालिब रज़ि० से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नमाज के लिए तक्बीर कहते वक्त और रुकूअ् को जाते वक्त और रुकूअ् से सर उठाते वक्त और दो रकअत से (तीसरी के लिए) उठते वक्त कन्धों के बराबर तक अपने दोनों हाथों को उठाते थे। (हदीस नम्बर : १)

١٥٩- (٢) أخبرنا علي بن عبد الله ، حدثنا سفيان ، حدثنا الزهري عن سالم بن عبد الله عن ابيه قال : رايت رسول الله صلى الله عليه وسلم يرفع يديه إذا كبر، وإذا رفع راسه من الركوع ، ولا يفعل ذلك بين السجدتين، قال علي بن عبد الله وكان أعلم زمانه: رفع اليدين حق على المسلمين بما روى الزهري عن سالم عن ابيه (جزء رفع اليدين للإمام البخاري: رقم الحديث: ٢)

हदीस १५९ (२) : हमें अली बिन अब्दुल्लाह ने हदीस बयान की है वह कहते है, हमें सुफ़ियान ने, वह कहते है जुहरी ने सालिम बिन अब्दुल्लाह से,

सालिम बिन अब्दुल्लाह ने अपने वालिद रज़ि० से रिवायत की है, उन्हों बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा। आप जब तक्बीर कहते तो रफ़ा यदैन करते, और जब रुकूअ़ से सर उठा तो रफ़ा यदैन करते और दो सज्दों के दर्मियान रफ़ा यदैन नहीं करते थे। अली बिन अब्दुल्लाह जो अपने ज़माना के बहुत बड़े आलिम हैं उन्होंने फ़ैसला किया है कि इब्ने शिहाब जुहरी की इस हदीस की बिना पर जिस को सालिम ने अपने वालिद अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० से रिवायत किया है, रफ़ा यदैन करना तमाम मुसलमानों पर हक़ और ज़रूरी है। (हदीस नम्बर : २)

١٦٠- (٣) حدثنا مسدد ، حدثنا يحيى بن سعيد ، حدثنا عبد الحميد بن جعفر ، حدثنا محمد بن عمرو قال : شهدت أبا حميد في عشرة من أصحاب النبي صلى الله عليه وسلم ، احدهم ابو قتادة بن ربعي رضي الله عنه يقول : « أنا أعلمكم بصلاة رسول الله صلى الله عليه وسلم ، قالوا كيف ؟ فوالله ما كنت أقدمنا له صحبة ، ولا أكثرنا له اتباعا ؛ قال : بل رقبته ،قالوا: فاذكر قال: كان إذا قام إلى الصلاة رفع يديه ،وإذا ركع ،وإذا رفع رأسه من الركوع ،وإذا قام من الركعتين فعل مثل ذلك.» قال البخاري: سألت أبا عاصم عن حديث عبد الحميد بن جعفر فعرفه (جزء رفع اليدين للإمام البخاري: رقم الحديث: ٣)

हदीस १६० (३) : हमें मुसद्दद ने हदीस बयान की, वह कहते हैं हमें यहया बिन सईद ने, वह कहते हैं हमें अब्दुल हमीद बिन जाफ़र ने, वह कहते हैं मुहम्मद बिन अम्र से रिवायत है कि वह अबू हुमैद रज़ि० के पास आये जब कि वह दस सहाबा रज़ि० की जमाअत में तशरीफ़ फ़रमा थे। उन में से एक अबू कतादा रज़ि० थे। उसने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नमाज़ को मैं तुम से ज़्यादा जानता हूँ। उन्होंने पूछा, वह किस तरह? अल्लाह तआला की कसम न हम से पहले तुम को सहाबी बनने का शर्फ़ हासिल है और न ही तुम ने हम से ज़्यादा (अरसा) उनकी पैरवी की है। उस ने जवाब दिया कि मैंने आपकी नमाज़ को पूरी तवज्जोह से देखा है, तो सहाबा रज़ि० ने कहा कि बताओ। फिर उन्होंने बयान किया कि रसूलुल्लाह

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज़ के लिए खड़े होते तो रफ़ा यदैन करते और जब रुकूअ़ करते और जब रुकूअ़ से सर उठाते तो रफ़ा यदैन करते और जब दो रकअ़त से (तीसरी के लिए) उठते तो बदस्तूर रफ़ा यदैन करते। इमाम बुखारी ने कहा कि मैंने अब्दुल हमीद बिन जाफ़र की हदीस के मुतअल्लिक अबू आसिम से पूछा तो उन्होंने उसको जान पहचान लिया। (हदीस नम्बर : ३)

١٦١- (٤) حدثني عبد الله بن محمد ،عنه حدثنا عبد الحميد بن جعفر ،حدثنا محمد بن عمرو بن عطاء قال: شهدت أبا حميد في عشرة من أصحاب النبي صلى الله عليه وسلم أحدهم أبو قتادة بن ربعي قال : « أنا أعلمكم بصلاة النبي صلى الله عليه وسلم ، فذكر مثله ، فقالوا كلهم : صدقت (جزء رفع اليدين للإمام البخاري: رقم الحديث: ٤)

हदीस १६१ (४) : बुखारी ने कहा कि मुझ को अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने उस (अबू आसिम) से हदीस सुनाई। अबू आसिम ने अब्दुल हमीद बिन जाफ़र से, उस ने कहा कि मुहम्मद बिन अम्र बिन अता ने हदीस सुनाई, उस ने कहा कि मैं अबू हुमैद रज़ि० के पास आया और वह दस सहाबा रज़ि० की जमाअत में तशरीफ़ फ़रमा थे। उन में अबू कतादा बिन रिबई रज़ि० भी थे। अबू हुमैद रज़ि० ने कहा कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नमाज़ को तुम से ज़्यादा जानता हूँ। पस उस ने पहली हदीस की मिस्ल हदीस बयान की। सुन कर सब सहाबा रज़ि० ने कहा 'सदक़्ता' आपने सच कहा है। (हदीस नम्बर : ४)

١٦٢- (٥) حدثني عباس بن سهل قال : اجتمع أبو حميد ،وأبو أسيد ، وسهل بن سعد ، ومحمد بن مسلمة فذكروا صلاة رسول الله صلى الله عليه وسلم ، فقال أبو حميد : أنا أعلمكم بصلاة رسول الله صلى الله عليه وسلم ، قام فكبر فرفع يديه ، ثم رفع يديه حين كبر للركوع ،فوضع يديه على ركبتيه (جزء رفع اليدين للإمام البخاري: رقم الحديث: ٥)

हदीस १६२ (५) : अब्बास बिन सहल से रिवायत है कि अबू हुमैद

रज़ि० अबू उसैद रज़ि० सहल बिन सअद रज़ि०, मुहम्मद बिन मसलमा रज़ि० यह (एक जगह) जमा हुए तो उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नमाज का जिक्र किया। अबू हुमैद रज़ि० ने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नमाज को मैं तुम सब से ज्यादा जानता हूँ कि वह खड़े हुए, तक्बीर कही, रफा यदैन की। फिर उस वक्त रफा यदैन की जब रुकूअ् के लिए तक्बीर कही। फिर अपने दोनों हाथ अपने दोनों घुटनों पर रखे। (हदीस नम्बर : ५)

١٦٣- (٦) حدثنا عبيد بن يعيش ، حدثنا يونس بن بكير ، اخبرنا ابن إسحاق ، عن العباس بن سهل الساعدي قال : كنت بالسوق مع ابي قتادة ، وابي اسيد ، وابي حميد كلهم يقول : انا اعلمكم بصلاة رسول الله صلى الله عليه وسلم . فقالوا لأحدهم : صل . فكبر ثم قرا ثم كبر وركع ،فقالوا : اصبت صلاة رسول الله صلى الله عليه وسلم (جزء رفع اليدين للإمام البخاري: رقم الحديث: ٦)

हदीस १६३ (६) : अब्बास साइदी से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मैं बाज़ार में अबू कतादा रज़ि०, अबू उसैद रज़ि०, अबू हुमैद रज़ि० के साथ था। उन में से हर एक यह कह रहा था कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नमाज को मैं तुम से ज्यादा जानता हूँ। उन्होंने अपने में से एक को कहा कि नमाज पढ़ (कर दिखाइए) पस उसने तक्बीर कही फिर किरअत की फिर तक्बीर कही और रुकूअ् किया पस सब ने शहादत दी कि हकीकत में तूने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नमाज पढ़ी है। (हदीस नम्बर : ६)

١٦٤- (٧) حدثنا ابو الوليد هشام بن عبد الملك ، وسليمان بن حرب قالا : اخبرنا شعبة ، عن قتادة ، عن نصر بن عاصم ، عن مالك بن الحويرث قال : كان رسول الله صلى الله عليه وسلم إذا كبر رفع يديه ، وإذا ركع وإذا رفع راسه من الركوع (جزء رفع اليدين للإمام البخاري: ص: ٣٨)

हदीस १६४ (७) : हमें अबुल वलीद हिशाम बिन अब्दुल मलिक और सुलेमान बिन हर्ब ने हदीस बयान की, दोनों ने कहा हमें शो'बा ने कतादा से हदीस बयान की, उन्होंने नस्र बिन आसिम से रिवायत की है कि मालिक बिन हुवैरिस रज़ि० ने बयान किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब तक्बीर कहते तो रफा यदैन करते और जब रुकूअ् करते और जब रुकूअ् से सर उठाते तो भी रफा यदैन किया करते थे। (हदीस नम्बर : ३८)

١٦٥- (٨) حدثنا محمد بن عبد الله بن حوشب ، حدثنا عبد الوهاب ، حدثنا حميد ، عن أنس رضي الله عنه قال : كان رسول الله صلى الله عليه وسلم يرفع يديه عند الركوع (جزء رفع اليدين للإمام البخاري: رقم الحديث: ٨)

हदीस १६५ (८) : हमें मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन हौशब ने हदीस बयान की है, वह कहते हैं हमें अब्दुल वह्हाब ने हदीस बयान की है, वह कहते हैं कि हमें हुमैद ने रिवायत किया है कि अनस रज़ि० ने बयान किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रुकूअ् के वक्त रफा यदैन करते थे। (हदीस नम्बर : ८)

١٦٦- (٩) حدثنا ابو نعيم الفضل بن دكين ، انبانا قيس بن سليم العنبري قال : سمعت علقمة بن وائل بن حجر ، حدثني ابي قال: صليت مع النبي صلى الله عليه وسلم فكبر حين افتتح الصلاة ورفع يديه ، ثم رفع يديه حين أراد ان يركع ، وبعد الركوع (جزء رفع اليدين للإمام البخاري: رقم الحديث: ١٠)

हदीस १६६ (९) : हमें अबू नईम फज़ल बिन दुकैन ने हदीस बयान की, उन्होंने कहा हमें कैस बिन सुलैम अंबरी ने खबर दी, वह कहते हैं मैंने अल्कमा बिन वाइल बिन हुज्र से सुना है, अल्कमा बिन वाइल ने अपने वालिद से रिवायत की है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ नमाज पढ़ी, आपने तक्बीर कही, नमाज शुरू की और रफा यदैन की। फिर जब रुकूअ् का इरादा किया रफा यदैन की और रुकूअ् के बाद भी रफा यदैन की। (हदीस नम्बर : १०)

١٦٧- (١٠) حدثنا عبد الله بن يوسف، انبانا مالك، عن ابن شهاب عن سالم بن عبد الله عن ابيه ان رسول الله صلى الله عليه وسلم كان يرفع يديه حذو منكبيه إذا افتتح الصلاة وإذا كبر للركوع، وإذا رفع رأسه من الركوع رفعهما كذلك ، وكان لا يفعل ذلك في السجود ، (جزء رفع اليدين للإمام البخاري: رقم الحديث: ١٢)

हदीस १६७ (१०) : हमें अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने हदीस बयान की वह कहते हैं कि हमें मालिक ने इब्ने शिहाब जुहरी से खबर दी, उन्होंने सालिम बिन अब्दुल्लाह बिन उमर से, सालिम बिन अब्दुल्लाह ने अपने वालिद से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने कन्धों के बराबर तक रफ़ा यदैन किया करते जब नमाज शुरू करते और जब रुकूअ़ के लिए तक्बीर कहते और जब रुकूअ़ से अपना सर उठाते बदस्तूर रफ़ा यदैन किया करते और सज्दों में नहीं करते थे। (हदीस नम्बर : १२)

١٦٨- (١١) حدثنا الحميدي ، انبانا الوليد بن مسلم ، قال سمعت زيد بن واقد يحدث عن نافع ان ابن عمر ، كان إذا رأى رجلا لا يرفع يديه إذا ركع ، وإذا رفع رماه بالحصى (جزء رفع اليدين للإمام البخاري: رقم الحديث: ١٥)

हदीस १६८ (११) : हमें हुमैदी ने हदीस बयान की, वह कहते हैं हमें वलीद बिन मुस्लिम ने खबर दी है, वह कहते हैं मैंने जैद बिन वाकिद को नाफ़े से हदीस बयान करते सुना है। नाफ़े से रिवायत है उसने बयान किया कि इब्ने उमर जब किसी को रुकूअ़ के वक्त और रुकूअ़ से सर उठाते वक्त रफ़ा यदैन न करता देखते तो उसको कंकरियाँ मारते। (हदीस नम्बर : १५)

١٦٩- (١٢) حدثنا مالك بن إسماعيل حدثنا شريك عن ليث عن عطاء قال : رأيت ابن عباس وابن الزبيروأبا سعيد وجابرا يرفعون أيديهم إذا افتتحوا الصلاة،وإذا ركعوا (جزء رفع اليدين للإمام البخاري: رقم الحديث: ١٨)

हदीस १६९ (१२) : हमें मालिक बिन इस्माईल ने हदीस बयान की उन्हें शरीक ने लैस से उन्होंने अता से रिवायत की, उन्होंने बयान किया

कि मैंने इब्ने अब्बास रजि०, इब्ने जुबैर रजि०, अबू सईद रजि०, और जाबिर रजि० को देखा है, वह रफ़ा यदैन करते थे जब नमाज शुरू करते और जब रुकूअ़ करते। (हदीस नम्बर : १८)

١٧٠- (١٣) حدثنا محمد بن الصلت ، حدثنا أبو شهاب عبد ربه ، عن محمد بن إسحاق ، عن عبد الرحمن الأعرج ، عن أبي هريرة ، انه كان إذا كبر رفع يديه ، وإذا ركع ، وإذا رفع رأسه من الركوع (جزء رفع اليدين للإمام البخاري: رقم الحديث: ١٩)

हदीस १७० (१३) : हमें मुहम्मद बिन सल्त ने हदीस बयान की, उन्हें अबू शिहाब बिन अब्दे रब्बा ने मुहम्मद बिन इसहाक़ से, उन्होंने अब्दुर्रहमान अरज से रिवायत की है कि हजरत अबू हुरैरह रजि० जब तक्बीर कहते तो रफ़ा यदैन करते और जब रुकूअ़ करते और रुकूअ़ से सर उठाते। (रफ़ा यदैन करते) (हदीस नम्बर : १९)

١٧١- (١٤) حدثنا مسدد حدثنا عبد الواحد بن زيادعن عاصم الأحول قال : رأيت أنس بن مالك رضي الله عنه ، إذا افتتح الصلاة كبر ، ورفع يديه ، ويرفع كلما ركع ورفع رأسه من الركوع ، (جزء رفع اليدين للإمام البخاري: رقم الحديث: ٢٠)

हदीस १७१ (१४) : हमें मुसद्दद ने हदीस बयान की, उन्हें अब्दुल वाहिद बिन ज्याद ने, उन्होंने आसिम अहवल से रिवायत की है, उन्होंने बयान किया कि मैंने अनस बिन मालिक रजि० को देखा है जब नमाज़ शुरू करते तक्बीर कहते और रफ़ा यदैन करते और जब रुकूअ़ करते, रुकूअ़ से सर उठाते तो रफ़ा यदैन करते। (हदीस नम्बर : २०)

١٧٢- (١٥) حدثنا مسددحدثنا هشيم عن ابي حمزة قال : رأيت ابن عباس يرفع يديه حيث كبر ، وإذا رفع رأسه من الركوع (جزء رفع اليدين للإمام البخاري: رقم الحديث: ٢١)

हदीस १७२ (१५) : हमें मुसद्दद ने हदीस बयान की है, उन्हें हुशैम ने अबू हम्ज़ा से। अबू हम्ज़ा से रिवायत है उस ने बयान किया कि मैंने इब्ने अब्बास रजि० को देखा है कि वह रफ़ा यदैन करते जब तक्बीर कहते और जब अपना सर रुकूअ़ से उठाते। (हदीस नम्बर : २१)

١٧٢- (١٦) حدثنا سليمان بن حرب، حدثنا يزيد بن ابراهيم، عن قيس بن سعد ، عن عطاء قال : صليت مع ابي هريرة فكان يرفع يديه إذا كبر وإذا رفع (جزء رفع اليدين للإمام البخاري: رقم الحديث: ٢٢)

हदीस १७३ (१६) : हमें सुलेमान बिन हर्ब ने हदीस बयान की, उन्हें यजीद बिन इब्राहीम ने कैस बिन साईद से, उन्होंने अता से, अता ने बयान किया कि मैंने अबू हुरैरह रजि० के पीछे नमाज पढी, पस वह रफा यदैन करते जब तक्बीर कहते और जब (रुकूअ से) उठते। (हदीस नम्बर : २२)

١٧٤- (١٧) حدثنا مسدد ، حدثنا خالد حدثنا حصين ، عن عمرو بن مرة قال : دخلت مسجد حضرموت فإذا علقمة بن وائل يحدث عن ابيه قال : « كان النبي صلى الله عليه وسلم يرفع يديه قبل الركوع » (جزء رفع اليدين للإمام البخاري: رقم الحديث: ٢٣)

हदीस १७४ (१७) : हमें मुसद्दद ने हदीस बयान की, उन्हें खालिद ने, उन्हें हुसैन ने अम्र बिन मुर्रह से हदीस बयान की है. उन्होंने कहा कि मैं हजरे मौत (शहर) की मस्जिद में दाखिल हुआ। पस उस वक्त अल्कमा बिन वाइल अपने वालिद रजि० की तरफ से हदीस बयान कर रहे थे उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रुकूअ में जाने से पहले रफा यदैन करते थे। (हदीस नम्बर : २३)

١٧٥- (١٨) حدثنا خطاب عن إسماعيل عن عبد ربه بن سليمان بن عمير قال : رايت ام الدرداء ترفع يديها في الصلاة حذو منكبيها (جزء رفع اليدين للإمام البخاري: رقم الحديث: ٢٤)

हदीस १७५ (१८) : हमें खत्ताब बिन इसमाईल ने अब्दे रब्बेह बिन सुलेमान बिन उमैर से हदीस बयान की है. उन्होंने बयान किया कि मैंने उम्मे दरदा रजि० को देखा है कि वह नमाज में अपने कन्धों के बराबर तक रफा यदैन करती थी। (हदीस नम्बर : २४)

١٧٦- (١٩) حدثنا محمد بن مقاتل حدثنا عبدالله بن المبارك اخبرنا إسماعيل حدثني عبد ربه بن سليمان بن عمير قال رايت ام الدرداء ترفع يديها في الصلاة حذو منكبيها حين تفتتح الصلاة، وحين تركع فإذا قالت: سمع الله لمن حمده رفعت يديها، وقالت: ربنا ولك الحمد (جزء رفع اليدين للإمام البخاري: رقم الحديث: ٢٥)

हदीस १७६ (१९) : हमें मुहम्मद बिन मुकातिल ने हदीस बयान की, वह कहते है हमें अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने, वह कहते है हमें इसमाईल ने, वह कहते है मुझे अब्दे रब्बेह ने हदीस बयान की है। अब्दे रब्बेह बिन सुलेमान बिन उमैर ने बयान किया कि मैंने उम्मे दरदा रजि० को देखा कि वह नमाज़ में अपने कन्धों के बराबर रफा यदैन करती थी जब नमाज शुरू करती और जब रुकूअ करतीं और जब **समिअल्लाहुलिमन हमिदह** कहतीं तो रफा यदैन करतीं और कहतीं रब्बना व लकल हम्द। (हदीस नम्बर : २५)

١٧٧- (٢٠) حدثنا إسحاق بن إبراهيم الحنظلي ، حدثنا محمد بن فضيل ، عن عاصم بن كليب ، عن محارب بن دثار قال : رايت ابن عمر رفع يديه في الركوع فقلت له ما ذلك؟ فقال : « كان رسول الله صلى الله عليه وسلم إذا قام من الركعتين كبر ، ورفع يديه » (جزء رفع اليدين للإمام البخاري: رقم الحديث: ٢٦)

हदीस १७७ (२०) : हमें इसहाक बिन इब्राहीम हन्जली ने हदीस बयान की है, वह कहते है हमें मुहम्मद बिन फुजैल ने आसिम बिन कुलैब से, उन्होंने मुहारिब बिन दिसार से, उन्होंने बयान किया कि मैंने इब्ने उमर रजि० को देखा है कि वह रुकूअ के वक्त रफा यदैन करते थे। मैंने उस की वजह दरयाफ्त की तो उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब दो रकअतें पढ कर खडे होते तो तक्बीर कहते और रफा यदैन करते। (हदीस नम्बर : २६)

١٧٨- (٢١) حدثنا مسلم بن ابراهيم ، حدثنا شعبة ، حدثنا عاصم بن كليب ، عن ابيه ، عن ، وائل بن حجر الحضرمي ، رضي الله عنه انه صلى مع النبي صلى الله عليه وسلم فلما كبر رفع يديه، فلما أراد ان يركع رفع يديه (جزء رفع اليدين للإمام البخاري: رقم الحديث: ٢٧)

हदीस १७८ (२१) : हमें मुस्लिम बिन इब्राहीम ने हदीस बयान की है वह कहते है, हमें शो'बा ने, वह कहते है, हमें आसिम बिन कुलैब ने और

उन्होंने अपने वालिद से, उन्होंने वाइल बिन हुज्र हजरमी से रिवायत की है कि उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ नमाज पढ़ी, पस जब तक्बीर कहते, रफ़ा यदैन करते और जब रुकूअ़ करते तो रफ़ा यदैन करते। (हदीस नम्बर : २७)

١٧٩- (٢٢ حدثنا محمد بن مقاتل ، اخبرنا عبد الله ، اخبرنا زائدة بن قدامة ، حدثنا عاصم بن كليب الجرمي ، حدثنا ابي ان وائل بن حجر ، اخبره قال : قلت لأنظرن إلى صلاة رسول الله صلى الله عليه وسلم كيف يصلي؟ قال: فنظرت إليه قال: فكبر ورفع يديه، ثم لما أراد أن يركع رفع يديه مثلها ، ثم رفع راسه فرفع يديه مثلها،ثم جئت بعد ذلك في زمان فيه برد عليهم جل الثياب تحرك ايديهم من تحت الثياب ، (جزء رفع اليدين للإمام البخاري: رقم الحديث: ٣١)

हदीस १७९ (२२) : हमें मुहम्मद बिन मुकातिल ने हदीस बयान की है वह कहते हैं हमें अब्दुल्लाह ने खबर दी है, वह कहते हैं हमें जाइदा बिन कुदामा ने, वह कहते है, हमें आसिम बिन कुलैब ने वाइल बिन हुज्र रजि० से रिवायत की है, उन्होंने बयान किया कि मैं आप स० की नमाज जरूर देखूंगा कि आप नमाज कैसे पढते हैं? तो मैंने आपको देखा आपने तक्बीर कही और रफ़ा यदैन किया। फिर जब रुकूअ़ करने का इरादा किया बदस्तूर रफ़ा यदैन की। फिर अपने सर को उठाया और रफ़ा यदैन किया। फिर मैंने सर्दी के मौसम में देखा कि सहाबा रजि० मोटे कपडे ओढे हुए हैं, उनके हाथ कपड़ों के नीचे से हरकत करते थे। (हदीस नम्बर : ३१)

١٨٠- (٢٣) حدثنا ابو اليمان ، انبأنا شعيب ، عن الزهري ، عن سالم بن عبد الله ان عبد الله بن عمر ، قال : رايت رسول الله صلى الله عليه وسلم : إذا افتتح التكبير في الصلاة رفع يديه حين يكبر حتى يجعلهما حذو منكبيه ، وإذا كبر للركوع فعل مثل ذلك وإذا قال : سمع الله لمن حمده فعل مثل ذلك وقال: ربنا لك الحمدولا يفعل ذلك حين يسجد ،ولا حين يرفع راسه من السجود (جزء رفع اليدين للإمام البخاري: رقم الحديث: ٤٢)

हदीस १८० (२३) : हमें अबुल यमान ने हदीस बयान की है, वह कहते है हमें इब्ने शिहाब जुहरी से, उन्होंने सालिम बिन अब्दुल्लाह से कि अब्दुल्लाह बिन उमर रजि० ने फरमाया कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा है कि जब नमाज़ में तक्बीर का इफ्तिताह करते तो रफ़ा यदैन करते यहां कि उनको अपने कन्धों के बराबर करते और जब रुकूअ़ के लिए तक्बीर कहते तो बदस्तूर रफ़ा यदैन करते। जब **समिअल्लाहुलिमन हमिदह** कहते, रफ़ा यदैन करते और **रब्बना लकल-हम्द** कहते। सज्दा करते वक्त और सज्दों से सर उठाते वक्त रफ़ा यदैन नहीं करते थे। (हदीस नम्बर : ४२)

١٨١- (٢٤) حدثنا عبد الله بن صالح ،حدثني الليث،حدثني يونس عن ابن شهاب ، اخبرني سالم بن عبد الله ان عبد الله يعني ابن عمر قال : رايت رسول الله إذا قام إلى الصلاة رفع يديه حتى يكونا حذو منكبيه ثم يكبر ، ويفعل ذلك حين يرفع راسه من الركوع ، ويقول: سمع الله لمن حمده، ولا يرفع حين يرفع راسه من السجود (جزء رفع اليدين للإمام البخاري: رقم الحديث: ٤٧)

हदीस १८१ (२४) : हमें अब्दुल्लाह बिन सालेह ने हदीस बयान की है, वह कहते हैं मुझे लैस ने, वह कहते हैं मुझे यूनुस ने इब्ने शिहाब जुहरी से, इब्ने शिहाब कहते हैं कि मुझे सालिम बिन अब्दुल्लाह ने खबर दी है कि अब्दुल्लाह बिन उमर रजि० ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा है जब वह नमाज़ के लिए खडे होते तो अपने हाथों को अपने कन्धों तक ले जाते, फिर तक्बीर कहते और ऐसा ही उस वक्त करते जब अपने सर को रुकूअ़ से उठाते और कहते समिअल्लाहुलिमन हमिदह। जब अपने सर को सज्दों से उठाते तो रफ़ा यदैन नहीं करते थे। (हदीस नम्बर : ४७)

١٨٢- (٢٥) حدثنا ابو النعمان حدثنا عبد الواحد بن زياد الشيباني حدثنامحارب بن دثار وقال: رايت عبد الله بن عمر: إذا افتتح الصلاة كبر،ورفع يديه،وإذا اراد أن يركع رفع يديه،وإذا رفع راسه من الركوع (جزء رفع اليدين للإمام البخاري رقم الحديث ٤٨)

हदीस १८२ (२५) : हमें अबू नुमान ने हदीस बयान की है, वह कहते है हमें अब्दुल वाहिद बिन जियाद ने, वह कहते है, हमें मुहारिब बिन दिसार ने बयान किया कि मैंने इब्ने उमर को देखा है जब नमाज शुरु करते तो

तक्बीर कहते और रफ़ा यदैन करते और जब रुकूअ् का इरादा करते तो रफ़ा यदैन करते और जब अपने सर को रुकूअ् से उठाते (तो रफ़ा यदैन करते) (हदीस नम्बर

١٨٣- (٢٦) حدثنا العياش بن الوليد حدثنا عبد الأعلى حدثنا عبيد الله عن نافع عن ابن عمر: انه كبر ورفع يديه وإذا ركع رفع يديه وإذا قال: سمع الله لمن حمده رفع يديه ويرفع ذلك ابن عمر إلى النبي صلى الله عليه وسلم (جزء رفع اليدين للإمام البخاري: رقم الحديث: ٤٩)

हदीस १८३ (२६) : हमें अय्याश बिन वलीद ने हदीस बयान की है, वह कहते हैं हमें अब्दुल आला ने, वह कहते हैं, हमें उबैदुल्लाह ने नाफ़े से, नाफ़े ने इब्ने उमर रज़ि० से रिवायत की है कि इब्ने उमर रज़ि० ने तक्बीर कही और रफ़ा यदैन किया और जब रुकूअ् किया तो रफ़ा यदैन किया और जब **समिअल्लाहुलिमन हमिदह** कहा रफ़ा यदैन किया इब्ने उमर रज़ि० इस अमल को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तरफ़ निस्बत करते हैं। (यानी आप स० का अमल भी इसी तरह था) (हदीस नम्बर

١٨٤- (٢٧) حدثنا إبراهيم بن المنذر حدثنا معمر حدثنا إبراهيم بن طهمان عن أبي الزبير قال : رأيت ابن عمر حين قام إلى الصلاة رفع يديه حتى يحاذي باذنيه وحين يرفع راسه من الركوع فاستوى قائما فعل مثل ذلك (جزء رفع اليدين للإمام البخاري: رقم الحديث: ٥٠)

हदीस १८४ (२७) : हमें इब्राहीम बिन मुन्ज़िर ने हदीस बयान की है, वह कहते हैं, हमें मअमर ने, वह कहते हैं हमें इब्राहीम बिन तहमान ने अबू जुबैर से, अबू जुबैर ने बताया कि मैंने इब्ने उमर रज़ि० को देखा है जब नमाज़ के लिए खड़े होते तो अपने हाथ अपने कानों के बराबर तक उठाते और जब रुकूअ् से सर उठाते, सीधे खड़े हो जाते तो बदस्तूर रफ़ा यदैन करते। (हदीस नम्बर : ५०)

١٨٥- (٢٨) حدثنا عبد الله بن صالح حدثنا الليث ، أخبرني نافع أن عبد الله بن عمر : كان إذا استقبل الصلاة يرفع يديه ، وإذا

ركع، وإذا رفع راسه من الركوع ، وإذا قام من السجدتين كبر ورفع يديه (جزء رفع اليدين للإمام البخاري: رقم الحديث: ٥١)

हदीस १८५ (२८) : हमें अब्दुल्लाह बिन सालेह ने हदीस बयान की वह कहते हैं हमें लैस ने, वह कहते हैं मुझे नाफ़े ने हदीस बयान की है। नाफ़े ने बताया कि अब्दुल्लाह रज़ि० जब नमाज़ की तरफ़ मुतवज्जह होते तो रफ़ा यदैन करते और जब रुकूअ् करते, और जब रुकूअ् से सर उठाते और जब दो सज्दों (दो रकअत) से (तीसरी रकअत के लिए) उठते रफ़ा यदैन करते। (हदीस नम्बर : ५१)

١٨٦- (٢٩) حدثنا موسى بن إسماعيل حدثنا حماد بن سلمة عن ايوب عن نافع عن ابن عمر ان رسول الله صلى الله عليه وسلم كان إذا كبر رفع يديه وإذا رفع راسه من الركوع (جزء رفع اليدين للإمام البخاري: رقم الحديث: ٥٢)

हदीस १८६ (२९) : हमें मूसा बिन इसमाईल ने हदीस बयान की है वह कहते हैं हमें हम्माद बिन सलमा ने अय्यूब से रिवायत बयान की है, अय्यूब ने नाफ़े से, उन्होंने अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० से, इब्ने उमर रज़ि० ने बयान किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब तक्बीर कहते रफ़ा यदैन करते और जब अपना सर रुकूअ् से उठाते तो भी (रफ़ा यदैन करते)। (हदीस नम्बर : ५२)

١٨٧- (٣٠) حدثنا موسى بن إسماعيل حدثنا حماد بن سلمة عن ايوب عن نافع عن ابن عمران رسول الله صلى الله عليه وسلم كان إذا كبر رفع يديه،وإذا ركع،وإذا رفع راسه من الركوع (جزء رفع اليدين للإمام البخاري: رقم الحديث: ٥٣)

हदीस १८७ (३०) : हमें मूसा बिन इसमाईल ने हदीस बयान की है, वह कहते हैं हमें हम्माद बिन सलमा ने अय्यूब से, उन्होंने नाफ़े से, उन्होंने इब्ने उमर रज़ि० से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब तक्बीर कहते और जब रुकूअ् करते और जब रुकूअ् से सर उठाते रफ़ा यदैन करते। (हदीस नम्बर : ५३)

١٨٨- (٣١) حدثنا موسى بن إسماعيل، حدثنا حماد بن سلمة، اخبرنا قتادة، عن نصر بن عاصم عن مالك بن الحويرث ان النبي صلى الله عليه وسلم كان إذا دخل في الصلاة رفع يديه إلى فروع اذنيه وإذا رفع راسه من الركوع فعل مثله(جزء رفع اليدين للإمام البخاري: رقم الحديث: ٥٤)

हदीस १८८ (३१) : हमें मूसा बिन इसमाईल ने हदीस बयान की, वह कहते हैं हमें हम्माद बिन सलमा ने, वह कहते हैं हमें कतादा ने नस्र बिन आसिम से रिवायत की है, नस्र बिन आसिम ने मालिक बिन हुवैरिस रजि० से बयान किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज में दाखिल होते तो अपने हाथ कानों के ऊपर के हिस्से तक उठाते और जब अपना सर रुकूअ से उठाते तो बदस्तूर इस तरह (रफा यदैन) करते। (हदीस नम्बर : ५४)

١٨٩- (٣٢) حدثنا محمود قال انا خالد ان ابا قلابة، كان يرفع يديه إذا ركع، وإذا رفع راسه من الركوع ، وكان إذا سجد بدا بركبتيه، وكان إذا قام ارم على يديه قال وكان يطمئن في الركعة الأولى ثم يقوم وذكر عن مالك بن الحويرث رضي الله عنه (جزء رفع اليدين للإمام البخاري: رقم الحديث: ٥٥)

हदीस १८९ (३२) : हमें महमूद ने हदीस बयान की है वह कहते हैं हमें खालिद ने खबर दी है कि अबू किलाबा रफा यदैन करते थे जब रुकूअ करते और रुकूअ से सर उठाते और जब सज्दा करते तो पहले घुटने रखते और जब खडे होते तो हाथो पर टेक लगाते और पहली रकअत में इत्मीनान पकडते फिर खडे होते और हदीस उन्होंने मालिक बिन हुवैरिस रजि० से जिक्र की है। (जल्सा इस्तिराहत भी करते) (हदीस नम्बर ५५)

١٩٠- (٣٣) اخبرنا عبد الله بن محمد اخبرنا ابو عامرحدثنا ابراهيم بن طهمان عن أبي الزبيرعن طاوس ان ابن عباس كان إذا قام الى الصلاة رفع يديه حتى يحاذي اذنيه وإذا رفع راسه من الركوع ، واستوى قائما فعل مثل ذلك (جزء رفع اليدين للإمام البخاري: رقم الحديث: ٦٥)

हदीस १९० (३३) : हमें अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने खबर दी है, वह कहते है हमें अबू आमिर ने खबर दी है, वह कहते है हमें इब्राहीम बिन तहमान ने अबू जुबैर से रिवायत की है, उन्होंने ताऊस से कि इब्ने अब्बास रजि० जब नमाज़ के लिए खड़े होते तो अपने हाथों को अपने कानों के बराबर करते और जब रुकूअ से सर उठाते और सीधे खड़े हो जाते तो रफा यदैन करते। (हदीस नम्बर : ६५)

١٩١- (٣٤) حدثنا محمد بن مقاتل اخبرنا عافية اخبرنا إسماعيل، حدثني صالح بن كيسان عن الأعرج عن ابي هريرة قال: كان رسول الله صلى الله عليه وسلم يرفع يديه حذو منكبيه حين يكبر يفتتح الصلاة وحين يركع (جزء رفع اليدين للإمام البخاري: رقم الحديث: ٥٧)

हदीस १९१ (३४) : हमें मुहम्मद बिन मुकातिल ने हदीस बयान की है, उन्हें आफिया ने, उन्हें इसमाईल ने, वह कहते है मुझे सालेह बिन कैसान ने अरज से, अ'रज ने अबू हुरैरह रजि० से हदीस बयान की है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने कन्धों तक रफ़ा यदैन करते जब नमाज शुरू करते, तक्बीर कहते वक्त और जब रुकूअ को जाते (रफा यदैन करते)। (हदीस नम्बर : ५७)

١٩٢- (٣٥) حدثنا إسماعيل عن نافع ان عبد الله بن عمر كان إذا افتتح الصلاة رفع يديه حذو منكبيه وإذا رفع راسه من الركوع (جزء رفع اليدين للإمام البخاري: رقم الحديث: ٥٨)

हदीस १९२ (३५) : हमें इसमाईल ने नाफे से हदीस बयान की है कि अब्दुल्लाह बिन उमर रजि० जब नमाज शुरू करते तो अपने हाथों को अपने कन्धो के बराबर तक उठाते और जब रुकूअ से सर उठाते (रफा यदैन करते) (हदीस नम्बर ५८)

١٩٣- (٣٦) حدثنا محمد بن مقاتل عن عبد الله اخبرنا شريك عن ليث عن عطاء قال : رايت جابر بن عبد الله وابا سعيد الخدري وابن عباس وابن الزبير ؛ يرفعون ايديهم حين يفتتحون الصلاة ،

وإذا ركعوا ، وإذا رفعوا رءوسهم من الركوع (جزء رفع اليدين للإمام البخاري؛ رقم الحديث: ٦١)

हदीस १६३ (३६) : हमें मुहम्मद बिन मुकातिल ने अब्दुल्लाह से हदीस सुनाई है कि वह कहते है कि हमें शरीक ने लैस से, लैस ने अता से, उन [illegible] रिवायत है कि मैंने जाबिर बिन अब्दुल्लाह रजि० अबू सईद खुदरी रजि० इब्ने अब्बास रजि० इब्ने जुबैर रजि० को देखा है कि वह रफा यदैन करते जब नमाज शुरू करते और जब रुकूअ करते और जब अपना सर रुकूअ से उठाते। (हदीस नम्बर : ६१)

١٩٤- (٣٧) حدثنا موسى بن إسماعيل حدثنا عبد الواحد بن زياد حدثنا عاصم قال : رأيت أنس بن مالك إذا افتتح الصلاة كبر ورفع يديه كلما ركع ، ورفع رأسه من الركوع(جزء رفع اليدين للإمام البخاري؛ رقم الحديث: ٦٥)

हदीस १६४ (३७) : हमें मूसा बिन इसमाईल ने हदीस सुनाई वह कहते है हमें अब्दुल वाहिद बिन जियाद ने हदीस बयान की वह कहते है हमें आसिम ने बयान किया कि मैंने अनस बिन मालिक रजि० को देखा है कि [illegible] नमाज शुरू करते तकबीर कहते और रफा यदैन करते। फिर जब रुकूअ करते और रुकूअ से सर उठाते (तो भी) रफा यदैन करते। (हदीस नम्बर : ६५)

١٩٥- (٣٨) حدثنا خليفة بن خياط حدثنا يزيد بن زريع حدثنا سعيد ، عن قتادة أن نصر بن عاصم حدثهم عن مالك بن الحويرث قال : رأيت النبي صلى الله عليه وسلم يرفع يديه إذا ركع وإذا رفع رأسه من الركوع حتى يحاذي بهما فروع أذنيه (جزء رفع اليدين للإمام البخاري؛ رقم الحديث: ٦٦)

हदीस १६५ (३८) : हमें खलीफा बिन खय्यात ने हदीस बयान की है वह कहते है हमें यजीद बिन जुरैई ने वह कहते है हमें सईद ने कतादा से कि नस्र बिन आसिम ने उन्हें मालिक बिन हुवैरिस रजि० [illegible] से रिवायत की है कि मैंने नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को रफा यदैन करते देखा है जब आप रुकूअ गये और जब आपने रुकूअ

[illegible] अपना सर मुबारक उठाया यहाँ तक कि अपने दोनों हाथो को अपने दोनों कानों के ऊपर के (लव) तक उठाया। (हदीस नम्बर : ६६)

١٩٦- (٣٩) حدثنا إسماعيل بن أبي أويس حدثنا مالك عن نافع أن عبد الله بن عمر كان إذا افتتح الصلاة رفع يديه وإذا رفع رأسه من الركوع (جزء رفع اليدين للإمام البخاري؛ رقم الحديث: ٧٢)

हदीस १६६ (३६) : हमें इसमाईल बिन अबू उवैस ने हदीस बयान की, वह कहते है हमें इमाम मालिक ने नाफे से रिवायत की है, उन्होंने कहा कि अब्दुल्लाह बिन उमर रजि० जब नमाज शुरू करते तो रफा यदैन करते और जब रुकूअ से अपना सर उठाते। (रफा यदैन करते) (हदीस नम्बर : ७३)

١٩٧- (٤٠) حدثنا عياش حدثنا عبد الأعلى حدثنا حميد عن أنس أنه كان يرفع يديه عند الركوع (جزء رفع اليدين للإمام البخاري رقم الحديث: ٧٤)

हदीस १६७ (४०) : हमें अय्याश ने हदीस बयान की, वह कहते है हमें अब्दुल आला ने, वह कहते है हमें हुमैद ने अनस से रिवायत की है कि वह रुकूअ के वक्त रफा यदैन करते थे। (हदीस नम्बर : ७४)

١٩٨- (٤١) حدثنا محمد بن أبي بكر المقدمي حدثنا معتمر عن عبيد الله بن عمر عن ابن شهاب عن سالم بن عبد الله عن أبيه عن النبي صلى الله عليه وسلم أنه كان يرفع يديه إذا دخل في الصلاة وإذا أراد أن يركع ورفع رأسه وإذا قام من الركعتين يرفع يديه في ذلك كله وكان عبد الله يفعله (جزء رفع اليدين للإمام البخاري؛ رقم الحديث: ٧٧)

हदीस १६८ (४१) : हमें मुहम्मद बिन अबू बकर मुकद्दमी ने हदीस बयान की वह कहते है हमें मुतमिर ने उबैदुल्लाह बिन उमर से, उन्होंने इब्ने शिहाब जुहरी से, उन्होंने सालिम बिन अब्दुल्लाह से, सालिम बिन अब्दुल्लाह अपने वालिद से रिवायत की है। उन्होंने बयान किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रफा यदैन करते थे जब नमाज में दाखिल होते और जब रुकूअ का इरादा करते और जब रुकूअ से सर उठाते और जब दो रकअत पढ़ कर उठते इन तमाम जगहों मे रफा यदैन करते और

अब्दुल्लाह रजि० भी रफा यदैन किया करते थे) (हदीस नम्बर : ७७)

١٩٩- (٤٢) حدثنا قتيبة حدثنا هشيم عن الزهري عن سالم عن ابيه قال: كان رسول الله صلى الله عليه وسلم يرفع يديه إذا استفتح الصلاة وإذا ركع يرفع يديه وإذا رفع رأسه من الركوع(جزء رفع اليدين للإمام البخاري: رقم الحديث: ٧٨)

हदीस १९९ (४२) : हमें कुतैबा ने हदीस बयान की, यह कहते है हमें हुशैम ने इब्ने शिहाब जुहरी से, उन्होंने सालिम से, सालिम ने अपने वालिद रजि० से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रफा यदैन करते जब नमाज शुरू करते और जब रुकूअ् करते, और जब अपना सर रुकूअ् से उठाते। (हदीस नम्बर : ७८)

٢٠٠- (٤٣) حدثنا عبد الله بن صالح حدثني الليث حدثنا عقيل عن ابن شهاب قال أخبرني سالم بن عبد الله ان عبد الله بن عمر قال: كان رسول الله صلى الله عليه وسلم: إذاافتتح الصلاة رفع يديه حتى يحاذي بهما منكبيه وإذا أراد ان يركع وبعدما رفع رأسه من الركوع (جزء رفع اليدين للإمام البخاري رقم الحديث٧٩

हदीस २०० (४३) : हमें अब्दुल्लाह बिन सालेह ने हदीस बयान की है, वह कहते है मुझे लैस ने अकील से, उन्होंने इब्ने शिहाब जुहरी से, वह कहते है कि मुझे सालिम बिन अब्दुल्लाह ने खबर दी है कि अब्दुल्लाह बिन उमर रजि० ने बयान किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज शुरू करते तो अपने दोनों हाथ उठाते हत्ता कि उनको अपने कन्धों के बराबर तक करते और जब रुकूअ् का इरादा करते और रुकूअ् से सर उठाने के बाद रफा यदैन करते। (हदीस नम्बर : ७९)

٢٠١- (٤٤) حدثنا محمد بن عبد الله بن حوشب حدثنا عبد الوهاب حدثنا عبيد الله عن نافع عن ابن عمر أنه كان يرفع يديه إذا دخل في الصلاة وإذا ركع وإذا قال: سمع الله لمن حمده وإذا قام من الركعتين يرفعهما (جزء رفع اليدين للإمام البخاري: رقم الحديث: ٨٠)

हदीस २०१ (४४) : हमें मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन हौशब ने हदीस बयान की है, वह कहते है हमें अब्दुल वह्हाब ने, वह कहते है हमें अब्दुल्लाह ने नाफे से रिवायत की है कि इब्ने उमर रजि० रफा यदैन करते जब नमाज में दाखिल होते और जब रुकूअ् करते और जब **समिअल्लाहुलिमन हमिदह** कहते और जब दो रकअत पढ़ कर उठते तो बदस्तूर रफा यदैन करते।

(हदीस नम्बर : ८०)

(१८) इब्ने अबी शैबा

٢٠٢- (١) حدثنا ابو بكر حدثنا سفيان بن عيينة ،عن الزهري، عن سالم عن ابيه قال : رايت النبي صلى الله عليه وسلم يرفع يديه إذا افتتح الصلاة، وإذا ركع وبعدما يرفع ولا يرفع بين السجدتين (مصنف ابن ابي شيبة - (١ / ٢٣٤))

हदीस २०२ (१) : हमें अबू बकर बिन अबी शैबा ने हदीस सुनाई, उन्हें सुफियान बिन उयैना ने जुहरी से, उन्होंने सालिम से उन्होंने अपने वालिद से बयान किया कि उन्होंने फरमाया, कि मैंने नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा जब आप नमाज शुरू करते और जब रुकूअ् करते और रुकूअ् से उठने के वक्त रफा यदैन करते और सज्दो में रफा यदैन नही करते थे। (जिल्द १, स० २३४)

٢٠٣- (٢) حدثنا ابن ادريس عن عاصم بن كليب عن ابيه عن وائل بن حجر،قال : رايت النبي صلى الله عليه وسلم يرفع يديه كلما ركع ورفع، (مصنف ابن ابي شيبة - ١ / ٢٣٤)

हदीस २०३ (२) : हमें इब्ने इदरीस ने आसिम बिन कुलैब से हदीस सुनाई, उन्होंने अपने वालिद से, उन्होंने वाइल बिन हुज्र रजि० से कहा मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा कि आप रुकूअ् जाते और रुकूअ् से सर उठाते वक्त रफा यदैन किया करते थे। (जिल्द १, स० २३४)

٢٠٤- (٣) حدثنا ابن نمير عن ابن أبي عروبةعن نصر بن عاصم عن مالك بن الحويرث قال: رايت النبي صلى الله عليه وسلم يكبر

ويرفع يديه إذا ركع وإذا رفع رأسه من الركوع حتى يحاذي بهما فروع اذنيه. (مصنف ابن ابي شيبة - ١ / ٢٣٤)

हदीस २०४ (३) : हमें इब्ने नुमैर ने इब्ने अबू [illegible] से हदीस सुनाई [illegible] बिन [illegible] से बयान फरमाया उन्होंने मालिक बिन हुवैरिस रज़ि० से [illegible] कि मैंने नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा [illegible] के लिए अल्लाहु अकबर कहते और जब रुकूअ से [illegible] की [illegible] के बराबर रफा यदैन करते। (जिल्द १ स० [illegible])

٢٠٥- (٤) حدثنا هشيم عن الزهري عن سالم عن ابن عمر ان النبي صلى الله عليه وسلم كان يرفع يديه إذا افتتح وإذا ركع وإذا رفع رأسه ولا يجاوز بهما أذنيه (مصنف ابن ابي شيبة ١: / ٢٣٤)

हदीस २०५ (४) : हमें हुशैम ने जुहरी से हदीस सुनाई उन्होंने सालिम से बयान किया [illegible] इब्ने उमर रज़ि० से बयान फरमाया कि नबी अकरम [illegible] व सल्लम जब नमाज़ शुरू करते और जब रुकूअ करते और रुकूअ से सर उठाते तो (कानों की लौ के बराबर) रफा यदैन किया करते थे [illegible] कानों से ऊपर नहीं ले जाते थे। (जिल्द १ स० २३४)

٢٠٦- (٥) حدثنا هشيم قال: أخبرنا يحيى بن سعيد عن سليمان بن يسار عن النبي صلى الله عليه وسلم مثل ذلك (مصنف ابن ابي شيبة - ((٢٣٥ / ١))

हदीस २०६ (५) : हमें हुशैम ने हदीस सुनाई उन्होंने कहा, हमें यहया बिन सईद ने सुलेमान बिन [illegible] से हदीस सुनाई [illegible] नबी अकरम [illegible] से बयान फरमाया जैसा कि हदीस इब्ने उमर रज़ि० में गुज़रा है। (जिल्द १, स० २३५)

٢٠٧- (٦) حدثنا هشيم قال: أخبرنا ليث عن عطاء قال: رأيت أبا سعيد الخدري وابن عمر وابن عباس وابن الزبير يرفعون أيديهم نحوا من حديث الزهري. (مصنف ابن ابي شيبة - ١ / ٢٣٥)

हदीस २०७ (६) : हमें हुशैम ने हदीस सुनाई, उन्होंने कहा हमें लैस ने ख़बर दी है [illegible] से बयान फरमाया, उन्होंने कहा मैंने हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि०, इब्ने उमर रज़ि०, इब्ने अब्बास और इब्ने जुबै[illegible]

[illegible] को इसी तरह रफा यदैन करते हुए देखा, जैसा कि जुहरी की हदीस [illegible] है। (जिल्द १, स० २३५)

٢٠٨- (٧) حدثنا هشيم قال: أخبرنا أبو حمزة قال: رأيت ابن عباس يرفع يديه إذا افتتح الصلاة وإذا ركع وإذا رفع رأسه من الركوع. (مصنف ابن ابي شيبة - ١ / ٢٣٥)

हदीस २०८ (७) : हमें हुशैम ने हदीस सुनाई उन्होंने कहा हमें अबू [illegible] ने ख़बर दी, उन्होंने कहा कि मैंने इब्ने अब्बास रज़ि० को देखा जब [illegible] शुरू करते और जब रुकूअ करते और जब रुकूअ से सर उठाते तो [illegible] यदैन किया करते। (जिल्द १, स० २३५)

٢٠٩- (٨) حدثنا هشيم قال: أخبرنا عبد الحميد بن جعفر الأنصاري عن محمد بن عمرو بن عطاء القرشي قال: رأيت أبا حميد الساعدي مع عشرة رهط من أصحاب النبي صلى الله عليه وسلم، فقال: ألا أحدثكم عن صلاة النبي صلى الله عليه وسلم؟ قالوا: هات، قال: فرأيته إذا كبر عند فاتحة الصلاة رفع يديه، وإذا ركع رفع يديه، وإذا رفع رأسه من الركوع رفع يديه، ثم يمكث قائما حتى يقع كل عظم في موضعه ثم يهبط ساجدا ويكبر. (مصنف ابن ابي شيبة - ١ / ٢٣٥)

हदीस २०९ (८) : हमें हुशैम ने हदीस सुनाई, उन्होंने कहा हमें [illegible]दुल हमीद बिन जाफर अन्सारी ने मुहम्मद बिन अम्र बिन अता कुरशी से ख़बर दी उन्होंने कहा मैंने अबू हुमैद साइदी रज़ि० को दस सहाबा की जमाअत में देखा, उन्होंने कहा, क्या मैं तुम को नबी अकरम [illegible]ल्लाहु अलैहि व सल्लम की नमाज़ न बताऊँ? सहाबा ने कहा क्यों [illegible] ज़रूर बताओ। हज़रत अबू साईद रज़ि० ने फरमाया कि मैंने हुज़ूर [illegible]ल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा जब आपने नमाज़ शुरू करने के [illegible] अल्लाहु अकबर कहा और जब रुकूअ किया और जब रुकूअ से [illegible] उठाया तो रफा यदैन की। फिर आप सीधे खड़े रहे यहाँ तक कि [illegible] अपनी असली मकाम पर आ गया फिर आप अल्लाहु अकबर [illegible] और सजदे के लिए झुकते। (जिल्द १ स० २३५)

٢١٠- (٩) حدثنا معاذ بن معاذ عن حميد عن أنس انه كان يرفع يديه إذا دخل في الصلاة وإذا ركع وإذا رفع رأسه من الركوع. (مصنف ابن أبي شيبة - ١ / ٢٣٥)

हदीस २१० (९) : हमें मुआज़ बिन मुआज ने हुमैद से हदीस सुनाई, उन्होंने हजरत अनस रज़ि० से बयान फरमाया कि वह जब नमाज में दाखिल होते और जब रुकूअ् करते और रुकूअ् से सर उठाते तो रफा यदैन किया करते थे। (जिल्द १, स० २३५)

٢١١- (١٠) حدثنا معاذ بن معاذ عن ابن ابي عروبة عن قتادة، عن الحسن قال: كان أصحاب النبي صلى الله عليه وسلم في صلاتهم كان ايديهم المراوح إذا ركعوا، وإذا رفعوا رؤوسهم (مصنف ابن ابي شيبة - ١ / ٢٣٥)

हदीस २११ (१०) : हमें मुआज बिन मुआज ने इब्ने अबू अरूबा से हदीस सुनाई, उन्होंने कतादा से, उन्होंने हसन से, उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा जब रुकूअ् को जाते और रुकूअ् से सर उठाते तो रफा यदैन किया करते थे और उनके हाथ ऐसे मालूम होते जैसे पखे हैं। (जिल्द १, स० २३५)

٢١٢- (١١) حدثنا ابن علية عن خالد ان ابا قلابة كان يرفع يديه إذا ركع، وإذا رفع رأسه من الركوع. (مصنف ابن أبي شيبة - ١ / ٢٣٥)

हदीस : २१२ (११) हमें इब्ने उलैय्या ने खालिद से हदीस सुनाई कि अबू किलाबा जब रुकूअ् करते और रुकूअ् से सर उठाते तो रफा यदैन किया करते थे। (जिल्द १, स० २३५)

❖ ❖ ❖

(१६) मुस्नद इमाम अहमद रह०

٢١٣- (١) حَدَّثَنَا عبد الله حدثني ابي حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ حَدَّثَنَا مَعْمَرٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ سَالِمٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَرْفَعُ يَدَيْهِ حِينَ يُكَبِّرُ حَتَّى يَكُونَا حَذْوَ مَنْكِبَيْهِ أَوْ قَرِيبًا مِنْ ذَلِكَ وَإِذَا رَكَعَ رَفَعَهُمَا وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ رَفَعَهُمَا وَلَا يَفْعَلُ ذَلِكَ فِي السُّجُودِ (مسنداحمد- (رقم الحديث:٦٣٤٥)

हदीस २१३ (१) : हमें अब्दुल्लाह ने हदीस सुनाई, मुझे मेरे वालिद ने, हमें अब्दुर्रज्जाक ने, हमें मा'मर ने, उन्होंने जुहरी से रिवायत किया, उन्होंने सालिम से, उन्होंने इब्ने उमर से, उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज के लिए तक्बीर कहते तो कन्धों के बराबर या उनके क़रीब रफा यदैन करते और जब रुकूअ् करते और रुकूअ् से सर उठाते तो (इसी तरह) रफा यदैन करते और सज्दों में रफा यदैन नहीं करते थे। (मुसनद अहमद, हदीस नम्बर : 6345)

٢١٤- (٢) حَدَّثَنَا عبد الله حدثني ابي حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ حَدَّثَنَا ابْنُ أَخِي ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عَمِّهِ حَدَّثَنِي سَالِمُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ أَنَّ عَبْدَ اللَّهِ قَالَ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا قَامَ إِلَى الصَّلَاةِ يَرْفَعُ يَدَيْهِ حَتَّى إِذَا كَانَتَا حَذْوَ مَنْكِبَيْهِ كَبَّرَ ثُمَّ إِذَا أَرَادَ أَنْ يَرْكَعَ رَفَعَهُمَا حَتَّى يَكُونَا حَذْوَ مَنْكِبَيْهِ كَبَّرَ وَهُمَا كَذَلِكَ رَكَعَ ثُمَّ إِذَا أَرَادَ أَنْ يَرْفَعَ صُلْبَهُ رَفَعَهُمَا حَتَّى يَكُونَا حَذْوَ مَنْكِبَيْهِ قَالَ سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ ثُمَّ يَسْجُدُ وَلَا يَرْفَعُ يَدَيْهِ فِي السُّجُودِ وَيَرْفَعُهُمَا فِي كُلِّ رَكْعَةٍ وَتَكْبِيرَةٍ كَبَّرَهَا قَبْلَ الرُّكُوعِ حَتَّى تَنْقَضِيَ صَلَاتُهُ (مسند أحمد - (رقم الحديث:٦١٧٥)

हदीस २१४ (२) : हमें अब्दुल्लाह ने हदीस सुनाई, मुझे मेरे वालिद ने, हमें याकूब ने, हमें इब्ने शिहाब के भाई के बेटे ने, उन्होंने अपने चचा से, मुझे सालिम बिन अब्दुल्लाह ने खबर सुनाई कि अब्दुल्लाह ने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज के लिए खड़े होते तो कन्धों के

बराबर रफा यदैन करते और तक्बीर कहते। फिर जब रुकूअ् का इरादा करते तो कन्धो तक रफा यदैन करते और तक्बीर कहते, फिर जब उठ कर अपनी कमर को सीधा करते तो कन्धो तक रफा यदैन करते और **समिअल्लाहुलिमन हमिदह** कहते फिर सज्दा करते और सज्दों में रफा यदैन नही करते थे और रुकूअ् से पहले हर रकअत में रफा यदैन करते और तक्बीर कहते, यहॉ तक कि आपकी नमाज खत्म हो जाती।

(मुसनद अहमद, हदीस नम्बर : ६४०५)

٢١٥- (٣) حَدَّثَنَا عبد الله حدثني ابي حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ سَالِمِ بْنِ عَبْدِ اللهِ عَنْ أَبِيهِ قَالَ رَأَيْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَرْفَعُ يَدَيْهِ إِذَا دَخَلَ إِلَى الصَّلَاةِ وَإِذَا رَكَعَ وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ وَلَا يَفْعَلُ ذَلِكَ فِي السُّجُودِ (مسند احمد - (رقم الحديث:٥٠٨١)

हदीस २१५ (3) : हमे अब्दुल्लाह ने हदीस सुनाई. मुझे मेरे वालिद ने हमे इस्माईल बिन इब्राहीम ने, हमे म मर ने जुहरी से, उन्हें सालिम बिन अब्दुल्लाह ने अपने वालिद से, उन्होंने कहा, मैने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा कि आप जब नमाज मे दाखिल होते, और जब रुकूअ् करते और जब रुकूअ् से सर उठाते तो रफा यदैन करते, और सज्दो मे रफा यदैन नही करते थे।(मुसनद अहमद, हदीस नम्बर ५०८१)

٢١٦- (٤) حَدَّثَنَا عبد الله حدثني ابي حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ سَالِمٍ عَنْ أَبِيهِ رَأَيْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا افْتَتَحَ الصَّلَاةَ رَفَعَ يَدَيْهِ حَتَّى يُحَاذِيَ مَنْكِبَيْهِ وَإِذَا أَرَادَ أَنْ يَرْكَعَ وَبَعْدَمَا يَرْفَعُ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ وَقَالَ سُفْيَانُ مَرَّةً وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ وَأَكْثَرُ مَا كَانَ يَقُولُ وَبَعْدَمَا يَرْفَعُ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ وَلَا يَرْفَعُ بَيْنَ السَّجْدَتَيْنِ (مسند احمد - رقم الحديث:٤٥٤٠)

हदीस २१६ (४) : हमे अब्दुल्लाह ने खबर दी, मुझे मेरे वालिद ने हमे सुफियान ने जुहरी से, उन्होने सालिम से, उन्होने अपने वालिद से, उन्होंने कहा कि मैने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा, जब आप नमाज शुरू करते और जब रुकूअ् करते और रुकूअ् से सर उठाने के बाद

कन्धों के बराबर रफा यदैन करते। सुफियान कहते है कि एक रिवायत में उन्होने कहा **"इजा रफअ रासहू"** (माजी के सेगा से) लेकिन अक्सर बताया (मुजारे के सेगा से) बयान करते **"बाद मा यरफ़ओ रासहू"** और सज्दों में रफा यदैन नहीं करते थे। (हदीस नम्बर : ४५४०)

٢١٧- (٥) حَدَّثَنَا عبد الله حدثني ابي حَدَّثَنَا يَحْيَى حَدَّثَنَا مَالِكٌ حَدَّثَنِي الزُّهْرِيُّ عَنْ سَالِمٍ عَنْ أَبِيهِ قَالَ كَانَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا افْتَتَحَ الصَّلَاةَ رَفَعَ يَدَيْهِ حَذْوَ مَنْكِبَيْهِ وَإِذَا رَكَعَ صَنَعَ مِثْلَ ذَلِكَ وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ صَنَعَ مِثْلَ ذَلِكَ وَإِذَا قَالَ سَمِعَ اللهُ لِمَنْ حَمِدَهُ قَالَ رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ وَلَا يَصْنَعُ مِثْلَ ذَلِكَ فِي السُّجُودِ رقم الحديث:٤٦٧٤)

हदीस २१७ (५) : हमें अब्दुल्लाह ने खबर दी, मुझे मेरे वालिद ने, हमें यह्या बिन मालिक ने खबर दी, मुझे जुहरी ने सालिम से, उन्होने अपने वालिद से, उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज शुरू करते तो कन्धो के बराबर रफा यदैन करते और जब रुकूअ् करते तो उसी तरह करते और जब रुकूअ् से सर उठाते तो भी उसी तरह रफा यदैन करते और जब **समिअल्लाहुलिमन हमिदह** कहते तो साथ ही **"रब्बना व लकल-हम्द"** भी कहते और सज्दो में रफा यदैन नही करते थे। (हदीस नम्बर : ४६७४)

٢١٨- (٦) حَدَّثَنَا عبد الله حدثني ابي حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ الْوَلِيدِ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ أَخْبَرَنِي جَابِرٌ عَنْ سَالِمٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّهُ فَعَلَ ذَلِكَ مِثْلَ حَدِيثِ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ فِي رَفْعِ الْيَدَيْنِ (مسند احمد - (رقم الحديث:٥٠٩٨)

हदीस २१८ (६) : हमें अब्दुल्लाह ने खबर दी, मुझे मेरे वालिद ने, हमें अब्दुल्लाह बिन वलीद ने, हमे सुफियान ने, मुझे जाबिर ने सालिम से, उन्होने इब्ने उमर से, उन्होंने नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बयान फरमाया, कि उन्होंने उसी तरह किया जैसे कि यह्या बिन सईद की हदीस में रफा यदैन का जिक्र है। (मुसनद अहमद, हदीस नम्बर : ५०९८)

٢١٩- (٧) حَدَّثَنَا عبد الله حدثني أبي حَدَّثَنَا عَفَّانُ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ إِذَا دَخَلَ الصَّلَاةَ رَفَعَ يَدَيْهِ حَذْوَ مَنْكِبَيْهِ وَإِذَا رَكَعَ وَإِذَا رَفَعَ مِنَ الرُّكُوعِ (مسند أحمد - (رقم الحديث: ٥٧٦٢)

हदीस २१९ (७) : हमें अब्दुल्लाह ने खबर सुनाई, मुझे मेरे वालिद ने हमें अफ्फान ने, हमें हम्माद बिन सलमा ने अय्यूब से, उन्होंने नाफ़े से, उन्होंने इब्ने उमर रजि० से कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज़ में दाखिल होते और जब रुकूअ़ करते और जब रुकूअ़ से सर उठाते तो कन्धों के बराबर रफ़ा यदैन करते। (मुसनद अहमद, हदीस नम्बर : ५७६२)

٢٢٠- (٨) حَدَّثَنَا عبد الله حدثني أبي حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ فُضَيْلٍ عَنْ عَاصِمِ بْنِ كُلَيْبٍ عَنْ مُحَارِبِ بْنِ دِثَارٍ قَالَ رَأَيْتُ ابْنَ عُمَرَ يَرْفَعُ يَدَيْهِ كُلَّمَا رَكَعَ وَكُلَّمَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ قَالَ فَقُلْتُ لَهُ مَا هَذَا قَالَ كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا قَامَ فِي الرَّكْعَتَيْنِ كَبَّرَ وَرَفَعَ يَدَيْهِ (مسند أحمد - (رقم الحديث: ٦٢٢٨)

हदीस २२० (८) : हमें अब्दुल्लाह ने हदीस सुनाई, मुझे मेरे वालिद ने, हमें मुहम्मद बिन फ़ुज़ैल ने आसिम से, उन्होंने इब्ने कुलैब से, उन्होंने मुहारिब बिन दिसार से, उन्होंने कहा मैंने इब्ने उमर को देखा कि जब रुकूअ़ करते या रुकूअ़ से सर उठाते तो रफ़ा यदैन करते। मैंने पूछा, यह क्या है? फ़रमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इसी तरह करते थे और जब दो रकअ़त पढ़ कर उठते उस वक्त भी रफ़ा यदैन करते थे।

(मुसनद अहमद, हदीस नम्बर ६२२८)

٢٢١- (٩) حَدَّثَنَا عبد الله حدثني أبي حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنِ الْحَكَمِ قَالَ رَأَيْتُ طَاوُسًا حِينَ يَفْتَتِحُ الصَّلَاةَ يَرْفَعُ يَدَيْهِ وَحِينَ يَرْكَعُ وَحِينَ يَرْفَعُ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ فَحَدَّثَنِي رَجُلٌ مِنْ أَصْحَابِهِ أَنَّهُ يُحَدِّثُهُ عَنِ ابْنِ عُمَرَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ (مسند أحمد - (رقم الحديث: ٥٠٣٣)

हदीस २२१ (९) : हमें अब्दुल्लाह ने हदीस सुनाई, मुझे मेरे वालिद ने

हमें मुहम्मद बिन ज'फ़र ने, हमें शो'बा ने हकम से, उन्होंने कहा मैंने ताऊस को देखा कि वह जब नमाज शुरू करते और रुकूअ़ करते और रुकूअ़ से सर उठाते तो रफ़ा यदैन करते। और बयान करते कि इब्ने उमर रजि० के शागिर्दों में से एक ने बयान किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इसी तरह करते थे। (मुसनद अहमद, हदीस नम्बर : ५०३३)

٢٢٢- (١٠) حَدَّثَنَا عبد الله حدثني أبي حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ جَابِرٍ سَمِعْتُ سَالِمَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ يُحَدِّثُ أَنَّهُ رَأَى أَبَاهُ يَرْفَعُ يَدَيْهِ إِذَا كَبَّرَ وَإِذَا أَرَادَ أَنْ يَرْكَعَ وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ فَسَأَلْتُهُ عَنْ ذَلِكَ فَزَعَمَ أَنَّهُ رَأَى رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَصْنَعُهُ (مسند أحمد - (رقم الحديث: ٥٠٥٦)

हदीस २२२ (१०) : हमें अब्दुल्लाह ने हदीस सुनाई, मुझे मेरे वालिद ने, हमें मुहम्मद बिन ज'फ़र ने, हमें शो'बा ने जाबिर से, उन्होंने कहा मैंने सालिम बिन अब्दुल्लाह को हदीस सुनाते हुए सुना कि उस ने अपने बाप को देखा, जब वह शुरू में तक्बीर कहते तो रफ़ा यदैन करते और जब रुकूअ़ जाते और जब रुकूअ़ से सर उठाते उस वक्त भी रफ़ा यदैन करते। सालिम कहते हैं मैंने वालिद से पूछा, उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इसी तरह करते थे। (मुसनद अहमद, हदीस नम्बर : ५०५६)

٢٢٣- (١١) حَدَّثَنَا عبد الله حدثني أبي حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ عَنْ شُعْبَةَ حَدَّثَنَا قَتَادَةُ عَنْ نَصْرِ بْنِ عَاصِمٍ عَنْ مَالِكِ بْنِ الْحُوَيْرِثِ وَكَانَ مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَرْفَعُ يَدَيْهِ إِذَا دَخَلَ فِي الصَّلَاةِ وَإِذَا رَكَعَ وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ إِلَى أُذُنَيْهِ (رقم الحديث: ٢٠٨٠٥)

हदीस २२३ (११) : हमें अब्दुल्लाह ने हदीस सुनाई, मुझे मेरे वालिद ने, हमें यह्या बिन सईद ने शो'बा से, हमें कतादा ने नस्र बिन आसिम से, उन्होंने मालिक बिन हुवैरिस से और वह नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा में से थे, उन्होंने कहा कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज़ में दाखिल होते और जब रुकूअ़ करते और जब रुकूअ़ से सर उठाते तो कानों तक रफ़ा यदैन करते थे।

(मुसनद अहमद, हदीस नम्बर : २०८०५)

٢٢٤- (١٢) حَدَّثَنَا عبد الله حدثني ابي حَدَّثَنَا عَبْدُ الصَّمَدِ وَأَبُو عَامِرٍ قَالَا حَدَّثَنَا هِشَامٌ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ نَصْرِ بْنِ عَاصِمٍ عَنْ مَالِكِ بْنِ الْحُوَيْرِثِ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ إِذَا كَبَّرَ رَفَعَ يَدَيْهِ حَتَّى يَجْعَلَهُمَا قَرِيبًا مِنْ أُذُنَيْهِ وَإِذَا رَكَعَ صَنَعَ مِثْلَ ذَلِكَ وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ فَعَلَ مِثْلَ ذَلِكَ (رقم الحديث:٢٠٨٠٩)

हदीस २२४ (१२) : हमें अब्दुल्लाह ने हदीस सुनाई, मुझे मेरे वालिद ने, हमें अब्दुस्समद और अबू आमिर ने दोनों ने कहा, हमें हिशाम ने कतादा से हदीस बयान की, उन्होंने नस बिन आसिम से, उन्होंने मालिक बिन हुवैरिस से बयान किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब **अल्लाहु अकबर** कहते तो कानों के करीब तक रफा यदैन करते और जब रुकूअ करते तो उसी तरह (रफा यदैन) करते और जब रुकूअ से सर उठाते तो भी उसी तरह रफा यदैन करते। (हदीस नम्बर : २०८०९)

٢٢٥- (١٣) حَدَّثَنَا عبد الله حدثني ابي حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ عَنْ سَعِيدِ بْنِ أَبِي عَرُوبَةَ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ نَصْرِ بْنِ عَاصِمٍ عَنْ مَالِكِ بْنِ الْحُوَيْرِثِ قَالَ رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا دَخَلَ فِي الصَّلَاةِ رَفَعَ يَدَيْهِ وَإِذَا رَكَعَ وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ حَتَّى حَاذَتَا فُرُوعَ أُذُنَيْهِ (رقم الحديث:٢٠٨١٠)

हदीस २२५ (१३) : हमें अब्दुल्लाह ने हदीस सुनाई, मुझे मेरे वालिद ने, हमें इस्माईल ने सईद बिन अबी अरूबा से हदीस सुनाई, उन्होंने कतादा से बयान किया, उन्होंने नस बिन आसिम से, उन्होंने मालिक बिन हुवैरिस से, उन्होंने कहा मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा जब आप नमाज शुरू करते और जब रुकूअ करते और जब रुकूअ से सर उठाते तो कानों की लव तक रफा यदैन करते। (मुसनद अहमद, हदीस नम्बर : २०८१०)

٢٢٦- (١٤) حَدَّثَنَا عبد الله حدثني ابي حَدَّثَنَا عَفَّانُ قَالَ ثَنَا هَمَّامٌ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جُحَادَةَ قَالَ حَدَّثَنِي عَبْدُ الْجَبَّارِ بْنُ وَائِلٍ عَنْ عَلْقَمَةَ بْنِ وَائِلٍ وَمَوْلًى لَهُمْ أَنَّهُمَا حَدَّثَاهُ عَنْ أَبِيهِ وَائِلِ بْنِ حُجْرٍ أَنَّهُ رَأَى النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَفَعَ يَدَيْهِ حِينَ دَخَلَ فِي الصَّلَاةِ كَبَّرَ وَصَفَ

هَمَّامٌ حِيَالَ أُذُنَيْهِ ثُمَّ الْتَحَفَ بِثَوْبِهِ ثُمَّ وَضَعَ يَدَهُ الْيُمْنَى عَلَى الْيُسْرَى فَلَمَّا أَرَادَ أَنْ يَرْكَعَ أَخْرَجَ يَدَيْهِ مِنَ الثَّوْبِ ثُمَّ رَفَعَهُمَا فَكَبَّرَ فَرَكَعَ فَلَمَّا قَالَ سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ رَفَعَ يَدَيْهِ فَلَمَّا سَجَدَ سَجَدَ بَيْنَ كَفَّيْهِ (رقم الحديث:١٩٠٧١)

हदीस २२६ (१४) : हमें अब्दुल्लाह ने हदीस सुनाई, मुझे मेरे वालिद ने हमें अफ्फान ने, उन्होंने कहा, हमें हम्माम ने हदीस सुनाई, हमें मुहम्मद बिन जुहादा ने, मुझे अब्दुल जब्बार बिन वाइल ने अल्कमा बिन वाइल से और उनके मौला ने, उन दोनों ने उसके वालिद वाइल बिन हुज्र से हदीस बयान की कि उन्होंने नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा कि जब आप नमाज में दाखिल हुए तो रफा यदैन की और तक्बीर कही। हम्माम रावी कहते हैं कि कानों तक रफा यदैन की। फिर (सर्दी की वजह से) कपड़ा लपेटा। फिर दायां हाथ बाएं पर बांधा, फिर जब रुकूअ का इरादा किया तो अपने हाथों को कपड़े से निकाला और रफा यदैन की और तक्बीर कही और रुकूअ किया। फिर जब **समिअल्लाहुलिमन हमिदह** कहा तो रफा यदैन किया, और फिर जब सज्दा किया तो दोनों हथेलियों के दर्मियान सज्दा किया। (मुसनद अहमद, हदीस नम्बर १९०७१)

٢٢٧- (١٥) حَدَّثَنَا عبد الله حدثني ابي حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ عَنْ عَاصِمِ بْنِ كُلَيْبٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ وَائِلِ بْنِ حُجْرٍ قَالَ رَأَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَبَّرَ فَرَفَعَ يَدَيْهِ حِينَ كَبَّرَ يَعْنِي اسْتَفْتَحَ الصَّلَاةَ وَرَفَعَ يَدَيْهِ حِينَ كَبَّرَ وَرَفَعَ يَدَيْهِ حِينَ رَكَعَ وَرَفَعَ يَدَيْهِ حِينَ قَالَ سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ وَسَجَدَ فَوَضَعَ يَدَيْهِ حَذْوَ أُذُنَيْهِ ثُمَّ جَلَسَ فَافْتَرَشَ رِجْلَهُ الْيُسْرَى ثُمَّ وَضَعَ يَدَهُ الْيُسْرَى عَلَى رُكْبَتِهِ الْيُسْرَى وَوَضَعَ ذِرَاعَهُ الْيُمْنَى عَلَى فَخِذِهِ الْيُمْنَى ثُمَّ أَشَارَ بِسَبَّابَتِهِ وَوَضَعَ الْإِبْهَامَ عَلَى الْوُسْطَى وَقَبَضَ سَائِرَ أَصَابِعِهِ ثُمَّ سَجَدَ فَكَانَتْ يَدَاهُ حِذَاءَ أُذُنَيْهِ (رقم الحديث:١٩٠٦٢)

हदीस २२७ (१५) : हमें अब्दुल्लाह ने हदीस सुनाई, मुझे मेरे वालिद ने हमें अब्दुर्रज्जाक ने हदीस सुनाई, हमें सुफियान ने आसिम बिन कुलैब

से हदीस सुनाई, उन्होंने अपने वालिद से बयान किया, उन्होंने वाइल बिन हुज्र से, उन्होंने कहा कि मैंने नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा, जब आपने शुरू नमाज़ मे तक्बीर कही तो रफ़ा यदैन की, फिर **समिअल्लाहुलिमन हमिदह** कहा तो रफ़ा यदैन की और सज्दा किया तो दोनो हाथ अपने कानो के बराबर (ज़मीन पर) रखे, फिर बैठे तो बायाँ पाँव बिछाया और बायाँ हाथ बाएं घुटने पर रखा और दायां बाजू दाएं रान पर रखा और सब्बाबा उंगली से इशारा किया और अपना अंगूठा दर्मियानी उंगली पर रखा और बाकी उंगलियों को बन्द रखा और सज्दा में हाथ कानों के बराबर रखे। (हदीस नम्बर : १९०६३)

٢٢٨- (١٦) حَدَّثَنَا عبد الله حدثني ابي حَدَّثَنَا شَرِيكٌ عَنْ عَاصِمِ بْنِ كُلَيْبٍ عَنْ عَلْقَمَةَ بْنِ وَائِلِ بْنِ حُجْرٍ عَنْ أَبِيهِ قَالَ أَتَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي الشِّتَاءِ فَقَالَ فَرَأَيْتُ أَصْحَابَهُ يَرْفَعُونَ أَيْدِيَهُمْ فِي ثِيَابِهِمْ (رقم الحديث:١٩٠٥٢)

हदीस २२८ (१६) : हमें अब्दुल्लाह ने ख़बर दी, मुझे मेरे वालिद ने, हमें शरीक ने आसिम बिन कुलैब से, उन्होंने अल्क़मा बिन वाइल बिन हुज्र से, उन्होंने अपने वालिद से उन्होंने कहा, जब मैं सर्दियों में आया तो देखा तमाम सहाबी कपड़ों मे रफ़ा यदैन करते थे। (मुसनद अहमद,हदीस नम्बर : १९०५२)

٢٢٩- (١٧) حَدَّثَنَا عبد الله حدثني ابي حَدَّثَنَا يُونُسُ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ حَدَّثَنَا عَاصِمُ بْنُ كُلَيْبٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ وَائِلِ بْنِ حُجْرٍ الْحَضْرَمِيِّ قَالَ أَتَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقُلْتُ لَأَنْظُرَنَّ كَيْفَ يُصَلِّي قَالَ فَاسْتَقْبَلَ الْقِبْلَةَ فَكَبَّرَ وَرَفَعَ يَدَيْهِ حَتَّى كَانَتَا حَذْوَ مَنْكِبَيْهِ قَالَ ثُمَّ أَخَذَ شِمَالَهُ بِيَمِينِهِ قَالَ فَلَمَّا أَرَادَ أَنْ يَرْكَعَ رَفَعَ يَدَيْهِ حَتَّى كَانَتَا حَذْوَ مَنْكِبَيْهِ فَلَمَّا رَكَعَ وَضَعَ يَدَيْهِ عَلَى رُكْبَتَيْهِ فَلَمَّا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ رَفَعَ يَدَيْهِ حَتَّى كَانَتَا حَذْوَ مَنْكِبَيْهِ فَلَمَّا سَجَدَ وَضَعَ يَدَيْهِ مِنْ وَجْهِهِ بِذَلِكَ الْمَوْضِعِ فَلَمَّا قَعَدَ افْتَرَشَ رِجْلَهُ الْيُسْرَى وَوَضَعَ يَدَهُ الْيُسْرَى عَلَى رُكْبَتِهِ الْيُسْرَى وَوَضَعَ حَدَّ مِرْفَقِهِ عَلَى فَخِذِهِ الْيُمْنَى وَعَقَدَ ثَلَاثِينَ وَحَلَّقَ وَاحِدَةً وَأَشَارَ بِإِصْبَعِهِ السَّبَّابَةِ (رقم الحديث:١٩٠٥٥)

हदीस २२९ (१७) : हमें अब्दुल्लाह ने ख़बर दी, मुझे मेरे वालिद ने, हमें यूनुस बिन मुहम्मद ने हदीस सुनाई, हमें अब्दुल वाहिद ने ख़बर दी, हमें आसिम बिन कुलैब ने अपने वालिद से, उन्होंने वाइल बिन हुज्र हज़रमी से रिवायत किया कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आया, मैंने कहा कि मैं ज़रूर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को नमाज़ पढ़ते हुए देखूंगा। (मैंने आपकी नमाज़ देखी) आपने क़िब्ला रू हो कर तक्बीर कही, फिर कन्धों तक रफ़ा यदैन की। फिर बायां हाथ दाए हाथ से पकड़ा, फिर जब रुकूअ किया तो कन्धों तक रफ़ा यदैन की और रुकूअ में अपने हाथ घुटनो पर रखे, फिर रुकूअ से सर उठाया तो रफ़ा यदैन की कन्धों तक, फिर जब सज्दा किया तो अपने हाथों को ज़मीन पर उसी मक़ाम पर रखा यानी कन्धों के बराबर फिर जब बैठे तो बाया पाँव बिछाया और बायां हाथ बाए घुटना पर रखा, और दाए कुहनी के किनारे को दाएं रान पर रखा और तीस की गिरह लगाई और एक उंगली से हल्क़ा बना कर सब्बाबा उंगली से इशारा किया। (मुसनद अहमद, हदीस नम्बर : १९०५५)

٢٣٠- (١٨) حَدَّثَنَا عبد الله حدثني ابي حَدَّثَنَا عَبْدُ الصَّمَدِ حَدَّثَنَا زَائِدَةُ حَدَّثَنَا عَاصِمُ بْنُ كُلَيْبٍ أَخْبَرَنِي أَبِي أَنَّ وَائِلَ بْنَ حُجْرٍ الْحَضْرَمِيَّ أَخْبَرَهُ قَالَ قُلْتُ لَأَنْظُرَنَّ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَيْفَ يُصَلِّي قَالَ فَنَظَرْتُ إِلَيْهِ قَامَ فَكَبَّرَ وَرَفَعَ يَدَيْهِ حَتَّى حَاذَتَا أُذُنَيْهِ ثُمَّ وَضَعَ يَدَهُ الْيُمْنَى عَلَى ظَهْرِ كَفِّهِ الْيُسْرَى وَالرُّسْغِ وَالسَّاعِدِ ثُمَّ قَالَ لَمَّا أَرَادَ أَنْ يَرْكَعَ رَفَعَ يَدَيْهِ مِثْلَهَا وَوَضَعَ يَدَيْهِ عَلَى رُكْبَتَيْهِ ثُمَّ رَفَعَ رَأْسَهُ فَرَفَعَ يَدَيْهِ مِثْلَهَا ثُمَّ سَجَدَ فَجَعَلَ كَفَّيْهِ بِحِذَاءِ أُذُنَيْهِ ثُمَّ قَعَدَ فَافْتَرَشَ رِجْلَهُ الْيُسْرَى فَوَضَعَ كَفَّهُ الْيُسْرَى عَلَى فَخِذِهِ وَرُكْبَتِهِ الْيُسْرَى وَجَعَلَ حَدَّ مِرْفَقِهِ الْأَيْمَنِ عَلَى فَخِذِهِ الْيُمْنَى ثُمَّ قَبَضَ بَيْنَ أَصَابِعِهِ فَحَلَّقَ حَلْقَةً ثُمَّ رَفَعَ إِصْبَعَهُ فَرَأَيْتُهُ يُحَرِّكُهَا يَدْعُو بِهَا ثُمَّ جِئْتُ بَعْدَ ذَلِكَ فِي زَمَانٍ فِيهِ بَرْدٌ فَرَأَيْتُ النَّاسَ عَلَيْهِمُ الثِّيَابُ تُحَرَّكُ أَيْدِيهِمْ مِنْ تَحْتِ الثِّيَابِ مِنَ الْبَرْدِ (رقم الحديث: ١٩٠٥٧)

हदीस २३० (१८) : हमें अब्दुल्लाह ने हदीस सुनाई, मुझे मेरे वालिद ने, हमें अब्दुस्समद ने हदीस सुनाई, हमें जाइदा ने, हमें आसिम बिन कुलैब

ने हदीस सुनाई, मुझे मेरे वालिद ने वाइल बिन हुज्र हजरमी से खबर दी कि उन्होंने कहा कि मैं आपकी नमाज जरूर देखूंगा कि कैसे पढते हैं, मैंने देखा कि जब आप खडे होते तो तक्बीर के साथ कानों तक रफा यदैन करते फिर दाया हाथ बाए हाथ की कुहनी और बाजू पर रखते। फिर जब रुकूअ् का इरादा करते तो उसी तरह रफा यदैन करके हाथ दोनों घुटनों पर रखे फिर रुकूअ् से सर उठाया तो उसी तरह रफा यदैन की, फिर सज्दा किया तो जमीन पर दोनों हथेलियाँ कानों के बराबर रखीं, फिर बैठे तो बाया पॉव बिछा कर बैठे और बाया हाथ बाए रान और घुटने पर रखा और दाए कुहनी दाए रान पर रखी, फिर मुट्ठी बन्द करके दो उंगलियों का हल्का बना कर उगली उठाई। मैंने देखा अपनी उगली को हरकत दे रहे थे और दुआ कर रहे थे। उसके बाद दोबारा सर्दी के मौसम में आया तो देखा कि लोग कपडे मे रफा यदैन कर रहे थे। (मुसनद अहमद, हदीस नम्बर : १९०५७)

٢٣١- (١٩) حَدَّثَنَا عبد الله حدثني ابي حَدَّثَنَا يَزِيدُ أَخْبَرَنَا أَشْعَثُ بْنُ سَوَّارٍ عَنْ عَبْدِ الْجَبَّارِ بْنِ وَائِلِ بْنِ حُجْرٍ عَنْ أَبِيهِ قَالَ أَتَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَكَانَ لِي مِنْ وَجْهِهِ مَا لَا أُحِبُّ أَنَّ لِي بِهِ مِنْ وَجْهِ رَجُلٍ مِنْ بَادِيَةِ الْعَرَبِ صَلَّيْتُ خَلْفَهُ وَكَانَ يَرْفَعُ يَدَيْهِ كُلَّمَا كَبَّرَ وَرَفَعَ وَوَضَعَ بَيْنَ السَّجْدَتَيْنِ وَيُسَلِّمُ عَنْ يَمِينِهِ وَعَنْ شِمَالِهِ (رقم الحديث:١٩٠٦٦)

हदीस २३१ (१९) : हमें अब्दुल्लाह ने हदीस सुनाई, मुझे मेरे वालिद ने, हमें यजीद ने हदीस सुनाई, हमें अशअश बिन सव्वार ने खबर दी, उन्होंने अब्दुल जब्बार बिन वाइल से बयान किया, उन्होंने अपने वालिद से, उन्होंने कहा कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आया और मुझे सबसे ज्यादा बात महबूब थी कि मैं किसी और के बजाए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पीछे नमाज पढ कर देखू और जब आपने तक्बीर कही और रुकूअ् से सर उठाया तो रफा यदैन की और सज्दों में रफा यदैन न करते और दाए बाए सलाम फेरते। (मुसनद अहमद, हदीस नम्बर : १९०६६)

٢٣٢- (٢٠) حَدَّثَنَا عبد الله حدثني ابي حَدَّثَنَا أَسْوَدُ بْنُ عَامِرٍ حَدَّثَنَا زُهَيْرُ بْنُ مُعَاوِيَةَ عَنْ عَاصِمِ بْنِ كُلَيْبٍ أَنَّ أَبَاهُ أَخْبَرَهُ أَنَّ وَائِلَ بْنَ حُجْرٍ أَخْبَرَهُ قَالَ قُلْتُ لَأَنْظُرَنَّ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ

وَسَلَّمَ كَيْفَ يُصَلِّي فَقَامَ فَرَفَعَ يَدَيْهِ حَتَّى حَاذَتَا أُذُنَيْهِ ثُمَّ أَخَذَ شِمَالَهُ بِيَمِينِهِ ثُمَّ قَالَ حِينَ أَرَادَ أَنْ يَرْكَعَ رَفَعَ يَدَيْهِ حَتَّى حَاذَتَا أُذُنَيْهِ ثُمَّ وَضَعَ يَدَيْهِ عَلَى رُكْبَتَيْهِ ثُمَّ رَفَعَ فَرَفَعَ يَدَيْهِ مِثْلَ ذَلِكَ ثُمَّ سَجَدَ فَوَضَعَ يَدَيْهِ حِذَاءَ أُذُنَيْهِ ثُمَّ قَعَدَ فَافْتَرَشَ رِجْلَهُ الْيُسْرَى وَوَضَعَ كَفَّهُ الْيُسْرَى عَلَى رُكْبَتِهِ الْيُسْرَى فَخِذِهِ فِي صِفَةِ عَاصِمٍ ثُمَّ وَضَعَ حَدَّ مِرْفَقِهِ الْأَيْمَنِ عَلَى فَخِذِهِ الْيُمْنَى وَقَبَضَ ثَلَاثًا وَحَلَّقَ حَلْقَةً ثُمَّ رَأَيْتُهُ يَقُولُ هَكَذَا وَأَشَارَ زُهَيْرٌ بِسَبَّابَتِهِ الْأُولَى وَقَبَضَ إِصْبَعَيْنِ وَحَلَّقَ الْإِبْهَامَ عَلَى السَّبَّابَةِ الثَّانِيَةِ قَالَ زُهَيْرٌ قَالَ عَاصِمٌ وَحَدَّثَنِي عَبْدُ الْجَبَّارِ عَنْ بَعْضِ أَهْلِهِ أَنَّ وَائِلًا قَالَ أَتَيْتُهُ مَرَّةً أُخْرَى وَعَلَى النَّاسِ ثِيَابٌ فِيهَا الْبَرَانِسُ وَفِيهَا الْأَكْسِيَةُ فَرَأَيْتُهُمْ يَقُولُونَ هَكَذَا تَحْتَ الثِّيَابِ (رقم الحديث:١٩٠٨١)

हदीस २३२ (२०) : हमें अब्दुल्लाह ने हदीस सुनाई, मुझे मेरे वालिद ने, हमें असवद बिन आमिर ने हदीस सुनाई, हमें जुहैर बिन मुआविया ने आसिम बिन कुलैब से हदीस सुनाई, कि उसके वालिद ने खबर दी कि वाइल बिन हुज्र ने कहा है कि मैंने अपने दिल मे कहा कि मैं जरूर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को नमाज पढते हुए देखूगा। पस आप खडे हुए और कानों के बराबर रफा यदैन की। फिर आपने बाया हाथ दाए हाथ से पकडा, फिर आपने जब रुकूअ् का इरादा किया तो कानों के बराबर रफा यदैन की। फिर अपने हाथो को घुटनों पर रखा, फिर आपने रुकूअ् से सर उठाया तो उसी तरह रफा यदैन की, फिर आपने सज्दा किया, पस हाथों को कानों के बराबर रखा, फिर आप बैठे तो बाया पॉव बिछा कर बैठे और बायां हाथ बाए घुटने पर रखा। आसिम कहता है कि दाएं कुहनी दाए रान पर रखी और तीन उगलियाँ बन्द करके इसी तरह उगली से इशारा किया और जुहैर रावी ने इशारा करके दिखाया, और अंगूठे और दर्मियानी उगली का हल्का बनाया। जुहैर की रिवायत में है कि अब्दुल जब्बार ने अपने बाज घर वालो से बयान किया कि वाइल दूसरी मरतबा आया तो लोगों ने कपडे, टोपियां और चादरें ओढी हुई थी और वह उनके नीचे से रफा यदैन करते थे। (मुसनद अहमद, हदीस नम्बर : १९०८१)

٢٣٣- (٢١) حَدَّثَنَا عبد الله حدثني أبي حَدَّثَنَا هَاشِمُ بْنُ الْقَاسِمِ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ عَاصِمِ بْنِ كُلَيْبٍ قَالَ سَمِعْتُ أَبِي يُحَدِّثُ عَنْ وَائِلٍ الْحَضْرَمِيِّ أَنَّهُ رَأَى النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ صَلَّى فَكَبَّرَ فَرَفَعَ يَدَيْهِ فَلَمَّا رَكَعَ رَفَعَ يَدَيْهِ فَلَمَّا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ رَفَعَ يَدَيْهِ وَخَوَّى فِي رُكُوعِهِ وَخَوَّى فِي سُجُودِهِ فَلَمَّا قَعَدَ يَتَشَهَّدُ وَضَعَ فَخِذَهُ الْيُمْنَى عَلَى الْيُسْرَى وَوَضَعَ يَدَهُ الْيُمْنَى وَأَشَارَ بِإِصْبَعِهِ السَّبَّابَةِ وَحَلَّقَ بِالْوُسْطَى (رقم الحديث:١٩٠٨٣)

हदीस २३३ (२१) : हमे अब्दुल्लाह ने खबर दी, मुझे मेरे वालिद ने, हमें हाशिम बिन कासिम ने खबर दी, हमें शो'बा ने आसिम बिन कुलैब से खबर दी, उन्होंने कहा कि मैंने अपने वालिद को वाइल हजरमी से रिवायत करते हुए सुना कि उस ने नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा आपने **अल्लाहु अकबर** कहा और रफ़ा यदैन की, फिर जब रुकूअ़ किया तो भी रफा यदैन की, पस जब रुकूअ़ से सर उठाया तो भी रफा यदैन की, रुकूअ़ और सज्दा मे हाथों को जिस्म से अलग रखा। जब तशह्हुद में बैठे तो अपनी दाए रान को बाए पॉव के ऊपर रखा और अपने दाए हाथ को रखा और शहादत की उंगली से इशारा किया और बीच वाली उंगली से हल्का बनाया। (मुसनद अहमद, हदीस नम्बर : १९०८३)

٢٣٤- (٢٢) حَدَّثَنَا عبد الله حدثني أبي حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ عَنْ عَبْدِ الْحَمِيدِ بْنِ جَعْفَرٍ قَالَ حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ عَطَاءٍ عَنْ أَبِي حُمَيْدٍ السَّاعِدِيِّ قَالَ سَمِعْتُهُ وَهُوَ فِي عَشَرَةٍ مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَحَدُهُمْ أَبُو قَتَادَةَ بْنُ رِبْعِيٍّ يَقُولُ أَنَا أَعْلَمُكُمْ بِصَلَاةِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالُوا لَهُ مَا كُنْتَ أَقْدَمَنَا صُحْبَةً وَلَا أَكْثَرَنَا لَهُ تَبَاعَةً قَالَ بَلَى قَالُوا فَاعْرِضْ قَالَ كَانَ إِذَا قَامَ إِلَى الصَّلَاةِ اعْتَدَلَ قَائِمًا وَرَفَعَ يَدَيْهِ حَتَّى حَاذَى بِهِمَا مَنْكِبَيْهِ فَإِذَا أَرَادَ أَنْ يَرْكَعَ رَفَعَ يَدَيْهِ حَتَّى يُحَاذِيَ بِهِمَا مَنْكِبَيْهِ ثُمَّ قَالَ اللَّهُ أَكْبَرُ فَرَكَعَ ثُمَّ اعْتَدَلَ فَلَمْ يُصَوِّبْ رَأْسَهُ وَلَمْ يُقْنِعْهُ وَوَضَعَ يَدَيْهِ عَلَى رُكْبَتَيْهِ ثُمَّ قَالَ سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ ثُمَّ رَفَعَ وَاعْتَدَلَ حَتَّى رَجَعَ كُلُّ

عَظْمٍ فِي مَوْضِعِهِ مُعْتَدِلًا ثُمَّ هَوَى سَاجِدًا وَقَالَ اللَّهُ أَكْبَرُ ثُمَّ جَافَى وَفَتَحَ عَضُدَيْهِ عَنْ بَطْنِهِ وَفَتَحَ أَصَابِعَ رِجْلَيْهِ ثُمَّ ثَنَى رِجْلَهُ الْيُسْرَى وَقَعَدَ عَلَيْهَا وَاعْتَدَلَ حَتَّى رَجَعَ كُلُّ عَظْمٍ فِي مَوْضِعِهِ ثُمَّ هَوَى سَاجِدًا وَقَالَ اللَّهُ أَكْبَرُ ثُمَّ ثَنَى رِجْلَهُ وَقَعَدَ عَلَيْهَا حَتَّى يَرْجِعَ كُلُّ عُضْوٍ إِلَى مَوْضِعِهِ ثُمَّ نَهَضَ فَصَنَعَ فِي الرَّكْعَةِ الثَّانِيَةِ مِثْلَ ذَلِكَ حَتَّى إِذَا قَامَ مِنَ السَّجْدَتَيْنِ كَبَّرَ وَرَفَعَ يَدَيْهِ حَتَّى يُحَاذِيَ بِهِمَا مَنْكِبَيْهِ كَمَا صَنَعَ حِينَ افْتَتَحَ الصَّلَاةَ ثُمَّ صَنَعَ كَذَلِكَ حَتَّى إِذَا كَانَتْ الرَّكْعَةُ الَّتِي تَنْقَضِي فِيهَا الصَّلَاةُ أَخَّرَ رِجْلَهُ الْيُسْرَى وَقَعَدَ عَلَى شِقِّهِ مُتَوَرِّكًا ثُمَّ سَلَّمَ (رقم الحديث:٢٣٩٩٧)

हदीस २३४ (२२) : हमें अब्दुल्लाह ने खबर दी, मुझे मेरे वालिद ने, हमे यहया बिन सईद ने अब्दुल हमीद बिन जा'फर से हदीस सुनाई, उन्होंने कहा, मुझे मुहम्मद बिन अता ने अबी हुमैद साइदी से हदीस सुनाई। उस ने कहा मैंने उसे दस सहाबा की मौजूदगी में कहते हुए सुना, जिन में अबू कतादा बिन रिबई भी थे। कहा, कि मै रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नमाज़ को अच्छी तरह जानता हूँ। उन्होंने कहा, न तो तू हम से पहले मुसलमान हुआ है, न ही हम से ज्यादा आपकी रिफाकत है. उन्होंने कहा कि क्यों नही, तो उन्होंने कहा, अच्छा फिर पेश करो, आपकी नमाज कैसी होती थी? उसने कहा कि जब आप ठीक खड़े हो जाते तो कन्धों तक रफा यदैन करते, फिर जब रुकूअ़ करते तो भी कन्धों तक रफा यदैन करते और रुकूअ़ में न सर को ऊंचा रखते न नीचा और हाथ अपने घुटनों पर रखते, फिर **समिअल्लाहुलिमन हमिदह** कह कर खड़े हो जाते और रफा यदैन करते। फिर सज्दा में जाते तो **अल्लाहु अकबर** कहते, फिर अपने बाएं पॉव को बिछा कर उस पर बैठ जाते हत्ता कि जिस्म का हर जोड अपनी अपनी जगह पर आ जाता। फिर उठते और उसी तरह दूसरी रकअत में भी करते, फिर दो रकअतों से जब उठते तक्बीर कह कर कन्धों तक रफा यदैन करते, जिस तरह पहली मरतबा किया था, उसी तरह सारी नमाज में करते हत्ता कि वह रकअत आ जाती जिसमें नमाज खत्म होती है तो फिर बायॉं पॉव आगे निकाल कर अपने सुरीन पर बैठ जाते, फिर सलाम फेरते। (मुसनद अहमद, हदीस नम्बर : २३९९७)

٢٣٥- (٢٣) حَدَّثَنَا عبد الله حدثني أبي حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ دَاوُدَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ يَعْنِي ابْنَ أَبِي الزِّنَادِ عَنْ مُوسَى بْنِ عُقْبَةَ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الْفَضْلِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ فُلَانِ بْنِ رَبِيعَةَ بْنِ الْحَارِثِ بْنِ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ الْهَاشِمِيِّ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الْأَعْرَجِ عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي رَافِعٍ عَنْ عَلِيِّ بْنِ أَبِي طَالِبٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّهُ كَانَ إِذَا قَامَ إِلَى الصَّلَاةِ الْمَكْتُوبَةِ كَبَّرَ وَرَفَعَ يَدَيْهِ حَذْوَ مَنْكِبَيْهِ وَيَصْنَعُ مِثْلَ ذَلِكَ إِذَا قَضَى قِرَاءَتَهُ وَأَرَادَ أَنْ يَرْكَعَ وَيَصْنَعُهُ إِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ وَلَا يَرْفَعُ يَدَيْهِ فِي شَيْءٍ مِنْ صَلَاتِهِ وَهُوَ قَاعِدٌ وَإِذَا قَامَ مِنَ السَّجْدَتَيْنِ رَفَعَ يَدَيْهِ كَذَلِكَ وَكَبَّرَ (رقم الحديث:٧١٧)

हदीस २३५ (२३) : हमे अब्दुल्लाह ने खबर दी, मुझे मेरे वालिद ने, हमें सुलेमान बिन दाऊद ने हदीस सुनाई, हमें अब्दुर्रहमान यानी इब्ने अबी जिनाद ने मूसा बिन उक्बा से, उन्होने अब्दुल्लाह बिन फुजैल बिन अब्दुर्रहमान बिन फुलान बिन रबीआ बिन हारिस बिन अब्दुल मुत्तलिब हाशमी से बयान किया उन्होने अब्दुर्रहमान अ'रज से बयान किया, उन्होने उबैदुल्लाह बिन अबू राफे से बयान किया, उन्होने अली बिन अबू तालिब से बयान किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब फर्ज नमाज के लिए खड़े होते तो **अल्लाहु अकबर** कहते और कन्धो के बराबर रफा यदैन करते और इसी तरह जब किरअत खत्म करके रुकूअ् का इरादा करते और जब रुकूअ से सर को उठाते तो (भी रफा यदैन) करते। बैठने की हालत में रफा यदैन न करते और जब दो रकअत पढ़ कर खड़े होते तो उसी तरह रफा यदैन करते और **अल्लाहु अकबर** कहते।

(हदीस नम्बर : ७१७)

❖ ❖ ❖

(२०) सही इब्ने हिब्बान

٢٣٦- (١) اخبرنا الحسن بن سفيان حدثنا حبان بن موسى اخبرنا عبد الله بن المبارك عن مالك عن ابن شهاب عن سالم، عن ابن عمر ان رسول الله صلى الله عليه وسلم كان إذا افتتح الصلاة رفع يديه حذو منكبيه وإذا كبر للركوع وإذا رفع رأسه من الركوع رفعهما كذلك ايضا وقال: سمع الله لمن حمده ربنا ولك الحمد وكان لا يفعل ذلك في السجود (صحيح ابن حبان ج:٢،ص:١٦٨)

हदीस २३६ (१) : हमें हसन बिन सुफियान ने खबर दी। हमें हिब्बान बिन मूसा ने, हमें अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने मालिक से, उन्होंने इब्ने शिहाब से, उन्होंने सालिम से, उन्होंने इब्ने उमर रजि० से बयान किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज शुरू करते और जब रुकूअ् के वक्त **अल्लाहु अकबर** कहते और जब रुकूअ से सर उठाते तो कन्धों के बराबर रफा यदैन करते और **समिअल्लाहुलिमन हमिदह रब्बना व लकल हम्द** कहते और सज्दा मे ऐसे न करते (यानी रफा यदैन न करते। (सही इब्ने हिब्बान जिल्द ३, स० १६८)

٢٣٧- (٢) اخبرنا الحسن بن سفيان قال: حدثنا محمد بن عبد الله بن نمير ، وابو الربيع الزهراني ، قالا : حدثنا سفيان عن الزهري عن سالم عن ابيه قال : رايت النبي صلى الله عليه وسلم إذا افتتح الصلاة رفع يديه حتى يحاذي بهما منكبيه،فإذا اراد أن يركع وبعد ما يرفع راسه من الركوع ولا يرفع بين السجدتين (صحيح ابن حبان ص:١٦٩، ج:٢)

हदीस २३७ (२) : हमें हसन बिन सुफियान ने खबर दी, उन्होंने कहा हमें मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन नुमैर और अबू रबीअ जहरानी ने खबर दी, उन्होने कहा हमें सुफियान ने जुहरी से हदीस सुनाई, उन्होने सालिम से उन्होंने अपने वालिद से, उन्होंने कहा कि मैंने नबी अकरम सल्लल्लाहु

अलैहि व सल्लम को देखा कि जब आप नमाज शुरू करते तो कन्धों के बराबर रफा यदैन करते, फिर जब रुकूअ् करते और रुकूअ् से सर उठाते तो भी रफा यदैन करते और सज्दों में रफा यदैन नहीं करते थे।

(इब्ने हिब्बान, जिल्द ३, स० १६६)

٢٣٨- (٣) اخبرنا ابو خليفة قال حدثنا سليمان بن حرب قال حدثنا شعبة عن قتادة عن نصر بن عاصم عن مالك بن الحويرث أن النبي صلى الله عليه وسلم ، كان إذا كبر رفع يديه إذا دخل في الصلاة حتى يحاذي بهما اذنيه وإذا ركع رفع رأسه من الركوع (صحيح ابن حبان – ص:١٦٩، ج:٣)

हदीस २३८ (३) : हमे अबू खलीफा ने खबर दी, उन्होंने कहा हमें सुलेमान बिन हर्ब ने खबर दी, हमे शो'बा ने कतादा से खबर दी, उन्होंने नस्र बिन आसिम से बयान किया, उन्होंने मालिक बिन हुवैरिस से बयान किया कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज शुरू करते और रुकूअ् करते और रुकूअ् से सर उठाते तो कानों के बराबर रफा यदैन करते। (सही इब्ने हिब्बान, जिल्द ३, स० १६६)

٢٣٩- (٤) أخبرنا الفضل بن الحباب قال حدثنا ابو الوليد الطيالسي قال حدثنا زائدة بن قدامة قال حدثنا عاصم بن كليب قال حدثني ابي ان وائل بن حجر الحضرمي أخبره قال: لأنظرن إلى رسول الله صلى الله عليه وسلم كيف يصلي فنظرت اليه حين قام فكبر ورفع يديه حتى حاذتا اذنيه ثم وضع يده اليمنى على ظهر كفه اليسرى والرسغ والساعد ثم لما اراد أن يركع رفع يديه مثلها ثم ركع فوضع يديه على ركبتيه ثم رفع رأسه فرفع يديه مثلها ثم سجد فجعل كفيه بحذاء أذنيه ثم جلس فافترش فخذه اليسرى وجعل يده اليسرى على فخذه وركبته اليسرى وجعل حد مرفقه الأيمن على فخذه اليمنى وعقد ثلاثين من اصابعه وحلق حلقة ثم رفع إصبعه فرأيته يحركها يدعو بها ثم جئت بعد ذلك في زمان فيه برد فرأيت الناس عليهم جل الثياب تتحرك أيديهم تحت الثياب (صحيح ابن حبان – ص:١٦٧، ج:٣)

हदीस २३६ (४) : हमें फजल बिन हुबाब ने खबर दी, उन्होंने कहा हमें अबुल वलीद त्यालसी ने खबर दी, हमें जाइदा बिन कुदामा ने खबर दी, हमें आसिम बिन कुलैब ने खबर दी, उन्होंने कहा, मुझे मेरे वालिद ने खबर दी कि वाइल बिन हुज्र हजरमी ने उसे खबर दी, उन्होंने कहा कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नमाज देखूंगा कि किस तरह पढ़ते हैं। फिर देखा कि जब खडे हुए तो **अल्लाहु अकबर** कहा और रफा यदैन की कानों तक। फिर अपना दायां हाथ बाए हाथ की पुश्त और पहुंचे और कलाई पर रखा, फिर जब रुकूअ् का इरादा किया तो पहले की तरह रफा यदैन किया, फिर रुकूअ् किया, पस अपने हाथों को रखा फिर सर को उठाया फिर अपने हाथों को उठाया पहले की तरह ही, फिर सज्दा किया और अपनी हथेलियों को अपने कानों के बराबर रखा फिर बैठे पस बाए पाँव को बिछाया और अपने दाएं हाथ को दाएं रान पर रखा। और उंगलियों से तीन की गिरह बांधी और उंगलियों का हल्का बना कर उंगली से इशारा किया और उसे हरकत दी। उसके बाद जब दोबारा आया तो सर्दी का मौसम था। लोग मोटे कपड़े ओढे हुए थे। मैंने देखा कि लोग कपड़ों के नीचे से ही रफा यदैन करते थे। (सही इब्ने हिब्बान, जिल्द ३, स० १६७)

٢٤٠- (٥) اخبرنا ابو يعلى قال: حدثنا إبراهيم بن الحجاج الشامي قال حدثنا عبد الوارث قال حدثنا محمد بن جحادة، قال حدثنا عبد الجبار بن وائل بن حجر قال كنت غلاما لا اعقل صلاة ابي فحدثني وائل بن علقمة عن وائل بن حجر قال: صليت خلف رسول الله صلى الله عليه وسلم : فكان إذا دخل في الصف رفع يديه وكبر ، ثم التحف فادخل يده في ثوبه ، فاخذ شماله بيمينه فإذا اراد ان يركع اخرج يديه ورفعهما وكبر ثم ركع فإذا رفع رأسه من الركوع رفع يديه فكبر فسجد ثم وضع وجهه بين كفيه قال ابن جحادة: فذكرت ذلك للحسن بن ابي الحسن فقال: هي صلاة رسول الله صلى الله عليه وسلم فعله من فعله وتركه من تركه (صحيح ابن حبان – ص:١٦٨، ج:٣)

हदीस २४० (५) : हमें अबू याला ने खबर दी, हमें इब्राहीम बिन हज्जाज

शामी ने खबर दी, हमें अब्दुल वारिस ने खबर दी, हमें मुहम्मद बिन जुहादा ने खबर दी, उन्होंने कहा कि मैं बच्चा था, नमाज के मसाइल न समझ सकता था। चुनाचे मेरे भाई अल्कमा ने मुझे बताया कि मेरे वालिद वाइल ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ नमाज़ पढ़ी, जब आप नमाज शुरू करते तो रफा यदैन करते और कपड़ा लपेट लेते और दायां हाथ बाएं पर रखते, फिर जब रुकूअ् करते तो हाथों को निकाल कर रफ़ा यदैन करते और जब रुकूअ् से सर उठाते तो रफा यदैन करते। फिर जब तक्बीर कह कर सज्दा करते तो अपने चेहरे को दोनो हाथों के दर्मियान रखते।

इब्ने जुहादा कहते हैं मैंने हसन बिन अबू हसन से पूछा तो उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नमाज इसी तरह थी लेकिन जो करते हैं करते हैं और जिस ने छोड़ा वह सुन्नत से महरूम रहा। (सही इब्ने हिब्बान, जिल्द 3, स० १६८)

٢٤١- (٦) اخبرنا إبراهيم بن علي الهراوي بسارية قال حدثنا عمرو بن علي العلاسي قال حدثنا يحيى بن سعيد القطان عن عبد الحميد بن جعفر قال: حدثني محمد بن عمرو بن عطاء، عن أبي حميد قال: سمعته في عشرة من أصحاب النبي صلى الله عليه وسلم أحدهم أبو قتادة قال: انا اعلمكم بصلاة رسول الله صلى الله عليه وسلم قالوا: ما كنت أقدمنا له صحبة ولا اكثرنا له بيعة قال: بلى قالوا: فاعرض قال: كان رسول الله صلى الله عليه وسلم إذا قام الى الصلاة استقبل القبلة ورفع يديه حتى يحاذي بهما منكبيه ثم قال: الله اكبر وإذا ركع كبر ورفع يديه حين ركع ثم يعتدل في صلبه ولم ينصب راسه ولم يقنعه، ثم رفع راسه وقال: سمع الله لمن حمده،ورفع يديه حتى يحاذي بهما منكبيه ثم اعتدل ثم سجد واستقبل باطراف رجليه القبلة ثم رفع رأسه فقال: الله أكبر فثنى رجله اليسرى وقعد عليها واعتدل حتى يرجع كل عظم الى موضعه معتدلا ثم قال: الله اكبر وإذا قام من الركعتين كبر ثم قام حتى إذا كانت الركعة التي تنقضي فيها اخر رجله اليسرى وقعد على رجله متوركا ثم سلم (صحيح ابن حبان ج:٣، ص:١٦٩)

हदीस २४१ (६) : हमें इब्राहीम बिन अली हरावी ने सारिया में खबर दी, हमें अम्र बिन अली अलासी ने खबर दी, हमें यह्या बिन सईद कत्तान ने अब्दुल हमीद बिन ज'फर से हदीस सुनाई, मुझे मुहम्मद बिन अम्र बिन अता ने अबू हुमैद से खबर दी, उन्होंने कहा, मैंने उसे दस सहाबा की मौजूदगी में कहते हुए सुना, उन में से एक अबू कतादा भी थे, उन्होंने कहा, कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नमाज को तुम से ज़्यादा जानता हूँ, उन्होंने कहा, न तो तुम सुहबत के लिहाज़ से मुकद्दम हो और न ही बैअत के लिहाज़ से। आप रज़ि० ने कहा, क्यों नहीं, उन्होंने कहा तो फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नमाज़ पेश करो, उसने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज के लिए खड़े होते तो किब्ला की तरफ मुँह करते और कन्धों के बराबर रफा यदैन करते फिर **अल्लाहु अकबर** कहते और जब रुकूअ् करते तो **अल्लाहु अकबर** कहते और रुकूअ् के वक्त रफा यदैन करते। फिर पीठ को बराबर करते और न सर को बुलन्द रखते और न ही ज़्यादा झुकाते। फिर आपने अपना सर रुकूअ् से उठाया और **समिअल्लाहुलिमन हमिदह** कहा और रफा यदैन की। फिर पुश्त सीधी की, फिर सज्दा किया और पाँव की उंगलियों का रुख किब्ला की तरफ किया, फिर सज्दा से सर को उठाया और **अल्लाहु अकबर** कहा, पस बायाँ पाँव मोड़ा और उस पर बैठ गये और सीधे हो गये, यहाँ तक कि हर जोड़ अपनी जगह पर आ गया। फिर **अल्लाहु अकबर** कहा और जब दो रकअत पढ़ कर खड़े हुए तो **अल्लाहु अकबर** कहा फिर खड़े हुए, यहाँ तक कि जब आखिरी रकअत हुई जिसमें नमाज खत्म होती है, बायाँ पाँव मुअख्खर किया और पाँव पर तवर्रुक बैठे, फिर सलाम फेरा। (इब्ने हिब्बान : जिल्द 3, स० १६६)

(२१) मुसनद अबू दाऊद त्यालसी

٢٤٢- (١) حدثنا أبو داود قال : حدثنا سلام بن سليم ، قال : حدثنا عاصم بن كليب ، عن أبيه ، عن وائل الحضرمي ، قال : صليت خلف النبي صلى الله عليه وسلم فقلت : لأحفظن صلاته فافتتح الصلاة فكبر ورفع يديه حتى بلغ اذنيه ، واخذ شماله

يمينه فلما أراد أن يركع كبر ورفع يديه كما رفعهما حين افتتح الصلاة ، ووضع كفيه على ركبتيه حين ركع ، فلما رفع رأسه من الركوع رفع يديه كما رفعهما حين افتتح الصلاة ، ثم سجد فافترش قدمه اليسرى فقعد عليها قال : ثم وضع كفه اليمنى على فخذه اليمنى ويده اليسرى على فخذه اليسرى وجعل يدعو هكذا يعني بالمسبابة يشير بها (مسند الطيالسي —الجزء الرابع : ص ١٣٧)

हदीस २४२ (१) : हमें अबू दाऊद ने खबर दी, हमें सलाम बिन सलीम ने हमें आसिम बिन कुलैब ने अपने वालिद से खबर दी, उन्होंने वाइल हजरमी से बयान किया, उन्होंने कहा, मैंने नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पीछे नमाज पढ़ी. मैंने कहा, मैं जरूर आपकी नमाज को याद करूंगा। आपने नमाज शुरू की, **अल्लाहु अकबर** कहा और कानों तक रफा यदैन की और बाए हाथ को दाए हाथ से पकड़ा फिर जब रुकूअ का इरादा किया तो **अल्लाहु अकबर** कहा फिर रफा यदैन किया। फिर जब रुकूअ से सर उठाया तो फिर भी रफा यदैन की, उसी तरह जैसे पहले दफा किया था, फिर सज्दा किया, फिर बैठे तो बाया पाँव बिछा कर उसके ऊपर बैठे और दाया हाथ दाए रान पर रखा और बाया हाथ बाए रान पर रखा और उंगली से दुआ करते, यानी उसको हरकत देते। (अबू दाऊद त्यालसी, जिल्द ४, स० १३७)

٢٤٣- (٢) حدثنا ابو داود قال : حدثنا شعبة عن قتادةعن نصر بن عاصم ، عن مالك بن الحويرث قال: كان النبي صلى الله عليه وسلم يرفع يديه إذا افتتح الصلاة وإذا ركع وإذا رفع رأسه من الركوع (مسند الطيالسي —الجزء السادس- ص:١٧٦)

हदीस २४३ (२) : हमें अबू दाऊद ने खबर दी, उन्होंने कहा हमें शोबा ने कतादा से हदीस सुनाई, उन्होंने नस्र बिन आसिम से बयान किया, उन्होंने मालिक बिन हुवैरिस से, उन्होंने कहा कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज शुरू करते और जब रुकूअ करते और जब रुकूअ से सर उठाते तो रफा यदैन किया करते थे। (मुसनद अबू दाऊद [illegible])

❖ ❖ ❖

(२२) मुसनद शाफ़ई रह०

٢٤٤- (١) اخبرنا سفيان عن الزهري عن سالم عن ابيه قال: رأيت رسول الله صلى الله عليه وسلم إذا افتتح الصلاة رفع يديه حذو يحاذي منكبيه ، وإذا اراد ان يركع ، وبعد ما يرفع ، ولا يرفع بين السجدتين (مسند الشافعي)

हदीस २४४ (१) : हमें सुफियान ने जुहरी से खबर दी, उन्होंने सालिम से उन्होंने अपने वालिद से. उन्होंने कहा, मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा कि जब आप नमाज शुरू करते और जब रुकूअ करते और रुकूअ से सर उठाते तो कन्धों के बराबर रफा यदैन किया करते थे और सज्दों में रफा यदैन नहीं करते थे।

(२३) मुअत्ता इमाम मुहम्मद रह०

٢٤٥- (١) اخبرنا مالك حدثنا الزهري عن سالم بن عبد الله بن عمر ان عبد الله بن عمر قال كان رسول الله صلى الله عليه وسلم اذا افتتح الصلوة رفع يديه حذاء منكبيه واذا كبر للركوع رفع يديه واذارفع راسه من الركوع رفع يديه ثم قال سمع الله لمن حمده ربنا ولك الحمد- (موطا امام محمد ص:٨٩)

हदीस २४५ (१) : हमें मालिक ने खबर दी, हमें जुहरी ने सालिम बिन अब्दुल्लाह बिन उमर रजि० से हदीस सुनाई। सालिम ने कहा अब्दुल्लाह बिन उमर ने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज शुरू करते और जब रुकूअ के लिए **अल्लाहु अकबर** कहते और जब रुकूअ से सर उठाते कन्धों के बराबर रफा यदैन करते, फिर **समिअल्लाहु लिमन हमिदह रब्बना व लकल हम्द** कहते। (मुअत्ता इमाम मुहम्मद स० ८९)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम [illegible] १५ [illegible] हुए और अपनी उम्र की आखिरी नमाज तक रफा यदैन करते रहे। [illegible] गैर साबित शुदह, [illegible] मन्सूख [illegible]

बाद खुलफाए राशिदीन, अशरह मुबश्शरह और दीगर अकाबिर सहाबा रिजवानुल्लाह अलैहिम अज्मईन न खुद रफा यदैन करते और न लोगों को रफा यदैन करने का हुक्म देते।

सहाबा किराम रज़ि अल्लाहु अन्हुम में से बाज़ रावियाने अहादीस रफा यदैन के अस्माए गिरामी मआ हवाला कुतुब -

१. हजरत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि०, (सुनने कुबरा स० ७३, जिल्द २)
२. हजरत अबू उबैदह रज़ि०, (जुज सुबकी स. १२)
३. हजरत उबई बिन कअ़ब रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु (जुज़ सुबकी स० १२, नीज तस्हीलुल कारी, प. ३, स. ७७४)
४. हजरत उमर फ़ारूक़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु (अस्सुननुल कुबरा, स० ७३, जिल्द २)
५. हजरत तलहा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु (जुज़ रफ़अ़ यदैन स. १२, नीज तस्हीलुल कारी, प. ३, स. ७७४)
६. हजरत अबु दरदा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा (महल्ली इब्ने हज्म, स० ८६, जिल्द ४)
७. हजरत उम्मे दरदा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हा (जुज़ रफ़अ़ यदैन बुखारी, स० २८)
८. हजरत सलमान फारसी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु (जुज रफ़अ़ यदैन सुबकी स० १२, नीज़ तस्हीलुल कारी, स० ४, प० १)
९. हजरत उसमान रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु (जुज़ रफ़अ़ यदैन सुबकी स० १२, नीज तस्हीलुल कारी, स० ७७४, प. ३)
१०. हजरत जुबैर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु (जुज रफ़अ़ यदैन सुबकी स० १२, नीज तस्हीलुल कारी, स० ७७४, प० ३)
११. हजरत जियाद बिन हारिस रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु (जुज़ रफ़अ़ यदैन सुबकी स० १२, नीज तस्हीलुल कारी, स० ७७४, प० ३)
१२. हजरत अम्मार बिन यासिर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु (जुज रफ़अ़ यदैन सुबकी स० १२, नीज तस्हीलुल कारी, स० ७७४, प० ३)
१३. हजरत अली रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु (अबू दाऊद स० ११५,११६ जिल्द १)
१४ हजरत अबू मसऊद अन्सारी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु (जुज रफ़अ़ यदैन सुबकी स० १२, नीज तस्हीलुल कारी)
१५. हजरत अम्र बिन आस रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु (अस्सुननुल कुबरा स० ७४, जिल्द २)

१६. हजरत मुहम्मद बिन मुस्लमा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु (इब्ने माजा स० ६२, जिल्द १)
१७. हजरत अदी बिन अजलान रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु (जुज रफ़अ़ यदैन सुबकी स० १२)
१८. हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु (जुज रफ़अ़ यदैन सुबकी स० १२, नीज़ तस्हीलुल कारी, स० ७५४, प० ३)
१९. हजरत वाइल बिन हुज्र हजरमी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु (मुसनद अहमद मअ़ कन्जुल उम्माल जिल्द, ४, स० ३१८)
२०. हज़रत सईद रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु (जुज रफ़अ़ यदैन सुबकी स० १२, नीज तस्हीलुल कारी, स० ७७४, प० ३)
२१. हजरत अबू हुमैद साइदी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु (स० २९८, जिल्द १, सहीइब्ने खुजैमा)
२२. हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु (सुनन दारा कुतनी स० २९२, जिल्द १)
२३. हजरत उमैर लैसी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु (जुज रफ़अ़ यदैन सुबकी स० १२, नीज़ तस्हीलुल कारी, स० ७७४, प० ३)
२४. हजरत अबू क़तादा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु (जुज रफअ़ यदैन इमाम बुखारी, स० १८)
२५. हजरत सअ़द बिन अबी वक्कास रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु (जुज सुबकी स० १२, नीज तस्हीलुल कारी, स० ७७४, प० ३)
२६. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा (बुखारी जिल्द १, स० १०२)
२७. हज़रत अबू उसैद रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु (तस्हीलुल कारी, स० ७७४, प० ३, अस्सुननुल कुबरा, जिल्द २, स० १०१)
२८. हजरत अबू हुरैरह रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु (जुज रफअ़ यदैन इमाम बुखारी २७)
२९. हजरत हसन बिन अली रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु (तस्हीलुल कारी, स० ७७४)
३०. हज़रत उक्बा बिन आमिर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु (जुज रफ़अ़ यदैन सुबकी स० १२, नीज तस्हीलुल कारी, स० ७७४, प० ३)
३१. हजरत हुसैन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु (जुज रफ़अ़ यदैन सुबकी स० १२)
३२ हजरत बुरैदह रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु (तस्हीलुल कारी, स० ७७४)
३३. हजरत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु (मुसन्नफ

अब्दुर्रज्जाक)

३४. हजरत अब्दुल्लाह बिन जाबिर अल बयाज़ी रजि अल्लाहु तआला अन्हु (बैहकी)

३५. हजरत बरा बिन आजिब रजि अल्लाहु तआला अन्हु (जुज़ रफ़अ् यदैन सुबकी स० ६, १०)

३६. हजरत अब्दुल्लाह बिन जुबैर रजि अल्लाहु तआला अन्हु (सुनने कुबरा स० ७४, जिल्द २)

३७. हजरत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रजि अल्लाहु तआला अन्हु (इब्ने माजा स० ६२, जिल्द १)

३८. हजरत अबू सईद खुदरी रजि अल्लाहु तआला अन्हु (जुज़ रफअ् यदैन ४६)

३९. एक अ'राबी रजि अल्लाहु तआला अन्हु (इमाम सुबकी, स० १३)

४०. हजरत सहल बिन सअ्द रजि अल्लाहु तआला अन्हु (इब्ने माजा स० ६२, जिल्द १)

४१. हजरत अनस रजि अल्लाहु तआला अन्हु (इब्ने अबी शैबा, स० २३५, जिल्द १)

४२. हजरत मालिक बिन हुवैरिस रजि अल्लाहु तआला अन्हु (बुखारी जिल्द १, स० १०३)

४३. हजरत अबू उमामा अल बाहली रजि अल्लाहु तआला अन्हु (मौजूआते कबीर अल्लामा जौजी, स० ६८)

४४. हजरत हुसैन बिन अली रजि अल्लाहु तआला अन्हु (जौजी, स० ६८)

४५. हजरत इमरान बिन हुसैन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु (स० २)

❖ ❖ ❖

रफ़ा यदैन पर सहाबा का इज्मा

(१) : हज़रत उमर फारूक़ रजि अल्लाहु अन्हु ने आम सहाबा रजि० के सामने मस्जिदे नबवी में रफा यदैन से नमाज़ पढाई :

فقال القوم هكذا كان رسول الله صلى الله عليه وسلم يصلي بنا- (تخريج الهداية زيلعي)

यानी : तमाम जमाअते सहाबा रजि० ने कहा, बेशक रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इसी तरह हमें नमाज पढाया करते थे (जिस तरह आप ने रफा यदैन से नमाज पढाई है)

(२) : हजरत अबू हुमैद साइदी रजि० ने जमाअते सहाबा रजि० के सामने रुकूअ् के वक़्त और रुकूअ् से सर उठाते वक्त रफ़ा यदैन करके दिखाया तो :

فقالوا صدقت هكذا كان يصلي (ابوداود ص: ١٩٤، ج:١)

यानी : सब सहाबा रजि० ने कहा बेशक रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इसी तरह नमाज पढा करते थे। तमाम सहाबा रजि० का (क़ाला मुत्तफ़क़ी) कहना इस अम्र की बैयिन दलील है कि रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आपके सहाबा रजि० नमाज मे रफ़ा यदैन किया करते थे।

(३) : इमाम बुखारी रह० फरमाते हैं :

لم يثبت عن أحد من اصحاب النبي صلى الله عليه وسلم برفع يديه (جزء رفع اليدين - ص:٥٤)

यानी : किसी एक सहाबी रजि० से भी साबित नही है कि उन्होने रफा यदैन न की हो। (जुजओ रफइल यदैन स० ५४)

(४) : हसन बसरी और हुमैद बिन हिलाल फरमाते हैं :

كان أصحاب رسول الله صلى الله عليه وسلم يرفعون ايديهم لم يستثن احدا من اصحاب النبي صلى الله عليه وسلم دون أحد، ولم يثبت عند اهل العلم عن أحد من أصحاب النبي صلى الله عليه وسلم ما وصفنا (جزء رفع اليدين

यानी : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तमाम सहाबा रज़ि० रफ़ा यदैन करते थे। उन्होंने किसी एक सहाबी रज़ि० को मुस्तस्ना नहीं किया (कि वह रफ़ा यदैन न करता हो) और अहले इल्म के नज़्दीक भी (इस्तिस्ना) किसी एक सहाबी रज़ि० से साबित नहीं। (जुज़ओ रफ़इल यदैन स० ३४)

रफ़ा यदैन करने वाले ताबईन व तबअ् ताबईन और अइम्मा मुज्तहेदीन

१. इमाम बुख़ारी रह०, इमाम बैहकी रह० और अल्लामा तकीयुद्दीन सुबकी फरमाते हैं कि :

१. सईद बिन जुबैर २. अता बिन अबी रिबाह ३. मुजाहिद ४. क़ासिम बिन मुहम्मद ५. हसन बसरी ६. सालिम बिन अब्दुल्लाह ७. उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ ८. नौमान बिन अबी अय्याश ९. इब्ने सीरीन १०. अब्दुल्लाह बिन दीनार ११. नाफ़े १२. हसन मुस्लिम १३. कैस बिन सअद १४. मकहूल १५. ताऊस १६. अबू नज़रह १७. इब्ने अबी नजीह १८. अबू अहमद १९. इस्हाक़ बिन राहवैह २०. इमाम औज़ाई २१. इस्माईल २२. इसहाक बिन इब्राहीम २३. इब्ने मुईन २४. अबू उबैदह २५. अबू सौर २६. हुमैदी २७. इमाम इब्ने जरीर २८. हसन बिन जा'फर २९. सालिम बिन अब्दुल अज़ीज़ ३०. अली बिन हुसैन ३१. अब्द बिन उमर ३२. ईसा बिन मूसा ३३. अली बिन हसन ३४. कतादा ३५. अली बिन अब्दुल्लाह ३६. अब्दुल्लाह बिन उस्मान ३७. अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ३८. अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर ३९. अली इब्ने मदीनी ४०. अब्दुर्रहमान ४१. मुहम्मद बिन सलाम ४२. मु'तमर ४३. कअब बिन सअद ४४. कअब बिन सईद ४५. यह्या बिन यह्या ४६. यह्या बिन मुईन ४७. यह्या बिन सईद ४८. याकूब ४९. इब्ने मुबारक ५०. इमाम जुहरी ५१. मालिक बिन अनस ५२ अहमद बिन हंबल रह० ५३. इमाम शाफ़ई वग़ैरहुम।

انهم يرفعوى ايديهم عند الركوع ورفع الراس منه (جزء بخاري: ص:٧)

यानी : यह सब हज़रात व दीगर बेशुमार अइम्म–ए–दीन रुकूअ् जाते और रुकूअ् से सर उठाते वक्त रफ़ा यदैन किया करते थे। (जुज़ बुख़ारी अरबी स० ७. २२. २३. बैहकी जिल्द २. स० २५, जुज़ सुबकी स० १०. अत्तालीक अल मुमज्जद स० ६१)

२. इमाम तिर्मिज़ी की शहादत :

इमाम अबू ईसा तिर्मिज़ी रह० फरमाते हैं कि :

ومن التابعين حسن بصري و عطاء وطاؤس و مجاهد و نافع وسالم بن عبد الله و سعيد بن جبير و غيرهم وبه يقول عبد الله بن المبارك والشافعي و احمد واسحاق (ترمذي. ص:٢٦)

यानी : ताबईन में से जिन के नाम ज़िक्र किए गये है और उनके अलावा दीगर बेशुमार अइम्मा और अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह०, इमाम शाफ़ई रह०, इमाम अहमद और इसहाक़, सबके सब रफ़ा यदैन किया करते थे। (तिर्मिज़ी स० २६)

३. अय्यूब फरमाते हैं कि मैंने अता बिन अबी रिबाह के साथ नमाज़ें अदा कीं, आप :

يرفع يديه اذا افتتح الصلوة واذا ركع واذا رفع رأسه من الركوع (بيهقي ج:٢ ص:٧٣)

यानी : नमाज़ शुरू करने और रुकूअ् जाने और रुकूअ् से सर उठाने के वक्त रफ़ा यदैन किया करते थे। (बैहकी जिल्द २, स० ७३)

४. हम्माद बिन ज़ैद कहते हैं कि मैंने अय्यूब सख़्तियानी के साथ बारहा नमाज़ अदा की आप :

فكان يرفع يديه اذا افتتح الصلوة واذا ركع واذا رفع رأسه من الركوع- (بيهقي ج:٢ ص:٧٣)

यानी : शुरू नमाज़ और रुकूअ् जाने और रुकूअ् से सर उठाने के वक्त रफ़ा यदैन किया करते थे। (बैहकी जिल्द २, स० ७३)

५. मुहम्मद बिन इस्माईल कहते हैं कि मैंने मुहम्मद बिन फ़ज़ल के साथ नमाज़ पढ़ी :

فرفع يديه حين افتتح الصلوة وحين ركع وحين رفع رأسه من الركوع (بيهقي ج:٢ ص:٧٣)

यानी : वह शुरू नमाज़ और रुकूअ् जाने और रुकूअ् से सर उठाने के वक्त रफ़ा यदैन किया करते। (बैहकी, जिल्द २, स० ७३)

मक्का, मदीना, हिजाज़, इराक़, शाम, बसरा, यमन और खुरासान के अइम्मा-ए-दीन

इमाम बुखारी रह०, इमाम बैहकी रह० और अल्लामा तकीयुद्दीन सु... रह० फरमाते है

من اهل مكة والمدينة والحجاز واليمن والشام والعراق والبصرة ومن اهل خراسان انهم يرفعون ايديهم عند الركوع و رفع الراس منه- (بيهقي ج:٢ ص:٧٥ جزء بخاري مترجم ص: ١٤ جزء سبكي ص:١٠)

यानी : अहले मक्का, अहले मदीना, हिजाज, यमन, शाम, इराक़, बसरा, खुरासान, इन बडे बडे इस्लामी शहरो के तमाम बडे बडे उलमा रुकूअ़ को और रुकूअ़ से सर उठाने के वक्त रफा यदैन किया करते थे।

(जुज बुखारी मुतर्जिम स० १४, बैहकी जिल्द २, सॅ० ७५, जुज सुबकी, स० १...)

इमाम जुहरी व हसन बसरी रह० का फ़रमान

انهما كان يقولان اذا كبر احدكم للصلوة فليرفع يديه حين يكبر وحين يرفع راسه من الركوع- (جزء بخاري عربي ص:١٧)

यानी : इमाम जुहरी और हसन बसरी यह दोनो फरमाया करते थे कि मुसलमानो को तक्बीर तहरीमा और रुकूअ़ जाने और रुकूअ़ से सर उठाने के वक्त रफा यदैन जरूर करनी चाहिए। (जुज बुखारी अरबी स० १७)

अली बिन मदीनी का इरशाद

अली बिन मदीनी फरमाते है

حق على المسلمين أن يرفعوا أيديهم عند الركوع والرفع منه - (جزء بخاري عربي ص:٧ ، تحفة الأحوذي ج:١ ، ص:٢١٩)

यानी- रुकूअ़ जाने और रुकूअ़ से सर उठाने के वक्त रफा यदैन करना मुसलमानो पर वाजिब है क्योंकि हुजूर रफा यदैन करते रहे। (जुज बुखारी मुतर्जिम स० ७, तुहफ्तुल-अहवजी, जिल्द १, स० २१९)

शाह वलीयुल्लाह साहब मुहद्दिस देहलवी रह० का फ़तवा

हजरत शाह वलीयुल्लाह मुहद्दिस देहलवी फरमाते है कि

فاذا اراد ان يركع رفع يديه حذو منكبيه او اذنيه وكذلك اذا رفع راسه من الركوع والذي يرفع احب الى ممن لا يرفع فإن احاديث الرفع اكثر واثبت- (حجة الله البالغة ج:٢ ص:٨)

यानी : जब रुकूअ़ करने का इरादा करे तो रफा यदैन करे और जब रुकूअ़ से सर उठाए उस वक्त भी रफ-उल-यदैन करे। मै रफा यदैन करने वालों को न करने वालों से अच्छा समझता हूं। क्योंकि रफा यदैन करने की हदीसें बहुत ज्यादा है और बहुत सही है। (हुज्जतुल्लाहिल बालिगा, जिल्द २, स० ८)

शैख़ अब्दुल-क़ादिर रह० जीलानी का फरमान

शैख अब्दुल-कादिर जीलानी रह० फरमाते है

رفع اليدين عند الافتتاح و الركوع والرفع منه (غنية الطالبين- ص: ٧)

यानी : नमाज मे तक्बीरे ऊला के वक्त और रुकूअ़ मे जाते वक्त और रुकूअ़ से उठते वक्त रफा यदैन करना सुन्नत है। (गुनियतुत्तालेबीन स० ७)

मौलाना अब्दुल-हई हन्फ़ी का फ़तवा

मौलाना अब्दुल-हई हन्फी रह० फरमाते है

والحق انه لا شك في ثبوت رفع اليدين عند الركوع والرفع منه عن رسول الله صلى الله عليه وسلم وكثير من الصحابة بالطرق القوية والأخبار الصحيحة (سعاية ج:١ ، ص:٢١٣)

यानी : हक बात यह है कि रुकूअ़ के वक्त और रुकूअ़ से उठते वक्त रफा यदैन के सुबूत मे कोई शक नही, कवी सनद और सही तरीक से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आप के सहाबा रजि० किया करते थे। (सआयाह जिल्द १, स० २१३)

रफ़ा यदैन को बिदअत कहने वाला रिसालत मआब, सहाबा और दीगर अइम्मा का गुस्ताख़ है!

जिस शख्स ने कहा कि रफा यदैन बिदअत है उस ने रसूलुल्लाह

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा रज़ि० और सलफ़ और बाद में आने वाले तमाम उलमा और दर्जे ज़ैल अइम्मा को मज़्कूर किया है।

अहले हिजाज़, अहले मदीना, अहले इराक़ में से कुछ उलमा अहले शाम, अहले यमन और अहले खुरासान के उलमा उन में से इब्ने मुबारक रह० भी है हत्ता कि हमारे शुयूख़ ईसा बिन मूसा, अबू अहमद, कअब बिन सईद, अल हसन बिन जाफ़र, मुहम्मद बिन सलाम, सिवाए अहलुर्राय के, अली बिन अल हसन व अब्दुल्लाह बिन उसमान, यह्या बिन यह्या, सदक़ा, इसहाक़, इब्ने मुबारक के तमाम असहाब, सौरी, वकीअ और कूफ़ियों में से बाज़ वह है जो रफ़ा यदैन नहीं करते रफ़ा यदैन के मुतअल्लिक़ उन्होंने बहुत सी अहादीस रिवायत की है और रफ़ा यदैन करने वालों को बुरा नहीं कहा। (जुज़अ रफ़ा यदैन, स० ५३)

❖ ❖ ❖

रफ़ा यदैन न करने वाले उलमा से बाज़ सहाबा रज़ि० की औरतों को ज़्यादा इल्म है

इमाम बुख़ारी फ़रमाते हैं

ونساء بعض اصحاب النبي صلى الله عليه وسلم هن اعلم من هؤلاء حين رفعن ايديهن في الصلوة۔ (جزء رفع يدين مترجم : ص:۲۹)

यानी : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बाज़ सहाबा रज़ि० की औरतें उन लोगों से ज़्यादा इल्म रखती हैं, जबकि वह नमाज़ में रफ़ा यदैन करती है। (जुज़ रफ़ा यदैन मुतर्जिम स० २६)

❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖

❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖

❖ ❖ ❖ ❖ ❖

❖ ❖ ❖

❖ ❖

❖

अद्मे

रफ़उल यदैन

के

38 दलाइल के मुदल्लल व मुस्कित जवाब

(हिस्सा दोम)

जमा व तरतीब

मौलाना अब्दुर्रशीद अंसारी

अनुवाद

रज़िया आलम

प्रकाशक

सलफ़ी बुक सेन्टर

C-187/A-G.F., शाहीन बाग, जामिया नगर, ओखला, नई दिल्ली-25

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

नाम किताब : इस्बाते रफ़उल यदैन
अहादीस की रोशनी में

मुअल्लिफ़ : मौलाना अब्दुर्रशीद अंसारी

नाशिर : सलफ़ी बुक सेन्टर

प्रथम हिन्दी संस्करण: 2013

संख्या : 1100

क़ीमत :

Published by :

Salafi Book Centre

C-187/A,G.F., Shaheen Bagh, Jamia Nagar,
Okhla, New Delhi -25

विषय सूची

क्या ?	कहाँ ?
१. मुक़द्दमा	१९२
२. सीधे रास्ते पर चलने की तल्क़ीन	१९३
३. दीने इस्लाम पर चलने की पाबन्दी	१९३
४. मुसलमानों की ख़ैर ख़्वाही करनी चाहिए	१९५
५. वाइज़ को अपने वअ्ज़ पर ज़रूर अमल करना चाहिए	१९६
६. ग़लत बयानी की तहक़ीक़ ज़रूरी है	१९८
७. अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम कलामे इलाही लोगों तक पहुंचाते रहे	१९९
८. अह्कामे इलाही की हिफ़ाज़त अल्लाह तआला के ज़िम्मा है	२००
९. बग़ैर इल्म के गुफ़्तगू मत करो	२०१
१०. इल्म को छुपाने वाले की सज़ा	२०२
११. मुबल्लिग़ के लिए हुज़ूर (स०) की दुआ	२०३
१२. इल्म को ज़ाहिर न करने वाले के लिए वईद	२०३
१३. खुलासा-ए-कलाम	२०५
१४. रफ़ा यदैन न करने वालों के दलाइल और उनके जवाबात	२०६
१५. मुसन्निफ़ की पहली दलील का जवाब	२०६
१६. मुसन्निफ की दूसरी दलील और उसका जवाब	२११
१७. दूसरी दलील का पहला जवाब	२११
१८. दूसरी दलील का दूसरा जवाब	२१२
१९. मुसन्निफ़ की दूसरी दलील का तीसरा जवाब	२१३
२०. मुसन्निफ की दलील का चौथा जवाब	२१३
२१. मुसन्निफ की तीसरी दलील और उसका जवाब	२१४
२२. मुसन्निफ की चौथी दलील और उसका जवाब	२१४
२३. मुसन्निफ़ की पॉचवी और सातवी दलील और उसका जवाब	२१७

२४. छठी दलील और उसका जवाब
२५. मुसन्निफ़ की आठवीं दलील और उसका जवाब २१७
२६. मुसन्निफ़ की नवीं दलील और उसका जवाब २१९
२७. मुसन्निफ़ की दसवीं दलील और उसका जवाब २२०
२८. मुसन्निफ़ की ग्यारहवीं दलील और उसका जवाब २२०
२९. मुसन्निफ़ की बारहवीं दलील और उसका जवाब २२२
३०. मुसन्निफ़ की तेरहवीं दलील और उसका जवाब २२३
३१. मुसन्निफ़ की चौदहवीं दलील और उसका जवाब २२४
३२. मुसन्निफ़ की पन्द्रहवीं दलील और उसका जवाब २२५
३३. मुसन्निफ की सोलहवीं दलील और उसका जवाब २२६
३४. मुसन्निफ़ की सत्तरहवीं दलील और उसका जवाब २२६
३५. मुसन्निफ़ की अट्ठरहवीं दलील और उसका जवाब २२७
३६. मुसन्निफ की उन्नीसवीं दलील और उसका जवाब २२९
३७. मुसन्निफ़ की बीसवीं दलील और उसका जवाब २२९
३८. मुसन्निफ़ की २१,२२,२३वीं दलील और उसका जवाब २३१
३९. मुसन्निफ़ की चौबीसवीं दलील और उसका जवाब २३२
४०. मुसन्निफ की पचीसवीं दलील २३२
४१. मुसन्निफ़ की पचीसवीं दलील का पहला जवाब २३३
४२. मुसन्निफ की पचीसवीं दलील का दूसरा जवाब २३३
४३. मुसन्निफ की छब्बीसवीं दलील और उसका जवाब २३४
४४. मुसन्निफ की सत्ताईसवीं दलील और उसका जवाब २३४
४५. मुसन्निफ की अट्ठाईसवीं दलील और उसका जवाब २३६
४६. मुसन्निफ की २९, ३०, ३१, ३२, ३३वीं दलील २३६
४७. मुसन्निफ़ की ३४ वीं दलील और उसका जवाब २३९
४८. मुसन्निफ की ३५ वीं दलील और उसका जवाब २४०
४९. मुसन्निफ़ की ३६ वीं दलील और उसका जवाब २४१
५०. मुसन्निफ की ३७ वीं दलील और उसका जवाब २४१
५१. मुसन्निफ की ३८ वीं दलील और उसका जवाब २४३
५२. गैर मुकल्लेदीन के मसलक और अमल का नम्बरवार जाइज़ा और उसका जवाब २४५
५३. मुसन्निफ के एतराजात का खुलासा २४५
५४. मुसन्निफ के एतराजात का जवाब २४५

५५. (अ) अब्दुल्लाह शीआ नहीं बल्कि सिक़ह रावी है २४६
५६. (ब) इब्ने उमर रज़ि० की रिवायत, हदीसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम है। २४९
५७. (ज) हदीसे इब्ने उमर रज़ि० में सज्दा का ज़िक्र २५०
५८. इमाम बुख़ारी का फ़ैसला २५०
५९. (द) हमेशगी का ज़िक्र नहीं २५१
६०. (ह) अब्दुल्लाह इब्ने उमर रज़ि० रफ़ा यदैन किया करते थे २५१
६१. अबू हुमैद साइदी रज़ि० की रिवायत २५२
६२. मुसन्निफ़ की तन्क़ीद का खुलासा और उसका जवाब २५२
६३. अबू हुरैरह रज़ि० की हदीस २५३
६४. हज़रत अली रज़ि० की गैर मुहब्वला हदीस २५४
६५. दूसरी और चौथी रकअत में रफ़ा यदैन साबित नहीं २५४
६६. अल्लामा सिंधी (हन्फ़ी) का जवाब २५५
६७. मुसन्निफ की दूसरी मुहब्वला हदीस और उसकी हक़ीकत २५६
६८. मुसन्निफ़ की तीसरी मुहब्वला हदीस और उसकी हक़ीकत २५७
६९. मुसन्निफ़ की चौथी मुहब्वला हदीस और उसकी हक़ीकत २५८
७०. मुसन्निफ़ की पांचवीं मुहब्वला हदीस और उसकी हक़ीकत २५९
७१. मुसन्निफ़ की छठी मुहब्वला हदीस और उसकी हक़ीकत २६१
७२. रुकूअ् जाते और रुकूअ् से सर उठाते वक़्त रफ़ा यदैन २६१
७३. मुसन्निफ के दलाइल का खुलासा और उनका जवाब २६२
७४. अबू क़िलाबा सिक़ह रावी हैं २६४
७५. ख़ालिद सिक़ह हैं २६५
७६. नस्र बिन आसिम पर तन्क़ीद का जवाब २६५
७७. नसाई की रिवायत में सज्दा का ज़िक्र और उसका जवाब २६६
७८. वाइल बिन हुज्र रज़ि० की हदीस में सज्दा की रफ़ा यदैन का ज़िक्र और उसका जवाब २६७
७९. सज्दा की रफ़ा यदैन का मसअला और मुसन्निफ की पेश करदह रिवायात का जवाब २७०
८०. मुसन्निफ़ की पेश करदह रिवायात का जवाब २७१
८१. तन्क़ीद २७१

❖ ❖ ❖

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मुक़द्दमा

इलाही! हजार हजार शुक्र तेरी जात पाक का है कि हम को तूने हजारों नेमतें दीं। इरशादे बारी तआला है :

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝ اَلرَّحْمٰنُ عَلَّمَ الْقُرْاٰنَ ۝ خَلَقَ الْاِنْسَانَ ۝ عَلَّمَهُ الْبَيَانَ ۝ (پ ٢٧ سورة الرحمٰن)

तर्जमा : "बड़े रहम वाले (खुदा) ने कुरआन अपने पैगम्बर हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सिखाया। उसी ने हजरत इंसान को पैदा किया, उसको बात करना, बोलना सिखाया"।

दूसरे मकाम पर इरशाद बारी तआला है :

ثُمَّ سَوّٰىهُ وَنَفَخَ فِيْهِ مِنْ رُّوْحِهٖ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْـِٕدَةَ ۗ قَلِيْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ ۝ (پ ٢١ ع ١٣ سورة السجدة ٩)

तर्जमा : "फिर उसको ठीक किया, पुतला बनाया दुरुस्त किया और उसमें अपनी तरफ से जान फूंकी और तुमको (सुनने के लिए) कान दिए और (देखने के लिए आखें दीं और (समझने के लिए) दिल दिए और तुम बहुत थोड़ा शुक्र करते हो"।

यानी खुदा की नेमतें तुम्हारे पास बेशुमार हैं, तुम को ठीक ठाक और खूबसूरत बनाया, तुम्हारे अन्दर रूह डाली, कानों को सुनने और आखों को देखने की ताकत दी। फिर इरशाद फरमाता है

اِنَّا هَدَيْنٰهُ السَّبِيْلَ اِمَّا شَاكِرًا وَّاِمَّا كَفُوْرًا ۝ (پ ٢٩ سورة الدهر)

तर्जमा : "हम ही ने उसे रास्ता दिखाया, अब या वह शुक्र गुजार बने या ना शुक्रा। यानी अक्ल और समझ भी दी और उसकी तरफ पैगम्बर भी भेजे जिन्होंने उस पर शुक्रगुजारी और नाशुक्री के रास्ते वाजेह कर दिए और दोनों पर चलने के अंजाम से खबरदार किया।

सीधे रास्ते पर चलने की तल्क़ीन

इरशाद बारी तआला है :

فَاسْتَقِمْ كَمَآ اُمِرْتَ وَمَنْ تَابَ مَعَكَ وَلَا تَطْغَوْا ۭ اِنَّهٗ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝ (پ ١٢ سورة هود ١١٢)

तर्जमा : "जैसा हुक्म हुआ है उस दीन पर क़ायम रह और तेरे साथ जिन लोगों ने तौबा की है, वह भी उस पर चलते रहें और हद से मत बढ़ो, बेशक वह तुम्हारे कामों को देख रहा है"।

यानी अल्लाह के हुक्म और शरीअत पर क़ायम रहें। शरीअत की इताअत के लिए अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जो हदें मुक़र्रर कर दी हैं अपने आपको उन्हीं के अन्दर रखो, उन से बाहर निकलने की कोशिश न करो।

यह भी इरशाद है :

وَلَا تَعْتَدُوْا ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ ۝ (البقرة پ ٢ الآية ١٩٠)

तर्जमा : "ज़्यादती मत करो, अल्लाह तआला ज़्यादती करने वालों को पसन्द नहीं करता"। यानी हर तरह के ज़ुल्म व ज़्यादती से मना फरमा दिया है।

दीने इस्लाम पर चलने की पाबन्दी

इरशादे बारी तआला है :

وَاَنْ اَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّيْنِ حَنِيْفًا ۚ وَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۝ (يونس)

तर्जमा : "और यह कि सब दीनों से अलग हो कर उसी दीन (इस्लाम) पर अपना मुँह सीधा रख और हरगिज मुश्रिकों में से मत हो। यानी "ऐ नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! तुम दीन पर साबित कदम रहो किसी हाल में भी तौहीद से लग्ज़िश न करो। हनीफ वह है जो अल्लाह की तरफ मुतवज्जह हो तमाम चीजों से मुँह फेर कर।

अल्लाह तआला का इरशाद है।

وَقُوْلُوْا لِلنَّاسِ حُسْنًا (البقرة، آيت ٨٣)

तर्जमा : "और लोगों से नर्मी के साथ बात करो"। इस में हर वह चीज़ दाखिल है जिस पर शरई लिहाज़ से हुस्न और अच्छा होने का इत्लाक़ हो सकता हो और यह लफ्ज भलाई के हुक्म देने और बुराई से रोकने को भी शामिल है।

हज़रत अबू ज़र रज़ि० अल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाहु सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : किसी नेकी को हकीर न समझ अगर तुम कुछ और न कर सको तो कम से कम अपने भाई के साथ खन्दा पेशानी के साथ पेश आ जाओ। (सही मुस्लिम, तिर्मिज़ी)

इरशाद बारी तआला है :

وَلَا تُصَعِّرْ خَدَّكَ لِلنَّاسِ (لقمان، آيت ١٨)

तर्जमा : "लोगों से अपना मुँह फेर कर बात न कर"। यानी गुरूर और तकब्बुर न कर बल्कि तवाज़ु व इंकिसारी के साथ हर एक की बात सुन जब तू अपने मुसलमान भाई से मिले तो कुशादा पेशानी से उसकी तरफ़ मुतवज्जेह हो जा और तकब्बुर यह है कि हक़ बात से मुँह फेरे और लोगों को हकीर जाने "**अल-किब्रू बतरुल-हक्के व ग़म्तुन्नासे**" (मिश्कात शरीफ़ स० ४३३, बाबुल ग़ज़बे वल किब्र)

इरशाद बारी तआला है :

وَجَادِلْهُمْ بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ (پ ١٤، النحل، آيت ١٢٥)

तर्जमा : "और उनके साथ बहस कर इस तौर से जो पसन्दीदा हो" यानी निहायत ही नर्मी और मुहब्बत से। अख़लाक़, तहज़ीब के दाइरे के अन्दर रहते हुए न कि झिड़क कर।

और इरशाद होता है :

اِدْفَعْ بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ فَإِذَا الَّذِي بَيْنَكَ وَبَيْنَهُ عَدَاوَةٌ كَأَنَّهُ وَلِيٌّ حَمِيمٌ

तर्जमा : "तुम बुराई को बेहतरीन तरीके से दूर कर दिया करो (ऐसा करेगा तो देख लेगा) जो तेरा दुश्मन था वह एक दम से ऐसा हो जाएगा जैसा कि वह तेरा करीबी दोस्त है"।

...क दाई इलल्लाह का यह मक़सद होना चाहिए कि बुराई का जवाब ...ई से न दे, बल्कि जहाँ तक गुंजाइश हो बुराई के मुक़ाबले में भलाई से ...श आए और अगर उस से कोई सख़्त बात करे या बुरा मुआमला करे तो ...सके मुक़ाबले में वह तर्ज़ व तरीका अख़्तियार करना चाहिए जो उस से ...ह्तर हो। बहरहाल दावत इलल्लाह के मन्सब पर फ़ाइज़ होने वालों को ...हुत ज़्यादा सब्र व इस्तिक़लाल और हुस्ने ख़ुल्क़ की जरूरत है।

...हदीस में है कि जब ज़ालिम का हाथ पकड़ कर ज़ुल्म से न रोका जाए ...और भलाई का हुक्म देने और बुराई से रोकने को छोड़ कर बैठे तो क़रीब ...है कि अल्लाह तआला ऐसा आम अज़ाब भेजे जो किसी को न छोड़े।

(मिश्कात स० ४३६)

...हाँ! मुस्लेहीन इस्लाह करते रहें और लोग अपनी हालत दुरुस्त कर लें तो ...ख़ुदा ज़ालिम नहीं है कि ख़्वाह मख़्वाह उन्हें हिलाक करे और अज़ाब भेजे।

तिर्मिज़ी शरीफ़ सफ़ः २२ जिल्द दोम में है कि अबुल अहवस के बाप ने हुज़ूर ...सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूछा कि अगर कोई हमारी मेहमान नवाज़ी, ख़ैर ...ख़्वाह न ले तो हम भी उसके बदला में ऐसा ही करें? आप सल्लल्लाहु अलैहि ...व सल्लम ने फरमाया नहीं, बल्कि बुराई का बदला नेकी से दो। दूसरी रिवायत ...में है कि अपने नफ़्सों को दबाओ, सब्र और दरगुज़र करो।

मुसलमानों की ख़ैर ख़्वाही करनी चाहिए

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि अल्लाहु अन्हु कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु ...अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि एक मुसलमान के दूसरे मुसलमान पर छः ...हक़ हैं। पूछा गया या रसूलुल्लाह! वह कौन से हैं? (१) फरमाया कि जब ...किसी मुसलमान से मुलाक़ात करे तो उसको सलाम कहे। (२) जब तुझे ...कोई दावत दे तो उसकी दावत कबूल कर। (३) जब तुझ से कोई नसीहत ...व ख़ैर ख़्वाही चाहे तो उसको नसीहत कर। (४) जब कोई छींके और फिर **...अल्हम्दुलिल्लाह** कहे तो उसकी छींक का जवाब दे यानी **यरहमुकल्लाह** ...कहे। (५) जब कोई बीमार हो तो उसकी इयादत करो। (६) जब कोई मर ...जाए तो उसके जनाज़े के साथ जाओ। (मुस्लिम, मिश्कात जिल्द १, ...किताबुल जनाइज़)

इस हदीस से यह भी साबित होता है कि मुसलमान को नसीहत करनी ...और उसकी ख़ैर ख़्वाही करनी चाहिए, जैसा कि आप (स.) ने फरमाया है :

وَعَنْ تَمِيمٍ الدَّارِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الدِّينُ النَّصِيحَةُ ثَلَاثًا قُلْنَا لِمَنْ يَا رَسُولَ اللهِ قَالَ لِلّٰهِ وَلِكِتَابِهِ وَلِرَسُولِهِ وَلِأَئِمَّةِ الْمُسْلِمِينَ وَعَامَّتِهِمْ أَخْرَجَهُ مُسْلِمٌ۔ (بلوغ المرام مترجم ص ۳۱۳)

तर्जमा : "हजरत तमीम दारी रजि० कहते है कि तीन मरतबा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, दीन खैर ख्वाही का नाम है। अर्ज किया गया या रसूलुल्लाह किस की? फरमाया अल्लाह तआला के वास्ते, अल्लाह की किताब के हक मे, अल्लाह के रसूल के हक मे, मुसलमानो के हाकिम के लिए और मुसलमानों के लिए"। (मुस्लिम शरीफ, बुलूगुल मराम, किताबुल जामे, स० ३१३)

अल्लाह तआला की खैर ख्वाही से मुराद यह है कि उस पर सच्चे दिल से ईमान लाया जाए और उसके हुक्म के मुताबिक हर काम अंजाम दिया जाए। किताब की खैर ख्वाही से मुराद यह है कि उसे अल्लाह तआला की किताब मानते हुए उस पर खुलूसे नीयत से अमल करें। अल्लाह के रसूल की खैर ख्वाही यह है कि उन्हे अल्लाह का रसूल माने और उनकी इताअत करे। मुसलमान हाकिम की खैर ख्वाही यह है कि अगर वह अल्लाह और रसूल के हुक्म के मुताबिक काम करे तो उसके साथ मदद की जाए। इसी तरह दूसरे मुसलमानो की भी खैर ख्वाही यह है कि उन मे मौजूद नक़ाइस की इस्लाह की जाए और उन्हें किसी किस्म की तक्लीफ न दे और जो दीन के बारे में न जानते हों उन्हें सिखा दे और अम्र बिल मारूफ़ नहि अनिल मुकर के अमल को जारी रखे।

वाइज़ को अपने वअ़ज़ पर ज़रूर अमल करना चाहिए

जैसा कि अल्लाह तआला इरशाद फरमाते है :

وَمَا أُرِيدُ أَنْ أُخَالِفَكُمْ إِلَىٰ مَا أَنْهَاكُمْ عَنْهُ ۚ إِنْ أُرِيدُ إِلَّا الْإِصْلَاحَ مَا اسْتَطَعْتُ ۚ وَمَا تَوْفِيقِي إِلَّا بِاللَّهِ ۚ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَإِلَيْهِ أُنِيبُ ۝ (پ ۱۲، هود ۸۸)

तर्जमा : "और मै नही चाहता कि तुम को एक काम से मना करू फिर खुद उसको करने लगू, मै तो चाहता हू जहां तक मुझ से हो सके तुम्हारी इस्लाह करूं

...गार हूं और मेरी तौफ़ीक अल्लाह ही की मदद से है, उसी पर मेरा भरोसा है और उसी की तरफ रुजूअ् करता हूँ"।

यानी मै जिस चीज से तुम को मना करता हूं खुद वह काम छुप कर न करूंगा। तमाम अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम और इस उम्मत के सलफे सालेहीन का भी यही तरीका रहा है।

इरशादे बारी तआला है :

وَأَطِيعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَلَا تَنَازَعُوا فَتَفْشَلُوا وَتَذْهَبَ رِيحُكُمْ (الانفال)

तर्जमा : "अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का कहा मानो और आपस मे (नाहक) इख्तिलाफ़ मत रखो, नही तो बुजदिल हो जाओगे, और तुम्हारी हवा उखड़ जाएगी।"

यानी आपस की ना इत्तिफ़ाकी, बदसुलूकी, इख्तिलाफात, हसद व कीना, बुग़्ज़ व अदावत बुरी चीज है। यानी उनकी वजह से नेकियाँ उसी तरह मिट जाती है जिस तरह उस्तरा बालों को दूर कर देता है। तमाम मुसलमानो को इख्तिलाफात खत्म करके एक अकीदा, एक मज़्हब हो कर एक दूसरे के हमदर्द हो कर रहना चाहिए। जैसा कि अल्लाह ने फरमाया है

وَاعْتَصِمُوا بِحَبْلِ اللَّهِ جَمِيعًا وَلَا تَفَرَّقُوا (آل عمران، آيت ۱۰۳)

तर्जमा : "और तुम सब मिल कर अल्लाह तआला की रस्सी को मजबूती से पकड़ लो और गुटबन्दी न करो"।

यानी उसके दीन या जमाअत या कुरआन को थामे रहो, फूट न करो। यानी किताबुल्लाह वही हब्लुल्लाह है जिसने उसकी पैरवी की वह हिदायत पर है और जिसने उसको छोड दिया वह गुमराह हुआ।

इस आयत में मुसलमानों के लिए जमाअती जिन्दगी का हुक्म और तफ़रीक़ और जुदाई की मुमानेअत है।

इरशादे बारी तआला है :

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ وَلَا تُبْطِلُوا أَعْمَالَكُمْ ۝ (پ ۲۶، سورة محمد آيت ۳۳)

तर्जमा : " ऐ ईमान वालो! अल्लाह की इताअत करो और रसूल का कहा मानो और अपने आमाल को बर्बाद न करो"।

मालूम हुआ कि बसाऔकात नाफ़रमानी से नेक अमल जाए हो जाते

है और नेकी उसी सूरत में नफा दे सकती है, कि इंसान अल्लाह तआला और उसके रसूल पाक का फरमांबरदार रहे।

दरअस्ल तुम्हारा हामी व नासिर तो अल्लाह तआला है। उसी पर भरोसा रखोगे तो दुनिया की कोई ताकत तुम्हारा कुछ बिगाड़ नहीं सकती जैसे कि अल्लाह तआला इरशाद फरमाते हैं :

بَلِ اللّٰهُ مَوْلٰىكُمْ ۚ وَهُوَ خَيْرُ النّٰصِرِيْنَ (پ۴، آل عمران، آیت ۱۵۰)

तर्जमा : "बल्कि अल्लाह तआला तुम्हारा कारसाज़ है और उसी की मदद सब से बेहतर है"।

जो शख्स अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हुक्म मानता है अल्लाह तआला ने फरमाया है कि हक को गालिब रखूंगा। जैसा कि इरशादे बारी तआला है

وَيُحِقُّ اللّٰهُ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُوْنَ (پ۱۱، یونس، آیت [illegible])

तर्जमा : "अल्लाह तआला हक बात को हक कर दिखाएगा चाहे मुजरिम को कितना ही बुरा लगे"।

यानी हक बात की तहकीक हर इंसान को अपनी ताक़त के मुताबिक करनी चाहिए ताकि आदमी गुमराह हो कर न मरे बल्कि हक की तलाश में कोशिश करता रहे।

ग़लत बयानी की तहक़ीक़ ज़रूरी है

जैसा कि अल्लाह तआला ने फरमाया है

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنْ جَآءَكُمْ فَاسِقٌۢ بِنَبَاٍ فَتَبَيَّنُوْۤا اَنْ تُصِيْبُوْا
قَوْمًۢا بِجَهَالَةٍ فَتُصْبِحُوْا عَلٰى مَا فَعَلْتُمْ نٰدِمِيْنَ (پ۲۶، الحجرات)

तर्जमा : "ऐ ईमान वालो! (जल्दी मत किया करो) अगर कोई फासिक शख्स कोई खबर ले आए तो उसकी तहकीक कर लिया करो ऐसा न हो कि तुम बेजाने बूझे (तहकीक किए बगैर) किसी कौम पर चढ़ दौड़ो। फिर अपने किये पर पछताओ"।

इसलिए किसी काम में जल्दी न करो बल्कि पैगम्बर अलैहिस्सलाम की तरफ रुजूअ करो और जो इरशाद वहाँ से पाओ उस पर अमल करो, जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और अल्लाह तआला के हुक्म पर अमल करता है उसमें उसका भला है। **अमले सालेह** वह है कि जो

खालिस अल्लाह तआला की रज़ा के लिए हो और सुन्नते ताहिरा के मुवाफिक हो और उसमें रियाकारी या किसी किस्म की ज़ाती या कौमी मसलेहत को दखल न हो वरना वह अमल मरदूद हो जायेगा। जैसा कि अल्लाह तआला इरशाद फरमाते हैं :

اَلَّذِيْنَ ضَلَّ سَعْيُهُمْ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَهُمْ يَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ
يُحْسِنُوْنَ صُنْعًا (پ۱۶، الکهف، آیت ۱۰۴)

तर्जमा : "यह वह लोग हैं जिनकी दुनियावी ज़िन्दगी की सभी कोशिश बेकार हो गई और वे इसी भ्रम में रहे कि वे बहुत अच्छे काम कर रहे हैं"।

मालूम होता है जो आदमी अमल करे उसकी पड़ताल करनी उस पर ज़रूरी है। ऐसा न हो कि उसका अमल किसी काम न आवे और फिर वह पछतावे। हदीस शरीफ़ में है कि कुरआन मजीद की एक आयत सीख लेना एक सौ रकअत नफ़्ल पढ़ने से ज़्यादा सवाब होता है और मसअला सीख लेना हज़ार रकअत नवाफिल से अफज़ल है। (इब्ने माजा स० १२०, जिल्द १)

अंबिया-ए-किराम अलैहिमुस्सलाम कलामे इलाही लोगों तक पहुंचाते रहे

इरशादे बारी तआला है :

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا رُسُلًا مِّنْ قَبْلِكَ مِنْهُمْ مَّنْ قَصَصْنَا عَلَيْكَ وَمِنْهُمْ
مَّنْ لَّمْ نَقْصُصْ عَلَيْكَ (پ۲۴، المؤمن، آیت [illegible])

तर्जमा : "बेशक हम आपसे पहले भी बहुत से रसूल भेज चुके हैं, जिन में से कुछ के (वाकिआत) हम आप को सुना चुके हैं और उन में से कुछ की बातें तो हम ने आपको सुनाई ही नहीं"। यानी बाज का तफसीली हाल बयान किया और बाज का नहीं किया। बहरहाल सब पर ईमान लाना ज़रूरी है, जैसा कि इरशाद है :

"لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْ رُّسُلِهٖ" (البقرة : ۲۸۵)

तर्जमा : यानी ऐसा नहीं है कि हम बाज अंबियाए किराम को मानते हों और बाज का इंकार करते हों बल्कि हम तमाम अंबियाए किराम को मानते हैं।

मुसनद अहमद में हज़रत अबू उमामा रज़ि० से रिवायत है कि आदम

अलैहिस्सलाम की औलाद में से एक लाख चौबीस हजार नबी व पैगम्बर हुए है।

आखिरी रसूल के मुतअल्लिक जैसा कि अल्लाह तआला फरमाते है

مَا كَانَ مُحَمَّدٌ أَبَا أَحَدٍ مِّن رِّجَالِكُمْ وَلَٰكِن رَّسُولَ اللَّهِ
وَخَاتَمَ النَّبِيِّينَ ۗ وَكَانَ اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا (پ۲۲، الاحزاب آیت۴۰)

तर्जमा : "हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तुम में से किसी मर्द के बाप नहीं है, अल्बत्ता वह अल्लाह तआला के रसूल है और सारे नबियो मे आखिरी है और अल्लाह तआला हर चीज को अच्छी तरह जानने वाला है"।

इस से कतई तौर पर मालूम हुआ कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रहती दुनिया तक अल्लाह के नबी है। आपके बाद कोई नया नबी नही होगा और फिर अहादीसे सहीहा मे खातमुन्नबीयीन होने की तशरीह कर दी गई है जिसके बाद किसी शुबह की गुंजाइश बाकी नही रहती और हजरत ईसा अलैहिस्सलाम का नुजूल, खत्मे नुबुव्वत के मुनाफी नही है क्योंकि वह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ही की शरीअत पर चलेंगे वह नए नबी नही बल्कि आप से पहले के नबी है।

अहकामे इलाही की हिफ़ाज़त अल्लाह तआला के ज़िम्मा है

इरशादे बारी तआला है.

إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَإِنَّا لَهُ لَحَافِظُونَ ﴿ (پ۱۴، الحجر آیت۹)

तर्जमा : "बेशक कुरआन मजीद को हम ही ने उतारा है और हम ही उसके मुहाफिज है"।

कुरआन के अलावा दुनिया मे कोई किताब ऐसी नहीं है जो चौदह सौ साल गुजर जाने के बावजूद इस तरह महफूज हो कि उसके किसी एक हरफ मे भी रदो बदल न हुआ हो और दुनिया भर मे कुरआन के जितने नुस्खे मौजूद है उनमे अदना सा भी इख्तिलाफ नहीं है। इसके अलावा लाखो इन्सानो के सीनो मे महफूज है। यह है कुदरत की तरफ से हिफाजत जो किसी और किताब को नसीब नही हुई।

इल्मे दीन के हासिल करने के लिए भी अल्लाह तआला का इरशाद है

وَمَا كَانَ الْمُؤْمِنُونَ لِيَنفِرُوا كَافَّةً ۚ فَلَوْلَا نَفَرَ مِن كُلِّ فِرْقَةٍ
مِّنْهُمْ طَائِفَةٌ لِّيَتَفَقَّهُوا فِي الدِّينِ وَلِيُنذِرُوا قَوْمَهُمْ إِذَا رَجَعُوا
إِلَيْهِمْ لَعَلَّهُمْ يَحْذَرُونَ ﴿ (پ۱۱، التوبۃ ۱۲۲)

तर्जमा : "और मुसलमानों को यह न चाहिए कि सब के सब निकल खड़े हो, पस क्यो न निकले हर फिरके से उन मे एक जमाअत ताकि वे दीन को समझ बूझ कर हासिल करें और ताकि डरावे अपनी कौम को जब कि वे उनके पास आए, शायद कि वे डर जायें"।

मि कात स० २२ में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया.

مَن يُرِدِ اللَّهُ بِهِ خَيْرًا يُفَقِّهْهُ فِي الدِّينِ

तर्जमा : "अल्लाह तआला जिस किसी के साथ बेहतरी चाहता है तो उसको दीन की समझ अता फरमा देता है"।

ऐसा क्यों न हुआ कि उनके हर कबीले मे से कुछ लोग निकलते, इल्म हासिल करते और वापस आ कर अपने कबीले के लोगों को भी दीन के अहकाम से खबरदार करते ताकि वह बुरी बातों से परहेज करते।

आयत के अल्फाज मे इन हर दो मफहूम का यक्सां एहतमाल है और उसकी रू से जिहाद और तलबे इल्म दोनों के लिए निकलना मुसलमानों के लिए फर्जे किफाया की हैसियत रखता है।

यानी उसकी जिम्मेदारी बहैसियत मज्मूई सब पर आइद होती है और उन मे से बाज अफराद का उसे अंजाम देना जरूरी है वरना सब गुनहगार होंगे।

बग़ैर इल्म के गुफ़्तगू मत करो!

अल्लाह तआला इरशाद फरमाते है

وَلَا تَقْفُ مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ ۚ إِنَّ السَّمْعَ وَالْبَصَرَ وَالْفُؤَادَ كُلُّ
أُولَٰئِكَ كَانَ عَنْهُ مَسْئُولًا ﴿ (پ۱۵، بنی اسرائیل ۳۶)

तर्जमा : "और जो बात तू नहीं जानता उसके पीछे न पड़ा रह, इसलिए कि कान और आंख और दिल इन सब से (कयामत के दिन) पूछ होगी"।

यानी बेतहकीक किसी बात की अंधा धुंध पैरवी न कर, इसमे झूठी गवाही, गलत तोहमत और सुनी सुनाई बातों पर किसी की बुराई करना सब शामिल है।

नीज इस से मालूम हुआ कि कुरआन व हदीस की दलील होते हुए किसी की शख़्सी राय और कयास पर अमल करना मम्नूअ है।

इल्म को छुपाने वाले की सज़ा

अल्लाह तआला इरशाद फरमाते हैं :

إِنَّ الَّذِينَ يَكْتُمُونَ مَا أَنزَلْنَا مِنَ الْبَيِّنَاتِ وَالْهُدَىٰ
مِن بَعْدِ مَا بَيَّنَّاهُ لِلنَّاسِ فِي الْكِتَابِ أُولَٰئِكَ يَلْعَنُهُمُ اللَّهُ
وَيَلْعَنُهُمُ اللَّاعِنُونَ (پ ۲، البقرة، آیت ۱۵۹)

तर्जमा : "जो हमने अपनी कुदरत की खुली निशानियाँ और हिदायत की बातें उतारी, अब उसके बाद जो लोग उनको छुपाते हैं उन पर अल्लाह लानत करता है और सब लानत करने वाले भी लानत करते हैं"। यानी ऐसा करने वाला मल्ऊन है।

अल-बैय्येनात से मुराद वाज़ेह दलाइल और **'अल हुदा'** से अहकामे शरीअत मुराद हैं, जिसने दुनिया के मकसद के वास्ते हक छुपाया वह सब उस मे दाखिल है।

हजरत अबू हुरैरह रजि० से मरवी है कि जिससे इल्म का सवाल किया गया और उस ने बावजूद इल्म होने के छुपाया तो कयामत के दिन उसको आग की लगाम पहनाई जाएगी। (मिश्कात, स० ३४)

एक रिवायत मे हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से यूं आया है कि अगर दो आयात किताबुल्लाह मे न होतीं तो मैं किसी से भी कोई हदीस बयान न करता। एक तो यही आयत और दूसरी "व इज़ **अखज़ल्लाहु अलख़।**
(प० ४, आले इमरान, १८७)

मालूम हुआ कि हदीस भी अल्लाह की जानिब से उतरी है और उसको छुपाने वाला मुकिर जो बगैर तौबा मरा वह मल्ऊन है। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया है **"बल्लेगू अन्नी वलौ आयतन"** यानी "मेरी तरफ से बात दूसरों को पहुचाओ अगरचे एक आयत ही हो"। हमें अल्लाह और रसूल का हुक्म मान कर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की अहादीस दूसरों तक पहुचाना चाहिए ताकि दूसरों पर दीन की हुज्जत कायम हो सके। (मिश्कात)

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया :

"هَلْ بَلَّغْتُ؟ قَالُوا: بَلَىٰ يَا رَسُولَ اللهِ قَالَ فَلْيُبَلِّغِ الشَّاهِدُ الْغَائِبَ (مشكوٰة)

तर्जमा : "अल्लाह के बन्दो! मुझे जवाब दो, क्या मैंने अल्लाह के हुक्मों की तबलीग कर दी? सबने जवाब दिया कि हाँ! या रसूलल्लाह! बेशक आपने हम को पहुंचा दिया। आपने फरमाया कि तुम में से जो हाजिर हो उस पर फर्ज है कि जो हाज़िर नहीं है उनको मेरी यह हदीसें पहुंचा दे"।

मुबल्लिग़ के लिए हुज़ूर की दुआ

نَضَّرَ اللهُ امْرَأً سَمِعَ مِنَّا شَيْئًا فَبَلَّغَهُ كَمَا سَمِعَهُ

तर्जमा : "खुदा तआला उस शख़्स को हरा भरा रखे जिस ने मुझ से कुछ सुना फिर उसे जूं का तूं पहुंचा दिया। (तिर्मिज़ी)

इल्म को ज़ाहिर न करने वाले के लिए वईद(सज़ा)

अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है :

"وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّن كَتَمَ شَهَادَةً عِندَهُ مِنَ اللهِ" (پ ۱، سورة البقرة)

तर्जमा : "और उस से बढ कर जालिम कौन होगा कि खुदा की गवाही जो उसके पास हो छुपाए"।

इससे मालूम हुआ कि अगर किसी के पास इल्म (किताब व सुन्नत का) है फिर उसे उसके बयान करने का हक पहुचता है, अगर बयान नहीं करता तो इसका मतलब उस आयत पर अमल नहीं है और अपने इल्म को जाहिर न करने की बिना पर बहुत बड़ी वईद भी बता दी है।

दूसरे मकाम पर अल्लाह तआला इरशाद फरमाते हैं

"قُلْ هَلْ عِندَكُم مِّنْ عِلْمٍ فَتُخْرِجُوهُ لَنَا" (پ ۸، سورة الانعام، آیت ۱۴۸)

तर्जमा : "कह दीजिए, क्या तुम्हारे पास कुछ इल्म है तो उसे हमारे लिये निकालो"। (जाहिर करो)

इस से मालूम होता है कि अल्लाह तआला ने अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को हुक्म दिया कि ऐलान कीजिए अगर आपके पास कोई इल्म है तो उसे ज़ाहिर करें ताकि हक बात का पता चल जाए।

इन दो आयात की ताईद मुन्दरजा जैल अहादीस से भी होती है

(अलिफ) وَعَنْ أَبِي الدَّرْدَاءِ قَالَ إِنَّ مِنْ أَشَرِّ النَّاسِ عِنْدَ اللهِ مَنْزِلَةً يَوْمَ الْقِيَامَةِ
عَالِمٌ لَا يَنْتَفِعُ بِعِلْمِهِ" رواه الدارمي، مشكوٰة، كتاب العلم ص ۳۷

तर्जमा : "हज़रत अबू दर्दा रजि० फरमाते हैं कि खुदा के नज़्दीक कयामत के दिन मरतबा के एतबार से सब से बदतर शख़्स वह आलिम होगा जिसके इल्म से नफ़ा हासिल न किया जाए"।

इस हदीस से यह मालूम होता है कि जिस आलिम ने भी इल्म को जाहिर नहीं किया, क्यामत के दिन सबसे बदतर होगा।

(ب) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَثَلُ عِلْمٍ لَا يُنْتَفَعُ بِهِ كَمَثَلِ كَنْزٍ لَا يُنْفَقُ مِنْهُ فِي سَبِيلِ اللهِ (رواه احمد والدارمى، مشكوٰة ص ٣٠)

तर्जमा : "हजरत अबू हुरैरह रजि० कहते हैं, फरमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कि उस इल्म की मिसाल जिस से नफ़ा न उठाया जाए उस ख़ज़ाना की मानिन्द है जिस में से ख़ुदा की राह में कुछ खर्च न किया जाए"।

इस हदीस से मालूम होता है कि उस आलिम ने भी अल्लाह तआला की राह में कोई खर्च न किया, खजाना उसके पास था मगर अल्लाह तआला की राह मे खर्च न किया। अगर खर्च करता तो लोगों को नफा होता और लोग फाइदा उठाते तो उसको भी सवाब मिलता। सवाब से यूं महरूम रहा। सब खजाना अपने पास ही रखा उसने भी अपने इल्म को जाहिर नहीं किया।

(ج) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَوْحَى اللهُ عَزَّ وَجَلَّ إِلَى جِبْرِيلَ عَلَيْهِ السَّلَامُ أَنِ اقْلِبْ مَدِينَةَ كَذَا وَكَذَا بِأَهْلِهَا فَقَالَ يَا رَبِّ إِنَّ فِيهِمْ عَبْدَكَ فُلَانًا لَمْ يَعْصِكَ طَرْفَةَ عَيْنٍ قَالَ فَقَالَ اقْلِبْهَا عَلَيْهِ وَعَلَيْهِمْ فَإِنَّ وَجْهَهُ لَمْ يَتَمَعَّرْ فِيَّ سَاعَةً قَطُّ (مشكوٰة باب الامر بالمعروف)

तर्जमा : "हजरत जाबिर रजि० कहते है, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया है, कि खुदा तआला ने जिब्रील अलैहिस्सलाम को हुक्म दिया कि फला शहर को जो ऐसा और ऐसा है उसके बाशिन्दों समेत उलट दे। जिब्रील ने अर्ज किया कि ऐ मेरे परवरदिगार! उसके बाशिन्दों में तेरा फुलॉ बन्दा भी है जिसने एक लम्हा के लिए भी तेरी नाफरमानी नही की। खुदा तआला ने फरमाया, उस पर और सारे बाशिन्दो पर शहर को उलट दे। इसलिए कि उस शख्स का चेहरा एक लम्हे के लिए भी मेरी खुशनूदी के लिए मुतग़ैयर नहीं हुआ"। (बैहकी)

इस हदीस से मालूम हुआ कि बन्दा इबादत करता था जिस ने एक लम्हा के लिए भी नाफरमानी नहीं की उस बन्दा ने भी इल्म को ज़ाहिर नही किया और अगर करता तो उसकी जान हिलाक न होती। खामोशी अख्तियार की। यह बन्दा भी उनके साथ हिलाक हो गया। ❖

खुलास-ए-कलाम

मुसलमान मुसलमान का शीशा है। अगर एक मुसलमान से ग़लती हो जाए तो दूसरा मुसलमान याद करा दे। अल्लाह तआला फरमाते हैं

وَقَالُوا لَوْ كُنَّا نَسْمَعُ أَوْ نَعْقِلُ مَا كُنَّا فِي أَصْحَابِ السَّعِيرِ (پ ٢٩، سورة الملك: آيت ١٠)

तर्जमा : "कहेंगे काश कि हम सुनते होते या समझते होते तो हम आग वालों में न होते"।

इससे मालूम होता है कि आदमी को चाहिए कि बात को सुने या समझे जिसकी बात हक हो, वह कबूल कर ले। अगर कबूल नहीं करेगा फिर पछताएगा। जैसा कि अल्लाह तआला फरमाते है :

الَّذِينَ يَسْتَمِعُونَ الْقَوْلَ فَيَتَّبِعُونَ أَحْسَنَهُ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ هَدَاهُمُ اللَّهُ وَأُولَٰئِكَ هُمْ أُولُو الْأَلْبَابِ (پ ٢٣، سورة الزمر، آيت ١٨)

तर्जमा : "वह लोग जो बात सुनते है फिर वह अच्छी बात की पैरवी करते है, यही वह लोग हैं, जिनको अल्लाह तआला ने हिदायत दी और यही लोग अक्ल वाले हैं"।

यानी वह कुरआन व हदीस को दिल लगा कर सुनते है और फिर अमल के लिए उस हुक्म को अख्तियार करते है जो अफज़ल होता है। यानी रुख़सत की बजाए अजीमत की राह पर कारबन्द होते है, जिन्होने अपनी अक्लों को सही इस्तेमाल किया। क्योंकि वही लोग ऐसे होते है जो फिक्र करते हैं और असल हक़ीकत को समझ लेते है।

नोट : जवाब जो हमने दिया है वह अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हुक्म समझ कर दिया है। हम तरतीबवार उनकी हकीकत से पर्दा उठाते हैं। अल्लाह तआला हमें हक बात करने, कहने और उस पर अमल करने की तौफीक़ बख्शे।

आमीन या रब्बल-आलमीन।

❖ ❖ ❖

रफ़ा यदैन न करने वालों के दलाइल और उनके जवाबात

पहली दलील :

عن جابر بن سمرة قال خرج علينا رسول الله صلى الله عليه وسلم فقال ما لي أراكم رافعي أيديكم كأنها أذناب خيل شمس اسكنوا في الصلوة (صحيح مسلم ص ١٨١ ج ١، ابو داؤد ص ١٥٠ ج ١، نسائي ص ١٧٦، طحاوي ص ٢٠٠ ج ١، مسند احمد ص ١٠٣ ج ٥، مسند الربيع بن حبيب)

तर्जमा : "हज़रत जाबिर बिन समुरह रजि० से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हमारे पास नमाज पढ़ने की हालत में तशरीफ लाए और हम (नमाज के अन्दर रफ़ा यदैन कर रहे थे) तो बड़ी नाराजगी से फरमाया कि मैं तुम को नमाज में शरीर घोड़ों की दुमों की तरह रफ़ा यदैन करते क्यों देखता हूँ, नमाज में साकिन और मुत्मइन रहो।

मुसन्निफ़ की पहली दलील का जवाब

१. मुसन्निफ की पेशकर्दाह हदीस का जवाब खुद सही मुस्लिम में मौजूद है, चुनाचे मुलाहिजा फरमाए

(१) حدثني القاسم بن زكريا قال نا عبيد الله بن موسى عن اسرائيل عن فرات يعني القزاز عن عبيد الله عن جابر بن سمرة قال صليت مع رسول الله صلى الله عليه وسلم فكنا إذا سلمنا قلنا بأيدينا السلام عليكم السلام عليكم فنظر إلينا رسول الله صلى الله عليه وسلم فقال ما شأنكم تشيرون بأيديكم كأنها أذناب خيل شمس إذا سلم أحدكم فليلتفت إلى صاحبه ولا يومئ بيده

तर्जमा : मुझे कासिम बिन जकरिया ने हदीस सुनाई, उन्हें उबैदुल्लाह बिन मूसा ने, उन्होंने इस्राईल से, उन्होंने फुरात यानी कज़्ज़ाज से, उन्होंने उबैदुल्लाह से उन्होंने कहा कि हजरत जाबिर बिन समुरह रजि० ने फरमाया कि

हम लोग रिसालत मआब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ नमाज

पढ़ते तो खत्मे नमाज पर "**अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि**" कहते हुए हाथ से इशारा भी करते थे। यह देख कर रहमते दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया तुम्हें यह क्या हो गया है? तुम अपने हाथों से इस तरह इशारा करते हो गोया वह शरीर घोड़ों की दुमें हैं तुम में से जब कोई नमाज खत्म करे तो अपने भाई की जानिब मुँह करके सिर्फ ज़बान से "अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि" कहे और हाथ से इशारा न करे।

(२) حدثنا أبو بكر بن أبي شيبة قال نا وكيع عن مسعر ح وحدثنا أبو كريب واللفظ له قال أنا ابن أبي زائدة عن مسعر قال حدثني عبيد الله بن القبطية عن جابر بن سمرة قال كنا إذا صلينا مع رسول الله صلى الله عليه وسلم قلنا السلام عليكم ورحمة الله السلام عليكم ورحمة الله وأشار بيده إلى الجانبين فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم علام تومئون بأيديكم كأنها أذناب خيل شمس إنما يكفي أحدكم أن يضع يده على فخذه ثم يسلم على أخيه من على يمينه وشماله۔ (مسلم ص ١٨١ ج ١)

तर्जमा : "हमें अबू बकर बिन अबी शैबा ने हदीस सुनाई० उन्हें वकीअ ने उन्होंने मिस्अर से बयान किया (दूसरी सनद) हमें अबू कुरैब ने हदीस सुनाई, उन्होंने कहा हमें इब्ने अबी ज़ाइदा ने, उन्हें मिस्अर ने उन्हें उबैदुल्लाह बिन कुतैबा ने उन्होंने कहा कि हजरत जाबिर बिन समुरह रजि० ने फरमाया कि : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ जब हम लोग नमाज पढ़ते तो नमाज के खत्म पर दाएं बाएं "**अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाह**" कहते हुए हाथ से इशारा भी करते थे। यह देख कर हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फरमाया

तुम लोग अपने हाथ से इस तरह इशारा करते हो जैसे शरीर घोड़ों की दुमें हिलती हैं। तुम्हें यही काफी है कि तुम कअ्दा में अपनी रानों पर हाथ [illegible] हुए दाएं और बाएं मुँह मोड़ कर "**अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाह**" [illegible] करो।

यही हजरत जाबिर बिन समुरह रजि० वाली हदीस मुसनद इमाम अहमद रह० (स० ४३ जिल्द ४) में इस तरह है

(३) حدثنا عبد الله حدثني أبي ثنا محمد بن عبيد ثنا مسعر
عن عبيد الله بن القبطية قال سمعت جابر بن سمرة قال
كنا نقول خلف رسول الله صلى الله عليه وسلم إذا سلمنا
السلام عليكم السلام عليكم وأشار مسعر بيده عن يمينه وعن شماله
فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم ما بال الذين يرمون
بأيديهم في الصلاة كأنها أذناب الخيل الشمس أولا يكفي
أحدكم أن يضع يده على فخذه ثم يسلم عن يمينه وعن
شماله (ص ٩٣ ج ٥)

तर्जमा : "हमे अब्दुल्लाह ने हदीस सुनाई, उन्हें उनके बाप ने, उन्हें मुहम्मद बिन उबैद ने उन्हें मिस्अर ने, उन्हें उबैदुल्लाह बिन किब्तियह ने उन्होंने कहा मैंने हज़रत जाबिर बिन समुरह रजि० को फरमाते हुए सुना कि

हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पीछे नमाज़ पढ़ते वक्त (इख्तिताम पर) अस्सलामु अलैकुम कहते हुए दाएं बाएं हाथ से इशारा करते थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुलाहिज़ा फरमा कर इरशाद फरमाया.

उन लोगों का क्या हाल होगा जो शरीर घोड़ों की दुमों की तरह अपने हाथ हिलाते है। क्या तुम्हें यही काफी नहीं है कि तुम कअ्दा में अपनी रानें पर हाथ रखे हुए दाए बाए सलाम फेर लिया करो।

यह तीनो हदीसे सही मुस्लिम और मुस्नद इमाम अहमद में मौजूद है और अल्फाज (**अज्नाबु खैलिन शुम्सिन**) भी तीनों में वारिद है जो इत्तिहादे वाकिया की बैय्यिन दलील है।

फिर इमाम नौवी रह० और दीगर मुहद्देसीन रह० ने इन अहादीस पर इस तरह अबवाब कायम किए है

नाम किताब	बाब	बाब का तर्जमा	सफः मआ जिल्द
१ सही मुस्लिम मआ शरह नौवी :			

باب الأمر بالسكون في الصلاة والنهي عن الإشارة باليد ورفعها عند السلام۔

नमाज में बेजा हरकत, और सलाम के लिए हाथ उठाने की मुमानेअत। (सफ १८१, जिल्द १)।

२ अबू दाऊद . باب في السلام सलाम के मुतअल्लिक बाब।

३ किताबुल उम लि शाफई باب السلام في الصلاة नमाज में सलाम कहने का बाब।

४ मुस्नद अहमद . باب حذف السلام وكراهة الإشارة باليد معه۔
सलाम को हज्फ करना और उसके साथ इशारा करना मना है।
(सफ ४९, जिल्द ३)

५ कन्जुल-उम्माल . منع الإشارة باليد وقت السلام
सलाम के वक्त हाथ के साथ इशारा करना मना है। (सफ १७४, जिल्द ४)

६ मुन्तका अल-अख्बार باب التحليل من الصلاة بالسلام
नमाज से अस्सलामु अलैकुम कह कर निकलना। (सफ ६७)

७ बेहकी باب كراهة الإيماء باليد عند التسليم
सलाम के वक्त हाथ के साथ इशारा करना मक्रूह है। (सफ ८१, जिल्द ३)

८ नसाई . باب السلام بالأيدي
दोनों हाथों के साथ सलाम कहने का बाब। (सफ १५६, जिल्द १)

९ नसाई باب موضع اليدين عند السلام
सलाम के वक्त हाथों की जगह। (सफ १५५, जिल्द १)

अल-ग़रज़ मुहद्देसीन ने हजरत जाबिर रजि० की हदीस से यही समझा है कि इस में सलाम फेरने के वक्त हाथों से इशारा करना मना है और मुख्तलिफ अल्फाज में एक ही वाकिआ का जिक्र है।

लिहाजा तमाम अहादीस का हासिले मतलब यह होगा कि रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ लाए और नमाज़ पढ़ाई। हम ने आपके साथ नमाज पढ़ी तो हम ने सलाम के वक्त हाथ उठाए। आपने देखा तो फरमाया कि तुम मुँह जोर घोड़ों की दुमों की तरह सलाम के वक्त हाथ क्यों उठाते हो। नमाज में आराम करो और अपने दाएं और बाएं जबान से सलाम कहना काफी है। हाथ से इशारा करने की जरूरत नहीं।

नीज रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इरशाद (**उस्कुनू फिस्सलाते**) और दूसरी में "**ला यूमी बेयदेही**" जिनका मतलब एक ही है। आपने सहाबा रजि० को उस वक्त फरमाया, जब वह सलाम के वक्त दाएं बाएं हाथों से इशारा करते थे, जिस से साफ जाहिर है कि यह वाकिआ तशह्हुद का है न कि रुकूअ के वक्त रफा यदैन करने का।

चुनाचे हाफिज इब्ने हजर रह० फरमाते है :

"ولا دليل فيه على منع الرفع على الهيئة المخصوصة في الموضع المخصوص وهو الركوع والرفع منه لأنه مختصر من حديث طويل" (تلخيص ص ٢٢١ ج ١)

तर्जमा : यानी हजरत की पहली हदीस से रुकूअ् के वक्त रफा यदैन के मना पर दलील लाना दुरुस्त नही क्योंकि पहली हदीस दूसरी तवील हदीस की मुख्तसर है। नीज हाफिज इब्ने हजर रह० इमाम बुखारी रह० से नकल करते है

"من احتج بحديث جابر بن سمرة على منع الرفع عند الركوع فليس له حظ من العلم" (تلخيص الحبير ص ٢٢١ ج ١)

तर्जमा : हजरत जाबिर बिन समुरह रजि० की हदीस से रुकूअ् के वक्त रफा यदैन के मना पर दलील पकड़ने वाला जाहिल व बेइल्म है"।

इमाम बुखारी रह० फरमाते हैं :

"فأما احتجاج بعض من لا يعلم بحديث جابر بن سمرة ..... فإنما كان هذا في التشهد لا في القيام، كان يسلم بعضهم على بعض فنهى النبي صلى الله عليه وسلم عن رفع الأيدي في التشهد ولا يحتج بهذا من له حظ من العلم" (جزء رفع اليدين مترجم ص ٣٠،٣١)

तर्जमा : बाज लोग जो इल्म से नावाकिफ है वह जाबिर रजि० की हदीस से रफा यदैन के मना पर दलील लाते हैं। उस हदीस मे हाथ उठाने का जो जिक्र है वह तशह्हुद की हालत में है कयाम की हालत मे नही। बाज सहाबा रजि० बाज पर (हाथ के इशारा से) सलाम कहते थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तशह्हुद की हालत में हाथों के साथ इशारा करने से रोक दिया। जिस शख्स को थोडा बहुत इल्म का हिस्सा मिला है वह इस हदीस से अदमे रफा यदैन पर इस्तिदलाल नही करता।

अल्लामा सिन्धी रह० हन्फी फरमाते हैं :

"(ارفعوا أيديكم) أي بالسلام ولذا أعقبه بالرواية الثانية المذكورة المشيرة إلى الإشارة باليد عند السلام ولا دلالة فيه على النهي عن الرفع عند الركوع وعند الرفع منه ولذلك قال النووي الاستدلال به على النهي عن الرفع عند الركوع وعند الرفع منه جهل قبيح، إلى أن قال فقد صح وثبت الرفع عند الركوع وعند الرفع منه ثبوتًا

لا مرد له فيحمل حديث هذا الباب على خصوص السلام توفيقًا بين الأدلة" (حاشية نسائي ص ١٧٦)

तर्जमा : जाबिर बिन समुरह की हदीस में जो "राफेऊ ऐदीना" है। उसका मतलब यह है कि सलाम के वक्त हाथ उठाते थे। जैसा कि दूसरी हदीस से मालूम होता है। इसमें सलाम के वक्त हाथ उठाने की मुमानिअत है न कि रुकूअ् के वक्त रफा यदैन करने की।

इसी वास्ते इमाम नौवी रह० शारेह मुस्लिम ने फरमाया है कि इस हदीस से रुकूअ् जाने और रुकूअ् से सर उठाने के वक्त रफा यदैन के न करने पर इस्तिदलाल करने वाला जिहालते कबीहा का मुर्तकिब है और बात यह है कि रुकूअ् के वक्त रफा यदैन करना सही व साबित है जिसका रद्द नहीं हो सकता है। पस नहीं खास जिसके लिए खास कर कहा गया, सिर्फ उस खास पर महमूल होगी ताकि दोनों में तत्बीक व मुवाफिकत हो और तआरुज, खत्म हो जाए।

इमाम इब्ने हिब्बान रह० फरमाते है :

"إنما أمروا بالسكون في الصلاة عند الإشارة بالتسليم دون الرفع الثابت عند الركوع" (تلخيص الحبير ص ٢٢١ ج ١)

तर्जमा : कि "उस्कुनू फिस्सलाति" का मतलब यह है कि सहाबा रजि० को सलाम के वक्त हाथों से इशारा करने से मना किया गया, न कि रुकूअ् के वक्त रफा यदैन करने से, क्योंकि वह तो (बेशुमार दलाइल से) साबित है।

मुसन्निफ़ की दूसरी दलील और उसका जवाब

قد أفلح المؤمنون. الذين هم في صلاتهم خاشعون. قال ابن عباس: الذين لا يرفعون أيديهم في صلاتهم.

तर्जमा : "कामयाब हो गये वह मोमिन जो अपनी नमाजों मे खुशूअ् करते हैं। हजरत इब्ने अब्बास रजि० फरमाते है, यानी जो नमाजों के अन्दर रफा यदैन नहीं करते"।

दूसरी दलील का पहला जवाब

आयत का शाने नुजूल :

१. काजी सनाउल्लाह पानी पती लिखते हैं

"हाकिम ने हस्बे शर्ते शैखैन हजरत अबू हुरैरह रजि० की रिवायत से

बयान किया है और उसको सही करार दिया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नमाज पढ़ने में अपनी नजर को ऊपर आसमान की तरफ उठा लेते थे।

इस पर यह आयात नाजिल हुई :

قَدْ أَفْلَحَ الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ هُمْ فِي صَلَاتِهِمْ خَاشِعُونَ [illegible]

तर्जमा : "बेशक उन मोमिनों ने (आखिरत में) फलाह पाई जो अपनी नमाज मे खुशूअ़ करने वाले हैं"।

इस आयत के नाजिल होने के बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपना सर नीचे झुका लिया।

इब्ने मरदवैह की रिवायत इन अल्फ़ाज के साथ है, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आसमान में इधर उधर नजर घुमा लिया करते थे, इस पर यह आयत नाजिल हुई।

इमाम बग़वी ने हजरत अबू हुरैरह रजि० का बयान नक़ल किया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबी रज़ि० नमाज़ के अन्दर आसमान की तरफ अपनी नजर उठा लिया करते थे। जब आयत मज्कूरा नाजिल हुई तो सज्दागाह पर नज़र जमाने लगे।

इब्ने अबी हातिम ने इब्ने सीरीन की मुरसल रिवायत नकल की है कि सहाबा रजि०, नमाज के अन्दर आसमान की तरफ नजरें उठा लेते थे। इस पर यह आयत नाजिल हुई। (तफसीर मज़्हरी मुतर्जम स० १६१, जिल्द ८)

अल-ग़रज आयत के शाने नुजूल से यह बात वाजेह हो गई कि इस आयत को अद्मे रफा यदैन से कोई तअल्लुक नहीं।

दूसरी दलील का दूसरा जवाब

दूसरा जवाब यह है कि चूंकि यह कौल बुखारी और मुस्लिम की सरीह रिवायत के खिलाफ है। चुनांचे शरह वकाया जिल्द नम्बर १, सफः ६ में है, सही हदीस के कई दर्जे हैं, पहला दरजा यह है कि इत्तिफाक किया उस पर बुखारी व मुस्लिम ने। यानी दोनों की किताबों मे वह हदीस मौजूद हो। पस हदीसे रफा यदैन बुखारी और मुस्लिम दोनों में मौजूद है। चुनांचे सही बुखारी मे है

حَدَّثَنَا عَبْدُ اللّٰهِ بْنُ مَسْلَمَةَ عَنْ مَالِكٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ سَالِمِ بْنِ عَبْدِ اللّٰهِ عَنْ أَبِيهِ أَنَّ رَسُولَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يَرْفَعُ يَدَيْهِ حَذْوَ مَنْكِبَيْهِ إِذَا افْتَتَحَ الصَّلَاةَ وَإِذَا كَبَّرَ لِلرُّكُوعِ وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ رَفَعَهُمَا كَذٰلِكَ أَيْضًا وَقَالَ سَمِعَ اللّٰهُ لِمَنْ حَمِدَهُ رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ وَكَانَ لَا يَفْعَلُ ذٰلِكَ فِي السُّجُودِ [illegible]

तर्जमा : हम से अब्दुल्लाह बिन मस्लमा क़अनबी ने बयान किया, उन्होंने इमाम मालिक से, उन्होंने इब्ने शिहाब से, उन्होंने सालिम बिन अब्दुल्लाह से, उन्होंने अपने बाप (अब्दुल्लाह बिन उमर रजि०) से कि आंहजरत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज शुरू करते तो दोनों मोंढों तक हाथ उठाते और जब रुकूअ़ की तक्बीर कहते और जब रुकूअ़ से सर उठाते तब भी इसी तरह दोनों हाथ उठाते और **समिअल्लाहुलिमन हमिदह रब्बना व लकल हम्द** कहते और सज्दों के बीच मे हाथ न उठाते।

हन्फी मज़्हब के उसूल के मुताबिक़ हदीस रफा यदैन चूंकि दोनों किताबों मे मौजूद है इसलिए कौले इब्ने अब्बास रजि० की कोई हैसियत न रही।

मुसन्निफ़ की दूसरी दलील का तीसरा जवाब

नीज खुद इब्ने अब्बास रज़ि० से रफ़ा यदैन की हदीस मरवी है इसलिए उनके इस कौल को उनकी रिवायात करदह हदीस की रोशनी मे देखना चाहिए। चुनांचे आप रजि० की हदीस यह है :

[illegible] أَنَّ ابْنَ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا كَانَ إِذَا قَامَ إِلَى الصَّلَاةِ رَفَعَ يَدَيْهِ حَتّٰى يُحَاذِيَ بِهِمَا أُذُنَيْهِ وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ وَاسْتَوٰى قَائِمًا فَعَلَ مِثْلَ ذٰلِكَ [illegible]

तर्जमा : "इब्ने अब्बास रजि० जब नमाज के लिए खड़े होते तो अपने हाथों को अपने कानों के बराबर करते और जब रुकूअ़ से सर उठाते और सीधे खड़े हो जाते तो रफा यदैन करते"।

मुसन्निफ़ की दूसरी दलील का चौथा जवाब

१. हजरत इब्ने अब्बास रजि० की इस तफ्सीर मे तस्रीह नहीं है। अगर तस्रीह है तो साबित करें।

२. जब नमाजी अपनी नमाज शुरू करता है तो अल्लाहु अकबर कह कर रफा यदैन करता है।

३. हजरत इब्ने अब्बास रजि० की इस तफसीर में मुतलक रफा यदैन करने की नफी है, न कि रुकूअ को जाते और सर उठाते वक्त रफा यदैन को बल्कि वित्र मे रफा यदैन न करने को भी शामिल है और आप उसके काइल व फाइल है।

४. और जब नफी मुतलक है तो आप उसे रुकूअ के पहले और रुकूअ के बाद रफा यदैन करने पर क्यों महमूल करते है। इफ्तिताह में रफा यदैन न करने पर क्यों महमूल नही करते ताकि यह तफ्सीर आपके खिलाफ भी हो। आखिर आप भी तो रफा यदैन करते है, ख्वाह इफ्तिताह में सही। **"इजा जाअल-एहतिमाल, बतलल इस्तिदलाल"** जब उसके कई एहतमालात हो सकते हैं तो आपका इससे इस्तिदलाल गलत हुआ।

मुसन्निफ़ की तीसरी दलील और उसका जवाब

"يٰأَيُّهَا الَّذِينَ قِيلَ لَهُمْ كُفُّوا أَيْدِيَكُمْ وَأَقِيمُوا الصَّلٰوةَ"

तर्जमा : "ऐ ईमान वालो! अपने हाथो को रोक कर रखो जब तुम नमाज पढ़ो"।

इस आयत से भी बाज लोगों ने नमाज के अन्दर रफा यदैन के मना पर दलील ली है। (तहकीक मस्अला रफा यदैन स० ६)

जवाब

यह खुद साख्ता आयत है। कुरआन मजीद की ६६६६ आयात में से कोई आयत नहीं है। यह महज मुसन्निफ साहब का खुदा के जिम्मे इफ्तिरा व बुहतान है। जिसके मुतअल्लिक इरशादे खुदा वन्दी है :

"وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِهٖ إِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ" (سورة الانعام، آيت ٢١)

तर्जमा : "और उससे बढ कर जालिम कौन है जो अल्लाह पर झूठा इल्जाम लगाये और उसकी निशानियों को झूठा माने, बेशक जालिम कामयाब नही होते"।

मुसन्निफ़ की चौथी दलील और उसका जवाब

"أَقِمِ الصَّلٰوةَ لِذِكْرِيْ"

तर्जमा : "मेरे जिक्र के लिए नमाज़ कायम करो"।

...रे बहस मसअला रफा यदैन और जल्स-ए-इस्तिराहत के लिए ...हादीसे मुकद्दसा में कोई जिक्र मुकर्रर नहीं है इसलिए यह नमाज से गैर मुतअल्लिक अफआल हुए। (तहकीक मस्अला रफा यदैन स० ६)

जवाब

इसका जवाब यह है कि सारी नमाज ही जिक्र है। अल्लाहु अकबर से ...कर सलाम तक जैसा कि इब्ने कसीर में है कि एक मानी "लेजिक्री" के ...ह है कि जब तुझे याद आए तो उसको अदा करे। हुजूर सल्लल्लाहु ...लैहि व सल्लम ने फरमाया :

"जब तुम में से कोई नमाज से सो जाए या उस से गाफिल हो जाए तो जब नमाज याद आवे पढ ले। इसलिए कि अल्लाह तआला ने फरमाया अकिमिस्सलाता लेजिक्री।

बाकी जल्स-ए-इस्तिराहत का जिक्र कुतुबे अहादीस मे वारिद है, जैसे ...साई शरीफ, (जिल्द १, स० १३६) में आता है :

"أَخْبَرَنَا عَلِيُّ بْنُ حُجْرٍ قَالَ أَخْبَرَنَا هُشَيْمٌ عَنْ خَالِدٍ عَنْ أَبِي قِلَابَةَ عَنْ مَالِكِ بْنِ الْحُوَيْرِثِ قَالَ رَأَيْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُصَلِّيْ فَإِذَا كَانَ فِيْ وِتْرٍ مِنْ صَلٰوتِهٖ لَمْ يَنْهَضْ حَتّٰى يَسْتَوِيَ جَالِسًا"

तर्जमा : "हजरत मालिक बिन हुवैरिस फरमाते है कि मैंने जनाब रिसालत मआब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को नमाज पढते हुए देखा है, जब आपकी नमाज की ताक रकअत (१,३) होती तो आप खडे नही होते थे, यहाँ तक कि आप मुकम्मल तशहहुद की तरह बैठ जाते"।

एक और हदीस मुलाहिजा फरमाएं :

"أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ قَالَ حَدَّثَنَا خَالِدٌ عَنْ أَبِي قِلَابَةَ قَالَ كَانَ مَالِكُ بْنُ الْحُوَيْرِثِ يَأْتِيْنَا فَيَقُوْلُ أَلَا أُحَدِّثُكُمْ عَنْ صَلٰوةِ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَيُصَلِّيْ فِيْ غَيْرِ وَقْتِ صَلٰوةٍ فَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهٗ مِنَ السَّجْدَةِ الثَّانِيَةِ فِيْ أَوَّلِ الرَّكْعَةِ اسْتَوٰى قَاعِدًا ثُمَّ قَامَ فَاعْتَمَدَ عَلَى الْأَرْضِ"

तर्जमा : "हजरत अबू किलाबा कहते है कि हमारे पास हजरत मालिक

बिन हुवैरिस तशरीफ लाया करते थे तो फरमाया करते थे कि मैं तुम्हें रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नमाज के मुतअल्लिक न बताऊं? तो वह (मालिक रज़ि०) फ़र्ज़ नमाज़ के औकात के अलावा वक्त (मैं नफ्ल नमाज़) पढते। तो जब वह पहली रकअत के दूसरे सज्दा से सर उठाते तो सीधे हो कर बैठ जाते, (जल्स–ए–इस्तिराहत करते) फिर खड़े होते और ज़मीन पर टेक लगा लेते'। (नसाई जिल्द १, स० १३६)

तीसरी सनद देखें :

حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ نَا هُشَيْمٌ عَنْ خَالِدٍ عَنْ أَبِي قِلَابَةَ عَنْ مَالِكِ بْنِ الْحُوَيْرِثِ أَنَّهُ رَأَى النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا كَانَ فِي وِتْرٍ مِنْ صَلَاتِهِ لَمْ يَنْهَضْ حَتَّى يَسْتَوِيَ قَاعِدًا۔

तर्जमा : 'हजरत मालिक बिन हुवैरिस रज़ि० फरमाते हैं कि उन्होंने रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा है कि जब आप अपनी ताक नमाज (रकअत) मे होते तो आप खड़े नही होते थे यहाँ तक कि आप सीधे बैठ जाते'। (यह तीनों असानीद अबू दाऊद, किताबुस्सलात स० १२२ की है) अब जामे तिर्मिज़ी शरीफ (स० ६१) मुलाहिज़ा फरमाएं। आपने भी किताबुस्सलात मे इस तरह बाब बाधा है। **'बाबुन कैफन्नहूजु मिनस्सुजूदे'**

अब सनद मुलाहिजा फरमाएं

حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ حُجْرٍ نَا هُشَيْمٌ عَنْ خَالِدِ الْحَذَّاءِ عَنْ أَبِي قِلَابَةَ عَنْ مَالِكِ بْنِ الْحُوَيْرِثِ اللَّيْثِيِّ أَنَّهُ رَأَى النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُصَلِّي فَكَانَ إِذَا كَانَ فِي وِتْرٍ مِنْ صَلَاتِهِ لَمْ يَنْهَضْ حَتَّى يَسْتَوِيَ جَالِسًا۔ قَالَ أَبُو عِيسَى حَدِيثُ مَالِكِ بْنِ الْحُوَيْرِثِ حَدِيثٌ حَسَنٌ صَحِيحٌ۔

तर्जमा : 'पहले गुजर चुका है। इस हदीस के मुतअल्लिक इमाम तिर्मिजी फरमाते हैं कि यह हदीस हसन सही है।

कारेईने किराम! हम ने कुतुबे अहादीस (बुखारी शरीफ, अबू दाऊद शरीफ, जामे तिर्मिजी शरीफ, सुनन नसाई शरीफ) से साबित कर दिया है कि जल्स–ए–इस्तिराहत हज़रत नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अमल है। मगर किसी शख्स को यह अहादीस नजर न आएं तो उसमें हमारा कुसूर क्या है? यह हदीस शरीफ़ तो एक मामूली पढे लिखे हुए

आदमी को मिशकात शरीफ़ स० ७५ पर नज़र आ जाती है।

मुसन्निफ़ की पाँचवीं और सातवीं दलील और उसका जवाब

عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ لَا تُرْفَعُ الْأَيْدِي إِلَّا فِي سَبْعِ مَوَاطِنَ حِينَ يَفْتَتِحُ الصَّلٰوةَ۔ (رواه الطبراني۔ زيلعي ص ٣٩١ ج١، تحقيق رفع يدين ص ...)

तर्जमा : 'हजरत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि०, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिवायत करते हैं कि आपने फरमाया न रफा यदैन करो मगर सात जगह। १. जब नमाज शुरू करो, बाकी जगह हज में'।

عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ تُرْفَعُ الْأَيْدِي فِي سَبْعِ مَوَاطِنَ عِنْدَ افْتِتَاحِ الصَّلٰوةِ۔ الحديث (ابن أبي شيبة بحواله زيلعي ص ٣٩١ ج١)

तर्जमा : 'हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० फरमाते है कि आंहजरत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया सात जगह रफा यदैन की जाए नमाज के शुरू करते वक्त और बाकी छ. जगह हज में।

जवाब

अली बिन मरहर रह० और इमाम बुखारी रह० ने कहा है कि इब्ने अबी लैला ने हकम से और उन्होंने इब्ने अब्बास रज़ि० से और उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से जो रिवायत की है। शो'बा ने वजाहत की है कि हकम ने मिक्सम से सिर्फ चार हदीसें सुनी है उन चार में मज़्कूरा वाला हदीस नही है।

दूसरी बात यह है कि यह हदीस जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तरफ मन्सूब है वह महफूज नही है। इसलिए कि नाफे के अस्हाब ने नाफे की मुखालिफत की है और हकम की जो हदीस मिक्सम से मरवी है वह मुरसल है। और मुहद्देसीन के नज़्दीक मुरसल हदीस काबिले हुज्जत नही होती।

मजीद यह कि ताऊस, अबू जमरा, अता इन सब ने इब्ने अब्बास रज़ि० को देखा है वह रुकूअ् के वक्त और जब रुकूअ् से सर उठाते थे रफा यदैन करते थे। इब्ने अबी लैला की हदीस अगर सही हो कि वह सात जगहो मे

रफा यदैन करते थे (मगर) वकीअ् की हदीस मे यह तो नहीं कहा है कि उन सात जगहो के सिवा किसी दूसरी जगह रफा यदैन न की जाए। बल्कि उसका मतलब यह है कि उन जगहो मे भी हाथ उठाए जाए। उनके अलावा रुकूअ् करते और रुकूअ् से सर उठाते वक्त भी रफ़ा यदैन की जाए ताकि सब अहादीस पर अमल हो जाए और उसमे कोई तजाद नहीं है। उन लोगो ने यह भी कहा है, ईदैन, फित्र और अज्हा की तक्बीरात में रफा यदैन की जाए और उसके कौल के मुताबिक चौदह तक्बीरें हैं। इब्ने अबी लैला की हदीस में उनका कोई जिक्र नही।

बाज कूफियों ने कहा है कि जनाज़ा की तक्बीरात मे रफा यदैन की जाए और वह चार तक्बीरें हैं। और यह सब की सब इब्ने अबी लैला की हदीस में बयान करदह जगहो के अलावा हैं।

मजीद बहुत सी असानीद हैं जिन में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से उन सात जगहो के अलावा दूसरे मकामात पर रफा यदैन का बयान है। (जुजओ रफ़इल यदैन मुतर्जम स० ५७, ५८, ५६)

नीज इमाम जैलई रह० जिनके हवाला से मुसन्निफ़ ने हदीस नकल की है, उन रिवायात पर तब्सरा करते हुए लिखते हैं :

غريب بهذا اللفظ ..... ابن أبي ليلى تفرد بالجزء. قال شعبة
لم يسمع الحكم عن مقسم إلا أربعة أحاديث ليس هذا منها فهو
مرسل وغير محفوظ (زيلعي ص ٣٩٠ ج ١)

नीज इस सनद में मुहम्मद बिन उस्मान बिन अबी शैबा रावी है जो कि निहायत कमजोर किस्म का रावी है, चुनांचे उनके बारे मे अब्दुल्लाह बिन अहमद फरमाते हैं : **"कज्जाब"**। इब्ने ख़राश कहते हैं :

"काना यज-उल-हदीस" (झूठी हदीस बनाया करता था) इमाम बुरकानी फरमाते है "لم أزل أسمعهم يذكرون أنه مقدوح فيه . (ميزان : ١٠١ ج ٢) लोग हमेशा इस पर जिरह किया करते थे।

नीज इस सनद मे मुहम्मद बिन इमरान बिन अबी लैला भी है। यहया बिन सईद उसे जईफ कहते थे। (तहजीब) इमाम अहमद फरमाते हैं **"काना सैयुल-हिफ्जे मुज्तरेबुल-हदीस"** (तहजीब) नीज फरमाया कि इब्ने अबी लैला जईफ है इमाम शो'बा फरमाते हैं **मा रऐतु अहदन अस्वआ हिफ्ज़न मिन इब्ने अबी लैला।** यानी इब्ने अबी लैला से बढ कर बुरे हाफिजे वाला मैंने नहीं देखा (तहजीब) इब्ने हिब्बान फरमाते हैं : **काना फाहिशुल-खता रदीयुल-हिफ़्ज़ फकसरतुल-मनाकीर फी रिवायतिही** (तहजीब) फाहिश गलती और हाफिज़ा रद्दी होने की वजह से उसकी रिवायत में मुनकर बातें बकसरत है। इमाम दार कुतनी फरमाते हैं : **काना रदीयुल-हिफ्जे कसीरुल वहमि।** (तहजीब) कसीरुलवहम और रद्दी हाफिजा वाला था।

लिहाज़ा इब्ने अबी लैला भी जरह से महफूज नहीं है। लिहाजा यह हदीस भी काबिले हुज्जत नहीं है।

छठी दलील और उसका जवाब

وعنه أن النبي صلى الله عليه وسلم قال ترفع الأيدي إذا
قمت إلى الصلوة. رواه الطبراني (زيلعي ص ٣٩١ ج ١)

तर्जमा : "हजरत इब्ने अब्बास रज़ि० से रिवायत है कि आंहजरत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, तू रफा यदैन उस वक्त कर जब तू नमाज़ के लिए खडा हो"।

जवाब

यह रिवायत मुन्दरजा ज़ैल सनद के साथ आई है

حدثنا محمد بن عثمان بن أبي شيبة حدثنا محمد بن عمران
ابن أبي ليلى عن الحكم عن مقسم عن ابن عباس ......

यह सनद वही है जिस पर हदीस नम्बर पांच और सात के जिम्न में मुफस्सल जरह गुजर चुकी है। लिहाजा यह अदमे रफा यदैन के लिए हुज्जत नहीं है।

मुसन्निफ़ की आठवीं दलील और उसका जवाब

हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर रजि० खुद भी उसके मुवाफिक फतवा दिया करते थे। (इब्ने अबी शैबा, जैलई स० ३६१ जिल्द १, तहकीक मसअला रफा यदैन स० ८)

जवाब

यह इमाम जैलई रह० पर बहुत बडी तोहमत है। उनकी किताब में यह

फतवा कहीं भी मज्कूर नहीं है।

नीज अब्दुल्लाह बिन उमर रजि० से रफा यदैन करने की तो इतनी रिवायात आई है कि किसी दूसरे से नहीं आई बल्कि वह तो रफा यदैन के इस कद्र पाबन्द थे कि न करने वाले को कंकरियां मारा करते थे। मुलाहिजा हो (तल्खीसुल–हबीर स० २२०, जिल्द १)

मुसन्निफ़ की नवीं दलील और उसका जवाब

हजरत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रजि० भी उसके मुवाफिक फतवे देते थे। जैलई स० ३९१ जिल्द १ (तहकीक मस्अला रफा यदैन स० ७)

जवाब

यह अब्दुल्लाह बिन अब्बास रजि० पर महज इल्जाम है। इमाम जैलई रह० फरमाते हैं

روى جماعة من التابعين بالأسانيد الصحيحة المأثور عن عبد الله بن عمر وعبد الله بن عباس أنهما كانا يرفعان أيديهما عند الركوع وبعد رفع الرأس من الركوع وقد أسنداه إلى النبي صلى الله عليه وسلم (نصب الراية ...)

तर्जमा : यानी ताबेईन की कसीर तादाद ने सही सनदों के साथ इब्ने उमर रजि० और इब्ने अब्बास रजि० से नकल किया है, कि यह दोनों हजरात रुकूअ़ जाते और रुकूअ़ से सर उठाते वक्त रफा यदैन किया करते थे और दोनों हजरात ने अपने अमल की निस्बत, हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तरफ की है। (यानी हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर रजि० और हजरत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रजि० दोनों फरमाते है कि हजरत नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी रफा यदैन किया करते थे।

मुसन्निफ़ की दसवीं दलील और उसका जवाब

عن عبد الله بن عمر قال رأيت رسول الله صلى الله عليه وسلم إذا افتتح الصلوة رفع يديه حذو منكبيه وإذا أراد أن يركع وبعد ما يرفع رأسه من الركوع فلا يرفع ولا بين السجدتين (مسند حميدي ... صحيح ابو عوانة ... مسئلة تحقيق رفع يدين ...)

जवाब

इस रिवायत पर इमाम अबू अवाना ने इस तरह बाब कायम किया है

باب رفع اليدين في افتتاح الصلوة قبل التكبير بحذاء منكبيه وللركوع ولرفع رأسه من الركوع وأنه لا يرفع بين السجدتين۔

तर्जमा : यानी यह बयान है कि नमाज के आगाज में फिर रुकूअ़ को जाते और रुकूअ़ से सर उठाते हुए कन्धों तक रफा यदैन करने के बारे में और यह कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दो सज्दों के माबैन रफा यदैन नहीं करते थे।

१. बाब के बाद इमाम अबू अवाना ने सबसे पहले यही रिवायत दर्ज की है इसलिए यह रफा यदैन करने की दलील होगी न कि अदमे रफा यदैन की।

२. रिवायत को समझने के लिए उसके अल्फाज पर गौर फरमाए कि **यरफउहुमा** का तअल्लुक किस से है। मा–कब्ल की जजा है या उसका तअल्लुक बाद के जुमला के साथ है। दरअस्ल इमाम अबू अवाना ने जैसे रफा यदैन की कैफियत के बारे में रावियों का इख्तिलाफ बयान किया है कि बाज ने **हत्ता युहाजिया बेहेमा** कहा है और बाज ने हज़वा **मनकिबेहि** कहा है। इसी तरह अगले अल्फाज़ में भी यही मक्सूद है कि बाज ने **ला यरफउहुमा** और बाज ने **वला यरफओ बैनस्सज्दतैन** कहा है और उसकी, इमाम साहब के अल्फाज **वल-माना वाहिदुन** (मानी व मक्सद एक ही है) से भी ताईद होती है। यानी **ला यरफ़ओहुमा** कहा जाए या **ला यरफओ** मानवी एतबार से कोई फर्क नहीं है।

अगर **ला यरफओ** मा कब्ल की जजा है तो फिर उसके बाद **वकाला बाजुहुम व ला यरफओ बैनस्सज्दतैने वल मा'ना वाहिदुन** में बाज का जिक्र करके किस जुमला से तअरुज व इख्तिलाफ का इशारा है और कौन से दो लफ्ज है कि फरमाया जा रहा है कि मानी एक ही है। अगर यहाँ दो लफ्ज नहीं तो मानी वाहिद कहने का क्या मतलब?

३. नीज इमाम अबू अवाना ने उसके बाद मुसलसल सात अहादीस जिक्र फरमाई है जिन में रफा यदैन रुकूअ़ जाते हुए और उठते हुए करने का जिक्र है।

मुसन्निफ की ग्यारहवीं दलील और उसका जवाब

وَعَنْهُ اَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يَرْفَعُ يَدَيْهِ اِذَا افْتَتَحَ الصَّلٰوةَ ثُمَّ لَا يَعُوْدُ (بيهقي في الخلافيات لبلوغ ص ٢٠٢ ج١) تحقيق مسئله رفع يدين ص ٨

तर्जमा : हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर रजि० से ही रिवायत है कि बेशक नबी पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज शुरू फरमाते तो रफा यदैन करते। फिर सारी नमाज में किसी जगह रफा यदैन नहीं करते थे"।

जवाब

१. हाफिज इब्ने हजर रह० फरमाते है

هُوَ مَقْلُوْبٌ مَوْضُوْعٌ (تلخيص ص ٢٢٢ ج١)

तर्जमा : यह रिवायत मौजू (बनावटी) है।

२. : अल्लामा जैलई लिखते हैं

قَالَ الْبَيْهَقِيُّ قَالَ الْحَاكِمُ: هٰذَا بَاطِلٌ مَوْضُوْعٌ وَلَا يَجُوْزُ اَنْ يُذْكَرَ اِلَّا عَلٰى سَبِيْلِ الْقَدْحِ (نصب الراية ص ٢١٠ ج١ طبع المجلس العلمي)

तर्जमा : यानी इमाम बैहकी रह० ने इमाम हाकिम रह० से नकल किया है कि उन्होंने इस हदीस को बातिल और मौजू करार दिया है और कहा है कि जरह के बगैर उसका जिक्र करना जाइज नहीं।

३. मौलाना अब्दुल हई हन्फी ने भी उसको मरदूद तस्लीम किया है। (अत्तालीकुल मुमज्जद, स० १६३)

अल गरज इमाम हाकिम रह०, इमाम बैहकी रह० और हाफिज इब्ने हजर रह० के कौल के मुताबिक यह रिवायत बातिल, मौजूअ और मक्लूब है।

मुसन्निफ़ की बारहवीं दलील और उसका जवाब

عَنْ مُجَاهِدٍ قَالَ صَلَّيْتُ خَلْفَ ابْنِ عُمَرَ فَلَمْ يَكُنْ يَرْفَعُ يَدَيْهِ اِلَّا فِي التَّكْبِيْرَةِ الْاُوْلٰى مِنَ الصَّلٰوةِ، سَنَدُهُ صَحِيْحٌ (ابن ابي شيبة ص ٢٣٧ ج١ طبع ملتان)

तर्जमा : हजरत मुजाहिद फरमाते है कि मैंने हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर रजि० के पीछे नमाज पढ़ी। पस आप नमाज में सिर्फ पहली तक्बीर के वक्त रफा यदैन करते थे। उसके बाद नमाज में किसी जगह रफा यदैन नहीं करते थे। उसकी सनद सही है।

जवाब

१. इस रिवायत की सनद यूं है

حَدَّثَنَا ابْنُ اَبِيْ دَاوٗدَ قَالَ حَدَّثَنَا اَحْمَدُ بْنُ يُوْنُسَ قَالَ حَدَّثَنَا اَبُوْ بَكْرِ بْنُ عَيَّاشٍ عَنْ حُصَيْنٍ عَنْ مُجَاهِدٍ قَالَ صَلَّيْتُ الخ

(अ) : इस सनद में अबू बकर बिन अय्याश है जिसके मुतअल्लिक मुहद्दसीन ने जिरह की है जिसके मुतअल्लिक मीजानुल एतदाल में है **"सुदूकुन सबत फिल-क़िरअते लकिन्नहू फिल-हदीस यग्लुतु व यहिमु"** (स० ४६६, जिल्द ४) किरअत में सच्चा और मो'तबर है लेकिन हदीस बयान करते हुए गलती कर जाता था नीज वहमी शख्स था। मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन नुमैर ने उसे जईफ कहा है। (मीजान स० ४६६, जिल्द ४) अबू नईम रह० फरमाते है **"लम यकुन फी शुयूखिना अहदुन अक्सरा गलतन मिन्हु"** (मीजान स० ५००, जिल्द ४) हमारे असातिजा में उस से ज्यादा गलतियाँ करने वाला कोई नही था। इब्ने मदीनी फरमाते हैं मैंने यह्या बिन सईद को फरमाते हुए सुना। **लौ काना अबू बकर बिन अय्याश इन्दी मा साअल्तुहू अन शैइन।** (मीजान स० ५००, जिल्द ४) अगर मेरे पास अबू बकर बिन अय्याश होता तो मैं उस से कुछ न पूछता।

यह्या बिन सईद के नज्दीक उनका तज्किरा होता तो नफ्रत व हिकारत से उनकी तेवरी पर बल पड़ जाते। (मीजानुल-एतदाल स० ५०८ जिल्द ४)

(ब) हुसैन बिन अब्दुर्रहमान के बारे में इमाम हाकिम फरमाते हैं कि **'सिक़तुन साआ हिफ्जुहू फिल आख़िरे'** यानी 'वह सिका रावी थे मगर आखिरी उम्र में उनका हाफिजा बिगड गया था'। और इमाम नसाई फरमाते हैं कि **'तग़य्यरा हिफ्जुहू'** यानी उनका हाफिजा बिगड गया था। अलगरज जिस सनद के रावियों की यह हालत हो वह हुज्जत के काबिल कैसे हो सकती है?

(२) नीज इमाम बुखारी रह० ने जवाब देते हुए कहा है कि अहले इल्म ने मुजाहिद रह० से रिवायत किया है कि वह इब्ने उमर रजि० से महफूज नही कर सके। इल्ला यह कि वह भूल गये है। जैसा कि इसान नमाज में एक के बाद दूसरी चीज को भूल जाता है। जैसा कि बसाऔकात रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा रजि० भूलते थे। चुनांचे

दो रकअत में सलाम फेर देते और तीन में सलाम फेर देते। तुम देखते नहीं कि इब्ने उमर रजि० रफा यदैन न करने वालों को कंकरियाँ मारते थे तो वह ऐसे काम को कैसे छोड़ सकते हैं जिसके करने का वह दूसरों को हुक्म देते हों। मजीद यह कि उन्होंने खुद बयान किया है कि उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को **रफा यदैन** करते देखा है।

इमाम बुखारी रह० ने बयान किया है कि यहया बिन मुईन ने कहा है कि हदीस अबी बकर की जो हुसैन से मरवी है वह वहम है उसका कोई असल नहीं। (जुजओ रफइल यदैन २५, २४६)

मुसन्निफ़ की तेरहवीं दलील और उसका जवाब

عن عبد العزيز بن حكيم قال رأيت ابن عمر يرفع يديه حذاء أذنيه في أول تكبيرة افتتاح الصلوة ولم يرفعهما فيما سوى ذلك. (موطا امام محمد ص٩٠) تحقيق مسئله رفع يدين ص٩٠

तर्जमा : "अब्दुल अजीज बिन हकीम कहते हैं कि मैंने अब्दुल्लाह बिन उमर रजि० को नमाज के शुरू में कानों के बराबर रफा यदैन करते देखा है। उसके अलावा किसी जगह पर भी उन्होंने रफा यदैन नहीं की"।

जवाब

इस हदीस की सनद इस तरह है :

وقال محمد أخبرنا محمد بن أبان بن صالح عن عبد العزيز بن حكيم الخ

मुहम्मद बिन अबान बिन सालेह कूफा का रहने वाला है। इमाम अबू दाऊद और इब्ने मईन ने उसको जईफ करार दिया है। (मीज़ान स० ४५३, जिल्द ३)

इमाम बुखारी फरमाते हैं : **"लैसा बिल-कवीये"** (मीज़ान स० ४५३, जिल्द ३) यह रावी (मुहम्मद बिन अबान) कवी हाफिजा वाला न था।

लिहाजा यह हदीस भी, सही रिवायात का मुकाबला नहीं कर सकती और उस से इस्तिदलाल करना गलत है।

मुसन्निफ़ की चौदहवीं दलील और उसका जवाब

عن علقمة قال قال عبد الله بن مسعود ألا أصلي بكم صلوة رسول الله صلى الله عليه وسلم فصلى فلم يرفع يديه إلا في أول مرة.

तर्जमा : हजरत अल्कमा से रिवायत है कि वह फरमाते हैं कि हजरत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रजि० ने एक मरतबा फरमाया कि मैं तुम को हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जैसी नमाज़ न पढ़ाऊं? उसके बाद उन्होंने नमाज पढ़ाई और पहली मरतबा के बाद किसी जगह रफा यदैन न की। इमाम तिर्मिजी रह० फरमाते हैं कि बहुत से अहले इल्म सहाबा किराम और ताबईन का यही मस्लक है। हज़रत सुफियान सौरी और अहले कूफा का भी यही मस्लक है। (तिर्मिज़ी, स० ३५, जिल्द १, तहकीक रफा यदैन स० १५)

जवाब

१. अब्दुल्लाह बिन मुबारक फरमाते हैं कि :

وقال عبد الله بن المبارك قد ثبت حديث من يرفع وذكر حديث الزهري عن سالم عن أبيه ولم يثبت حديث ابن مسعود أن النبي صلى الله عليه وسلم لم يرفع إلا في أول مرة. (ترمذي ...)

२. : इमाम बैहकी फरमाते हैं **"लम यस्बुत इन्दी हदीसु इब्ने मस्ऊदिन"**। (बैहकी स० ७६, जिल्द १)

तर्जमा : मेरे नज्दीक इब्ने मसऊद रजि० की हदीस साबित ही नहीं।

३. इमाम अबू दाऊद फरमाते हैं :

هذا حديث مختصر من حديث طويل وليس هو بصحيح على هذا اللفظ (ابو داؤد مصري ص١٩٩ ج١)

तर्जमा : यह एक लम्बी हदीस से मुख्तसर है और इन अल्फाज से यह हदीस सही नहीं है"।

४. इमाम अहमद फरमाते हैं

وقال احمد وشيخه يحيى بن آدم هو ضعيف (تلخيص الحبير ص٢٢٢ ج١)

तर्जमा : "इमाम अहमद और उनके उस्ताद यहया बिन आदम फरमाते हैं कि यह हदीस जईफ है"।

५. इमाम बुखारी रह० भी उसका जुअफ नकल करके उसकी ताईद करते हैं। (तल्खीस स० २२२, जिल्द १)

६. इब्ने अबी हातिम फरमाते हैं :

"हाज़ा हदीसुन खतउन"। (तल्खीस स० २२२, जिल्द १) यानी यह हदीस गलत है।

७. इमाम इब्ने हिब्बान फरमाते हैं

"कूफियों के पास इस से बेहतर रफा यदैन को छोड़ने में और कोई रिवायत नही मगर हकीकत मे यह बहुत जईफ है। क्योंकि उसमें ऐसी खराबियाँ है जो उसको बातिल कर देती है। (तल्खीस स० २२२, जिल्द १)

मुसन्निफ़ की पन्द्रहवीं दलील और उसका जवाब

عن عبد الله قال ألا أخبركم بصلوة رسول الله صلى الله عليه وسلم قال فقام فرفع يديه أول مرة ثم لم يعد وفي نسخة ثم لم يرفع

(نسائي شريف ص ١٥٨ ج ١، تحقيق رفع يدين ص ١٠)

तर्जमा : हजरत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रजि० ने फरमाया, क्या मैं तुम को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नमाज पढ़ने का तरीका न बताऊ? पस आप खड़े हुए तो सिर्फ पहली दफा शुरू नमाज में रफा यदैन की, उसके बाद पूरी नमाज में किसी जगह रफा यदैन नही की।

जवाब

इस हदीस का मुफस्सल जवाब हदीस नम्बर १४ में गुजर चुका है।

मुसन्निफ़ की सोलहवीं दलील और उसका जवाब

عن عبد الله بن مسعود أن رسول الله صلى الله عليه وسلم كان لا يرفع يديه إلا عند افتتاح الصلوة ثم لا يعود (مسند امام اعظم)

(تحقيق مسئله رفع يدين ص: ١١)

जवाब

दलील नम्बर १४ के जवाब में गुजर चुका है।

मुसन्निफ़ की सत्तरहवीं दलील और उसका जवाब

عن عبد الله بن مسعود قال صليت خلف النبي صلى الله عليه وسلم وأبي بكر وعمر فلم يرفعوا أيديهم إلا عند افتتاح الصلوة.

(أخرجه البيهقي، تحقيق مسئله رفع يدين ص ١١)

तर्जमा : हजरत अब्दुल्लाह बिन मसऊद फरमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, हजरत अबू बकर सिद्दीक रजि० और हजरत

उमर रजि० के पीछे नमाजें पढ़ी हैं, तो यह हजरात शुरू नमाज के बाद किसी जगह हाथ नहीं उठाते थे।

जवाब

इस हदीस की सनद इस तरह है :

حدثنا محمد بن جابر عن حماد بن أبي سليمان عن إبراهيم عن علقمة عن عبد الله الخ.

१. अली बिन अम्र रहे : फरमाते हैं :

"मुहम्मद बिन जाबिर इस रिवायत में मुंफरिद है और जईफ़ है"। (बैहकी स० ८०)

२. इमाम अहमद रह० फरमाते हैं :

"محمد بن جابر لا يحدث عنه إلا من هو شر منه"

यानी मुहम्मद बिन जाबिर हदीस के मुआमला में कुछ भी नही। उस से बदतर लोग उस से हदीस बयान करते हैं। (तल्खीसु हबीर, स० २२२)

३. इब्ने जौजी ने इस हदीस को मौजू बताया है।

(नइनूलुल औतार स० १८१, जिल्द १)

४. इमाम बुखारी रह० फरमाते हैं (**लैसा बिल-कवीये**)

(नसबुर्रायह स० ३६७, जिल्द १)

"कि मुहम्मद बिन जाबिर सिकह रावी नही वह जईफ रावी है।

५. इब्ने मईन फरमाते हैं, "**जईफ**" (नसबुर्रायह स० ३६७, जिल्द १)

अल-गरज़ यह हदीस गैर सही होने की वजह से अदमे रफा यदैन की दलील नहीं बन सकती।

मुसन्निफ़ की अट्ठारहवीं दलील और उसका जवाब

عن الأسود قال رأيت عمر بن الخطاب قال يرفع يديه في أول تكبيرة ثم لا يعود. (طحاوي ص ١٣٣ ج ١، تحقيق مسئله رفع يدين ص ١١)

तर्जमा : "हजरत असवद से रिवायत है कि मैंने हजरत उमर बिन खत्ताब रजि० खलीफ़ा राशिद को देखा वह अपने हाथों को सिर्फ पहली तक्बीर के वक्त उठाते थे। फिर नहीं उठाते थे।

जवाब

उसकी सनद इस तरह है

حدثنا ابن أبي داود قال حدثنا الحماني قال حدثنا يحيى بن آدم عن الحسن بن عياش عن عبد الملك بن أبجر عن الزبير بن عدي عن إبراهيم عن الأسود۔

१. इस सनद मे हम्मानी रावी मज्हूल है। (मीज़ान एतदाल, स० २८३, जिल्द १)

२. नीज इस जईफ असर के बरखिलाफ हज़रत उमर रजि० से रफा यदैन करना साबित है। चुनाचे मुलाहिजा फरमाएं

عن سليمان بن كيسان المدني عن عبد الله بن القاسم قال بينما الناس يصلون في المسجد إذ خرج عليهم عمر فقال أقبلوا علي بوجوهكم أصلي بكم صلاة رسول الله صلى الله عليه وسلم ثم رفع يديه حتى يحاذي منكبيه ثم كبر ثم ركع وكذلك حين رفع فقال القوم هكذا كان رسول الله صلى الله عليه وسلم يصلي بنا. قال الشيخ رجاله ثقات معروفون۔

(تخريج الهداية ص: ٢١٦)

तर्जमा : "अब्दुल्लाह बिन कासिम फरमाते है, लोग मस्जिदे नबवी मे नमाज (नफल वगैरह) पढ़ रहे थे कि हजरत उमर रजि० तशरीफ लाए और फरमाया मेरी तरफ देखो, मै तुम को नमाज पढ़ाता हूँ, जिस तरह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम खुद पढ़ाया करते थे और जिस तरह पढ़ने का हुक्म दिया करते थे, फिर आप किब्ला रू खड़े हो गये और तक्बीर तहरीमा और रुकूअ़ के वक्त और रुकूअ़ से उठते वक्त अपने कन्धो तक हाथ उठाए। जब नमाज से फारिग हुए तो सब सहाबा रजि० ने कहा, बेशक इसी तरह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नमाज पढ़ाया करते थे।

"इमाम तक़ीयुद्दीन इब्ने दकीकुल ईद फरमाते है इस सनद के सब रावी मशहूर व मारूफ है" (तख़रीज जैलई स० २१६, देराया इब्ने हजर रह० स० ८६)

अल गरज हजरत उमर रजि० के कौल व फेअ्ल (अमल) से साबित हो गया कि रफा यदैन उनके नज्दीक दुरुस्त और सुन्नते नबवी है।

मुसन्निफ़ की उन्नीसवीं दलील और उसका जवाब

عن الأسود قال صليت مع عمر فلم يرفع يديه في شيء من صلاته إلا حين افتتح الصلاة ورأيت الشعبي وإبراهيم وأبا إسحاق لا يرفعون أيديهم إلا حين يفتتحون الصلاة

(مصنف ابن أبي شيبة ص [illegible]، تحقيق مسئلہ رفع يدين ص [illegible])

तर्जमा : "हज़रत अस्वद रिवायत करते है कि मैने हजरत उमर रजि० के साथ नमाज अदा की। आप पहली तक्बीर के बाद कभी रफा यदैन नहीं करते थे और (रईसुल मुहद्देसीन) इमाम शाबी रईसुल फुक्हा इब्राहीम नख़ई और इमाम अबू इसहाक भी पहली तक्बीर के बाद कही रफा यदैन नही करते थे।

जवाब

इमाम हाकिम फरमाते है

إن هذه رواية شاذة لا يقوم بها حجة ولا تعارض بها الأخبار الصحيحة عن طاؤس بن كيسان عن ابن عمر أن عمر كان يرفع يديه في الركوع وعند الرفع منه. (نصب الراية ص ٤٠٥)

तर्जमा : "यह रिवायत सही रिवायात के खिलाफ है। इसलिए यह दलील नही बन सकती और सही अहादीस जो ताऊस बिन कैसान अन इब्ने उमर रजि० (कि हज़रत उमर रजि० रुकूअ़ और रुकूअ़ से सर उठाने के वक्त रफा यदैन करते थे) मरवी है इस का मुकाबला नही कर सकती और यह असर गैर महफूज है और जो सुफियान सौरी ने जुबैर बिन अदी से बयान किया है वह गैर महफूज है उस मे "ला यऊद" और "ला यरफुउहुमा" का लफ्ज नही है। हाफिज़ इब्ने हजर ने कहा है। **व कद रवाहुस्सौरी वहुवल महफूज।** (देरायह)

मुसन्निफ़ की बीसवीं दलील और उसका जवाब

عن علي أن النبي صلى الله عليه وسلم كان يرفع يديه في التكبيرة الأولى التي يفتتح بها الصلاة ثم لا يرفعهما في شيء من الصلاة. (دارقطني في العلل بحوالہ حاشیہ درایہ ص ١٠٢

ج ١ مسئلہ تحقیق رفع یدین ص ١٢)

तर्जमा : "हजरत अली रजि० से रिवायत है कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नमाज की पहली तक्बीर के बाद सारी नमाज में कहीं भी रफा यदैन नहीं करते थे"।

जवाब

इमाम दार कुतनी ने अपनी इस किताबुल एलल में वही अहादीस दर्ज की है जो जईफ और कम्जोर हैं और साथ ही उसमें जुअफ के सबब भी बयान कर दिया है यह दार कुतनी के अलावा अलग किताब है।

१. तो इस हदीस की सनद में अबू बकर नहशली है, उसके मुतअल्लिक उसमान दारमी लिखते हैं कि

"لَيْسَ اَبُوْ بَكْرٍ النَّهْشَلِيُّ مِمَّنْ يُحْتَجُّ بِرِوَايَتِهٖ اَوْ تَثْبُتُ بِهٖ سُنَّةٌ لَمْ يَاْتِ بِهٖ غَيْرُهٗ-

"यानी अबू बकर की रिवायत काबिले हुज्जत नहीं और न ही उस अकेले से सुन्नत साबित हो सकती है। उसकी हदीस को कोई और मुहद्दिस नहीं लाए"।

२. इस सनद में दूसरा रावी आसिम बिन कुलैब है और उसके मुतअल्लिक हाफिज इब्ने हजर रहे : फरमाते हैं :

"आदमी नेक था, लेकिन फिरका-ए-मुर्जीया से तअल्लुक रखने वाला कूफी था"।

३. अली बिन मदीनी रह० फरमाते हैं

"जिस रिवायत का दारो मदार आसिम पर ही हो वह रिवायत काबिले हुज्जत नहीं होती" (मीजानुल एतदाल स० ५, जिल्द ३)

मुसन्निफ की पेशकरदा रिवायत की सनद में आसिम भी मौजूद है जो मुतफर्रिद है।

हाँ जब उस की ताईद दूसरे रावी कर दें तो दुरुस्त है।

४. नीज मुसन्निफ की पेशकरदा हदीस हजरत अली रजि० की सही रिवायत के मुखालिफ है लिहाजा यह हदीस सही नहीं। सही रिवायत यह है

"اَخْبَرَنَا اَبُوْ عَبْدِ اللّٰهِ الْحَافِظُ وَاَبُوْ سَعِيْدِ بْنُ اَبِيْ عَمْرٍو قَالَا ثَنَا اَبُو الْعَبَّاسِ مُحَمَّدُ بْنُ يَعْقُوْبَ ثَنَا بَحْرُ بْنُ نَصْرٍ ثَنَا عَبْدُ اللّٰهِ بْنُ وَهْبٍ اَخْبَرَنِيْ اِبْنُ اَبِي الزِّنَادِ عَنْ مُوْسَى بْنِ عُقْبَةَ عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ الْفَضْلِ الْهَاشِمِيِّ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمٰنِ الْاَعْرَجِ عَنْ عُبَيْدِ اللّٰهِ بْنِ اَبِيْ رَافِعٍ عَنْ عَلِيِّ بْنِ اَبِيْ طَالِبٍ

رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنْ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَنَّهٗ كَانَ اِذَا قَامَ اِلَى الصَّلٰوةِ الْمَكْتُوْبَةِ كَبَّرَ فَرَفَعَ وَاِذَا اَرَادَ اَنْ يَّرْكَعَ وَيَصْنَعُهٗ اِذَا فَرَغَ مِنَ الرُّكُوْعِ وَلَا يَرْفَعُ يَدَيْهِ فِيْ شَيْءٍ مِّنْ صَلٰوتِهٖ وَهُوَ قَاعِدٌ وَاِذَا قَامَ مِنَ السَّجْدَتَيْنِ رَفَعَ يَدَيْهِ كَذٰلِكَ وَكَبَّرَ"

(السنن الكبرى ج٢ ص٧٤، ابوداؤد ص١٠٩ ج١، مسند احمد ص٩٣ ج١، ابن ماجه ص٦٢، دارقطني ص١١١، ترمذي ص٤٣ جلد ٢)

तर्जमा : "हज़रत अली रजि०, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से फरमाते हैं कि जब आप फ़र्ज नमाज के लिए खड़े होते तो तक्बीर कहते और मोंढों के बराबर रफा यदैन करते और उसी तरह जब किरअत से फारिग़ होते और रुकूअ् का इरादा करते तो उसी तरह रफ़ा यदैन करते। और जब रुकूअ् से सर उठाते तो ऐसे ही रफा यदैन करते और बैठने की हालत में रफ़ा यदैन नहीं करते थे और जब दो रकअत पढ़ कर उठते तो भी रफा यदैन करते और अल्लाह अकबर कहते।

अल-गरज़ हजरत अली रजि० से रफा यदैन करना साबित है। उन से मना की कोई दलील नहीं।

मुसन्निफ़ की २१, २२ और २३ वीं दलील और उसका जवाब

(٢١) عَنْ عَاصِمِ بْنِ كُلَيْبٍ عَنْ اَبِيْهِ اَنَّ عَلِيًّا كَانَ يَرْفَعُ يَدَيْهِ فِيْ اَوَّلِ تَكْبِيْرَةٍ مِّنَ الصَّلٰوةِ ثُمَّ لَا يَرْفَعُ بَعْدُ (طحاوي ص١٣٢ ج١، تحقيق رفع يدين)

(٢٢) وَعَنْهُ اَنَّ عَلِيًّا كَانَ يَرْفَعُ يَدَيْهِ اِذَا افْتَتَحَ الصَّلٰوةَ ثُمَّ لَا يَعُوْدُ

(ابن ابي شيبه ص: ١٢١ ج ١)

तर्जमा : "आसिम बिन कुलैब से रिवायत है कि हजरत अली रजि० नमाज की पहली तक्बीर के बाद कहीं रफा यदैन नहीं करते थे"।

(٢٣) عَنْ عَلِيِّ بْنِ اَبِيْ طَالِبٍ اَنَّهٗ كَانَ يَرْفَعُ يَدَيْهِ فِي التَّكْبِيْرَةِ الْاُوْلَى الَّتِيْ يَفْتَتِحُ بِهَا الصَّلٰوةَ ثُمَّ لَا يَرْفَعُهُمَا فِيْ شَيْءٍ مِّنَ الصَّلٰوةِ (موطا امام محمد ص ٩٣ تحقيق مسئله رفع يدين ص١٣)

जवाब

इन तीन रिवायतों में बीसवीं रिवायत की तरह अबू बकर नहशली और आसिम बिन कुलैब मज्कूर हैं। लिहाजा यह जईफ अक्वाल व आसार

हजरत अली रजि० की मरफूअ़ हदीस के मुकाबला में गैर सही है जैसे बीसवीं हदीस में मज्कूर हो चुका है।

मुअत्ता इमाम मुहम्मद की सनद मुलाहिजा फरमाएं :

قال محمد أخبرنا أبو بكر بن عبد الله النهشلي عن عاصم بن كليب الجرمي عن أبيه وكان من أصحاب علي أن علي بن أبي طالب كرم الله وجهه كان يرفع يديه - الخ

मुसन्निफ़ अगर मुअत्ता सामने रख कर लिखते तो इबारत में गलती न करते। लोगो की लिखी हुई इबारते नोट कर देते हैं।

मुसन्निफ़ की चौबीसवीं दलील और उसका जवाब

عن أبي إسحاق قال كان أصحاب عبد الله وأصحاب علي لا يرفعون أيديهم إلا في افتتاح الصلاة ثم لا يعودون (ابن أبي شيبة ص ٢٦٧ ج ١ ، تحقيق مسئله رفع يدين ص ١٣)

तर्जमा : "मुहद्दिस अबू इसहाक रिवायत करते हैं कि हजरत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रजि० के (सैकड़ों) साथी और हजरत अली रजि० के (हजारों) साथी वह सब पहली तक्बीर के बाद रफ़ा यदैन नहीं करते थे"।

जवाब

१. इस रिवायत की सनद में अबू इसहाक कूफी है जिसके बारे में हाफिज इब्ने हजर रहे० फरमाते हैं, "लैसा बेसिकतिन" यानी यह सिकह और काबिले एतमाद रावी नहीं"।

लिहाजा यह असर सही नही है।

२. नीज हजरत अली रजि० की मरफूअ़ हदीस जो बीसवीं नम्बर में गुजरी है उसके भी मुखालिफ है। लिहाजा यह असर काबिले एतमाद नहीं।

मुसन्निफ़ की पचीसवीं दलील

عن أبي بكر بن عياش قال ما رأيت فقيها قط يفعله يرفع يديه في غير التكبيرة الأولى (طحاوي شريف ص ١٣٣ ج ١ ، تحقيق مسئله رفع يدين)

तर्जमा : मुहद्दिस अबू बकर बिन अय्याश (पैदाइश १०० वफात ९३) फरमाते हैं कि मैंने (खैरुल कुरून में) किसी भी दीन में समझ रखने वाले को कहीं भी पहली तक्बीर के बाद रफ़ा यदैन करते नहीं देखा"।

मुसन्निफ़ की पचीसवीं दलील का पहला जवाब!

इस असर की सनद में इब्ने अबी दाऊद मज्हूल रावी है। नीज अबू बकर बिन अय्याश अस्हाबुल हदीस का सख़्त तरीन मुखालिफ़ था। चुनांचे नईम बिन हम्माद फरमाते हैं

كان أبو بكر بن عياش يبزق في وجوه أصحاب الحديث (ميزان الاعتدال ص ٥٠٢ ج ٤)

यानी अबू बकर बिन अय्याश मुहद्देसीने किराम के चेहरों पर थूका करता था"। (मीजानुल एतदाल स० ५०२, जिल्द ४)

नीज़ मुहम्मद बिन नुमैर ने उसे जईफ़ रावी कहा है। (मीजानुल-एतदाल, स० ५०१, जिल्द ४)

अबू नईम फरमाते हैं :

لم يكن في شيوخنا أكثر غلطا منه (ميزان ص ٥٠٠ ج ٤)

लिहाजा यह असर काबिले कुबूल और अदमे रफ़ा यदैन की दलील नहीं हो सकता (तर्जमा) हमारे शुयूख में से कोई इस से बढ़ कर गलती नहीं किया करते थे।

मुसन्निफ़ की पचीसवीं दलील का दूसरा जवाब!

चूंकि अबू बकर बिन अय्याश कूफे का रहने वाला था अगर यह कूफे से बाहर जाता तो कभी भी यह दावा न करता। चुनांचे इमाम बैहकी रह०, इमाम बुखारी रह० के हवाला से नकल करते हैं कि

रफ़ा यदैन दस से मरवी है अह्ले मक्का, अह्ले हिजाज़, अह्ले इराक, अह्ले शाम, अह्ले बसरा और यमन वालों से मन्कूल है कि वह रफ़ा यदैन किया करते थे। उन में सईद बिन जुबैर, अता बिन अबी रिबाह, मुजाहिद, कासिम बिन मुहम्मद, सालिम बिन अब्दुल्लाह बिन उमर बिन खत्ताब, उमर बिन अब्दुल अजीज, नोमान बिन अबी अय्याश, हसन, इब्ने सीरीन, ताऊस, मक्हूल, अब्दुल्लाह बिन दीनार, नाफे, उबैदुल्लाह बिन उमर, हसन बिन मुस्लिम, कैस बिन साअद और उनके अलावा दीगर लोग, (नीज) अबू किलाबा, अबू जुबैर, मालिक बिन अनस, औज़ाई, लैस बिन साअद इब्ने उयैना, शाफई रह०, यहया बिन सईद कत्तान, अब्दुर्रहमान बिन महदी अब्दुल्लाह बिन मुबारक, यहया बिन यहया, अहमद बिन हंबल, इसहाक बिन इब्राहीम हन्ज़ली और उनके अलावा दीगर शहरों के लोग। (सुनने कुबरा, बैहकी, स० ७५, जिल्द २)

अल-गरज मुसन्निफ़ का यह दावा बातिल हुआ कि सहाबा रज़ि०, ताबईन रह० और दीगर अइम्मा मे से कोई भी रफ़ा यदैन का काइल नही।

मुसन्निफ़ की छब्बीसवीं दलील और उसका जवाब

عن براء بن عازب أن رسول الله صلى الله عليه وسلم كان يرفع يديه إذا افتتح الصلاة ثم لا يرفعهما حتى ينصرف (المدونة الكبرى ص ٧١ ج ١، ابن أبي شيبة ص ٢٣٦ ج ١، ابو داؤد ص ١٠٩ ج ١، مسند حميدي رفع يدين ص ١٣)

तर्जमा : "हजरत बरा बिन आज़िब रज़ि० रिवायत करते है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सिर्फ़ पहली तक्बीर के वक़्त हाथ उठाते थे। फिर नमाज से फारिग होने तक किसी जगह रफ़ा यदैन नहीं करते थे।

जवाब

इमाम अबू दाऊद इस हदीस को नकल करने के बाद फरमाते है :

"**हाजल-हदीसु लैसा बेसहीहिन**। यानी यह हदीस सही नहीं है। (अबू दाऊद स० ११०, जिल्द १) (अबू दाऊद मतबा एच. एम. सईद कम्पनी कराची)

मुसन्निफ़ की सत्ताईसवीं दलील और उसका जवाब

عن براء بن عازب قال كان النبي صلى الله عليه وسلم إذا كبر لافتتاح الصلاة رفع يديه حتى يكون إبهاماه قريبا من شحمتي أذنيه ثم لا يعود (طحاوي ص ١٣٢ ج ١، ابو داؤد ص ١٠٩ ج ١، دارقطني ص ١١١ ج ١، عبد الرزاق)

तर्जमा : "हजरत बरा बिन आजिब रजि० से रिवायत है कि रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज शुरू करने के लिए पहली तक्बीर कहते तो अपने कानों की लव तक हाथ उठाते, फिर सारी नमाज में दोबारा हाथ नही उठाते थे"। (मसअला तहकीक रफ़ा यदैन स० १४)

जवाब

यह रिवायत काबिले इस्तिदलाल नहीं है। क्योकि इस रिवायत के नकल करने वाले ही उसको नाकाबिले इस्तिदलाल कह रहे है और '**ला यऊदु**' के लफ्ज को सही नही मानते। चुनाचे इमाम अबू दाऊद फरमाते है :

"روى هذا الحديث هشيم وخالد وابن إدريس عن يزيد لم يذكروا ثم لا يعود" (ابو داؤد ص ١١٦ ج ١)

तर्जमा : " यानी इस हदीस को हैसम, खालिद और इब्ने इदरीस, यजीद से नकल करते है लेकिन उनकी रिवायात में '**ला यऊदु**' का लफ्ज नही।

इमाम हुमैदी फरमाते है :

إنما روى هذا يزيد ويزيد يزيد (تلخيص الحبير)

तर्जमा : "यानी यजीद के सिवा **ला यऊदु** के लफ्ज को किसी रावी ने जिक्र नहीं किया और वह ज्यादती कर जाया करता था"। उसमान दारमी, इमाम अहमद बिन हंबल रह० से नकल करते है :

ला यसिह्हु (तल्खीस स० २२१, जिल्द १) यानी '**ला यऊदु**' का लफ्ज सही नहीं बल्कि बिल्कुल गलत है। यहया बिन मुहम्मद बिन यहया कहते है :

سمعت أحمد بن حنبل يقول هذا حديث واه، قد كان يزيد يحدث به برهة من دهره لا يقول فيه ثم لا يعود، فلما لقنوه تلقن، فكان يذكره

तर्जमा : "मैंने अहमद बिन हंबल को फरमाते हुए सुना है कि: "यह हदीस कमजोर है, यजीद कुछ मुद्दत तक उस को '**ला यऊदु**' के लफ्ज के बेग़ैर सुनाता रहा, (लेकिन जब यजीद बाद में कूफा आया) तो लोगों के कहने कहाने से '**ला यऊदु**' कहना शुरू कर दिया"। (तल्खीस स० २२१ जिल्द १)

अली बिन आसिम फरमाते हैं कि

قدمت الكوفة فلقيت يزيد بن أبي زياد فحدثني به وليس فيه "ثم لا يعود" قال لا أحفظه (تلخيص ص ٢٢٢ ج ١)

तर्जमा : "यह रिवायत मैंने इब्ने अबी लैला से सुनी जिस में "**सुम्मा ला यऊदु**" न था। बाद में कूफा गया तो मालूम हुआ कि यजीद अभी जिन्दा हैं, उस से जा कर रिवायत की तो उन्होंने "**ला यऊदु**" न कहा। मैंने कहा कि मुहम्मद बिन अबी लैला ने आप से यह रिवायत की है, वह उस में '**ला यऊदु**' कहते हैं। तो फरमाने लगे, मुझे याद नहीं। फिर मैंने इसी बात को दुहराया, फरमाया मुझे याद नहीं। यानी हाफ़िज़ा इतना कमजोर हो गया था कि कुछ याद नहीं रहता।

इमाम बज्जार फरमाते हैं कि :

"**ला यसिह्हु क़ौलुहू फ़िल-हदीसे सुम्मा ला यऊदु**"। (तल्खीस स० २२१ जिल्द १)

यानी "**सुम्मा ला यऊदु**" का लफ्ज हदीस में सही नहीं है।

मुसन्निफ़ की अट्ठाईसवीं दलील और उसका जवाब

काजी अब्दुर्रहमान बिन अबी लैला जो इस हदीस के मरकजी रावी है वह रफा यदैन नही करते थे। (इब्ने अबी शैबा स० २३०, जिल्द १, मसअला तहकीक रफा यदैन स० १४)

जवाब

काजी अब्दुर्रहमान बिन अबी लैला के मुतअल्लिक छब्बीसवीं हदीस के जैल मे गुजर चुका है कि उसकी हदीस काबिले हुज्जत नही। जब उसकी रिवायत करदह हदीस की ही कोई हैसियत नही तो उसके ज़ाती अमल की वजह से सही अहादीस पर क्या असर पड सकता है।

मुसन्निफ़ की उन्तीसवीं ३०, ३१, ३२, ३३ वीं दलील और उसका जवाब

२६. हजरत अम्र बिन मुर्रह ने मस्जिदे आजम कूफा में हज़रत वाइल बिन हुज्र रजि० की रफा यदैन वाली रिवायत बयान की तो हजरत इमाम नख़ई (रहमतुल्लाहि अलैहि) ने फरमाया :

"ما أدري لعله لم ير النبي صلى الله عليه وسلم يصلي إلا ذلك اليوم فحفظ هذا منه ولم يحفظه ابن مسعود وأصحابه ما سمعته من أحد منهم إنما كانوا يرفعون أيديهم في بدء الصلاة حين يكبرون" (موطا امام محمد ص ٩٢) تحقيق مسئله رفع يدين ص ٥

तर्जमा : "मैं नही जानता कि शायद हजरत वाइल बिन हुज्र रजि० ने सिर्फ एक उसी दिन हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को नमाज पढते देखा और उस ने रफा यदैन को याद रखा, और हजरत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रजि० और दूसरे सहाबा रजि० जो हमेशा नबी पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ रहने वाले थे उन में से किसी एक ने भी इस मसअला को याद न रखा। मैंने उन मे से किसी एक शख्स से भी रफा यदैन का मसअला सुना तक नही, वह तो सिर्फ पहली ही तक्बीर के वक्त हाथ उठाते थे"।

३०. दूसरी रिवायत में है :

"تذكرت ذلك لإبراهيم فغضب وقال رآه هو ولم يره ابن مسعود ولا أصحابه" (طحاوى ص ١٣٢ ج ١) تحقيق مسئله رفع يدين ص ١٥

तर्जमा : "यानी जब मैंने रफ़ा यदैन की रिवायत बयान की तो अल्लामा इब्राहीम नख़ई सख़्त ग़जबनाक हुए और फरमाया कि अजीब बात है कि हज़रत वाइल रजि० जो सिर्फ एक आध दिन के लिए हुज़ूर के पास आए उन्होंने तो रफा यदैन देखी और हजरत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रजि० और दूसरे सहाबा किराम रज़ि० (जो सारी उम्र हुजूर के साथ रहे उन्होंने आपको रफा यदैन करते नही देखा)

३१. हजरत मुगीरह रज़ि० फरमाते हैं कि मैंने जब हजरत वाइल बिन हुज्र रजि० की रफ़ा यदैन वाली रिवायत हजरत इब्राहीम नख़ई के सामने बयान फरमाई तो आपने फरमाया :

"قال وائل رآه مرة يفعل ذلك فقد رآه عبد الله خمسين مرة لا يفعل ذلك" (طحاوى ص ١٣٢ ج ١) مسئله تحقيق رفع يدين ص ١٦

तर्जमा : "हज़रत वाइल ने एक दफा यह करते देखा तो हजरत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रजि० ने पचास मरतबा देखा कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रफ़ा यदैन नहीं करते थे।

३२ और एक रिवायत में यह है कि :

حماد عن إبراهيم أنه قال في وائل بن حجر أعرابي لم يصل مع النبي صلى الله عليه وسلم صلاة قبلها قط أهو أعلم من عبد الله وأصحابه حفظ ولم يحفظوا يعني رفع اليدين

تحقيق مسئله رفع يدين ص ١٦ (مسند امام اعظم ص ٥١)

तर्जमा : इमाम हम्माद फरमाते हैं कि इमाम इब्राहीम नख़ई फरमाते हैं कि हजरत वाइल बिन हुज्र रज़ि० एक दिहाती बुजुर्ग थे। उन्होंने एक आधा दफा के अलावा कभी आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ नमाज नहीं पढी। क्या वह (हाज़िर बाश) सहाबा रजि० हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० वग़ैरह (खुलफाए राशिदीन रज़ि०) से ज्यादा बड़े आलिम थे कि उन्होंने तो रफ़ा यदैन को याद रखा और उनके अकाबिर ने याद नहीं रखा।

३३. और एक रिवायत मे यह है कि :

"فقال هو أعرابي لا يعرف الإسلام لم يصل مع النبي صلى الله عليه
... إلا صلاة واحدة وقد حدثني من لا أحصي عن عبد

عن ابن مسعود انه رفع يديه في بدء الصلاة فقط وحكاه عن النبي صلى الله عليه وسلم وعبد الله عالم بشرائع الاسلام وحدوده متفقد لاحوال النبي صلى الله عليه وسلم ملازم له في اقامته واسفاره وقد صلى مع النبي صلى الله عليه وسلم ما لا يحصى. (مسند امام اعظم ص ١١٩-١٢٠)

तर्जमा : "फरमाया, आप एक दिहाती थे जो इस्लाम से पूरे वाकिफ न थे। आपने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ सिर्फ एक ही नमाज़ पढ़ी। मुझे हजरत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रजि० से बेशुमार लोगों ने बयान किया है कि आप रज़ि० ने सिर्फ नमाज़ के इब्तिदा में ही रफा यदैन की थी तो खुद हजरत नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का भी यही अमल बयान किया था। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० शरीअते इस्लामिया और हुदूदे इस्लाम के बहुत बड़े आलिम थे। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हर तरह के अहवाल की टोह में लगे रहते थे, सफर होता या हजर, वह आपके साथ ही होते थे और उन्होंने आपके साथ बेशुमार दफा नमाज पढ़ी थी।

जवाब

मौलाना अब्दुल–हई (हन्फी) इस रिवायत पर तबसरा करते हुए लिखते हैं कि उसके मुतअल्लिक बहुत सी बहसें हैं।

१. इमाम बैहकी रह० ने किताबुल मारिफा में इमाम शाफई रह० से नकल किया है कि उन्होंने कहा बेहतर यह है कि हजरत वाइल रजि० की हदीस को कबूल किया जाए क्योंकि जलीलुल कद्र सहाबी हैं। उनकी हदीस को कम दर्जे वाले आदमी (यानी इब्राहीम नख्ई) के क़ौल से किस तरह रद किया जा सकता है।

२. इमाम बुखारी रह० रफा यदैन के रिसाला में फरमाते हैं कि इब्राहीम नख्ई का यह सिर्फ अपना ख्याल है, जिस की बिना पर हजरत वाइल रजि० की हदीस रद नहीं हो सकती क्योंकि वाइल रजि० ने ख़बर दी है कि उन्होंने नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को रफा यदैन करते हुए देखा। इसी तरह दीगर सहाबा रजि० ने भी देखा। जैसा कि हजरत जाइदा फरमाते हैं

فان وائلا اخبر انه رأى النبي صلى الله عليه وسلم يرفع يديه في الركوع وفي الرفع منه قال ثم اتيتهم بعد ذلك فرأيت الناس في زمان برد عليهم جل الثياب تتحرك ايديهم تحت الثياب.

तर्जमा : "यानी हज़रत वाइल बिन हुज्र रजि० फरमाते हैं कि "मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को रुकूअ जाते और रुकूअ से सर उठाते वक्त रफा यदैन करते देखा। फिर मैं सर्दियों के मौसम में आया तो लोगों को भारी कपड़ों के नीचे से रफा यदैन करते हुए देखा"।

३. इमाम ज़ैलई, फकीह अबू बकर बिन इसहाक से नकल करते हैं कि जो इल्लत, इब्राहीम नख्ई ने जिक्र की है, वह हजरत वाइल रजि० की हदीस के बराबर नहीं। क्योंकि रफा यदैन नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, खुलफाए राशिदीन रजि० और ताबईन रजि० से साबित है और हज़रत इब्ने मसऊद रजि० का रफा यदैन भूल जाना कोई अजीब बात नहीं जैसे वह **मुअव्वजतैन** के मुतअल्लिक भूल गये। इसी तरह रुकूअ में तत्बीक, अरफा में नमाज जमा करने की कैफियत, इमाम के पीछे दो आदमियों के खड़ा होने का तरीका, जब यह सब चीजें उनको भूल सकती हैं तो रफा यदैन क्यों नहीं भूल सकते।

४. रफा यदैन के सिर्फ हजरत वाइल रजि० ही रावी नहीं हैं बल्कि दीगर सहाबा रजि० भी हैं। (अत्तालीकुल मुमज्जद अला मुअत्ता इमाम मुहम्मद रह० स० ६३)

अल-गरज़ मज्कूरा वजूहात की बिना पर इब्राहीम नख्ई के अक्वाल बातिल व मरदूद हैं।

मुसन्निफ़ की ३४ वीं दलील और उसका जवाब

عن ابن مسعود انه كان يرفع يديه اذا افتتح الصلوة.

(موطا امام محمد ص ٥٥، تحقيق مسئله رفع يدين ص ٩٨)

(मुअत्ता इमाम मुहम्मद स० ५५, तहकीक मस्अला, रफा यदैन स० ९८)

जवाब

इसकी सनद इस तरह है :

قال محمد أخبرنا الثوري حدثنا حصين عن إبراهيم عن ابن مسعود

इस सनद में हुसैन बिन अब्दुर्रहमान रावी है जिसके मुतअल्लिक हाफिज़ इब्ने हजर रह० फरमाते हैं :

"तग़य्यरा हिफ्ज़ुहू फ़िल-आख़िरे" (तक्रीब स० १९२) यानी आखिरी उम्र में उसका हाफिज़ा खराब हो गया था"। लिहाज़ा यह रिवायत काबिले एहतिजाज नहीं है।

मुसन्निफ़ की ३५वीं दलील और उसका जवाब

حماد عن إبراهيم النخعي قال لا ترفع يديك في شيء من الصلاة بعد التكبيرة الأولى (موطأ امام محمد ص ٩٢ و تحقيق مسئلة رفع يدين ص ...)

तर्जमा : हम्माद से रिवायत है कि हज़रत इमाम इब्राहीम नख़ई फरमाते थे, नमाज की पहली तक्बीर के बाद किसी जगह भी रफ़ा यदैन न कर।

जवाब

मुअत्ता इमाम मुहम्मद स० ९२, में इसकी सनद इस तरह है :

قال محمد أخبرنا محمد بن أبان بن صالح عن حماد عن إبراهيم النخعي

"इस सनद में एक रावी मुहम्मद बिन अबान हैं। उनके मुतअल्लिक इमाम जहबी रह० फरमाते हैं :

इमाम अबू दाऊद और इब्ने मुईन ने उसे ज़ईफ़ कहा है। इमाम बुखारी रह० फरमाते हैं **"लैसा बिल-क़वीये,"** यानी यह कवी और सिकह रावी नहीं। बाज ने कहा है कि वह फिर्क़ा मुर्जिया से तअल्लुक रखता था।

लिसानुल मीजान में हाफिज़ इब्ने हजर रह० फरमाते हैं कि :

"इमाम नसाई रह० ने फरमाया कि मुहम्मद बिन अबान कूफ़ी सिकह नहीं है"।

इब्ने हिब्बान रह० फरमाते हैं ज़ईफ़ है।

इमाम इब्ने अबी हातिम फरमाते हैं, मैंने अपने आप से उनके मुतअल्लिक पूछा तो उन्होंने फरमाया :

"कवी नहीं है, उसकी हदीस काबिले एहतिजाज नहीं"।

इमाम बुखारी रह० फरमाते हैं :

"लोगों ने उसके हिफ्ज के मुतअल्लिक तन्कीद की है और यह रावी काबिले एतमाद नहीं"। (अत्तालीकुल मुमज्जद अला मुअत्ता इमाम मुहम्मद स० ७४, हाशिया नम्बर ५)

मुसन्निफ़ की ३६वीं दलील और उसका जवाब

عن عباد بن الزبير أن رسول الله صلى الله عليه وسلم كان إذا افتتح الصلاة رفع يديه في أول الصلاة ثم لم يرفعهما في شيء حتى يفرغ - رواه البيهقي (زيلعي ص ٤٠٤ ج ١) مسئله تحقيق رفع يدين ص ١٠

तर्जमा : " हजरत अब्बाद बिन जुबैर रह० रिवायत करते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नमाज़ शुरू करते वक़्त हाथ उठाते थे। फिर नमाज से फारिग़ होने तक किसी जगह रफ़ा यदैन नहीं करते थे।

जवाब

अल्लामा ज़ैलई रह० हन्फी फरमाते हैं :

क़ाल शैखु फ़िल-इमामे व अब्बादुन हाज़ा ताबेईयुन फ़हुवा मुरसलुन।

तर्जमा : "यानी शैख़ ने अपनी किताब "इमाम" में फरमाया कि अब्बाद ताबई (चूंकि यह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बयान करता) है। इसलिए यह हदीस मुरसल है"। (नसबुर्रायह स० ४०४, जिल्द १)

हाफिज़ इब्ने हजर रह० देरायह में फरमाते हैं :

وعباد كأنه ابن عبد الله بن الزبير نسب إلى جده وهذا مرسل وفي إسناده أيضا من ينظر فيه - (ص ١٥٢)

तर्जमा : यानी "अब्बाद गोया अब्दुल्लाह बिन जुबैर रजि० का बेटा है और दाद की तरफ निस्बत है और यह हदीस मुरसल है। नीज इस सनद में दीगर रावी भी काबिले गौर है।

अल-ग़रज़ यह हदीस मुरसल होने की वजह से काबिले हुज्जत नहीं क्योंकि **हुक्मुल-मुरसले अत्तवक़्क़ुफ़ इन्दा जुम्हूरिल-उलमाए** (मुकद्दमा मिश्कात लेअब्दिल हक्क स० ४) यानी "जुमहूर उलमा के नज्दीक मुरसल हदीस का हुक्म यह है कि तवक्कुफ़ किया जाए"।

मुसन्निफ़ की ३७वीं दलील और उसका जवाब!

عن أبي جعفر القاري وعن نعيم المجمر عن أبي هريرة أنه كان يرفع يديه إذا افتتح الصلاة ويكبر في كل خفض ورفع ويقول أنا أشبهكم بصلاة رسول الله صلى الله عليه وسلم أخرجه ابن عبد البر في التمهيد (بحواله نيل الفرقدين ص ١٢٢)

तर्जुमा : अबू जाफ़र कारी और नुअइमुल मुजमिर रिवायत करते हैं कि हजरत अबू हुरैरह रजि० पहली तक्बीर के वक्त हाथ उठाते और हर रफ़ा व खफ़्ज में सिर्फ़ अल्लाहु अक्बर कहते थे और फ़रमाते थे, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जैसी नमाज पढ़ता हूँ। (तहकीक मरअला रफ़ा यदैन स० १८)

जवाब

१. यह असर नाकाबिले हुज्जत है क्योंकि हजरत अबू हुरैरह रजि० की सही रिवायत से रफ़ा यदैन साबित होती है चुनांचे मुलाहिज़ा फ़रमाए :

حدثنا محمد بن الصلت ثنا ابو شهاب عن ابن عبد ربه عن محمد بن اسحق عن عبد الرحمن الاعرج عن ابي هريرة رضي الله عنه قال انه كان اذا كبر رفع يديه واذا ركع واذا رفع رأسه من الركوع

(جزء رفع يدين مترجم ص ٢٠)

तर्जुमा : "हमें मुहम्मद बिन सलत ने हदीस बयान फ़रमाई। उन्हें अबू शिहाब इब्ने अब्दे रब्बा ने मुहम्मद बिन इस्हाक से, उस ने कहा अब्दुर्रहमान अरज से रिवायत है कि हजरत अबू हुरैरह रजि० जब तक्बीर कहते रफ़ा यदैन करते और जब रुकूअ करते और रुकूअ से सर उठाते तब भी रफ़ा यदैन करते"।

२. इमाम बुखारी रह० फ़रमाते हैं कि सतरह सहाबा रजि० से रिवायत है कि वे कि वह रुकूअ को जाते रुकूअ से सर उठाते वक्त रफ़ा यदैन किया करते थे वह यह है :

अबू क़तादा अन्सारी रजि०, अबू उसैद साइदी रजि०, मुहम्मद बिन मस्लमा बदरी रजि०, सहल बिन सअद साइदी रजि०, अब्दुल्लाह बिन उमर रजि०, अब्दुल्लाह बिन अब्बास रजि०, अनस बिन मालिक रजि० खादिमे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, अबू हुरैरह रजि० दौसी, अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रजि०, अब्दुल्लाह बिन जुबैर बिन अव्वाम अल करशी, वाइल बिन हुज्र अल हज़रमी रजि०, मालिक बिन हुवैरिस रजि०, अबू मूसा अल अशअरी रजि०, अबू हुमैद अस्साइदी अल अन्सारी रजि०, उमर बिन खत्ताब रजि०, अली बिन अबी तालिब रजि०, उम्मे दरदा रजि० (तुहफ़ा रफ़उल यदैन मुतर्जम स० १३)

इमाम बुखारी रह० ने इस सतरह असमाए सहाबा रजि० में हजरत अबू हुरैरह रजि० को भी रफ़ा यदैन करने के काइलीन व फ़ाइलीन में शुमार किया है।

३. हजरत अबू हुरैरह रजि. की रिवायत :

حدثنا سليمان بن حرب ثنا يزيد بن ابراهيم عن قيس بن سعد عن عطاء قال صليت مع ابي هريرة رضي الله تعالى عنه فكان يرفع يديه اذا كبر واذا رفع (جزء رفع يدين ص ٢٠)

तर्जुमा : "हमें सुलेमान बिन हर्ब ने हदीस बयान की, उन्हें यजीद बिन इब्राहीम ने कैस बिन सईद से, उन्हें अता ने बयान किया कि मैंने हजरत अबू हुरैरह रजि० के पीछे नमाज पढ़ी, पस वह रफ़ा यदैन करते जब तक्बीर कहते और जब (रुकूअ से सर) उठाते।

४. इस से सिर्फ़ यह मालूम होता है कि उठते बैठते वक्त अल्फ़ाज अल्लाहु अक्बर ही कहते थे कोई दूसरे अल्फ़ाज नहीं कहते थे और उसमें रफ़ा यदैन की तरदीद नहीं है, लिहाजा काबिले एहतिजाज नहीं हुई।

मुसन्निफ़ की ३८वीं दलील और उसका जवाब

عن علي بن الحسين قال كان النبي صلى الله عليه وسلم يكبر في الصلوة كلما خفض ورفع فلم تزل تلك صلوته حتى لقي الله

(موطا امام مالك ص ٧٦ ، مسئله تحقيق رفع يدين ص ١٠)

तर्जुमा : इमाम जैनुल आबेदीन रह० से रिवायत है कि नबी अलैहिस्सलाम नमाज में रुकूअ जाते और उठते वक्त अल्लाहु अक्बर कहते थे (रफ़ा यदैन नहीं करते थे) और आप ऐसी ही नमाज पढ़ते रहे यहाँ तक कि आप खुदा तआला से जा मिले।

जवाब

(मुरसल वह हदीस होती है जिस में सहाबी रजि० का वास्ता छूटा हुआ हो और ताबई रह० सहाबी रजि० के नाम के बगैर हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नाम बयान करें)

१. चूंकि यह मुरसल हदीस है और मुरसल के मुतअल्लिक मुहद्दिसीन का फ़ैसला यह है कि तवक्कुफ़ किया जाए क्योंकि जैनुल आबेदीन ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को नहीं देखा जैसा कि पहले दलील के जवाब में गुजर चुका है।

२. इमाम जैनुल आबेदीन अली बिन हुसैन बिन अली मुअल्लिम रसूले खुदा

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अहले बैत में से है वह भी तक्बीरे तहरीमा के वक्त और रुकूअ जाने और रुकूअ से सर उठाने के वक्त रफ़ा यदैन किया करते थे।

मुसन्निफ़ की पेशकरदा रिवायत मे अदमे रफ़ा यदैन का जिक्र नहीं है। इसीलिए मुसन्निफ ने तर्जमा में "रफ़ा यदैन नहीं करते थे" को कौसैन में जिक्र किया है।

३. नीज इस मे शुरू नमाज के वक्त भी रफ़ा यदैन का जिक्र नही जिसके मुसन्निफ भी काइल हैं।

अल गरज हजरत जैनुल आबेदीन से सही सनद से यही साबित है कि वह रफ़ा यदैन के काइल थे न कि मुखालिफ।

४. इमाम जैनुल आबेदीन रह० तो यह फरमा रहे हैं कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तकबीर तहरीमा, रुकूअ जाते वक्त और रुकूअ से उठते वक्त सिर्फ अल्लाहु अकबर ही कहते थे न कि दूसरे अल्फाज़ जिस तरह कि अहनाफ कहते है कि अल्लाहु अकबर की बजाए **अल्लाहु आज़मु, अल्लाहु अजल्लु, अल्लाहु अक्बर, अर्रहमानु अकबर** वगैरह कोई भी कलिमा कह सकता है जिस में अल्लाह तआला की बडाई हो हत्ता कि फार्सी जबान में "खुदा बुजुर्ग तर अस्त" कहना भी दुरुस्त है तो इमाम जैनुल आबेदीन रह० उसी की तरदीद फरमा रहे हैं और फरमाते हैं कि नबी (स०) तो सिर्फ़ अल्लाहु अकबर ही कहते थे न कि दूसरे अल्फाज।

५. इस हदीस में जिस तरह रफ़ा यदैन का जिक्र नही है न इफ्तिताहे नमाज मे न दूसरे मकाम पर। इसी तरह इसमें यह भी जिक्र नहीं कि क्याम और रुकूअ में क्या पढना है, कौमा में क्या पढना है, सज्दो में, सज्दों से उठ कर और तशह्हुद में क्या पढना है, सलाम का भी जिक्र नही। अगर इस हदीस पर मुकम्मल तौर पर हू बहू इसी तरह ही नमाज पढी जाए तो हमारी तो दर किनार आपकी भी नमाज नहीं होगी। नीज इस हदीस पर अमल से रुकूअ से उठते वक्त भी अल्लाहु अकबर ही कहना पड़ेगा जिसके न आप काइल व फाइल है और न ही कोई और।

६. अहनाफ जब वित्र नमाज में दुआए कुनूत पढने लगते हैं तो रफ़ा यदैन करते है। अगर सिर्फ इफ्तिताहे नमाज़ में ही रफा यदैन करना मशरू और साबित है तो फिर नमाजे वित्र मे क्यो रफा यदैन करते है क्योंकि उसका का तो कोई भी सुबूत नहीं।

७. ईदैन की जवाइद तक्बीरों में अहनाफ भी रफा यदैन के काइल है हालांकि वह तक्बीर तहरीमा के बाद होती है।

८. अहादीस के मुताला से साबित होता है कि कुछ लोग लफ्ज अल्लाहु अकबर कहना छोड गये थे।

❖❖❖

ग़ैर मुक़ल्लेदीन के मस्लक और अमल का नम्बरवार जाइज़ा और उसका जवाब

ग़ैर मुकल्लेदीन के मस्लक का पहला हिस्सा यह है कि नमाज में आँहजरत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हमेशा पहली और तीसरी रकअत के शुरू में रफ़ा यदैन करते थे। इस बारे में वह चार रिवायात बयान करते हैं :

१. रिवायत इब्ने उमर रजि० बुखारी स० २२, जिल्द १ लेकिन उसकी सनद में उबैदुल्लाह शीआ रावी है और अबू दाऊद ने उस हदीस के मुतअल्लिक फरमाया, **"लैसा बेमरफूइन"** यानी यह रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हदीस ही नहीं। नीज इसी सनद में सज्दा के वक्त भी रफ़ा यदैन का जिक्र है (जुज़ओ बुखारी) और सबसे बढ़ कर यह कि उसमें हमेशगी का कोई लफ्ज़ नहीं। यही वजह है कि इब्ने उमर रज़ि० ख़ुद रफ़ा यदैन नहीं करते थे।

(तहक़ीक मसअला रफ़ा यदैन स० २६)

मुसन्निफ़ के एतराज़ात का ख़ुलासा

(अ) रिवायत इब्ने उमर रज़ि० बहवाला बुखारी में उबैदुल्लाह शीआ है। **(ब)** इमाम अबू दाऊद ने हदीस इब्ने उमर रजि० के मुतअल्लिक फरमाया कि यह हदीसे रसूल ही नही। **(ज)** इस सनद मे सज्दा के वक्त रफ़ा यदैन का जिक्र है। (द) इसमें हमेशगी का कोई जिक्र नहीं **(ह)** इब्ने उमर रजि० रफ़ा यदैन नहीं किया करते थे।

मुसन्निफ़ के एतराज़ात का जवाब

सही बुखारी की हदीस इब्ने उमर रजि० :

जैल में मुसन्निफ़ के एतराजात के जवाब से पहले हदीस इब्ने उमर रज़ि० मुलाहिजा फरमाएं :

• حَدَّثَنَا عَيَّاشٌ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْأَعْلَى قَالَ حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللّٰهِ عَنْ نَافِعٍ أَنَّ ابْنَ عُمَرَ كَانَ إِذَا دَخَلَ فِي الصَّلٰوةِ كَبَّرَ وَرَفَعَ يَدَيْهِ وَإِذَا رَكَعَ رَفَعَ يَدَيْهِ وَإِذَا قَالَ سَمِعَ اللّٰهُ لِمَنْ حَمِدَهُ رَفَعَ يَدَيْهِ وَإِذَا قَامَ مِنَ الرَّكْعَتَيْنِ رَفَعَ يَدَيْهِ وَرَفَعَ ذٰلِكَ ابْنُ عُمَرَ إِلَى نَبِيِّ اللّٰهِ ﷺ

(صحيح بخاري شريف ص١٠٢ ج١ باب رفع اليدين إذا قام من الركعتين)

तर्जमा : "हजरत नाफे फरमाते है कि हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर रजि० जब नमाज में दाखिल होते तो **अल्लाहु अकबर** कहते और रफा यदैन करते और जब रुकूअ् करते फिर भी रफा यदैन करते और जब **समेअल्लाहुलिमन हमेदह** कहते फिर भी रफ़ा यदैन करते और जब दो रकअत पढ कर खडे होते तो भी रफा यदैन करते। और इब्ने उमर रजि० ने बताया कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी ऐसा ही किया करते थे। तो हदीसे रसूल (मरफूअ) हुई, न कि मौकूफ़ वगैरह।

(अ) अब्दुल्लाह शीआ नहीं बल्कि सिक़ह रावी हैं

१. तमाम उलमा–ए फन और मुहद्देसीने किराम, उबैदुल्लाह को सिकह रावी बताते है चुनांचे हाफिज इब्ने हजर "तकरीबुतहजीब" मे उबैदुल्लाह के मुतअल्लिक लिखते है

• عُبَيْدُ اللّٰهِ بْنُ عُمَرَ بْنِ حَفْصِ بْنِ عَاصِمِ بْنِ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ الْعُمَرِيُّ الْمَدَنِيُّ، أَبُوْ عُثْمَانَ، ثِقَةٌ ثَبْتٌ، قَدَّمَهُ أَحْمَدُ بْنُ صَالِحٍ عَلَى مَالِكٍ فِي نَافِعٍ وَقَدَّمَهُ ابْنُ مَعِينٍ فِي الْقَاسِمِ عَنْ عَائِشَةَ عَلَى الزُّهْرِيِّ عَنْ عُرْوَةَ عَنْهَا مِنَ الْخَامِسَةِ." (ص٥٣٢ ج١)

तर्जमा : "उबैदुल्लाह बिन उमर बिन हफ्स बिन आसिम बिन उमर बिन खत्ताब रजि०, उमरी, मदनी, अबू उस्मान, सिकह है। अहमद बिन सालेह ने नाफे की सनद मे उबैदुल्लाह को मालिक रह० पर मुकदम किया है और हजरत आइशा रजि० की हदीस की सनद जो जुहरी, उरवह अन आइशा रजि० है। इमाम यहया बिन मुईन ने इसमें जुहरी पर उबैदुल्लाह को मुकदम किया है, पाँचवे तबका से तअल्लुक रखते हैं।

२. **अल्लामा खजरजी फरमाते हैं** :

"أَحَدُ الْفُقَهَاءِ السَّبْعَةِ وَالْعُلَمَاءِ الْأَثْبَاتِ قَالَ النَّسَائِيُّ ثِقَةٌ ثَبْتٌ وَقَالَ ابْنُ مَعِينٍ، عُبَيْدُ اللّٰهِ عَنِ الْقَاسِمِ عَنْ عَائِشَةَ الذَّهَبُ الْمُشَبَّكُ بِالدُّرِّ وَقَالَ أَحْمَدُ هُوَ أَثْبَتُ مِنْ مَالِكٍ فِي نَافِعٍ (خلاصه ص٢٥١)

तर्जमा : "उबैदुल्लाह, फुक्हाए सबआ और सिकह उलमा में से है। इमाम नसाई रह० फरमाते है सिकह है। इब्ने मुईन फरमाते है कि उबैदुल्लाह अनिल कासिम अन आइशा, यह सनद सोने के मोतियों की लडी है। और इमाम अहमद फरमाते है कि उबैदुल्लाह, मालिक से ज़्यादा अस्बत हैं।

३. **खातिमतुल-हुफ्फाज़** हाफिज इब्ने हजर रह० तहजीबुत्तहजीब में लिखते है

• أَبُوْ عُثْمَانَ أَحَدُ الْفُقَهَاءِ السَّبْعَةِ ...... (ص٣٨)

قَالَ عَمْرُو بْنُ عَلِيٍّ ذَكَرْتُ لِيَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ قَوْلَ ابْنِ مَهْدِيٍّ إِنَّ مَالِكًا أَثْبَتُ فِي نَافِعٍ عَنْ عُبَيْدِ اللّٰهِ فَغَضِبَ وَقَالَ قَالَ أَبُوْ حَاتِمٍ عَنْ أَحْمَدَ عُبَيْدُ اللّٰهِ أَثْبَتُهُمْ وَأَحْفَظُهُمْ وَأَكْثَرُهُمْ رِوَايَةً. وَقَالَ عُثْمَانُ الدَّارِمِيُّ قُلْتُ لِابْنِ مَعِينٍ، مَالِكٌ أَحَبُّ إِلَيْكَ عَنْ نَافِعٍ أَوْ عُبَيْدُ اللّٰهِ؟ قَالَ، كِلَاهُمَا، وَلَمْ يُفَضِّلْ وَقَالَ جَعْفَرُ بْنُ الطَّيَالِسِيِّ سَمِعْتُ يَحْيَى بْنَ مَعِينٍ يَقُوْلُ عُبَيْدُ اللّٰهِ عَنِ الْقَاسِمِ عَنْ عَائِشَةَ، الذَّهَبُ الْمُشَبَّكُ بِالدُّرِّ، فَقُلْتُ هُوَ أَحَبُّ إِلَيْكَ أَوِ الزُّهْرِيُّ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ؟ قَالَ هُوَ إِلَيَّ أَحَبُّ. وَقَالَ أَحْمَدُ بْنُ صَالِحٍ " عُبَيْدُ اللّٰهِ أَحَبُّ إِلَيَّ مِنْ مَالِكٍ فِي حَدِيثِ نَافِعٍ وَقَالَ عَبْدُ اللّٰهِ بْنُ أَحْمَدَ عَنِ ابْنِ مَعِينٍ عُبَيْدُ اللّٰهِ بْنُ عُمَرَ مِنَ الثِّقَاتِ" وَقَالَ النَّسَائِيُّ ثِقَةٌ، ثَبْتٌ وَقَالَ أَبُوْ زُرْعَةَ وَأَبُوْ حَاتِمٍ ثِقَةٌ."

وَقَالَ ابْنُ مَنْجُوْيَه، كَانَ مِنْ سَادَاتِ أَهْلِ الْمَدِينَةِ وَأَشْرَافِ قُرَيْشٍ فَضْلًا وَعِلْمًا وَعِبَادَةً وَشَرَفًا وَحِفْظًا وَإِتْقَانًا ... وَكَانَ ثِقَةً كَثِيرَ الْحَدِيثِ، حُجَّةً " وَقَالَ أَحْمَدُ بْنُ صَالِحٍ " ثِقَةٌ، ثَبْتٌ، مَأْمُوْنٌ لَيْسَ أَحَدٌ أَثْبَتَ فِي حَدِيثِ نَافِعٍ مِنْهُ " ... وَقَالَ ابْنُ مُبلي لَمْ يَكُنْ ... مِنِ ابْنِ عُمَرَ " وَقَالَ ثِقَةٌ، حَافِظٌ، مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ (ص٣٩، ٤٠ جلد ٧)

तर्जमा : "अबू उस्मान (यानी उबैदुल्लाह) फुक़्हा–ए–सबआ मे से है। अम्र बिन अली फरमाते है

"मै ने यहया बिन सईद के पास इब्ने महदी का यह कौल जिक्र किया कि इमाम मालिक, नाफे बिन अब्दुल्लाह वाली सनद मे उबैदुल्लाह से ज्यादा असबत है तो आप बहुत गजबनाक हुए (क्योंकि आप उबैदुल्लाह को इमाम मालिक से ज्यादा अस्बत जानते थे)

इमाम अबू हातिम, इमाम अहमद रह० से नकल फरमाते है कि

उबैदुल्लाह ज्यादा कसरत से अहादीस बयान करने वाले, ज्यादा याद रखने वाले और अस्बत हैं। उस्मान दारमी कहते हैं :

मैंने इब्ने मुईन से पूछा कि नाफे से रिवायत करने वाले दो रावी मालिक और उबैदुल्लाह मे से कौन आपका पसन्दीदा है? तो आपने फरमाया दोनों बराबर है और उन्होंने किसी को दूसरे पर फौकियत न दी"।

ज'फर त्यालसी कहते हैं :

"मैंने यहया बिन मुईन से सुना कि उबैदुल्लाह की सनद सोने के मोतियो की लडी है, मैंने पूछा, किया हजरत आइशा रज़ि० से मरवी हदीस की सनद में जुहरी आप का पसन्दीदा है या उबैदुल्लाह तो आपने फरमाया उबैदुल्लाह।

अहमद बिन सालेह फरमाते है

"नाफे वाली सनद में इमाम मालिक रह० से उबैदुल्लाह ज़्यादा पसन्दीदा हैं"।

अब्दुल्लाह बिन अहमद, इब्ने मुईन से बयान फरमाते है कि:

"उबैदुल्लाह बिन उमर सिकह रावियों में से हैं और इमाम नसाई रह० फरमाते हैं कि पक्के और सिकह हैं।

अबू जुरआ और हातिम फरमाते हैं, "सिकह हैं"।

इब्ने सजुवैह फरमाते हैं

"उबैदुल्लाह अहले मदीना के सरदारों में से हैं। फजीलत, इल्म इबादत, बुजुर्गी और हिफ्ज व इत्कान मे, कुरैश के शुरफा मे से थे। कसीरुल हदीस, सिकह और काबिले हुज्जत थे। अहमद बिन सालेह फरमाते हैं सिकह और मामून है नाफे की हदीस के ज्यादा याद रखने वाले।

इब्ने मुईन फरमाते हैं, इब्ने उमर रजि० से आपका सिमाअ् साबित नहीं।

आपके हाफिज और सिकह होने पर सबका इत्तिफाक है।

अल-ग़रज़ मज्कूरा बाला हवालाजात से यह बात रोज़े रोशन की तरह अयाँ हो जाती है कि उबैदुल्लाह सिकह रावी है। उनकी रिवायत करदह हदीस क़ाबिले हुज्जत है बल्कि इमाम मालिक रह० से भी ज्यादा अस्बत है। लिहाज़ा मुसन्निफ का उन पर शीआ होने का इल्ज़ाम बेबुनियाद और महज़ इफ़्तिरा है।

नीज़ यह साबित हुआ कि सही बुख़ारी की इब्ने उमर रज़ि० वाली हदीस जिस को मुसन्निफ ने उबैदुल्लाह की वजह से रद्द करने की नाकाम कोशिश की है वह बिल्कुल सही और इस्बाते रफा यदैन की बेहतरीन दलील है।

(ब) इब्ने उमर रज़ि० की रिवायत, हदीसे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम है

मुसन्निफ ने हदीस इब्ने उमर रज़ि० पर तअन के ज़िम्न में यह इमाम अबू दाऊद से नक़ल किया है कि यह हदीसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नहीं। लेकिन इमाम अबू दाऊद के इस कौल की सही बुख़ारी की हदीस पर जद नहीं पडती।

१. हाफिज इब्ने हजर रह० फरमाते हैं :

"मु'तमिर और अब्दुलवहाब ने उबैदुल्लाह अन नाफ़े से यह रिवायत माकूफ बयान की है। जैसे कि इमाम दार कुतनी ने कहा। लेकिन इन दोनों (यानी मु'तमिर और अब्दुलवहाब) ने उबैदुल्लाह अनिज़्ज़ुहरी अन सालेमिन अन इब्ने उमरा से यह रिवायत मरफू बयान की है जैसे इमाम बुखारी की किताब जुज़ओ रफाइल यदैन में है"। (फतहुल बारी, स० २२२, जिल्द २)

२. यही हदीस इब्ने उमर रजि० से जुज रफा यदैन में मरफू नकल की गई है चुनांचे मुलाहिजा हो :

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ أَبِي بَكْرٍ الْمُقَدَّمِيُّ ثَنَا مُعْتَمِرٌ عَنْ عُبَيْدِ اللّٰهِ
ابْنِ عُمَرَ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ سَالِمِ بْنِ عَبْدِ اللّٰهِ عَنْ أَبِيهِ عَنِ النَّبِيِّ
صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّهُ كَانَ يَرْفَعُ يَدَيْهِ إِذَا دَخَلَ فِي الصَّلَاةِ
وَإِذَا أَرَادَ أَنْ يَرْكَعَ وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ وَإِذَا قَامَ مِنَ الرَّكْعَتَيْنِ
يَرْفَعُ يَدَيْهِ فِي ذٰلِكَ كُلِّهِ وَكَانَ عَبْدُ اللّٰهِ يَفْعَلُهُ" (جزء
رفع يدين مترجم ص ٥٥)

तर्जमा : "सालिम बिन अब्दुल्लाह ने अपने बाप से रिवायत की है, उन्होंने बयान किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रफा यदैन करते थे, जब नमाज़ में दाखिल होते और जब रुकूअ् का इरादा करते और जब रुकूअ् से सर उठाते, और जब दो रकअत (पढ़ कर) उठते इन तमाम जगहों में रफा यदैन करते और अब्दुल्लाह भी रफा यदैन किया करते थे।

अल-गरज मज्कूरा दलाइल से यह बात साबित हो गई कि सही बुखारी की इब्ने उमर रजि० वाली रिवायत हदीसे रसूल है।

(ज) हदीस इब्ने उमर रज़ि० में सज्दा का ज़िक्र

मुसन्निफ ने हदीस इब्ने उमर रजि० की हदीस में जुज रफा यदैन के हवाला से सज्दा के वक्त रफ़ा यदैन का भी जिक्र किया है। चुनांचे जैल में हदीस और इमाम बुखारी रह० का फैसला मुलाहिजा फरमाएं :

"وَزَادَ وَكِيعٌ عَنِ الْعُمَرِيِّ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالَى عَنْهُمَا
عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَنَّهُ كَانَ يَرْفَعُ يَدَيْهِ إِذَا
رَكَعَ وَإِذَا سَجَدَ" (جزء رفع يدين مترجم ص ٥٦)

तर्जमा : "वकीअ् ने अल उमरी से और उन्होंने नाफे से और उन्होंने इब्ने उमर रजि० से और उन्होंने रसूलुल्लाह सल्ललल्लाहु अलैहि व सल्लम से बयान किया है कि आप रफा यदैन करते थे, जब रुकूअ् करते और सज्दा करते।

इमाम बुख़ारी रह० का फ़ैसला

इमाम बुखारी रह० ने कहा है कि महफूज वही रिवायत है जो उबैदुल्लाह, अय्यूब, मालिक, इब्ने जुरैज, लैस रह०, बेशुमार अहले हिजाज, अहले इराक ने नाफे से उन्होंने इब्ने उमर रजि० से रफा यदैन के बारे में बयान की है कि वह रुकूअ् के वक्त और रुकूअ् से सर उठाते वक्त रफा यदैन किया करते थे। (जुजओ रफइल यदैन मुतर्जम स० ५६)

अल गरज मुसन्निफ ने जो जुज रफा यदैन के हवाला से इब्ने उमर रजि० की सज्दा में रफा यदैन वाली हदीस जिक्र की है वह महफूज नहीं बल्कि सही रिवायत वही है जो सही बुखारी में बगैर सज्दा के जिक्र के मौजूद है। जिसका इमाम बुखारी रह० ने खुद अपने फैसला में तज्किरा

फरमाया, चुनांचे वह हदीस यह है

"حَدَّثَنَا عَيَّاشٌ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْأَعْلَى قَالَ حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللّٰهِ عَنْ
نَافِعٍ أَنَّ ابْنَ عُمَرَ كَانَ إِذَا دَخَلَ فِي الصَّلٰوةِ كَبَّرَ وَرَفَعَ يَدَيْهِ وَإِذَا
قَالَ سَمِعَ اللّٰهُ لِمَنْ حَمِدَهُ رَفَعَ يَدَيْهِ وَإِذَا قَامَ مِنَ الرَّكْعَتَيْنِ رَفَعَ
يَدَيْهِ وَرَفَعَ ذٰلِكَ ابْنُ عُمَرَ إِلَى نَبِيِّ اللّٰهِ" (صحيح بخاري ص ١٠٢ ج ١)

तर्जमा : "हजरत नाफे फरमाते है कि हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० जब नमाज में दाखिल होते अल्लाहु अक्बर कहते और रफा यदैन करते और जब रुकूअ् करते फिर भी रफा यदैन करते और जब '**समिअल्लाहुलिमन हमिदह**' कहते फिर भी रफा यदैन करते और जब दो रकअत पढ़ कर खड़े होते तो भी रफा यदैन करते। और इब्ने उमर रज़ि० ने बताया कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी ऐसे ही किया करते थे"।

(द) हमेशगी का ज़िक्र नहीं!

हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर रजि० मशहूर सहाबी, कदीमुल इस्लाम, मुत्तबे-ए-सुन्नत और आलिम बड़े दर्जे के है, जो '**काना यरफओ यदेह**' से हदीस नकल करते हैं जिस से दवाम व इस्तिम्रार साबित होता है।

(ह) अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० रफ़ा यदैन किया करते थे

(१.) हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर रजि० रफा यदैन किया करते थे, जैल में दलाइल मुलाहिजा फरमाए :

"حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ حَوْشَبٍ ثَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ ثَنَا عُبَيْدُ
اللّٰهِ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالَى عَنْهُمَا أَنَّهُ كَانَ يَرْفَعُ
يَدَيْهِ إِذَا دَخَلَ فِي الصَّلٰوةِ وَإِذَا رَكَعَ وَإِذَا قَالَ سَمِعَ اللّٰهُ لِمَنْ حَمِدَهُ
وَإِذَا قَامَ مِنَ الرَّكْعَتَيْنِ يَرْفَعُهُمَا" (جزء رفع يدين امام بخاري ص ١٠)

तर्जमा : "हमें मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन हौशब ने हदीस बयान की, वह कहते हैं हमें अब्दुल वहाब ने, वह कहते हैं हमें अब्दुल्लाह ने नाफे से रिवायत बयान की है कि इब्ने उमर रज़ि० रफ़ा यदैन करते जब नमाज में दाखिल होते और जब रुकूअ् करते और जब **समिअल्लाहुलिमन हमिदह** कहते और जब दो रकअत पढ़ कर उठते तो बदस्तूर रफा यदैन करते थे"।

२. रफ़ा यदैन न करने वाले को अब्दुल्लाह बिन उमर रजि० सजा दिया करते थे।

حدثنا الحميدي ثنا الوليد بن مسلم قال سمعت زيد بن
واقد يحدث عن نافع أن ابن عمر رضي الله تعالى عنهما كان إذا
رأى رجلا لا يرفع يديه إذا ركع وإذا رفع رماه بالحصى ؛
(جزء رفع اليدين [illegible])

तर्जमा "हमें हुमैदी ने हदीस बयान की, वह कहते हैं हमें अबुल वलीद बिन मुस्लिम ने, वह कहते हैं, मैंने जैद बिन वाकिद को हदीस बयान करते हुए सुना नाफे से रिवायत है उसने बयान किया कि इब्ने उमर रज़ि० जब किसी को रफा यदैन न करता देखते तो उसको ककरियां मारते।

अल गरज अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० खुद भी रफा यदैन किया करते थे और न करने वालों को सजा दिया करते थे। लिहाजा मुसन्निफ का यह कहना कि "इब्ने उमर रज़ि०, रफा यदैन नही करते थे खुद बखुद बातिल हो गया।

अबू हुमैद साइदी रज़ि० की रिवायत

२ अबू हुमैद साइदी रज़ि० की सही रिवायत जो सही बुखारी स० ११४ जिल्द १ पर है उस में रुकूअ और तीसरी रकअत की रफा यदैन का जिक्र नहीं। अबू दाऊद की सनद में अब्दुल हमीद बिन जा'फर, यह बिदअती, तक्दीर का मुकिर और जईफ रावी है उसने रफा यदैन का इजाफा किया है। गैर मुकल्लिद बुखारी की हदीस छोड़ कर उस झूठी रिवायत पर लट्टू है. इसमें भी सिर्फ एक दफा रफा यदैन का जिक्र है और बस। (तहकीक मसअला रफा यदैन स० २७)

मुसन्निफ़ की तन्क़ीद का खुलासा और उसका जवाब

अ. अबू हुमैद साइदी रज़ि० की रिवायत मे रुकूअ और तीसरी रकअत मे रफा यदैन का जिक्र नहीं।

ब. अबू दाऊद की सनद में अब्दुल हमीद बिन जा'फर बिदअती, तक्दीर का मुकिर और जईफ रावी है।

ज. रफा यदैन का इजाफा अब्दुल हमीद ने किया।

जवाब

अ. बुखारी शरीफ की इस हदीस मे अगरचे रुकूअ और तीसरी रकअत के लिए रफा यदैन का जिक्र नहीं, लेकिन इसको अदमे रफा यदैन पर

दलील लाना सरासर नाइंसाफी है। क्योंकि उसमे नमाज के तमाम अरकान व सुनन का भी जिक्र नहीं।

चुनांचे रुकूअ की तस्बीहात, एक रकअत मे सज्दो की तादाद, और उनकी तस्बीहात, अत्तहीयात, सलाम वगैरह का जिक्र मौजूद नहीं तो क्या से यह लाजिम आता कि सिरे से यह चीजें नमाज में शामिल ही नहीं, बल्कि जैसे दीगर अहादीस को देख कर उन से यह चीजें ली जाती है। इसी तरह रफा यदैन का जिक्र जब दीगर रिवायतों में मिलता है, ले लिया जाएगा। अगरचे इस रिवायत में उसका जिक्र नहीं।

(ब) जवाब उसका यह है कि खुद इमाम अबू दाऊद ने उसके बाद दूसरी सनद से इस हदीस को रिवायत किया है चुनांचे बजलुल मज्हूद मे है

قد أخرج المؤلف بعد هذا بسندين سند الأول [illegible]
علي بن حسين بن إبراهيم ثنا أبو بدر [illegible]
ثنا الحسن بن الحر [illegible] عيسى بن عبد الله بن مالك عن محمد
ابن عمرو بن عطاء [illegible] عن عباس أو عياش بن سهل

अल गरज बकौल मुसन्निफ अब्दुल हमीद के कमजोर होने के बावजूद दूसरी सनद से उसकी तौसीक हो गई।

२. अल्लामा जैलई फरमाते हैं कि "अब्दुल हमीद बिन जा'फर मुकल्लिम फीह है लेकिन अक्सर उलमा ने उसकी तौसीक की है और इमाम मुस्लिम ने अपनी सही मे उन से एहतिजाज किया है और उसका जुअफ इस किस्म का नहीं है जो उसकी हदीस के रद करने को वाजिब करार देते हो।

३. तहावी ने बावजूद (हन्फी) होने के अब्दुल हमीद बिन जा'फर से एहतिजाज किया है। चुनांचे मुलाहिजा हो शरह मआनिउल आसार (बाब बुलूगुस्सबी वैदूनिल एहतलाम, स० १२५, जिल्द २)

रफा यदैन का इजाफा अब्दुल हमीद ने नहीं किया बल्कि उसकी पैदाइश से भी पहले लोग रफा यदैन करने वाले मौजूद थे।

अबू हुरैरह रज़ि० की हदीस

अबू हुरैरह रज़ि० की सही हदीस बुखारी स० ११० पर है जिस मे रफा यदैन का जिक्र तक नहीं लेकिन अबू दाऊद की सनद मे रफा यदैन का

जिक्र है लेकिन रावी इब्ने जुरैज है जिस ने ६० औरतों से मुतआ किया।

दूसरा रावी यहया बिन अय्यूब है जो जईफ है. नीज़ उसमे सज्दा की रफ़ा यदैन का भी जिक्र है। (तहकीक मसअला रफ़ा यदैन)

जवाब

बुखारी की इस हदीस में अगरचे रफ़ा यदैन का जिक्र मौजूद नहीं है लेकिन दूसरी सही रिवायात से इस का सुबूत मिल जाता है।

अल्लामा जैलई. हजरत अबू हुरैरह रज़ि० वाली रिवायत का जिक्र करने के बाद फरमाते हैं -

[illegible]

इमाम फरमाते हैं, उसके तमाम रावी सही हैं।

सज्दा की रफ़ा यदैन नहीं बल्कि वह रुकूअ से उठने के वक्त की रफ़ा यदैन है।

हज़रत अली की ग़ैर मुहव्वला हदीस

उनकी सही रिवायत में रफ़ा यदैन का जिक्र नहीं है। खुद हजरत अली रज़ि० और उसके हजारों साथी रफ़ा यदैन नहीं करते थे। अल्बत्ता एक जईफ रिवायत जिस का रावी इब्ने अबी अज्जिनाद है, उसमें रफ़ा यदैन का जिक्र है। (तहकीक मसअला रफ़ा यदैन स० २७)

जवाब

हजरत अली रज़ि० और आपके तमाम अस्हाब रफ़ा यदैन किया करते थे। चुनांचे जुज रफ़ा यदैन स० १२ में है "हजरत अली रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नमाज़ के लिए तक्बीर कहते वक्त और रुकूअ को जाते वक्त और रुकूअ से सर उठाते वक्त और दो रकअत से तीसरी रकअत के लिए उठते वक्त अपने कन्धों के बराबर तक अपने हाथ उठाते थे।

दूसरी और चौथी रकअत में रफ़ा यदैन साबित नहीं

मुसन्निफ साहब लिखते हैं

दूसरा हिस्सा दावा का यह है कि दूसरी और चौथी रकअत के शुरू में आपने कभी रफ़ा यदैन नहीं की। इस बारे में गैर मुकल्लेदीन के पास एक भी सरीह हदीस नहीं है। मैंने कई बार मुनाजिरों में मुतालबा किया. इस्आनी चैलेंज भी दिया। लेकिन आज तक कोई माई का लाल गैर मुकल्लिद ऐसी सरीह हदीस पेश नहीं कर सका।

फ़ाइदा : हजरत उबैदुल्लाह बिन उमर इब्ने माजा स० ६२।

अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० (इब्ने माजा स० ६२)

अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० (फतहुल बारी स० १५२ जिल्द २

हजरत अबू हुरैरह रज़ि० (तल्खीसुल हबीर)

अब्दुल्लाह बिन जुबैर रज़ि० (अबू दाऊद स० ७५, जिल्द १)

हजरत जाबिर रज़ि० (मज्मउज्जवाइद स० १८२. जिल्द १)

इन छः रिवायात की सनदों का हाल भी रुकूअ वाली रिवायत जैसा ही है।

इन छः हदीसों में हर तक्बीर के वक्त रफ़ा यदैन का जिक्र है और माज़ी इस्तिम्रारी भी है। इन रिवायात से साफ मालूम हुआ कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कभी कभार दूसरी और चौथी रकअत के शुरू में भी रफ़ा यदैन की। लेकिन गैर मुकल्लेदीन इन अहादीस पर अमल नहीं करते। आखिर वजह फर्क बताए। माज़ी इस्तिम्रारी भी है। मुतअख्खिरे इस्लाम सहाबी. हजरत अबू हुरैरह रज़ि० की रिवायत भी है।

हाँ हम तो यह कहते हैं कि यह रिवायात मत्रूकुल अमल हैं, न उनके रावियों ने उन पर अमल किया न खुलफ़ाए राशिदीन रज़ि० ने, न खैरुल कुरून में उन पर अमल हुआ। अल्बत्ता गैर मुकल्लेदीन के उसूल पर इन छः हदीसों में सराहतन इन दो जगहों में नहीं या नफी साबित नहीं तो गैर मुकल्लेदीन अहादीस के मुंकिर और इत्तेबाए सुन्नत के तारिक हुए जवाब सोच कर दें। महज औरतों की तरह तअने बाजी न हो। (तहकीक मसअला रफ़ा यदैन)

दूसरी और चौथी रकअत में रफ़ा यदैन साबित नहीं

मज्कूरा इबारत में मुसन्निफ ने अपने खुद साख्ता उसूलों से अह्ले हदीस को मतऊन करने की कोशिश की है कि वह दूसरी और चौथी रकअत में अहादीस मौजूद होने के बावजूद रफ़ा यदैन नहीं करते।

जवाब

मुसन्निफ की पेशकरदा तमाम अहादीस. जईफ और नाकाबिले अमल हैं जैल में अहादीस और उन पर तन्कीद मुलाहिज़ा फरमाए

حدثنا هشام بن عمار ثنا رفدة بن قضاعة الغساني ثنا الأوزاعي عن عبد الله بن عبيد بن عمير عن أبيه عن جده عمير بن حبيب قال كان رسول الله صلى الله عليه وسلم يرفع يديه مع كل تكبيرة في الصلوة المكتوبة" (ابن ماجه ص ٦٢ ج ١ حديث ٨٦١)

तर्जमा : "हमें हिशाम बिन अम्मार ने हदीस बयान की, वह कहते हैं हमें रफ़दह बिन कुज़ाआ ने वह कहते हैं हमें औज़ाई ने अब्दुल्लाह बिन उबैद बिन उमैर से उन्होने अपने बाप दादा से उमैर बिन हबीब से रिवायत है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हर तक्बीर के वक्त रफ़ा यदैन किया करते थे फ़र्ज़ नमाज़ में।"

अल्लामा सिंधी (हन्फ़ी) का जवाब

अल्लामा सिन्धी लिखते हैं कि :

"في الزوائد، هذا الإسناد فيه رفدة بن قضاعة، وهو ضعيف و عبد الله لم يسمع من أبيه، حكاه العلائي عن ابن جريج" (سنن ابن ماجه تحقيق محمد فؤاد عبد الباقي ص ٢٨٠ ج ١)

तर्जमा : "ज़वाइद में है कि इस हदीस की सनद में रफ़दह बिन कुज़ाआ ज़ईफ़ रावी है। (नीज़) अब्दुल्लाह ने अपने बाप से कुछ नहीं सुना।

अल ग़रज़ मुसन्निफ़ की पेशकरदा रिवायत ज़ईफ़ है और पेश करने के क़ाबिल नहीं।

मुसन्निफ़ की दूसरी मुहव्वला हदीस और उसकी हक़ीक़त

حدثنا أيوب بن محمد الهاشمي ثنا عمر بن رياح عن عبد الله ابن طاؤس عن أبيه عن ابن عباس أن رسول الله صلى الله عليه وسلم كان يرفع يديه عند كل تكبيرة" (ابن ماجه حديث ٨٦٥ ج ١)

तर्जमा : "हमें हदीस बयान की अय्यूब बिन मुहम्मद हाशमी ने वह कहते हैं हमें उमर बिन रयाह ने अब्दुल्लाह बिन ताऊस से, उन्होने अपने बाप से, उन्होने अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० से हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० से रिवायत है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दोनो हाथ उठाते थे हर तक्बीर पर"।

इस हदीस की सनद में उमर बिन रयाह मुत्तफ़क़ा तौर पर ज़ईफ़ है। चुनांचे अल्लामा सिन्धी (हन्फ़ी) फ़रमाते हैं :

"في الزوائد إسناده ضعيف لإتفاقهم على ضعف عمر بن رياح." (ابن ماجه تحقيق محمد فؤاد ص ٢٨١ ج ١)

तर्जमा : "उमर बिन रयाह मुत्तफ़क़ा तौर पर ज़ईफ़ है।

(इब्ने माजा तहक़ीक़ मुहम्मद फ़ुवाद, स० २८१, जिल्द १)

मुसन्निफ़ की तीसरी मुहव्वला हदीस और उसकी हक़ीक़त

"يرفع يديه في كل خفض ورفع" (ص ٢٢٢ ج ٢ فتح الباري)

तर्जमा : "यानी इब्ने उमर रज़ि० झुकते वक्त और उठते वक्त रफ़ा यदैन किया करते थे"। हाफ़िज़ इब्ने हजर अस्क़लानी फ़रमाते हैं :

"يحمل الخفض على الركوع والرفع على الإعتدال وإلا فحمله على ظاهره يقتضي استحبابه في السجود أيضا وهو خلاف ما عليه الجمهور وقد نفاه ابن عمر" (فتح الباري ص ٢٢٢ ج ٢)

तर्जमा : "लफ़्ज़े 'ख़फ़्ज़' से मुराद रुकूअ़ के लिए झुकना और रफ़ा से (रुकूअ़ से) उठना मुराद है। अगर यह मतलब न लिया जाए तो ज़ाहिरी मफ़हूम से सज्दा में भी रफ़ा यदैन मुस्तहब मालूम होती है जो जमहूर उलमा के मस्लक के ख़िलाफ़ है। नीज़ हज़रत इब्ने उमर रज़ि० की (सही हदीस के ख़िलाफ़ भी है) जिसमें उन्होने उसकी नफ़ी की है।

२. नीज़ हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० से सही सनद के साथ हदीस इस तरह है :

"حدثنا أبو اليمان قال أخبرنا شعيب عن الزهري قال أخبرني سالم بن عبد الله أن عبد الله بن عمر قال رأيت النبي صلى الله عليه وسلم افتتح التكبير في الصلوة فرفع يديه حين يكبر حتى يجعلهما حذو منكبيه وإذا كبر للركوع فعل مثله وإذا قال سمع الله لمن حمده فعل مثله وقال ربنا ولك الحمد ولا يفعل ذلك حين يسجد ولا حين يرفع رأسه من السجود" (بخاري شريف ص ١٠٢ ج ١)

तर्जमा "हमे हदीस बयान की अबुल यमान ने वह कहते है हमे शुऐब ने जुहरी से, वह कहते है सालिम बिन अब्दुल्लाह ने कि हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर रजि० ने फरमाया कि मैने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा जब आपने नमाज शुरू की और अल्लाहु अकबर कहा तो कन्धो के बराबर रफा यदैन की, इसी तरह जब रुकूअ् के लिए अल्लाहु अकबर कहा और समिअल्लाहुलिमन हमिदह कहा तो इसी तरह किया और **रब्बना व लकल-हम्द** कहा और सज्दा मे जाते हुए और सज्दा से सर उठाते हुए रफा यदैन नहीं करते।

अल-गरज़ इब्ने उमर रजि० का बेसनद असर का यही मतलब है जो हाफिज इब्ने हजर रह० ने बयान किया, क्योंकि हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर रजि० से सज्दा की हालत मे रफा यदैन की सरीह तौर पर नफी वारिद है।

मुसन्निफ़ की चौथी मुहव्वला हदीस और उसकी हक़ीक़त

عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّهُ كَانَ يَرْفَعُ يَدَيْهِ فِي كُلِّ خَفْضٍ وَرَفْعٍ وَيَقُولُ أَنَا أَشْبَهُكُمْ صَلَاةً بِرَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ (تلخيص ص ٨٢ ج ١)

तर्जमा "अबू सलमा फरमाते है कि हजरत अबू हुरैरह रजि० झुकते और उठते वक्त रफा यदैन किया करते थे और फरमाते क्योंकि मै रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नमाज के तुम सबसे बढ़ कर मुशाबेह नमाज पढता हूँ।

१. इसका जवाब हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर रजि० की हदीस (नम्बर ३) के जिम्न मे गुजर चुका है।

२. इमाम शौकानी रह० इस हदीस और दीगर अहादीस को जिक्र करने के बाद फरमाते है

"وَظَاهِرُ الْأَحَادِيثِ أَنَّهُ لَا تَنْتَهِضُ لِلْاِحْتِجَاجِ بِهَا عَلَى الرَّفْعِ فِي غَيْرِ تِلْكَ الْمَوَاطِنِ فَالْوَاجِبُ الْبَقَاءُ عَلَى النَّفْيِ الثَّابِتِ فِي الصَّحِيحِ حَتَّى يَقُومَ دَلِيلٌ صَحِيحٌ يَقْتَضِي تَخْصِيصَهُ كَمَا قَامَ فِي الرَّفْعِ عِنْدَ الْقِيَامِ مِنَ التَّشَهُّدِ الْأَوْسَطِ" (نيل الأوطار ص ١٠٢ ج ٢)

तर्जमा "यह अहादीस नमाज़ में साबित शुदह मकामात के अलावा रफा यदैन की दलील नहीं बन सकती। पस लाजिम व जरूरी यही है कि सही अहादीस मे साबित शुदह नफी पर ही अमल किया जाए। जब तक किसी सही दलील से किसी और जगह की तख्सीस न हो जाए। जैसा कि तशह्हुदे औसत से उठ कर रफा यदैन करने की तख्सीस हुई है।

मुसन्निफ़ की पाँचवीं मुहव्वला हदीस और उसकी हक़ीक़त

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ نَا ابْنُ لَهِيعَةَ عَنْ أَبِي هُبَيْرَةَ عَنْ مَيْمُونٍ الْمَكِّيِّ أَنَّهُ رَأَى عَبْدَ اللهِ بْنَ الزُّبَيْرِ وَصَلَّى بِهِمْ يُشِيرُ بِكَفَّيْهِ حِينَ يَقُومُ وَحِينَ يَرْكَعُ وَحِينَ يَسْجُدُ وَحِينَ يَنْهَضُ لِلْقِيَامِ فَيَقُومُ فَيُشِيرُ بِيَدَيْهِ فَانْطَلَقْتُ إِلَى ابْنِ عَبَّاسٍ فَقُلْتُ إِنِّي رَأَيْتُ ابْنَ الزُّبَيْرِ صَلَّى صَلَاةً لَمْ أَرَ أَحَدًا يُصَلِّيهَا فَوَصَفْتُ لَهُ هَذِهِ الْإِشَارَةَ فَقَالَ إِنْ أَحْبَبْتَ أَنْ تَنْظُرَ إِلَى صَلَاةِ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَاقْتَدِ بِصَلَاةِ عَبْدِ اللهِ بْنِ الزُّبَيْرِ (ابو داؤد ص [illegible] ج ١)

तर्जमा "मैमून मक्की से रिवायत है कि उन्होंने अब्दुल्लाह बिन जुबैर रजि० को देखा जब वह उन्हें नमाज पढा रहे थे इशारा किया अपने दोनो हाथो से (रफा यदैन किया) खड़े होते वक्त और रुकूअ् के वक्त और सज्दा के वक्त और फिर खड़े होते वक्त, खड़े हुए और इशारा किया हाथो से। तो वह गये अब्दुल्लाह बिन अब्बास रजि० के पास और उन से कहा कि मैने अब्दुल्लाह बिन जुबैर रजि० को इस तरह नमाज पढते देखा कि किसी को इस तरह पढते नहीं देखा और मैने बयान किया हाथों से इशारा करने का। अब्दुल्लाह बिन अब्बास रजि० ने कहा, अगर तू चाहता है आप (स०) की नमाज देखना तो पैरवी कर अब्दुल्लाह बिन जुबैर रजि० की नमाज की।

१. अल्लामा शमसुल हक अज़ीमाबादी रह० फरमाते है

اُسْتُدِلَّ بِهِ عَلَى رَفْعِ الْيَدَيْنِ فِي السُّجُودِ لَكِنَّ الْاِسْتِدْلَالَ بِهِ غَيْرُ ظَاهِرٍ لِأَنَّهُ يَحْتَمِلُ أَنْ يَكُونَ الْمُرَادُ بِقَوْلِهِ حِينَ يَسْجُدُ حِينَ يَرْفَعُ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ كَمَا فِي الرِّوَايَةِ الْمُتَقَدِّمَةِ وَإِذَا جَاءَ الْاِحْتِمَالُ بَطَلَ الْاِسْتِدْلَالُ عَلَى أَنَّ الْحَدِيثَ ضَعِيفٌ لَا يَقُومُ بِهِ حُجَّةٌ

(عون المعبود شرح ابو داؤد ص ٢٦٩ ج ١)

तर्जमा "सज्दों की रफ़ा यदैन के लिए इस हदीस से इस्तिदलाल किया गया है। लेकिन इस हदीस से इस्तिदलाल गैर मुम्किन है क्योंकि **"हीना यस्जुदु"** का मतलब यह भी हो सकता है कि जब रुकूअ् से सज्दा में जाने के लिए सर उठाया तो भी रफ़ा यदैन की, जिस तरह उस से पहली रिवायत में गुजरा है और (यह मशहूर कायदा है कि) जब एक चीज में दो या कई एहतमाल हों तो उस से इस्तिदलाल बातिल हो जाता है। इसके अलावा यह हदीस जईफ़ और नाकाबिले हुज्जत भी है"।

२. फिर थोड़ा सा आगे चल कर लिखते हैं :

"قَالَ الْمُنْذِرِيُّ فِي إِسْنَادِهِ عَبْدُ اللّٰهِ بْنُ لَهِيْعَةَ وَفِيْهِ مَقَالٌ - انْتَهَى قُلْتُ قَالَ الْعَلَّامَةُ الْخَزْرَجِيُّ فِي الْخُلَاصَةِ قَالَ أَحْمَدُ احْتَرَقَتْ كُتُبُهُ وَهُوَ صَحِيْحُ الْكِتَابِ، وَمَنْ كَتَبَ عَنْهُ قَدِيْمًا فَسَمَاعُهُ صَحِيْحٌ قَالَ يَحْيَى بْنُ مَعِيْنٍ، لَيْسَ بِالْقَوِيِّ وَقَالَ مُسْلِمٌ، تَرَكَهُ وَكِيْعٌ وَيَحْيَى بْنُ الْقَطَّانِ وَابْنُ مَهْدِيٍّ، وَقَالَ الْحَافِظُ فِي التَّقْرِيْبِ، عَبْدُ اللّٰهِ بْنُ لَهِيْعَةَ بِفَتْحِ اللَّامِ وَكَسْرِ الْهَاءِ، ابْنُ عُقْبَةَ الْحَضْرَمِيُّ، أَبُوْ عَبْدِ الرَّحْمٰنِ الْمِصْرِيُّ الْقَاضِيْ، صَدُوْقٌ، مِنَ السَّابِعَةِ، خَلَّطَ بَعْدَ احْتِرَاقِ كُتُبِهِ"

(عون المعبود ص ٢٦٩ ج ١)

तर्जमा "इमाम मुन्जिरी फरमाते हैं

"इस हदीस की सनद में इब्ने लहीआ है और उसके मुतअल्लिक इमामों की जरह है"।

अल्लामा खजरजी "खुलासा" में फरमाते हैं कि :

"इमाम अहमद रह० ने फरमाया, इसकी किताबें जल गई थीं और जिस ने किताबें जलने से पहले नकल किया उसका सिमाअ् सही है"।

इमाम यहया बिन मुईन फरमाते हैं :

"लैसा बिल-कवीये" यानी "यह कवी रावी नहीं है"।

इमाम मुस्लिम रह० फरमाते है कि

"वकीअ्, यहया बिन कत्तान और इब्ने महदी ने उन से हदीस लेना छोड़ दी थी"।

हाफिज इब्ने हजर फरमाते हैं, सच्चा और सातवीं तबका का है। लेकिन किताबें जल जाने के बाद गड़ बड़ी पैदा हो गई।

अल गरज हदीस जईफ़ और नाकाबिले ऐतबार है।

मुसन्निफ़ की छटी मुहव्वला हदीस और उसकी हकीकत

"عَنِ الْجَيَّالِ بْنِ حَرْمَلَةَ قَالَ سَأَلْتُ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللّٰهِ كَمْ كُنْتُمْ يَوْمَئِذٍ قَالَ كُنَّا أَلْفًا وَأَرْبَعَمِائَةٍ، قَالَ وَكَانَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَرْفَعُ يَدَيْهِ فِيْ كُلِّ تَكْبِيْرَةٍ مِنَ الصَّلٰوةِ"

(مجمع الزوائد ص ١٠١ ج ٢)

तर्जमा "जय्याल बिन हरमला कहते है, मैंने जाबिर बिन अब्दुल्लाह रजि० से पूछा, बैअते रिजवान के दिन सहाबा रजि० की तादाद कितनी थी? फरमाया, चौदह सौ। और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नमाज में हर तक्बीर के वक़्त रफ़ा यदैन किया करते थे।

जवाब

अल्लामा हैसमी फरमाते हैं :

"ذٰلِكَ وَهُوَ فِي الصَّحِيْحِ خَلَا رَفْعَ الْيَدَيْنِ. رَوَاهُ أَحْمَدُ وَفِيْهِ الْحَجَّاجُ بْنُ أَرْطَاةَ، وَاخْتُلِفَ فِيْهِ"

तर्जमा "यह हदीस सही बुखारी में रफ़ा यदैन के जिक्र के बगैर आई है। इमाम अहमद ने भी इसे रिवायत किया है लेकिन इस में हज्जाज बिन अरतात, मुख्तलिफ़ फ़ीह रावी है"।

अल-गरज यह हदीस भी नाकाबिले इस्तिदलाल है। क्योंकि सही बुखारी की रिवायात के खिलाफ है। नीज इसमें एक रावी (हज्जाज बिन अरतात) ज़ईफ़ है।

रुकूअ् जाते और रुकूअ् से सर उठाते वक़्त रफ़ा यदैन

मुसन्निफ़ लिखते हैं :

दावा का तीसरा हिस्सा यह है कि रुकूअ् जाते और सर उठाते वक़्त हुजूर हमेशा रफ़ा यदैन करते थे और सज्दों के वक़्त कभी रफ़ा यदैन नहीं की। इस हिस्सा के लिए गैर मुकल्लिद मालिक बिन हुवैरिस रजि० वाइल बिन हुज रजि० की रिवायत पेश करते है और कहते हैं कि यह दोनों सहाबा

रज़ि० आख़िरी उम्र मे इस्लाम लाए। उन्होने हुजूर को रफा यदैन करते देखा। इस से साबित हुआ कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आख़िरी उम्र तक रफा यदैन करते रहे मगर इस बारे मे वह कई बातें छुपाते है।

१. मालिक बिन हुवैरिस रज़ि० की एक सनद में अबू किलाबा है जो नासबी मज़्हब का था। नीज़ नसाई ने उस से सज्दा की रफा यदैन की रिवायत की है तो अब गैर मुकल्लेदीन का आधी हदीस को मानना और आधी को छोड़ना **"अफतुमिनूना बेबाज़िल किताबे व तक्फुरूना बेबाज़िन"** का मिस्दाक है।

२. वाइल बिन हुज्र रज़ि० की रिवायत भी दो तरीक़ से है। एक तरीक में सज्दा के वक्त रफ़ा यदैन का जिक्र है। (अबू दाऊद स० ७३, जिल्द १) जिसको गैर मुक़ल्लिद छुपाते हैं। उस पर अमल नही करते। इस तरह आधी हदीस को माना आधी से रूगरदानी की।

दूसरे तरीक मे खुद हजरत वाइल रज़ि० ने वज़ाहत फरमा दी है कि जब मैं दूसरी दफा हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की खिदमत में आया तो हुजूर और सहाबा रज़ि० पहली तक्बीर के वक़्त रफा यदैन करते थे। बाद की किसी रफा यदैन का जिक्र नहीं फरमाया. (अबू दाऊद स० ७३, जिल्द १) और किसी एक सहाबी को भी मुस्तस्ना न फरमाया। गोया तमाम सहाबा रज़ि० आखिर अह्दे नबवी में रफ़ा यदैन के तारिक थे। लेकिन ग़ैर मुकल्लिद अवाम के सामने यह बात बिल्कुल बयान नहीं करते।

मुसन्निफ़ के दलाइल का खुलासा और उनका जवाब

१. मालिक बिन हुवैरिस रज़ि० और वाइल बिन हुज्र रज़ि० की रिवायात पेश करते है।

२. (अ) मालिक बिन हुवैरिस रज़ि० की सनद में अबू किलाबा नासबी है।

(ब) ख़ालिद का हाफिज़ा सही न था।

३. (अ) नस्र बिन आसिम ख़ारिजी है।

(ब) नसाई की रिवायत में सज्दा की रफ़ा यदैन का ज़िक्र है।

४. वाइल बिन हुज्र रज़ि० की हदीस में सज्दा का जिक्र है।

५. वाइल रज़ि० ने कहा हुज़ूर सिर्फ़ पहली दफा रफ़ा यदैन करते थे।

जवाब

१. रुकूअ् जाते और रुकूअ् से उठते वक्त रफ़ा यदैन का दीगर सहाबा रज़ि० से सुबूत!

मुसन्निफ़ ने सिर्फ दो सहाबा रज़ि० की रिवायात का जिक्र किया है, हालांकि उनके अलावा दीगर सहाबा रज़ि० से सही सनद के साथ उन दो मकामात पर रफा यदैन का ज़िक्र मिलता है चुनांचे मुलाहिज़ा फरमाएं :

١ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللّٰهِ بْنُ مَسْلَمَةَ عَنْ مَالِكٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ سَالِمِ بْنِ عَبْدِ اللّٰهِ عَنْ أَبِيهِ أَنَّ رَسُولَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يَرْفَعُ يَدَيْهِ حَذْوَ مَنْكِبَيْهِ إِذَا افْتَتَحَ الصَّلٰوةَ وَإِذَا كَبَّرَ لِلرُّكُوعِ وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ رَفَعَهُمَا كَذٰلِكَ أَيْضًا وَقَالَ سَمِعَ اللّٰهُ لِمَنْ حَمِدَهُ رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ وَكَانَ لَا يَفْعَلُ ذٰلِكَ فِي السُّجُودِ. (بخاری شریف ص ١٠٢)

तर्जमा : "अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० फरमाते हैं कि रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज शुरू करते और जब रुकूअ् के लिए अल्लाहु अक्बर कहते और जब रुकूअ् से सर उठाते तो रफ़ा यदैन करते और रुकूअ् से उठते वक्त **"समिअल्लाहुलिमन हमिदह" रब्बना व लकल हम्द** कहते और सुजूद मे रफा यदैन नहीं करते थे।

٢ - حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ ثَنَا عَبْدُ اللّٰهِ بْنُ الْمُبَارَكِ أَنَا إِسْمَاعِيلُ حَدَّثَنِي عَبْدُ رَبِّهِ بْنُ سُلَيْمَانَ بْنِ عُمَيْرٍ قَالَ رَأَيْتُ أُمَّ الدَّرْدَاءِ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالَى عَنْهَا تَرْفَعُ يَدَيْهَا فِي الصَّلٰوةِ حَذْوَ مَنْكِبَيْهَا حِينَ تَفْتَتِحُ الصَّلٰوةَ وَحِينَ تَرْكَعُ وَإِذَا قَالَتْ سَمِعَ اللّٰهُ لِمَنْ حَمِدَهُ رَفَعَتْ يَدَيْهَا وَقَالَتْ رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ. (جزء رفع یدین مترجم ص ...)

तर्जमा : "सुलेमान बिन उमैर ने बयान किया कि मैंने उम्मे दर्दा रज़ि० को देखा है कि वह नमाज में अपने कन्धों के बराबर रफा यदैन करती थीं। जब नमाज़ शुरू करती और जब रुकूअ् करती फिर जब **"समिअल्लाहुलिमन हमिदह"** कहती रफा यदैन करती और **रब्बना व लकल-हम्द** कहती।

٣ - عَنْ عَلِيِّ بْنِ أَبِي طَالِبٍ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالَى عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يَرْفَعُ يَدَيْهِ إِذَا كَبَّرَ لِلصَّلٰوةِ حَذْوَ مَنْكِبَيْهِ وَإِذَا أَرَادَ أَنْ يَرْكَعَ وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ وَإِذَا قَامَ مِنَ الرَّكْعَتَيْنِ فَعَلَ مِثْلَ ذٰلِكَ

तर्जमा : हजरत अली रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नमाज़ के लिए तक्बीर कहते वक्त और रुकूअ् को जाते वक्त और रुकूअ् से सर उठाते वक्त और दो रकअत से (तीसरी रकअत के लिए) उठते वक़्त अपने कन्धों के बराबर तक अपने हाथ उठाते थे।

४. इमाम बुखारी रह० फरमाते हैं

"सतरह सहाबा रजि० से रिवायत है कि बेशक वह रुकूअ को जाते, रुकूअ से सर उठाते वक्त रफा यदैन करते थे"। (जुजओ रफइल यदैन स० १३)

(अ) अबू क़िलाबा सिक़ह रावी हैं

१. अल्लामा खज़रजी फरमाते हैं

"अब्दुल्लाह बिन जैद बिन अम्र बिन आमिर जरमी, अबू किलाबा, बसरी, अइम्म–ए–हदीस में से हैं। शाम में रहते थे"।

अय्यूब फरमाते हैं :

«أَبُو قِلَابَةَ مِنَ الْفُقَهَاءِ ذَوِي الْأَلْبَابِ»

यानी अबू किलाबा, साहिबे अक्ल फुकहा में से थे।

इब्ने सअद फरमाते हैं :

"सिकतुन, कसीरुल-हदीस"

यानी : "सिकह और बकसरत रिवायत करने वाले थे"। (खुलासा स० १९८)

२. हाफिज इब्ने हजर तहजीबुत्तहजीब में लिखते हैं :

"अहदुल-अ'लाम" (बहुत बडे अल्लामा थे)

«ذَكَرَهُ ابْنُ سَعْدٍ فِي الطَّبَقَةِ الثَّانِيَةِ مِنْ أَهْلِ الْبَصْرَةِ وَقَالَ كَانَ ثِقَةً كَثِيرَ الْحَدِيثِ»

तर्जमा : "इब्ने सअद ने उसे अहले बसरा के दूसरे तबका में जिक्र किया है और फरमाया है कि सिकह और कसीरुल हदीस थे"।

इब्ने सीरीन फरमाते हैं :

"ज़ालिका अख़ी हक्कन" यानी "यह मेरा सच मुच भाई है"।

अय्यूब फरमाते हैं

«كَانَ وَاللّٰهِ مِنَ الْفُقَهَاءِ ذَوِي الْأَلْبَابِ مَا أَدْرَكْتُ بِهٰذَا الْمِصْرِ رَجُلًا كَانَ أَعْلَمَ بِالْقَضَاءِ مِنْ أَبِي قِلَابَةَ»

तर्जमा : "अल्लाह की कसम अक्लमन्द फुकहा में से थे। इस शहर में मुझे अबू किलाबा से बढ कर कजा के मसाइल जानने वाला नहीं मिला"।

अल्लामा अजली फरमाते हैं

"बसरीयुन, ताबेईयुन, सिकतुन" बसरा के रहने वाले, ताबई और सिकह थे"।

इब्ने खराश फरमाते हैं :

"सिकतुन" सिकह थे। (तहजीबुत्तहजीब स० २२५, २२६)

ख़ालिद सिक़ह है

हाफिज इब्ने हजर रह० फरमाते हैं :

«خَالِدُ بْنُ مِهْرَانَ الْحَذَّاءُ أَبُو الْمَنَازِلِ الْبَصْرِيُّ أَحَدُ الْأَثْبَاتِ وَثَّقَهُ أَحْمَدُ وَابْنُ مَعِينٍ وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ سَعْدٍ» (مقدمة فتح الباري ص ٤٠٠)

तर्जमा : "खालिद बिन मिहरान काबिले एतमाद रावियों में से है। उसे अहमद, इब्ने मुईन, नसाई और इब्ने सअद ने सिकह कहा है"।

अल्लामा खज़रजी फरमाते हैं :

"सिकतुन" खालिद सिकह थे"। (खुलासा स० १०३)

नस्र बिन आसिम पर तन्क़ीद का जवाब

१. हाफ़िज़ इब्ने हजर रह० फरमाते हैं :

«نَصْرُ بْنُ عَاصِمٍ اللَّيْثِيُّ الْبَصْرِيُّ ثِقَةٌ رُمِيَ بِرَأْيِ الْخَوَارِجِ وَصَحَّ رُجُوعُهُ عَنْهُ مِنَ الثَّالِثَةِ» (تقريب التهذيب ص ٢٩٩ ج ٢)

तर्जमा : "नस्र बिन आसिम, लैसी, बसरी, सिकह है। ख्वारिज की राय रखते थे लेकिन उस से ताइब हो गये थे तीसरे तबका के हैं।

२. नीज तहजीबुत्तहजीब में नकल करते हैं : (स० ४२७, जिल्द १)

«قَالَ الْمَرْزُبَانِيُّ فِي مُعْجَمِ الشُّعَرَاءِ كَانَ عَلَى رَأْيِ الْخَوَارِجِ ثُمَّ تَرَكَهُمْ وَأَنْشَدَ لَهُ»

فَارَقْتُ نَجْدَةَ وَالَّذِينَ تَزَرَّقُوا وَابْنَ الزُّبَيْرِ وَشِيعَةَ الْكَذَّابِ

तर्जमा : "मरजुबानी मोअ्जम अश्शोअ्रा में लिखते हैं कि नस्र बिन आसिम ख़्वारिज की राय रखते थे। फिर उनको छोड दिया। मरजुबानी ने उनका एक शेअ्र भी नकल किया है, "मैंने नज्दा हरवरी और इब्ने जुबैर और शीआ झूठे मसलक को छोड़ दिया।

अल-गरज नस्र बिन आसिम ने खारिजीयत से तौबा कर ली थी लिहाजा उनकी रिवायत काबिले हुज्जत है।

नसाई की रिवायत में सज्दा का ज़िक्र और उसका जवाब

• أخبرنا محمد بن المثنى حدثنا ابن أبي عدي عن شعبة عن قتادة عن نصر بن عاصم عن مالك بن الحويرث أنه رأى النبي صلى الله عليه وسلم رفع يديه في صلاته إذا ركع وإذا رفع رأسه من الركوع وإذا سجد وإذا رفع رأسه من السجود حتى يحاذي بهما فروع أذنيه (نسائي ص ١٢١ ج ١)

तर्जमा : "मालिक बिन हुवैरिस रज़ि० से रिवायत है कि उन्होंने नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को रुकूअ् के वक्त, रुकूअ् से सर उठाते वक्त, सज्दा करते और सज्दा से सर उठाते वक्त कानों के बराबर रफ़ा यदैन करते देखा"।

जवाब

इस रिवायत में **"इजा सजदा व इजा रफ़आ रासुहू मिनस्सुजूदे"** की ज्यादती दुरुस्त नहीं। यह इजाफा गलत है। चुनांचे मौलाना अब्दुर्रहमान मुबारकपूरी रह० फरमाते हैं

• قلت في إسناده قتادة وهو مدلس ولم يصرح بالسماع من نصر بن عاصم في زيادة قوله وإذا سجد وإذا رفع رأسه من السجود ثم قد تفرد بهذه الزيادة نصر بن عاصم عن مالك بن الحويرث وتفرد بها عنه قتادة وأصحاب قتادة مختلفون فمنهم من يذكرونها وبعضهم لا، ثم الذين يذكرونها فمنهم من يذكرونها وقتا ولا يذكرونها وقتا وروى غيره الحديث عن مالك بن الحويرث أبو قلابة الجرمي ولم يذكر هذه الزيادة وروى البخاري حديث مالك بن الحويرث من طريق أبي قلابة دون طريق نصر بن عاصم وروى مسلم في صحيحه حديثه من طريق أبي قلابة أولا ثم من طريق نصر بن عاصم من وجهين لكن ليس في واحد منهما ذكر هذه الزيادة فكون هذه الزيادة محل نظر
(أبكار المنن ص ...)

तर्जमा : "मैं कहता हूँ इस हदीस की सनद में कतादा मुदल्लिस है। उस ने नस्र बिन आसिम से **"इजा सजदा व इजा रफ़आ रासुहू मिनस्सुजूदे"** के लफ्ज नहीं सुने। (दूसरी बात) यह है कि इस ज्यादती को सिर्फ नस्र बिन आसिम ही मालिक बिन हुवैरिस रज़ि० से बयान करते हैं और उन से सिर्फ कतादा बयान करते हैं। और असहाबे कतादा में इख्तिलाफ है। बाज इस ज़्यादती का जिक्र करते हैं, और बाज जिक्र नहीं करते हैं। फिर जो लोग उस ज़्यादती को ज़िक्र करते, वे कभी उस को जिक्र करते हैं और कभी छोड देते हैं।

इस हदीस को मालिक बिन हुवैरिस रज़ि० से अबू किलाबा जर्मी ने रिवायत किया है और उन्होंने इस ज्यादती का जिक्र नहीं किया और इमाम बुखारी रह० ने मालिक बिन हुवैरिस रज़ि० की हदीस अबू किलाबा की सनद से नकल की है। और इमाम मुस्लिम रह० ने सही मुस्लिम में अबू किलाबा की सनद से रिवायत किया है। पहले नस्र बिन आसिम की सनद से दो सनदों के साथ लेकिन उन दोनों में इस ज्यादती का जिक्र नहीं है। पस (व इज़ा सजद अलख) की ज्यादती महल्ले नजर है"।

वाइल बिन हुज्र रज़ि० की हदीस में सज्दा की रफ़ा यदैन का ज़िक्र और उसका जवाब

१. खुद इमाम अबू दाऊद ने उसके बाद वाली रिवायत में यह तसरीह कर दी है कि इस रिवायत में सज्दों में रफ़ा यदैन के जिक्र पर रावियों का इत्तिफाक नहीं, चुनांचे फरमाते हैं :

• روى هذا الحديث همام عن ابن جحادة لم يذكر الرفع مع الرفع من السجود" (أبو داود ص ... ج ١)

तर्जमा : यानी "इस हदीस को हम्माम ने इब्ने जुहादा से रिवायत किया है लेकिन सज्दों की रफ़ा यदैन का जिक्र नहीं किया"।

अल अज्बुल मन्हल में है :

• وغرض المصنف بهذا بيان أنه قد اختلف على محمد بن جحادة في رواية الحديث فرواه عنه عبد الوارث بن سعيد بذكر رفع اليدين في السجود ورواه عنه همام بدونه وهو الصواب"
(ص ١٢٥ ج ٥)

तर्जमा मुसन्निफ़ इन अल्फ़ाज़ से यह बयान करना चाहते हैं कि मुहम्मद बिन जुहादा के शागिर्दों में इख़्तिलाफ़ है। उस से अब्दुल वारिस बिन सईद सज्दों में रफ़ा यदैन का ज़िक्र करता है और हम्माम इन अल्फ़ाज़ का तज़्किरा नहीं करता, और यही बात ज़्यादा दुरुस्त है कि यह अल्फ़ाज़ हदीस में नहीं है।

एक और जगह फ़रमाते हैं

عَنْ اٰلِ زِيَادَةِ نَا ءِ الْيَدَيْنِ فِى السُّجُوْدِ ... جُحَادَةٌ (العذب الجميل ص ...)

तर्जमा यानी "इस रिवायत में रफ़ा यदैन फ़िस्सुजूद की ज़्यादती पर रावियों का इत्तिफ़ाक़ नहीं, जो इब्ने जुहादा की हदीस में"।

नीज़ हज़रत अली रज़ि० की सरीह हदीस के ख़िलाफ़ है।

عَنْ عَلِيٍّ قَالَ كَانَ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اِذَا قَامَ اِلَى الصَّلٰوةِ
الْمَكْتُوْبَةِ كَبَّرَ وَرَفَعَ يَدَيْهِ حَذْوَ مَنْكِبَيْهِ وَيَصْنَعُ مِثْلَ ذٰلِكَ اِذَا قَضٰى
قِرَاءَتَهُ فَاِذَا اَرَادَ اَنْ يَّرْكَعَ وَاِذَا رَفَعَ مِنَ الرُّكُوْعِ وَلَا يَرْفَعُ يَدَيْهِ فِىْ شَيْءٍ
مِّنْ صَلٰوتِهِ وَهُوَ جَالِسٌ (نسائى، ترمذى، دارقطنى)

तर्जमा "यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब फ़र्ज़ नमाज़ के लिए खड़े होते और जब क़िरअत पूरी करके रुकूअ करते और जब रुकूअ से सर उठाते तो कन्धों के बराबर रफ़ा यदैन करते और नमाज़ में बैठने की हालत में रफ़ा यदैन नहीं करते थे। अल ग़रज़ हदीस में सज्दों की रफ़ा यदैन का ज़िक्र दुरुस्त नहीं है। वाइल रज़ि० ने कहा, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सिर्फ़ पहली दफ़ा रफ़ा यदैन करते थे।

जवाब

१. वाइल की इस रिवायत से नमाज़ में इफ़्तिताह के अलावा रफ़ा यदैन की नफ़ी साबित नहीं होती। क्योंकि दीगर रिवायात में दूसरे मक़ामात पर भी रफ़ा यदैन का सुबूत मिलता है चुनांचे मुलाहिज़ा फ़रमाएं

حَدَّثَنَا عَاصِمُ بْنُ كُلَيْبٍ عَنْ اَبِيْهِ عَنْ وَائِلِ بْنِ حُجْرٍ اَنَّهُ رَاَى النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ
وَسَلَّمَ ... يَرْفَعُ يَدَيْهِ فِى الرُّكُوْعِ وَفِى الرَّفْعِ ... قَالَ ثُمَّ اَتَيْتُهُمْ
بَعْدَ ذٰلِكَ فَرَاَيْتُ النَّاسَ فِىْ زَمَانِ بَرْدٍ عَلَيْهِمْ جُلُّ الثِّيَابِ تُحَرَّكُ
اَيْدِيْهِمْ مِّنْ تَحْتِ الثِّيَابِ (نصب الراية ص ...)

तर्जमा "हमें हदीस बयान की आसिम ने, उन्हें उनके बाप ने कि हज़रत वाइल बिन हुज्र फ़रमाते हैं कि उन्होंने नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को रुकूअ जाते और रुकूअ से सर उठाते हुए रफ़ा यदैन करते देखा। वाइल रज़ि० कहते हैं फिर मैं उनके पास सर्दियों में आया तो उन्हें भारी कपड़ों के नीचे से रफ़ा यदैन करते हुए देखा"।

हन्फ़ी मुक़ल्लिद का इस्तिदलाल

फ़ाइदा : मुसन्निफ़ कहता है कि उबैद बिन उमैर रज़ि०, इब्ने अब्बास रज़ि०, इब्ने उमर रज़ि० अबू हुरैरह रज़ि०, अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि० मालिक बिन हुवैरिस रज़ि० अनस बिन मालिक रज़ि०, यह आठ सहाबा रज़ि० रिवायत करते हैं कि हुज़ूर सज्दा के वक़्त रफ़ा यदैन करते थे। और सिर्फ़ एक रिवायत में है कि नहीं करते थे। यह रिवायत इब्ने उमर रज़ि० की है और तआरुज़ की वजह से साक़ित है।

बाक़ी सहाबा रज़ि० की रिवायात पर ग़ैर मुक़ल्लिद अमल नहीं करते। यहाँ माज़ी इस्तिम्रारी भी है और हज़रत वाइल रज़ि० और मालिक बिन हुवैरिस रज़ि० जैसे मुतअख़्ख़िरुल इस्लाम रावी भी हैं। फिर न मालूम क्या वजह है कि ग़ैर मुक़ल्लिद रुकूअ व सुजूद की रिवायात में क्यों फ़र्क़ करते हैं। ख़ुलासा यह कि छः अहादीस से हर तक्बीर के वक़्त रफ़ा यदैन करने का ज़िक्र माज़ी इस्तिम्रारी के सिग़ा से साबित है। गोया चार रकअतों में ३६ बार। मगर ग़ैर मुक़ल्लिद इन अहादीस पर अमल नहीं करते। एक सहाबी इब्ने उमर रज़ि० से सज्दा की रफ़ा यदैन मुतआरिज़ आई है। एक रिवायत में है करो और एक में है न करो। इसलिए वह साक़ितुल एतबार हो गई।

बाक़ी सात सहाबा रज़ि० से सज्दा की रफ़ा यदैन आई है। माज़ी इस्तिम्रारी भी है और वाइल रज़ि०, मालिक बिन हुवैरिस रज़ि० अबू हुरैरह रज़ि० जैसे मुतअख़्ख़िरुल इस्लाम सहाबा रज़ि० से मरवी भी, गोया चार रकअत में २८ मरतबा रफ़ा यदैन सुन्नत है। मगर ग़ैर मुक़ल्लिद इन रिवायात पर अमल नहीं करते। (तहक़ीक़ मस्अला रफ़ा यदैन स० २९, ३०)

सज्दों की रफा यदैन का मस्अला और मुसन्निफ की पेशकरदा रिवायात का जवाब!

मौलाना अब्दुर्रहमान मुबारकपूरी मरहूम लिखते हैं :

"ليس في هذا الباب حديث صحيح صريح بل ثبت بالأحاديث الصحيحة عدم رفع اليدين بالسجود فمنها ما رواه الشيخان عن ابن عمر قال كان النبي صلى الله عليه وسلم إذا قام إلى الصلوة رفع يديه حتى يكونا حذو منكبيه ثم يكبر فإذا أراد أن يركع رفعهما مثل ذلك وإذا رفع رأسه من الركوع رفعهما كذلك أيضا وقال سمع الله لمن حمده ربنا لك الحمد. وللبخاري ولا يفعل ذلك حين يسجد ولا حين يرفع رأسه من السجود، ولمسلم ولا يفعله حين يرفع رأسه من السجود، وله أيضا ولا يرفعهما بين السجدتين كذا في منتقى الأخبار. ومنها ما رواه الترمذي في جامعه عن علي بن أبي طالب عن رسول الله صلى الله عليه وسلم أنه كان إذا قام إلى الصلوة المكتوبة رفع يديه حذو منكبيه ويصنع ذلك إذا قضى قراءته وأراد أن يركع ويصنعه إذا رفع رأسه من الركوع ولا يرفع يديه في شيء من صلوته وهو قاعد. الحديث. قال الترمذي: هذا حديث صحيح. ومنها ما رواه الدارقطني عن أبي موسى قال أريكم صلوة رسول الله صلى الله عليه وسلم فكبر ورفع يديه ثم كبر ورفع يديه للركوع ثم قال سمع الله لمن حمده ورفع يديه ثم قال هكذا فاصنعوا ولا يرفع بين السجدتين. قال الحافظ في التلخيص رجاله ثقات" (ابكار المنن ٢٠٤-٢٠٥)

तर्जमा : "सज्दा की हालत में रफा यदैन के लिए कोई भी सही और शरीह हदीस नहीं है"। चुनाचे सहीहैन की रिवायत में है कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज के लिए खड़े होते तो कन्धों के बराबर रफा यदैन करते, फिर अल्लाहु अकबर कहते, फिर जब रुकूअ़ का इरादा करते तो उसी तरह रफा यदैन करते और जब रुकूअ़ से सर उठाते

तो फिर भी रफा यदैन करते। सही बुखारी के अलफाज यह भी हैं, जब सज्दा करते और सज्दों से सर उठाते तो रफा यदैन नहीं करते थे। और सही मुस्लिम के अलफाज हैं और रफा यदैन नहीं करते थे जब सुजूद से सर उठाते। नीज यह अलफाज भी है और वह सज्दों के दर्मियान रफा यदैन नहीं करते थे"।

नीज हजरत अली रजि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब फर्ज नमाज़ के लिए खड़े होते तो कन्धों के बराबर रफा यदैन करते और उसी तरह जब किरअत पूरी करके रुकूअ़ का इरादा करते तो फिर भी ऐसे ही करते और ऐसे ही रुकूअ़ से सर उठाते वक्त करते और बैठने की हालत में रफा यदैन नहीं करते थे, इमाम तिर्मिजी फरमाते हैं, यह हदीस सही है। नीज दारकुतनी में है कि :

अबू मूसा अशअरी रजि० से रिवायत है, उन्होंने कहा तुम्हें मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नमाज दिखाऊं! पस आपने अल्लाहु अकबर कहा और रफा यदैन की, फिर अल्लाहु अकबर कहा और रुकूअ़ के लिए रफा यदैन की, फिर **समिअल्लाहुलिमन हमिदह** कहा और रफा यदैन की फिर फरमाया तुम भी ऐसे ही करो। दो सज्दों के दर्मियान रफा यदैन नहीं करते थे। हाफिज इब्ने हजर रह० तल्खीस में फरमाते हैं इसके सब रावी सिकह हैं। (अब्कारुल मिनन, स० २५५)

मुसन्निफ़ की पेशकरदा रिवायात का जवाब

मुसन्निफ ने सज्दा की रफा यदैन के लिए आठ अहादीस पेश की हैं। उन में से उबैद बिन उमैर रजि०, इब्ने अब्बास रजि०, इब्ने उमर रजि०, अबू हुरैरह रजि०, अब्दुल्लाह बिन जुबैर रजि०, मालिक बिन हुवैरिस रजि०, वाइल बिन हुज्र रजि० की रिवायात के मुतअल्लिक पिछले सफहात में तन्कीद गुजर चुकी है बाकी रही हजरत अनस रजि० की हदीस वह भी मुलाहिजा फरमाए :

"عن أنس أن النبي صلى الله عليه وسلم كان يرفع يديه في الركوع والسجود" (رواه ابو يعلى)

तन्क़ीद

१. इसकी सनद सही नहीं है, क्योंकि इसमें हमीदुत्तवील मुदल्लिस है।

वह हजरत अनससे "अन" के साथ रिवायत करते है। हाफ़िज इब्ने हजर रहे० "तबक़ातुल मुदल्लेसीन" मे फरमाते हैं :

"हमीदुत्तवील हजरत अनस रजि० का मशहूर साथी और कसीरुत्तदलीस है। यहाँ तक कहा गया है कि उसकी अक्सर अहादीस बवास्ता साबित और क़तादा हैं और इमाम नसाई ने उसे मुदल्लिस कहा है"।

(अबकारुल मिनन, स० २०६)

२. हुमैद के शागिर्द हुफ़्फ़ाज़ उसे हज़रत अनस रज़ि० से मौक़ूफ़ बयान करते हैं और सिर्फ़ अब्दुल वहाब सक्फी ही मरफ़ू बयान करते हैं सही बात यह है कि यह हज़रत अनस रज़ि० का कौल है। मरफ़ूअ़ हदीस नही।

(अबकारुल मिनन, स० २०६)

अल गरज़ सज्दों की हालत मे रफ़ा यदैन, हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और सहाबए किराम से सही सनद के साथ साबित नही। इसलिए मुसन्निफ़ का अहले हदीस पर तअ़न करना कि वह अहादीस के बावजूद इस सुन्नत के तारिक हैं, दुरुस्त नहीं बल्कि अहले हदीस का मस्लक यह है कि :

"إذا صح الحديث فهو مذهبي" (امام شافعی)

तर्जमा : "जब सही हदीस मिल जाए तो वही मेरा मसलक है"!

❖ ❖ ❖